# निवेदन

गुजरात विद्यासभाना भो. जे. अध्ययन-संशोधन विद्याभवनमां जे संशोधन-ग्रंथो तैयार करी प्रकट करवामां आवे छे तेनुं एक अंग जुदा जुदा धर्मो अने संप्रदायोनुं साहित्य संशोधननी शास्त्रीय दृष्टिए तैयार करावावानुं छे. आ कार्यमां शेठ पूनमचंद करमचंद कोटावाळा ट्रस्टना वहीवटदारो शेठश्री प्रेमचंद क. कोटावाळा अने शेठश्री भोळाभाई जेशिंगभाई एमणे आ संस्थाने नीचे जणावेली शरते जैन साहित्यना ग्रंथो तैयार करी प्रकट करवा दान कर्युं छे. ए माटे भो. जे. विद्याभवन ट्रस्ट एमनुं आभारी छे.

शरत

"जैन संस्कृतिनां तमाम अंगोनुं-जेमके द्रव्यानुयोग आदि "चार अनुयोगोनुं, तेमज काव्य शिल्प कळा इतिहास आदिनुं "साहित्य तैयार करावां प्रकट करवुं. आमां मूळ संस्कृत "प्राकृतादि ग्रंथोनां शिल्प आदिना सचित्र इतिहास वगेरेनो "समावेश करवो."

उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग अंगे संशोधननी योजना विचाराती हती त्यारे गुजरातना इतिहासने महत्त्वनुं स्थान आपवामां आव्युं हतुं. उपलब्ध साधनोने आधारे इतिहासने फलित करवानुं काम अने नवां साधनोने उपलब्ध करवानुं काम-ए बे कार्यदिशाओ स्पष्ट हती. पहेली दिशामां थयेला कामनी नोंध लेतां जणायुं के ई. स. १८५६ मां प्रकट थयेल रासमाळा अने ई स. १८९६ मां प्रकट थयेला बॉम्बे गेझेटियर ग्रंथ १-खंड ए. १ बे अंग्रेजीमां लखायेला ग्रंथोनुं हजी पण महत्त्व छे. रासमाळानो गुजराती अनुवाद गुजरात विद्यासभाए १८६९-७० मां प्रकट कर्यो हतो. गेझेटियर उपरथी गुजरातनो

इतिहास रेखारूपे आ ज संस्थाए १८९८ मां प्रकट कर्यो हतो. आ अरसामां जे नवी सामग्री एकठी थती हती तेनो उपयोग करी अने पहेलां संगृहीत थयेली सामग्रीनो नवेसरथी विचार करी इतिहास लखवाने अवकाश हतो; अने तेथी आ संस्थाए १९३७–३८ मां 'गुजरातनो मध्यकालीन राजपूत इतिहास' बे भागमां प्रकट कर्यो; अने १९४५ मां 'गुजरातनो सांस्कृतिक – इतिहास'–इस्लामयुग– पहेलो भाग प्रकट कर्यो. ए पछी १९४९ मा प्रो. अबुझफर नदवीना उर्दूमां लखेला गुजरातना इतिहासना १ ला खंडनो अद्यतन अनुवाद २ भागमां प्रसिद्ध कर्यो.

प्रो. कोमिसेरियेटे अंग्रेजीमां गुजरातनां मुस्लिम राज्योनो इतिहास १९३८ मां स्वतंत्र रीते प्रकट कर्यो

गुजरातना साधनोने शोधी अने एना उपरथी मुस्लिम राज्य पेहेलांना इतिहासनो पहेलो खरडो तैयार करवानो यश स्व. डॉ. भगवानलाल इंद्रजीने छे; अने मुस्लिम राज्योनो इतिहास लखवामां सुरतवासी खा. सा फझलुल्लाह लुत्फुल्लाह फरीदीनी मोटी मदद हतो, एम गेझेटियर उपरथी जणाय छे. स्व. रणछोडभाई उदयरामे 'रासमाळा'नो अनुवाद करतां अनेक सुधारावधारा अने पूर्तिओ मूळ ग्रंथमां उमेर्यां हतां. प्रो. होडीवाळा अने प्रो. कोमिसेरियटे मुस्लिम राज्योना समयना इतिहास माटे घणी सामग्री संशोधित करी छे. श्री. दुर्गाशंकर शास्त्रीए गुजरातनो राजपूत युगनो इतिहास लखतां तमाम सामग्रीनो लगभग उपयोग कर्यो छे; अने हमणां ज नवी आवृत्तिनी तैयारी करी अत्यार सुधीनां नवां संशोधनोनो पण समावेश करी आप्यो छे, जे हवे पछी थोडा ज समयमा प्रसिद्ध थशे. "काव्यानुशासन" नो उपोद्घात लखती वेळा पुराणकाळथी लई सोलंकीओना समय सुधीनां यावदुपलब्ध साधनोना बळ उपर मारा तरफथी पण

विशेष स्वरूपे विचारणा करवामां आवी हती. श्री. रत्नमणिराव भीमराव गुजरातनो सांस्कृतिक इतिहास लखतां कांईपण ज्ञानसाधन रही न जाय एनी तकेदारी राखे छे. प्रो. अबुझफर नदवीए पण मुस्लिम बधां साधनोनो उपयोग करी सांस्कृतिक इतिहास लखी राख्यो छे.

सामग्री उपरथी इतिहासने फलित करवानी दिशामां पिष्टपेषण करतां विशेष प्रगति करवी होय तो हवे नवां साधनोनी शोध करवानो अने एने उपलब्ध करवानो प्रयत्न थवो जोईए एम लागवाथी संशोधन विभागे प्रारंभमां आ बीजी दिशामां कार्यक्रम योज्यो. १९३३ मां आचार्यश्री मुनि जिनविजयजीए गुजरात साहित्य सभाना मानार्ह सभ्य तरीके प्राचीन गुजरातना सांस्कृतिक इतिहासनी साधनसामग्री उपर विचारप्रेरक अने सूचिप्रेरक व्याख्यान आप्युं हतुं. ए मार्गे पोते असाधारण श्रम उठावी कार्य करे छे अने सिंघी जैन ग्रंथमाळामां अने ए पूर्वेनां एमनां प्रकाशनोमां पोते संशोधित संगृहीत सामग्री प्रकट कर्ये जाय छे. संशोधन विभागनी योजनामां बे खाणोमांथी साधनो बहार काढवानो अमारो कार्यक्रम ए ज दिशामां बीजो फांटो छे. एक खाण ते पुराणो अने बीजी जैन आगमो–निर्युक्तिओ–भाष्यो–चूर्णिओ. आ बंने आकरोमां इतिहासनां साधनो माटे जे 'खोदकाम' थवुं जोईए ते थयेलुं नहि; एथी आ दिशामां भो. जे. विद्याभवन तरफथी आदरवामां आवेली प्रवृत्तिना प्रथम फळ तरीके अध्यापक उमाशंकर जोषीए तैयार करेल **पुराणोमां गुजरात** ए ग्रंथ १९४६ मां प्रसिद्ध करवामां आव्यो, त्यारे बीजुं फळ ते आ **जैन आगमसाहित्यमां गुजरात** प्रसिद्ध थाय छे.

जैन आगम साहित्यमांनुं लगभग पांच लाख श्लोक पूर संस्कृत प्राकृत साहित्य जोई वळी स्थळप्रतीको तारववानुं भिन्न भिन्न आगमो–अने ए उपरना साहित्यमांना उल्लेखोने एकत्रित करवानुं,

एक स्थळनां अने एक ज व्यक्तिनां जुदां जुदां नामोने एक स्थाने समाववानुं, अने एक ज नाम धरावनां जुदां जुदां स्थळो अने व्यक्तिओने अलग अलग पाडवानुं इत्यादि काम घणी धीरज चीवट अने झीणवट मागी ले छे. आ दरेकने अवतरण प्रमाणोथी पुष्ट करी प्रत्येक विगतने एना प्राप्य प्रामाणिक स्वरूपमां नोंधवानुं विपुल-श्रमसाध्य कार्य प्रो. डॉ. भोगीलाल सांडेसराए साध्युं छे. आम करती वेळाए भिन्न भिन्न विद्वानोए रजू करेला मतो अने प्रमाणोनी विवेचनपूर्वक समालोचना करी शक्य होय त्यां पोतानो मत आ विद्वान संशोधके प्रमाणपुरःसर रजू कर्यो छे.

आ कीमती ग्रन्थ पूनमचंद क. कोटावाळा ट्रस्टनी सहायथी प्रसिद्ध थाय छे, तेथी अहीं एनी सविशेष साभार नोंध घटे छे

ता. १-५-'५२<br>
भद्र, अमदावाद

रसिकलाल छो. परीख<br>
अध्यक्ष, भो. जे. विद्याभवन,<br>
गुजरात विद्यासभा

# प्रास्ताविक

गुजरातना इतिहासने लगती सामग्रीना साधनग्रन्थो तैयार करावावानी गुजरात विद्यासभानी योजना अनुसार, 'पुराणोमां गुजरात'-ना अनुसंधानमां आ 'जैन आगमसाहित्यमां गुजरात' तैयार थयेल छे. जैन साहित्य अने तेमां ये जैन आगमसाहित्यनुं शास्त्रीय दृष्टि-कोणथी अध्ययन अने संशोधन हजी बाल्यावस्थामां छे; ए साहित्यनी तथा एनी साथे संबंध धरावती परंपराओ तथा अनुश्रुतिओनी अनेक रीते तपास हजी हवे करवानी छे, अने ते कारणे, प्राचीन भारतीय संस्कृतिना अभ्यास माटे विविध दृष्टिए नवीन लागती माहिती तथा संशोधनना अनेक कोयडाओना उकेल माटे प्रयत्न करवा प्रेरे एवा रसप्रद मुद्दाओ एमांथी प्राप्त थाय छे. आ ग्रन्थमां आगमसाहित्यमांथी मळती प्राचीन गुर्जर देशना राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहासना अभ्यासमां उपयोगी थाय एवी, भौगोलिक स्थळो, व्यक्तिविशेषो तथा अन्य विषयो–'नेम्स ॲन्ड सब्जेक्ट्स'–ने लगती सामग्री सूचिना रूपमां संकलित करी छे.

प्रारंभमां आपणे ए जोवुं जोईए के 'जैन आगमसाहित्य' एटले शुं. साहित्यरसिकोमां पण केटलीक वार 'जैन साहित्य' अने 'जैन आगमसाहित्य' ए बन्नेनी भेदरेखा परत्वे एक प्रकारनो संभ्रम प्रवर्ते छे एम जोवामां आव्युं छे. 'जैन साहित्य' एटले जैनो द्वारा रचायेलुं साहित्य, जेमां जैन धार्मिक विषयो उपरांत विविध बिनधार्मिक विषयो उपर पण जैनोए संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा प्रादेशिक भाषाओमां रचेला साहित्यनो समावेश थाय छे. प्राचीन भारतीय वाङ्मयना ललित तेमज शास्त्रीय तमाम प्रकारोना नमूनाओ आपणने जैन साहित्य-मां प्राप्त थाय छे. 'जैन आगमसाहित्य' एटले जैनोना मूल धार्मिक ग्रन्थो–'स्क्रिप्चर्स' अथवा 'कॅनन'–तथा ते उपरनुं भाष्यात्मक अने

ટીકાત્મક સાહિત્ય. અર્થાત્ 'જૈન આગમસાહિત્ય'નો સમાવેશ 'જૈન સાહિત્ય'માં થઈ જાય છે.

૧૧ અંગ (મૂળ ૧૨ અંગ, પણ એમાંનું બારમું અંગ 'દૃષ્ટિવાદ' લુપ્ત થઈ ગયેલું હોવાથી ૧૧ અંગ), ૧૨ ઉપાંગ, ૬ છેદસૂત્ર, ૪ મૂલસૂત્ર, ૧૦ પ્રકીર્ણક, તથા 'અનુયોગદ્વાર સૂત્ર' અને 'નંદિસૂત્ર' એ ૨ છૂટાં સૂત્રો મળી કુલ ૪૫ આગમગ્રન્થો ગણાવવામાં આવે છે. બીજી એક ગણતરી અનુસાર ૮૪ આગમો પણ છે. અહીં ૪૫ આગમવાળી ગણતરી અનુસારના ગ્રન્થો લીધા છે.

ઉપર કહ્યું તે પ્રમાણે, 'આગમસાહિત્ય'માં મૂલ આગમગ્રન્થો ઉપરાંત તે ઉપરના તમામ ટીકાત્મક સાહિત્યનો સમાવેશ થાય છે. ટીકાત્મક સાહિત્ય ચાર પ્રકારનું છે: નિર્યુક્તિ, ભાષ્ય, ચૂર્ણિ અને વૃત્તિ. મૂલ ગ્રન્થો તથા તે ઉપરનાં આ ચતુર્વિધ વિવરણોનો અર્થ એકસામટો વ્યક્ત કરવા માટે કેટલીક વાર 'પંચાંગી' શબ્દનો પ્રયોગ કરવામાં આવે છે. મૂલ આગમગ્રન્થો આર્ષ પ્રાકૃત ભાષામાં છે, જે સામાન્ય વ્યવહારમાં 'અર્ધમાગધી' કહેવાય છે. આગમોને વીતરાગ–તીર્થંકરની વાણી ગણવામાં આવે છે અને પરંપરા પ્રમાણે, તે ગણધરભાષિત અર્થાત્ સુધર્માસ્વામી જેવા મહાવીરના ગણધર અથવા પટ્ટશિષ્ય વડે વ્યાકૃત છે. છતાં ભાષા, નિરૂપણરીતિ, શૈલી, ગદ્યપદ્યના ભેદો વગેરે અનેક રીતે આગમોમાં અનેક થરો માલૂમ પડે છે. 'નંદિસૂત્ર', 'દશવૈકાલિક સૂત્ર', 'અનુયોગદ્વાર સૂત્ર', અને 'પ્રજ્ઞાપના સૂત્ર' જેવાં આગમો તો જૈન પરંપરા પ્રમાણે જ અનુક્રમે દેવર્ધિગણિ ક્ષમાશ્રમણ, શય્યંભવસૂરિ, આર્ય રક્ષિતસૂરિ અને આર્ય શ્યામ જેવા વ્યક્તિવિશેષોની રચનાઓ ગણાય છે. ભાષાકીય પૃથક્કરણના ધોરણે 'ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર' 'આચારાંગ સૂત્ર' 'દશવૈકાલિક સૂત્ર' જેવા આગમગ્રન્થોને સૌથી પ્રાચીન ગણવાનું વિદ્વાનોનું વલણ છે અને એવા ગ્રન્થોનો સંકલનાસમય ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણથી

झाझो अर्वाचीन नहि होय एवुं अनुमान थाय छे. पण एकंदरे जोतां; कोई निश्चित प्रमाण न होय तो आगमग्रन्थोने अमुक चोकस शताब्दीमां ज मूकवानुं मुश्केल छे. वळी मगधमां, मथुरामां अने वलभीमां एम त्रण वार आगमोनी संकलना थई हती अने छेवटे ई. स. ४५४ मां वलभीमां बधां आगमो लेखाधिरूढ थयां हतां–ए बधा समय दरमियान थयेलां भाषाकीय अने बीजां परिवर्तनो ध्यानमां राखवानां छे (जुओ आ ग्रन्थमां **देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, वलभी, स्कन्दिल आर्य,** इत्यादि). आगमो अत्यार सुधीमां अनेक वार छपायां छे,[1] पण तेओनी शास्त्रीय, समीक्षित वाचनाओ हजी तैयार थई नथी, ए पण एक मुश्केली छे. आगमसाहित्य अने प्राचीन ग्रन्थभंडारोना आजीवन अभ्यासी पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीए ए माटेना महाभारत कार्यनो प्रारंभ थोडांक वर्ष पहेलां कर्यो छे अने आपणे आशा राखीए के आपणने नजदीकना भविष्यमां आगमोनी तथा ते उपरना तमाम टीकात्मक साहित्यनी समीक्षित वाचनाओ मळशे.

निर्युक्ति अने भाष्य ए मूळ आगमग्रन्थो उपर प्राकृत गाथामां थयेलां संक्षिप्त विवरणो छे. मुद्रित वाचनाओमां तेमज हस्तलिखित प्रतोमां पण घणी वार निर्युक्ति अने भाष्यनी गाथाओ एटली भेळसेळ थयेली होय छे के तेमने निर्युक्ति अने भाष्य तरीके अलग करवानुं काम घणुं मुश्केल छे. चूर्णि ए प्राकृत गद्यमां–कोई वार संस्कृत अने प्राकृतना मिश्रण जेवा गद्यमां–मूळ ग्रन्थोनुं विवरण छे. वृत्ति अथवा टीका ए संस्कृत गद्यमां थयेलां विवरणो छे. जूनामां जूनी उपलब्ध संस्कृत टीकाओ आठमा सैकामां थयेला आचार्य हरिभद्रसूरिनी छे. त्यारपछी शीलांकदेव, शान्तिसूरि, अभयदेवसूरि, द्रोणाचार्य, मलधारी हेमचंद्र अने मलयगिरि जेवा महान आचार्योए प्रमाणभूत संस्कृत

---

१. अत्यारे केटलाक शिक्षितो वातचीतमां अर्धुं देशी भाषामां अने अर्धुं अंग्रेजीमां बोले छे, एना जेवुं आ नथी?

टीकाओनी आ परंपरा चालु राखी हती. आ परंपरा
अढारमा सैका सुधी चालु रहेली छे, अने कोई कोई दाखलामां तो अर्वाचीन काळमां पण जैन आचार्योए आगमग्रन्थो उपर संस्कृत टीकाओ रचेली छे. संस्कृत टीकाओमां पण दृष्टान्तो, कथानको अने बीजां अवतरणो घणुंखरुं प्राकृतमां आवे छे, जे प्राचीनतर रचनाओमांथी शब्दशः लेवायां हशे एवुं अनुमान थाय छे. मुकाबले अर्वाचीन काळमां रचायेली संस्कृत टीकाओ पण आ तेमज बीजी अनेक रीते प्राचीनतर परंपराओनी ऋणी छे अने ए कारणे एमनुं मूल्य ते ते समयमां रचायेला बीजा सामान्य ग्रन्थोनी तुलनाए घणुं वधारे छे.

बत्रीस अक्षरनो एक श्लोक ए गणतरी प्रमाणे तमाम उपलब्ध जैन आगमसाहित्य आशरे साडाछ लाख श्लोकप्रमाण छे. सने १९४३ ना जुलाईमां गुजरात विद्यासभाना अनुस्नातक अने संशोधन विभागमां (हवे शेठ भो. जे. विद्याभवनमां) अध्यापक तरीके हुं जोडायो त्यारथी आगमसाहित्यमांथी प्राचीन भारतना सांस्कृतिक अभ्यास माटेनी सामग्री संकलित करवानुं कार्य आरंभ्युं हतुं. लगभग तमाम मुद्रित आगमसाहित्य–जेनुं प्रमाण आशरे सवापांच लाख श्लोकप्रमाण करतां कंईक वधारे थाय छे–सने १९५० सुधीमां जोवाई गयुं एमांथी प्राचीन गुर्जर देश तथा ते साथे संबंध धरावता विषयोनी माहिती अलग तारवीने आ ग्रन्थ तैयार कर्यो छे.

आशरे सवा लाख श्लोकप्रमाण जेटलुं आगमसाहित्य हजी अप्रसिद्ध छे. एमां केटलीक महत्त्वनी चूर्णिओ, टीकाओ अने थोडाक मौलिक ग्रन्थोनो पण समावेश थाय छे एमांथी मळती सामग्रीनुं प्रकाशन आ पुस्तकनी पूर्तिरूपे करी शकाय.

भगवान महावीरनुं जन्मस्थान, तेमज प्रवृत्तिक्षेत्र मगध हतुं; जैन श्रुतनी संकलना माटे सौ पहेलो परिषद् पण मगधना पाटनगर पाटलि-

:पुत्रमां वीरनिर्वाण पछी बीजी शताब्दीमां मळी हती. जैन आगमना मूल ग्रन्थो पण स्वाभाविक रीते ज मगधमां रचायेला छे. मुख्यत्वे आ कारणे आगमना मूल ग्रन्थोमां गुजरात विशे थोडा अछडता उल्लेखो मळे छे, अने ते पण मुख्य वे बावीसमा तीर्थंकर नेमिनाथना जीवन अने यादवोना इतिहास साथे संबंध धरावे छे. प्राचीन गुर्जर देशमां रचायेली टीकाचूर्णिओमांथी ज आपणने विशेष माहिती प्राप्त थाय छे.

वळी आ पुस्तकमां संकलित थयेली सामग्री जेम प्राचीनतम मूल ग्रन्थोमांथी छे तेम १७ मा--१८ मा सैकामां रचायेली टीकाओ-मांथी पण छे. अमुक वस्तु जे रचनामांथी मळे छे ते रचना ( मात्र मूल आगमोना अपवादने बाजुए राखतां ) कया समयनी छे तेनी नोंध संदर्भसूचिमां करी छे, जेथी वाचकने कालानुक्रमनो ख्याल आवे. ज्यां चोकस साल नथी मळती, पण अनुमाने समय नक्की थई शके छे त्यां ए प्रकारनो उल्लेख कर्यो छे.

जैन आगमसाहित्यमां गुजरात. "पण गुजरात एटले ! गुजरातनी सीमाओ तो समये समये बदलाती रही छे. वळी एक चोक्कस प्रदेशने आपणे अभ्यासविषय बनावीए तोपण तेने पूरी रीते समजवा माटे आजुबाजुना प्रदेशोनो पण परिचय आपणने होवो जोईए. एटले, आ पुस्तकमां, आजे आपणे जेने गुजरात नामे ओळखीए छीए ते प्रदेशनी सीमा उपर ध्यान केन्द्रित करवानी साथे साथे, आसपासना प्रदेशोना . . . उल्लेखोनो पण समावेश कर्यो छे.

"टूंकामां सूचवी शकाय के गिरनारना, ई. स. १५० ना, क्षत्रप राजा रुद्रदामाना, शिलालेखमां जे प्रदेशो गणावाया छे ते बधा ज प्रदेशोने आवरी लेवानो ख्याल राख्यो छे. अलबत्त, लंबाण टाळवा माटे प्रधानगौणविवेक जाळवयो पडचो छे. आजना गुजरातमां परिसीमित थता प्रदेशोने अपायुं छे तेटलुं महत्त्व पडोशना ने दूरना

प्रदेशोने हमेशां आपी शकायुं नथी.[1]

प्रत्येक अगत्यना विधान माटे मूळ साहित्यनो आधार आप्यो छे, जेथी अभ्यासीने ते ते स्थान जोवानुं सरळ पडे. ग्रन्थनुं शीर्षक सूचवे छे ते प्रमाणे निरूपण मुख्यत्वे जैन आगमसाहित्यमांथी प्राप्त थती सामग्रीने अनुलक्षीने कर्युं छे, छतां ए ज विषयोने लगती सामग्री अन्य साधनोमांथी अनायासे प्राप्त थई छे त्यां तेनो पण तुलनात्मक विनियोग कर्यो छे.

आ संकलनामां प्राचीन भारत तेमज प्राचीन गुर्जर देशना इतिहास परत्वे जे ज्ञातव्य वस्तुओ छे ते माटे जिज्ञासु वाचकने प्रस्तुत विषयोनां शीर्षको जोवा भलामण छे. पण एमांथी प्रधानपणे ऊपसी आवता केटलाक मुद्दाओ प्रत्ये आ प्रस्तावनामां ध्यान खेंचवानुं घटित जणाय छे.

सौ पहेलां **जातिओ देशनाम अने स्थळनाम** लईए: जातिओनां नाम उपरथी देशनाम पडेलां छे ए दृष्टिए बन्नेने साथे लेवामां एक प्रकारनुं औचित्य पण छे.

आभीर जातिनी वसाहतो, उत्तरोत्तर दक्षिण दिशामां खसती जती हती एवा 'पुराणोमां गुजरात' (पृ. ४५) ना अनुमानने जैन आगमसाहित्यमांथी स्पष्ट अनुमोदन मळे छे. आभीर देश दक्षिणापथमां हतो एवुं विधान अहीं छे, एटलुं ज नहि, पण आभीर देशनां जे नगरो अचलपुर, वेणातट, तगरा इत्यादि गणाव्यां छे ए पण दक्षिणापथनां छे (पृ. २०), आम छतां अन्यत्र पण आभीरो हता; जेमके कच्छमां आभीरो जैन-धर्मानुयायी होवानुं कह्युं छे (पृ. ५). 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी शीलांकदेवनी टीका प्रमाणे, शूद्रने सौराष्ट्रमां 'आभीर,' वणिकने 'किराट' अने ब्राह्मणने 'डोड' कहेता, ए सूचवे छे के शीलांक'

1. उमाशंकर जोषी: 'पुराणोमां गुजरात', प्रस्ताविक, पृ. ११

देवना समय सुधीमा 'आभीर' शब्दनो अर्थ हलको बनी गयो हतो (पृ २१).

मालव जाति प्राचीनतर अर्थात जनपदने 'मालव' नाम आपवामा कारणभूत छे ए जातिना लोको त्या लूटफाट माटे आक्रमण करता, मनुष्योनु अपहरण करता, अने तेमने गुलाम तरीके वेची देता (पृ १३८-४०) आगमसाहित्यमा क्वचित् 'मालव' अने 'बोधिक' जातिने अभिन्न गणी छे (पृ १३८) एमने विशेनी प्रकीर्ण माहिती टीकाओमाथी सारा प्रमाणमा मळे छे (पृ १२०-२१) यादवो अने एमनी गणसत्ताक राज्यपद्धति विशे पण केटलुक जाणवा मळे छे (पृ ८७) कुशावर्त अने शौरिपुर वे हता एक उत्तरमा अने बीजु पश्चिममा (पृ ४९) नवा स्थानोने जूना नामो आपवानुं स्थळातर करती जातिओनु वलण एमा जणाय छे आ नामोनो सबध यादवोना स्थळातर साथे छे

'बृहत्कल्पसूत्र' (उद्देशक १, सूत्र ५०) अने 'निशीथसूत्र' जेवा छेदसूत्रोमाथी जाणवा मळे छे के भगवान महावीर ज्यारे साकेत नगरना सुभूमिभाग उद्यानमा निवास करता हता त्यारे तमण उपदेश कर्यो हतो के "निर्ग्रंथो अने निर्ग्रंथीओने पूर्वमा अग-मगध सुधी, दक्षिणमा कौशाबी सुधी, पश्चिममा स्थूणा सुधी अने उत्तरमा कुणाला (उत्तर कोसल) सुधी विहार करवो कल्पे छे एटलु ज आर्यक्षेत्र छे एनी बहार विहरवु कल्पतु नथी पण एनी बहार ज्या ज्ञान दर्शन अने चारित्र्यनी वृद्धि थाय त्या विहरी शकाय"[1] ए पछी केटलीक

---

१ आ सूत्रनां अतिम बे वाक्यो आ प्रमाणे छे 'एताव ताव आरिए खेत्त णो से कप्पइ एत्तो बाहिं। तेण परं जत्थ नाण-दसण-चरित्ताइ उस्सप्पति त्ति बेमि।' उपर में करेलो अर्थ 'बृहत्कल्पसूत्र'ना टीकाकार आचार्य क्षेमकीर्तिने अनुसरीने छे डॉ जगदीशचन्द्र जैने एनो अर्थ जरा जुदी रीते कर्यो छे 'इतने ही क्षेत्र आर्य क्षत्र हैं, बाकी नहीं, क्योकि

शताब्दीओ बाद अशोकना पौत्र राजा संप्रतिना आश्रयथी जैन श्रमणो दूर दूरना प्रदेशोमां विचरवा लाग्या अने आन्ध्र, द्रविड, महाराष्ट्र अने कुडुक्क (कूर्ग) ज्यां पूर्वे साधुओ जता नहोता त्यां पण श्रमणोनो सुलभविहार प्रवर्त्यो. ए समयथी नीचे प्रमाणे साडीपचीस आर्यदेशो गणाता लाग्या, जेनो गौतम उल्लेख पण आगमसाहित्यमां वारंवार मळे छे : मगध (राजधानी राजगृह), अंग (चंपा), वंग (ताम्रलिप्ति), कलिंग (कांचनपुर), काशी (वाराणसी), कोशल (साकेत), कुरु (गजपुर–हस्तिनापुर), कुशावर्त (सौरिपुर), पांचाल (काम्पिल्य-पुर), जांगल (अहिच्छत्रा), सुराष्ट्र (द्वारवती), विदेह (मिथिला), वत्स (कौशाम्बी), शाडिल्य (नंदिपुर), मलय (भद्दिलपुर), मत्स्य (वैराट), वरणा (अच्छा), दशार्ण (मृत्तिकावती), चेदि (शुक्ति-मती), सिन्धु–सौवीर (वीतिभय), शूरसेन (मथुरा), भंगि (पावा), वट्टा (मासपुरी), कुणाला (श्रावस्ती), लाढ (कोटिवर्ष), केकयीनो अर्धभाग (श्वेतिका).

आ सूचिमां आन्ध्र महाराष्ट्रादि प्रदेशोनो उल्लेख नथी ए ध्यान खेंचे छे. कोंकण के ज्यां जैन साधुओ विचरता हता एवुं नाम पण एमां नथी. गुजरात अने राजस्थानना जे प्रदेशो पाछळथी जैन धर्मनां प्रमुख केन्द्रो बन्या ए पण एमां नथी. पण एकंदरे एम कही शकाय के संप्रतिना राज्यकाळ पछीना समयमां भारतमां जैन धर्मना प्रभावनो सर्वसामान्य नकशो ए रजू करे छे

इन्ही क्षेत्रोमें निर्ग्रन्थ भिक्षु और भिक्षुणियों के ज्ञान–दर्शन और चारित्र अक्षुण्ण रह सकते हैं।' ('भारत के प्राचीन जैन तीर्थ,' पृ १४) ज्ञान दर्शन अने चारित्र्यनी वृद्धि थती होय तो 'आर्यक्षेत्र'नी बहार विहार थई शके एवो प्राचीन टीकाकारोनो अर्थ मने संगत लागे छे. 'आर्यक्षेत्र'नी सामाजिक स्थिति जैन साधुओना कडक आचारपालनने अनुकूळ हती, पण जेम जेम अन्य प्रदेशोमां जैन धर्मनो प्रचार थयो तेम तेम विहारक्षेत्रनो विस्तार पण वध्यो

हिन्दुस्तान माटे 'हिन्दुग देश' एवुं नाम ई. स. ना सातमा शतक आसपासनी 'निशीथ सूत्र'नी चूर्णिमां मळे छे (पृ. २१८). अन्य साहित्यमां आ नामना आटला प्राचीन उल्लेखो विरल छे.

गृहस्थो रहेता होय एवां मकानोमां साधुओ रहे ए वस्तु कच्छमां दोषरूप गणाती नहोती (पृ. ३२) ए बतावे छे के साधुओने रहेवा योग्य मकानो—उपाश्रयोनो त्यां अभाव हशे. मरु देशमां खनिज तेल होवानो निर्देश (पृ. १२६) ठेठ भाष्य जेटलो जूनो होई खूब अगत्य धरावे छे.[1]

पालि साहित्यमां निर्दिष्ट अरिष्टपुर उपरांत महाराष्ट्रमां बीजुं एक अरिष्टपुर हतुं (पृ. ५). अर्कस्थली अने कालनगर ए बे आनंदपुरनां पर्याय नामो हतां (पृ. १४, १९). आनंदपुर कोई काळे सूर्यपूजानुं केन्द्र हशे एवो तर्क करवाने 'अर्कस्थली' ए नाम प्रेरे छे. आनंदपुर नामे बीजुं एक नगर विन्ध्याटवी पासे हतुं (पृ. १९). ते उत्तर गुजरातना आनंदपुर—वडनगरथी भिन्न होवुं जोईए. शूरसेन जनपदना पाटनगर मथुरानुं बीजुं नाम इन्द्रपुर हतुं (पृ. २३), जो के मथुराथी भिन्न एवुं इन्द्रपुर नामनुं अन्य नगर पण हतुं (पृ. २४). उत्तर मथुरा अने दक्षिण मथुरानो पृथक् निर्देश छे (पृ. १२२, १९२). उत्तर मथुरा ते शूरसेन जनपदनो अने दक्षिण मथुरा ते मदुरा. क्षेमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ. ५८), पण ए कयुं ते नक्की थई शक्युं नथी. पादलिप्तपुर (पालीताणा)नी स्थापना 'तरंगवती' कथाना कर्ता आचार्य पादलिप्तना स्मरणार्थे थई होवानी अनुश्रुति छे (पृ. ९९). श्रीकृष्णना चरित्रवर्णन साथे संबंध धरावतुं शंखपुर ए उत्तर गुजरातनुं शंखेश्वर संभवे छे (पृ. १७३–७४). 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी शीलांक-

१ ए तरफ केन्द्रीय सरकारना 'जियोलॉजिकल सर्वे'नु ध्यान खेंचवामां आव्यु छे अने ए खाताए आ माहितीनो साभार स्वीकार कर्यो छे ए नोंधवु अप्रस्तुत नहि गणाय.

अग्निनुं संतर्पण करतो हतो. एम करता एक वार आखुं नगर बळी गयुं हतुं ( पृ. ६६ ).

जैन आचारना इतिहासनी दृष्टिए अगत्यना पण एक बे उल्लेखो आ ग्रन्थमां छे. शय्यातर–वसति आपनार कोने गणवो ए संबंधमां लाटाचार्यनो मत नोंधायेलो छे ( पृ. १६२–६३ ). लाटाचार्य, एमना नाम उपरथी, लाटना वतनी हशे एम अनुमान थाय छे. दशपुरनो राजा कदाच आर्य रक्षितने दीक्षा नहि लेवा दे ए भयथी तोसलिपुत्राचार्य रक्षितने लईने अन्यत्र चाल्या गया हता, ए जैन अनुश्रुति प्रमाणे पहेली शिष्यचोरी हती ( पृ. ८० ).

**उद्यानो** · जैन श्रमणो घणी वार नगरपरिसरमां आवेला उद्यानोमां निवास करता, एटले हवे उद्यानो विशेना थोडाक उल्लेखो जोईए. इक्षुगृह उद्यान दशपुरमां आवेलुं हतुं. त्यां रहीने आर्यरक्षिते चातुर्मास कर्यो हतो ( पृ. २२ ). ए प्रदेशमां शेरडीनुं वावेतर थतुं हशे एवी अटकळ आ उद्यानना नाम उपरथी करी शकाय ? कोरटक उद्यान भरुकच्छना ईशान खूणे हतुं ( पृ. ५५ ). कोरंटक अथवा कांटा-सेरियाना कमनीय छोडवाओ उपरथी आ उद्याननुं नामकरण थयुं हशे ? उज्जयिनीना स्नपन उद्यानमां पण साधुओ ऊतरता ( पृ. २११ ). 'स्नपन' नाम, त्यां कोई स्नानागार हशे एवो, तर्क करवा प्रेरे छे. द्वारका पासे नंदन उद्यानमां सुरप्रिय यक्षनुं आयतन हतुं ए आपणे [illegible] जोई गया. ए उद्यान द्वारकाने ईशान खूणे रैवतकनी पासे हतुं ( पृ. ९१ ). केटलाक सूत्रोमां रैवतकनो उल्लेख पर्वत तरीके छे, ज्यारे पछीना समयनी केटलीक टीकाओमां एनो उल्लेख उद्यान तरीके [illegible] ( पृ. १४७ ). सिन्धु–सौवीर देशना पाटनगर वीतिभयनी पूर्व-[illegible]शामां मृगवन नामे उद्यान हतुं ( पृ. १७० ). सारनाथ पासेना [illegible]द्यानने पालि साहित्यमां 'मृगदाव' कहेल छे ते साथे आ नाम

सरखावी शकाय. जैन तेम ज बौद्ध साहित्यमां बीजां अनेक उद्यानोना उल्लेख छे.

उत्सवो : उद्यानोनी साथे उत्सवो पण संकळायेला हता. 'संखडि' एटले उजाणी. आनंदपुरना लोको शरदऋतुमां प्राचीनवाहिनी सरस्वती ना किनारे जई संखडि करता ( पृ. १९ ). प्रभासतीर्थमां अने अर्बुद पर्वत उपर यात्रामां संखडि थती ( पृ. १५, १०६ ). मथुरामां भंडीर यक्षनी यात्रामां लोको गाडां जोडीने जता ( पृ. ३३, ११९ ). कुंडलमेंठ नामे व्यंतरनी यात्रामां भरुकच्छना लोको संखडि करता ( पृ. ४४, ११०-११ ). लाटदेशमां गिरियज्ञ अथवा मत्तवाल-संखडि नामे उत्सव थतो ( पृ. १६१ ). एनुं बीजुं नाम भूमिदाह हतुं. ए उत्सवनुं वर्णन मळतुं नथी, पण कोंकणादि देशोमां गिरियज्ञ नामे उत्सव दररोज संध्याकाळे थतो होवानो उल्लेख अन्यत्र छे ( पृ. ५३ ), ते ए ज हशे एवुं अनुमान थाय छे. महाराष्ट्रमां भादरवा सुद पडवाने दिवसे श्रमणपूजानो उत्सव थतो, एमां लोको साधुओने वहोरावीने अट्ठमना उपवासनुं पारणुं करता (पृ. १३५). उज्जयिनी, माहेश्वरी, श्रीमाल वगेरे नगरोना लोको उत्सवप्रसंगोए एकत्र थईने मदिरापान करता. ए मदिरापान करनाराओमां ब्राह्मणोनो पण समावेश थतो ( पृ. २० ).

रीतरिवाजो : जैन साधुओ आखा देशमां पगे चालीने पर्यटन करता. चोमासाना चार महिना बाद करतां बाकीना आखा ये वर्षमां मोटा भागना साधुओ सतत परिव्रजन करता. 'बृहत्कल्पसूत्र'ना भाष्यमां 'जनपदपरीक्षा' प्रकरणमां कह्युं छे के जनपदविहार करवाथी साधुओनी दर्शनविशुद्धि थाय छे. एमां साधुओने विविध देशोनी भाषाओमां कुशळ बनवानुं कह्युं छे, जेथी तेओ लोकोने एमनी पोतानी

ज भाषामां उपदेश आपी शके. वळी विविध प्रदेशोना रीतरिवाजो अने देशिक परिस्थितिथी माहितगार थवानुं पण सूचन एमां करेलुं छे. आ बधां कारणे भारतवर्षना विविध प्रदेशोना रीतरिवाजोने लगती प्रकीर्ण पण मूल्यवान सामग्री आगमसाहित्यमांथी प्राप्त थाय छे ए प्रकारना थोडाक लाक्षणिक उल्लेखो अहीं जोईए: कोंकणवासीओ पुष्प अने फळनो प्रचुर प्रमाणमां उपयोग करता. उत्तरापथ अने बाल्हिकना लोको सक्तु खाय छे तेम कोंकणवासीओ 'पेज्जा' (सं. पेया) अर्थात् चोखानी राब ले छे. त्यां भोजनना प्रारंभमां ज राब अपाय छे (पृ. ५२). अत्यारे पण कोंकणमां मुख्य खोराक चोखा छे ते आ साथे ध्यानमां राखवानुं छे. सोपारकना बे श्रावकोमां एक शाकटिक (गाडुं चलावनार) अने बीजो वैकटिक (दारू गाळनार) हतो (पृ. १८५–८६). ए बतावे छे के वैकटिको बहिष्कृत नहोता. पटोराना महाराष्ट्रमां पण कलालो बहिष्कृत गणाता नहोता; एटलुं ज नहि, पण एमनी साथे बीजाओ भोजन लई शकता (पृ. १३५). जो के दक्षिणापथमां कलाल अने लोहकार जात्यधम गणाता (पृ. १६०). महाराष्ट्रमां मद्यनी दुकानमां मद्य होय के न होय, पण तेनी उपर ध्वज फरकाववामां आवतो, जे जोईने भिक्षाचर आदि त्यां जता नहि (पृ. १३४). जे प्रकारना स्त्रीओना पहेरवेशने लाटवासीओ 'कच्छ' कहेता एने महाराष्ट्रीओ 'भोयडा' कहेता. स्त्रीओ बाल्यपणथी मांडी लग्न थया बाद सगर्भा थतां सुधी कच्छ बांधती. सगर्भा थया पछी भोजन करवामां आवतुं, स्वजनोने बोलावी वस्त्र पाथरवामां आवतुं, अने ए समयथी कच्छ बांधवानुं बंध थतुं (पृ. १६०). मरुस्थल आदि रेताळ प्रदेशोमां मार्ग भूली न जवाय माटे मार्गमां कीलिकाओ ठोकवामां आवती एवा उल्लेखो छे (पृ. १२४). मरुस्थलना पहेरवेशने लगती पण केटलीक रसिक माहिती मळे छे (पृ. १२५). करोडपतिओ महोत्सव प्रसंगे पोताना मकान उपर

कोटिपताका चडावता ( पृ ६४ ). 'कोटिध्वज' तथा एमांथी व्युत्पन्न थयेला गुजराती शब्द 'कोटिध्वज' नो संबंध आ साथे जोडाय छे. सतीनो रिवाज कोई काळे चौलुक्योमां विशेष प्रचलित हशे एम एक सुभाषित उपरथी लागे छे (पृ. ७१–७२). आ उपरांत आभीर, मालव आदि जातिओ; आनन्दपुर, डिंभेलक, ताम्रलिप्ति, द्वीप, मथुरा आदि नगरो तथा कोंकण, वन्नासा (बनास नदी) आसपासनो भाग, महाराष्ट्र, लाट, सिन्ध, सुराष्ट्र आदि प्रदेशोनी विशिष्टताओ तथा लाक्षणिक रीतरिवाज माटे आ ग्रन्थनां ते ते शीर्षको जोवा विनंति छे.

**वाणिज्य** : वाणिज्य विशे पण केटलीक अगत्यनी माहिती मळे छे. त्रिभुवननी सर्व वस्तुओ जेमां मळे एवा वस्तुभंडारो–'कुत्रिकापण'–विशेना उल्लेखो खास ध्यान खेंचे छे. उज्जयिनी अने राजगृह जेवां प्राचीन भारतनां महान नगरोमां एवा भंडारो हता. एमां वस्तुनुं मूल्य खरीदनार व्यक्तिना सामाजिक दरज्जा प्रमाणे लेवामां आवतुं ए वात खूब रसप्रद छे (पृ. २६–२७, ४४–४५). कुत्रिकापण साथे संबंध धरावती केटलीक लोककथाओ नोंधायेली छे ( पृ. ११२, ११५–१६ ) ए बतावे छे के लोकमानसे एनी स्मृतिने केवी रीते संघरी हती. भरुकच्छ पासेनुं भूततडाग कुत्रिकापणमांथी खरीदायेला एक भूते बांध्युं हतुं एवी अनुश्रुति छे.

वेपारना एक मथक तरीके 'द्रोणमुख'नी व्याख्या उपर स्थळनामोनी चर्चा करतां आपी छे. वेपारनुं केन्द्र होय एवा नगरने 'पत्तन' पण कहेवामां आवतुं 'पत्तन' बे प्रकारनां होय: ज्यां जळमार्गे माल आवे ते जलपत्तन, जेमके द्वीप (दीव) अने काननद्वीप; ज्यां स्थळमार्गे माल आवे ते स्थलपत्तन, जेमके मथुरा अने आनंदपुर. केटलाक टीकाकारोए प्राकृत 'पट्टण' शब्दनां 'पट्टन'

अने 'पत्तन' एवां बे संस्कृत रूपो स्वीकारीने बेना जुदा अर्थ आप्या छे (पृ. ९७).

मालव जातिना लूटारुओ मनुष्यनुं हरण करीने एमने गुलामो तरीके वेचता ए उपर कह्युं छे. गिरिनगरनो त्रण स्त्रीओ उज्जयंत उपर गई हती त्यारे चोरो एमनुं हरण करी गया हता अने पारसकूल –इरानी अखातना किनारा उपर तेमने वेची हती (पृ. ६६). भरुकच्छमां आवेला एक परदेशी वेपारीए कपटी श्रावकपणुं धारण करीने केटलीक रूपवती साध्वीओने वहाण उपर बोलावी एमनुं हरण कर्युं हतुं (पृ. ११२). मथुरामां 'देवनिर्मित स्तूप'नो महिमा करवा माटे केटलीक श्राविकाओ साध्वीओनी साथे गई हती एमनुं हरण करवानो प्रयास बोधिक जातिना लूटारुओए कर्यो हतो, पण एक साधु जेओ पूर्वाश्रममां राजपुत्र हता, तेओए एमने छोडावी हती. (पृ. १२१). आ बधा उल्लेखो गुलामोना वेपार उपर प्रकाश पाडे छे. जैन सूत्रोमां अन्यत्र (दा. त. 'राजप्रश्नीय,' सू. ८३, पृ. १४७) जुदा जुदा देशोमांथी आवेली दासीओनी यादी आपी छे एमांथी पण जगतभरमां व्यापेला गुलामोना वेपारनुं सूचन थाय छे.

वेपारीओनी प्राचीन 'श्रेणी'ओ (gullds) ने लगता एक महत्त्वनी अनुश्रुति मळे छे. सोपारक ए भारतना पश्चिम किनारे वेपारनुं मथक हतुं अने आ अनुश्रुति प्रमाणे, त्यां वेपारीओनां पांचसो कुटुंबो हतां. ए वेपारीओनुं एक महाजन हतुं. ए महाजन पासे पोतानी कचेरी अने एमा मोटुं सभागृह हतुं, जेमां पांचसो पूतळीओ हती. अर्थात् ए सभागृह शिल्पकलानी दृष्टिए पण नोंधपात्र हशे. एमनो माफ थयेलो कर राजाए लेवा धार्यो ए सामे विरोध करता बधा वेपारीओ मरण पाम्या, ए वस्तु जूना महाजनोना संगठनना प्रतीक जेवी छे (पृ. २०८).

उज्जयिनीमां एक वार मोटी आग लागी हती अने नगरनो घणो भाग बळी गयो हतो त्यारे जे वेपारीओए नगरनी बहार बखारो राखी हती तेमणे पोताना मालनां अनेकगणां नाणां उपजाव्यां हतां (पृ. २८) ए वात पण ध्यान खेंचे एवी छे.

त्रण दिशाए समुद्रथी वींटायेल सौराष्ट्रमां बहोळो वेपार चालतो हतो. (पृ २०४).

प्राचीन सिक्काओ विशे ठीक माहिती मळे छे. सिक्काओनुं नानुं सरखुं कोष्ठक आपेलुं छ अने एक प्रदेशना सिक्कानी बीजा प्रदेशना सिक्कामां केटली कीमत थाय ए पण केटलाक दाखलामा जणावेलुं छे (पृ. ८९, १८०–८१). 'काकिणी' एक नानो सिक्को हतो अने एनुं मूल्य वीस कोडी बराबर थतुं. पण राजपुत्रोना संबंधमां प्रयोजाय त्यारे 'काकिणी' शब्दनो अर्थ 'राज्य' थतो ए नोंधपात्र छे (पृ. ३४, ४३). चक्रवर्तीनां रत्नोमां काकिणीरत्ननो पण समावेश थतो ते उपरथी एम हशे !

**स्थापत्य अने कला :** अर्धमागध ए स्थापत्यनो एक विशिष्ट–कदाच मिश्र–प्रकार हशे एम लागे छे (पृ १५) अर्धमागधी भाषानी जेम ! अभिनयने धंधा तरीके स्वीकारनार नटोनां जुदां गाम हतां एम रोहकनी वार्ता बतावे छे (पृ. २८) नटपिटक गाममां (पृ. ९१) नटोनी वस्ती हशे एम एना नाम उपरथी कल्पना थाय छे. कोक्कास अने एनां यंत्रकपोतोनुं कथानक (पृ. ५०–५१) प्राचीन भारतमां यंत्रकळाना अभ्यास माटे जोवा जेवुं छे. 'राजप्रश्नीय सूत्र'मां नृत्य अने संगीत विशे विस्तृत अने 'अनुयोगद्वार सूत्र'मां संगीन विशे संक्षिप्त निर्देशो छे ते आ विषयना अभ्यास माटे घणा उपयोगी छे; जो के आ पुस्तकनी मर्यादामा एनो समावेश थई शक्यो नथी.

**विद्याध्ययन :** प्राचीन विद्याध्ययननी घणी अगत्यनी परंपराओ— खास करीने जैनोने लगता छे त्यांसुधी—आगमसाहित्यमां सचवायेली छे. वेदोना परंपरागत संक्रमणनी जेम आगमोनां संकलन अने संगोपननी पाछळ स्मृति अने बुद्धिना महान पुरुषार्थो रहेला छे. प्राचीन काळथी मांडी आगमवाचना ( पृ ८३, ८४, ९४ ) ए गंभीर अध्ययनने पात्र विषय छे. आगमोनी रचना पूर्व भारतमां थई, पण ए लेखाधिरूढ पश्चिम भारतमां थयां ए पण जैन धर्मना इतिहास अने तेनां दशान्तरो माटे एक नोंधपात्र हकीकत छे. मध्यकाळमां गुजरातनी संस्कारितानुं तेमज गुजरातमां जैन धर्मनुं प्रमुख केन्द्र अणहिलवाड पाटण हतुं आचार्य हरिभद्रनी टीकाओ सिवाय आगमो उपरनी घणी मुख्य टीकाओ अणहिलवाड के आसपासना प्रदेशमां रचायेली छे ( पृ. ८–९ ). आगमोना विवेचनमां रोकायेला पंडितो परस्पर सहकारथी कार्य करता हता. नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरिनी टीकाओनी सहाय विना पछीना काळमां गमे तेवा प्रकांड पंडित माटे पण आगमोना अर्थो समजवानुं मुश्केल थई पडत. एमनी ए टीकाओनुं शोधन द्रोणाचार्ये कर्युं हतुं ( पृ १०–१२ ). द्रोणाचार्यनी सहायमां एक पंडित-परिषद् हती. द्रोणाचार्य ए पाटणना चौलुक्य राजा भीमदेव पहेलाना मामा हता अने तेमणे पोते 'ओघनिर्युक्ति' उपर टीका रची हती ( पृ. ८३ ). 'आचारांग सूत्र' अने 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपर टीकाओ रचनार शीलाचार्य अथवा शीलांक ते पाटणना स्थापक वनराजना गुरु शीलगुणसूरि एवी एक अनुश्रुति छे, एटले अणहिल-वाडमां आगमोनुं अध्ययन ओछामां ओछुं ए नगरनी स्थापना जेटलुं जूनुं छे, अने एनो वारसो हरिभद्राचार्य आदि राजस्थानमां थयेला टीकाकारो तरफथी मळेलो छे पाटणमां थयेला आगमोना बीजा महान टीकाकारो मलधारी हेमचंद्र (कलिकालसर्वज्ञ हेमचंद्रथी भिन्न) अने आचार्य मलयगिरि छे. मलधारी हेमचंद्रने मळवा माटे राजा

सिद्धराज जयसिंह वारंवार एमना उपाश्रये आवतो (पृ. २१९). एमना हस्ताक्षरवाळी एक ताडपत्रीय पोथी खंभातना भंडारमां मोजूद छे. आगमो उपर गुजरातमां प्रमाणभूत संस्कृत टीकाओ ठेठ अराढमा शतक सुधी रचाती रही छे अने आज सुधी आगमोना अध्ययननी प्राचीन परंपरा अहीं अविच्छिन्नपणे चालु रहेली छे.

विद्याध्ययनने लगता बीजा पण केटलाक अगत्यना उल्लेखो अहीं संघराया छे. भरुकच्छना वज्रभूति आचार्य विशेनुं कथानक गुजरातना एक प्राचीन कवि विशे थोडीक माहिती आपे छे (पृ. १६५–६६). कालकाचार्ये आजीवको पासे अष्टांग महानिमित्तनो अभ्यास कर्यो हतो (पृ. ४०). आजीवको नियतिवादी हता, एटले निमित्तशास्त्रना अभ्यास प्रत्ये एमणे खास ध्यान आप्युं हशे, अने एथी ज कालकाचार्य जेवा महान आचार्य ए माटे एमनी पासे जवाने आकर्षाया हशे. मूळ आगमोमां (दा. त. 'उत्तराध्ययन सूत्र'नुं १५ मुं अध्ययन) साधुओ माटे ज्योतिष तेमज वैद्यकनो अभ्यास वर्ज्य गणेलो छे, पण मध्यकाळमां चैत्यवासीओए ए बन्ने शास्त्रोने लगभग पोतानां करी लीधां हतां ए पण समयनी बलिहारी छे.

उज्जयिनीनो विद्यार्थी अश्वविद्या शीखवा माटे कौशांबी जाय छे अने शंखपुरनो विद्यार्थी वाराणसीना कलाचार्य पासे शीखे छे (पृ. १) ए उल्लेखो विद्याभ्यास माटे देशान्तरोमां जवानी प्रमाणमां व्यापक प्रवृत्तिना सूचक छे. अट्टण मल्लनुं कथानक प्राचीन भारतमां मल्लविद्याना इतिहास उपर सारो प्रकाश पाडे छे (पृ. ६–८).

**लुप्त ग्रन्थो :** नष्ट थई गयेला अनेक प्राचीन ग्रन्थोना उल्लेखो अने क्वचित् एमांथी अवतरणो आगमसाहित्यमां मळे छे. आ पुस्तक-

मां नोंधायेला एवा ग्रन्थो विशे जोईए. चौद पूर्व-दृष्टिवाद विशेना उल्लेखो ठाम ठाम मळे छे. 'नन्दिसूत्र'मां तो एनो अनुक्रम पण आप्यो छे. पूर्वो घणा सैका पहेलां नाश पामी गयेलां होवा छतां — अथवा कदाच ए कारणथी — पछीना काळमां तमाम जैन ग्रन्थकारो तथा सामान्य जैन प्रजाना मानस उपर पण एनो अद्भुत महिमा अंकित थयेलो रह्यो छे.

अन्य विलुप्त रचनाओमां कालकाचार्यकृत 'प्रथमानुयोग' (पृ. ६०), 'आचारांगसूत्र'ना 'शस्त्रपरिज्ञा' अध्ययनना विवरणरूपे लखायेली गोविन्दाचार्यनी 'गोविन्दनिर्युक्ति' (पृ. ६८-६९), पादलिप्ताचार्यकृत महान प्राकृत कथाग्रन्थ 'तरंगवती' अथवा 'तरंगलोला' (पृ. ९८) तथा एमनी ज बीजी एक रचना 'कालज्ञान' (पृ. ९९), 'तत्त्वार्थसूत्र' उपरनी आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (पृ. १२८), 'निशीथसूत्र' उपर सिद्धसेननी टीका (पृ. १९७), 'योनिप्राभृत' शास्त्र (पृ. १९७), 'विशेषावश्यकभाष्य' उपर जिनभद्रगणिनी स्वोपज्ञ टीका (पृ. २२०), इत्यादिनो उल्लेख थई शके. शीलाचार्य, अभयदेवसूरि, मलयगिरि आदि आगमोना टीकाकारोए एवी पूर्वकालीन टीकाओना उल्लेख कर्या छे, जे आजे मळती नथी (पृ. ११, १२९, १७७, इत्यादि). कदाचित् एमनी सुविशद अने विस्तृत टीकाओ ज पूर्वकालीन टीकाओनी विलुप्तिमां निमित्त नहि बनी होय!

सातवाहन हालना प्राकृत सुभाषितसंग्रह 'गाथासप्तशती'मां पादलिप्ताचार्यनी गाथाओ उद्धृत थयेली छे (पृ. ९९) ते कां तो 'तरंगवती'मांथी होय अथवा एमनी बीजी कोई कृतिमांथी होय. 'ज्योतिष्करंडक' उपरनी पादलिप्ताचार्यनी वृत्ति नष्ट थयेली मनाती हती, पण ते जैसलमेरना ग्रन्थभंडारमांथी थोडा समय पहेलां पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीने मळी छे (पृ. ९८). एज प्रमाणे 'जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति'नी मलयगिरिनी वृत्ति नाश पामी होवानुं ए ग्रन्थना बीजा वे

टीकाकारोए नोंध्युं छे (पृ. १२८), परन्तु ए वृत्ति पण जेसलमेरना भंडारमांथी जडी छे.

**भाषाशास्त्र**: भारतीय आर्य भाषानी द्वैतीयिक भूमिकाना अभ्यास माटे विपुल सामग्री आगमोमांथी मळे एमां कशुं आश्चर्य नथी. बधा ज मूळ आगमग्रन्थो प्राकृतमां छे एटली हकीकत ए विषयमां एमनुं महत्त्व बतावबा माटे बस छे. आ प्रस्तावनाना प्रारंभमां ज कह्युं छे ते प्रमाणे, जुदा जुदा सूत्रग्रन्थोनी भाषाना स्वरूपमां केटलोक नोंधपात्र तफावत छे. वळी आगमसाहित्यनी पहेली संकलना मगधमां थई अने त्यार पछीनी संकलनाओ ईसवी सननी चोथी शताब्दीमां एटले के वीरनिर्वाण पछी नवमी शताब्दीमां मथुरा अने वलभीमां थई अने सर्व आगमो एनी ये पछी एक सैका बाद देवर्धिगणिना अध्यक्षपणा नीचे वलभीमां एकसामटां लिपिबद्ध थया, ए बधा समय दरमियान तेमज त्यार पछी एनी नकलो अने नकलोनी पण नकलोनी जे अनेक शाखाप्रशाखाओ थई तेने परिणामे ए ग्रन्थोनी भाषामां अनेकविध फेरफारो थया हशे, तोपण भारतीय आर्य भाषानी प्राकृत भूमिकाना अध्ययन माटे एक तरफ जैन आगमसाहित्य अने बीजी तरफ पालि साहित्य ए बन्ने मळी परम महत्त्वनी सामग्री पूरी पाडे छे. मूळ आगमो तथा ते उपरनां निर्युक्ति अने भाष्योनी आर्ष प्राकृत, चूर्णिओनी आ करतां भिन्न तो पण आर्षनी कोटिमां ज गणवी पडे तेवी प्राकृत—जेमां संस्कृतनुं पण विलक्षण मिश्रण थयेलुं घणी वार नजरे पडे छे, अने मध्यकाळनी संस्कृत वृत्तिओमांनां प्राकृत कथानको, जेमनी भाषा केटलीक वार चूर्णिओनी लगोलग आवी जाय छे तो केटलीक वार स्पष्ट रीते प्रकृष्ट महाराष्ट्री प्राकृत होय छे—आ सर्वेनुं पूरुं अन्वेषण हजी थयुं नथी. आगमसाहित्यनी समीक्षित वाचनाओ बहार पडे त्यारे ज ए कार्य थई शके.

वळी आगमोनी संस्कृत वृत्तिओमां आवता शब्दो अने रूढि-

પ્રયોગો જેને સામાન્ય રીતે 'જૈન સંસ્કૃત' કહેવામાં આવે છે–જે એક પ્રકારનો 'મિશ્ર સંસ્કૃત' હોઈ બૌદ્ધોની 'ગાથા સંસ્કૃત' સાથે એની તુલના થઈ શકે–જૂના ગુજરાતીની અસરથી જે પરિપ્લાવિત હોઈ ગુજરાતીના સામાન્ય જ્ઞાન વિના એ સમજાય પણ ભાગ્યેજ, એ કારણે હર્ટલ જેવા વિદ્વાને જેને 'પ્રાદેશિક સંસ્કૃત' (Vernacular Sanskrit) કહી છે, એનો વ્યવસ્થિત અભ્યાસ એક કરતાં વધુ ગ્રન્થો માગી લે એવો વિશાળ વિષય છે, અને જૈન કથાસાહિત્ય તેમજ પ્રબન્ધસાહિત્યમાં પણ એ જ પ્રકારની સંસ્કૃતનો પ્રયોગ હોઈ એની અભ્યાસમર્યાદા આગમસાહિત્યની બહાર પણ વિસ્તરેલી છે. સંસ્કૃત ઉપર પ્રાદેશિક ભાષાઓએ કરેલી અસરના દૃષ્ટિકોણથી એ સર્વ સાહિત્યનું અવલોકન ફળદાયી નીવડશે. સંસ્કૃતે લોકભાષાઓ સાથે કેવું સમાધાન સાધ્યું એ જેમ એમાંથી જણાશે તેમ લોકભાષાનાં પણ અનેક ભુલાયેલા રૂપો અને અર્થોની તેમજ એ રૂપો તથા અર્થોની પાછળ રહેલાં માનસિક વલણોની એમાંથી ભાળ મળશે.

પણ આ પુસ્તકની મર્યાદામાં આ બધી વસ્તુઓનો સમાવેશ કરવાનું અશક્ય હતું. અહીં તો રાજકીય અને સાંસ્કૃતિક અગત્યની વસ્તુઓની સાથોસાથ ભાષાકીય અગત્યના પણ જે મુદ્દા નોંધાયા છે તેમાંના કેટલાક તરફ ધ્યાન દોર્યું છે.

પંજાબનું મૂલ સ્થાન (મુલ્તાન), સૌરાષ્ટ્રનું સ્થાન (થાન), અને મુંબઈ પાસેનું સ્થાનક (થાણા), એમાંના 'સ્થાન' 'સ્થાનક' પદાન્તોનો સંબંધ ભાષા અને સામાજિક ઇતિહાસની દૃષ્ટિએ વિચારવા જેવો છે. મુલ્તાન અને થાન તો સૂર્યપૂજાનાં પ્રાચીન કેન્દ્રો છે, થાણા વિષે વધુ સંશોધન આવશ્યક છે (પૃ. ૨૧૧). ભારતનાં પ્રાચીન નગરોને અંતે આવતો સંસ્કૃત 'કૃત' અને પ્રાકૃત 'કઙ' પદાન્ત તથા જાવા જેવી ભારતની પ્રાચીન વસાહતોનાં કેટલાંક નગરોનાં નામોનો

'कर्त' पदान्त, ए सर्वनुं साम्य पण ए ज रीते ध्यान खेंचे छे (पृ. ४६–४७). 'गिरनार' अर्वाचीन भाषामां पर्वतवाची विशेषनाम छे, पण एनुं मूळ संस्कृत 'गिरिनगर'मां छे (पर्वतनुं नाम तो उज्जयंत छे), अने 'कोडिनार', 'नार' वगेरे अन्य स्थळनामोमांनो 'नार' पण संस्कृत 'नगर'मांथी प्राकृत 'नअर' द्वारा व्युत्पन्न थयेलो छे (पृ. ६६). आगमसाहित्यना प्राचीनतर अंशोमां, पुराणोनी जेम, अर्वाचीन भरूचने माटे, 'भरुकच्छ' प्रयोगनी व्यापकता छे ए वस्तु सूचवे छे के 'भरूच'नी व्युत्पत्ति, सामान्य रीते मनाय छे तेम, संस्कृत 'भृगुकच्छ'मांथी नहि, पण 'भरुकच्छ'मांथी 'भरुअच्च' द्वारा साधवानी छे (पृ. ११०–१२). 'खेट' अने तेनी साथे संबंध धरावतां नामोनी चर्चा अगाउ करेली छे. कुडुक्क (पृ. १५९), लाट (पृ. १५९–६०), कोंकण (पृ. ५३), महाराष्ट्र (पृ. १३५) आदि प्रदेशोनो भाषाना लाक्षणिक शब्दप्रयोगोनी नोंध टीकाकारोए वारंवार करेली छे. एक प्रदेशनी भाषाना शब्दो वगर समज्ये बीजे बोलनार केवी रीते हास्यपात्र थाय छे ए पण बताव्युं छे (पृ. १३५).

**लोकवार्ता अने पुराणकथा :** जैन साहित्यनो एक मोटो भाग कथाप्रधान छे. आगमसाहित्यना चार अनुयोगो पैकी एक कथानुयोग छे. मूळ आगमो तथा ते उपरनी चूर्णिओ अने टीकाओमां अर्ध-ऐतिहासिक कथाओ अने लोककथाओनो विपुल भंडार छे. जैनोना कथासाहित्यना उद्‌भव अने विकासनो तुलनात्मक अभ्यास ए एक स्वतंत्र विषय छे. अहीं केवळ आ पुस्तकने अनुलक्षीने प्रस्तुत कथयितव्य रजू कर्युं छे.

अगडदत्त (पृ. १–५), अट्टण (पृ. ६–८), इन्द्रदत्त (पृ. २३), कोकास (पृ. ५०–५२) आदिनी कथाओ लोकवार्ताओ छे; जो के एमां ऐतिहासिक अनुश्रुतिओना अंशो रहेला छे

એ ચોક્સ. ભરુકચ્છની ઉત્તરે આવેલા મૃતતડાગને લગતી વાર્તા ( પૃ. ૧૧૫ ) તથા બૌદ્ધો અને જૈનોની સ્પર્ધાને લગતી કેટલીક વાર્તાઓ ( દ્રા. ત. પૃ. ૧૭૨–૭૩ ) એ પણ લોકકથાઓ જ છે. પાદલિપ્તાચાર્ય ( પૃ. ૬૮ ) અને નટપુત્ર રોહકની ( પૃ. ૧૫૭–૫૮ ) હાજરજવાબીની વાર્તાઓમાંની કેટલીક પછીના સમયમાં રાજા ભોજ અને કવિ કાલિદાસ તથા અકબર અને બિરબલને નામે ચઢેલી હાજરજવાબીની વાતો છે. ચોરશાસ્ત્રના પ્રણેતા ગણાયેલા મૂલદેવને લગતી ભિન્ન ભિન્ન કથાઓ ( પૃ. ૧૪૪–૪૮ ) પણ લોકવાર્તાઓની કોટિમાં જશે; જો-કે મૂલદેવ પોતે એક ઐતિહાસિક વ્યક્તિ હશે એવું કેટલાક વિદ્વાનોનું મંતવ્ય છે. અવંતિસુકુમાલ, અશકટાપિતા, થાવચ્ચાપુત્ર આદિનાં કથાનકો જે ખરેખર જૈન પુરાણકથા ( Mythology )ના અંશ બની ગયાં છે એમાં પણ લોકવાર્તાનાં તત્ત્વો મિશ્રિત થયાં હશે એવું સ્વાભાવિક અનુમાન થાય છે. જૈન અને બૌદ્ધ સાહિત્યમાં લોકકથાઓનું જ ધર્મકથાઓમાં રૂપાન્તર કરવામાં આવ્યું છે એ સિદ્ધ હકીકત છે. આગળ વધીને એમ પણ કહી શકાય કે દુનિયાભરની પુરાણકથાઓ અને દેવકથાઓનો અનાદિકાળથી લોકકથાઓ સાથે સંબંધ રહેલો છે.

યાદવકુળમાં થયેલા, બાવીસમા તીર્થંકર અરિષ્ટનેમિ અથવા નેમિનાથ વિશેના ઉલ્લેખો આ પુસ્તકમાં અનેક સ્થળે (પૃ. ૨૪, ૪૯–૫૦, ૮૦–૮૧, ૯૬, ઇત્યાદિ ) જોવામાં આવશે. તેઓ શ્રીકૃષ્ણના કાકાના દીકરા હતા. જૈન સાહિત્યમાં સર્વત્ર યાદવકુળનો ઇતિહાસ નેમિનાથના ચરિત્રની આસપાસ ગૂંથાયેલો છે; બ્રાહ્મણ પુરાણોમાં યાદવોનો ઇતિહાસ મુખ્ય અંશોમાં જૈન સાહિત્યમાં અપાયેલા વૃત્તાન્ત સાથે સામ્ય ધરાવે છે. માત્ર નેમિનાથનો વૃત્તાન્ત, તેમનો નામોલ્લેખ પણ, એમાં મળતો નથી ! જૈન ધર્મની સ્થાપના મહાવીરે કરી નહોતી, મહાવીર તો નવીન ધર્મના પ્રવર્તક કરતાં પ્રાચીન ધર્મના સુધારક અને *સમુદ્ધારક* હતા. તેમની પૂર્વેના ત્રેવીસમા તીર્થંકર પાર્શ્વનાથ નિ:શંકપણે ઐતિહાસિક

व्यक्ति पुरवार थया छे अने ए सिवायना बावीस तीर्थंकरो पैकी केटलाकनी ऐतिहासिकतानां प्रमाणो मळे तो नवाई जेवुं नथी. बौद्ध ग्रन्थ 'महावग्ग' (१. २२. १३) अनुसार बुद्धना समयमां राजगृहमां सातमा तीर्थंकर सुपार्श्वनाथनुं मन्दिर हतुं. ए ज ग्रन्थ जणावे छे के आजीवक संप्रदायनो उपक नामे तपस्वी अनंतनाथनो उपासक हतो. जैनो अने आजीवकोना गाढ ऐतिहासिक संपर्कनो विचार करतां आ अनंतनाथ ते चौदमा तीर्थंकर संभवे छे. अलबत, आवां प्रमाणो तार्किक दृष्टिए सुपार्श्वनाथ के अनंतनाथनी ऐतिहासिकता पुरवार करे के केम ए विशे मतभेद रहेवानो, पण महावीरना समयमां तेमज ए पूर्वे प्राचीनतर तीर्थंकरो पूजाता हता ए हकीकत तो एमांथी निर्विवादपणे फलित थाय छे. नेमिनाथना विषयमां वात करीए तो, मात्र पछीना काळनां चरित्रोमां ज नहि, परन्तु भाषा छंद तेमज अन्य दृष्टिबिन्दुए सौथी प्राचीन पुरवार थयेला मूल आगमग्रन्थोमां नेमिनाथ विशे तेमज यादवोना इतिहास विशे पुष्कळ सामग्री मळे छे. 'वसुदेव-हिंडी' जेवा प्राचीन कथाग्रन्थनो ठीक मोटो गणी शकाय एवो अंश ए वृत्तान्त वडे रोकायेलो छे, ज्यारे बीजी तरफ पुराणादिमां भागवत संप्रदायना कथयितव्यने रजू करवामां उपयोगी थाय एटले ज अंशे यादवकुळना वृत्तान्तनो विनियोग करवामां आव्यो छे. आ बधुं जोतां नेमिनाथनुं इतिहासमां अस्तित्व नहि होय अने तेओ केवळ देवकथानी ज व्यक्ति हशे एवो तर्क भाग्येज साधार गणाशे. पुराणकारोए श्रीकृष्णना चरित्रनी आसपास यादवकुळनो इतिहास गूंथवा माटे नेमिनाथना जीवनवृत्तान्तने जाणी जोईने पडतो मूक्यो हशे एवी कल्पना थाय छे.

जैन कथाओमां आवतां सांबनां तोफानो श्रीकृष्णनां बालचरित्रोनी याद आपे छे (पृ. १८९-९२).

गुजरातना मध्यकालीन इतिहासने लगती एक अनुश्रुति प्रमाण-

मां अर्वाचीन कही शकाय एवी एक टीकामां नोंधायेली छे. अभीष्ट स्त्रीनी कामना करतां मनुष्य दुःखी थाय अने तेनी प्राप्ति थवा छतां पुत्रादिनी आशाथी दुःखी थाय, ए संबंधमां राजा सिद्धराज जयसिंहनुं उदाहरण टीकाकारे आप्युं छे (पृ. १९५), ते सिद्धराज माटे आ प्रकारनी किंवदन्ती लोकप्रसिद्ध हशे एम सूचवे छे.

अंते, मर्यादित समयमां एकले हाथे बधुं आगमसाहित्य तपासवानो प्रयत्न ए दरियो डहोळवा जेवुं एक साहस हतुं. साथे शिक्षण अने संशोधननां बीजां कार्यो पण चालु राखवानां हतां. आ बधां कारणोए तेमज मारी अणसमज के सरतचूकने कारणे आ पुस्तकमां त्रूटीओ रहेवा पामी हशे ते विद्वानो बतावशे तो उपकृत थईश.

## आभारदर्शन

आ पुस्तक तैयार करवानुं काम सौ पहेलां मारा विद्यागुरु पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीने सोंपायुं हतुं, पण तेओए आगमवाचनानुं भगीरथ काम हाथमां लीधुं तथा लगभग ए अरसामां गुजरात विद्यासभाना अनुस्नातक विभागमां मारी निमणूंक थई, एटले ए काम मने सोंपायुं. आ कामने अंगे बधो समय तेमना तरफथी सूचनो तेमज जोईतां पुस्तकोनी सहाय मळती रही हती ए बदल तेमनो ऋणी छुं. भो. जे. विद्याभवनना अध्यक्ष श्री. रसिकलाल छो. परीखने आ आखुं पुस्तक, छापवा आपतां पहेलां, साद्यन्त बताव्युं हतुं. तेमनां सूचनोने परिणामे पुस्तकनुं मूल्य वध्युं छे एम कहेवामां हुं लेशमात्र अयुक्ति करतो नथी. आचार्य श्री. जिनविजयजी अने पं. सुखलालजी संघवी साथे पण आ कार्य अंगे वखतोवखत चर्चा थई हती. श्री. उमाशंकर जोशीकृत 'पुराणोमां गुजरात' आ पहेलां प्रसिद्ध थयेलुं छे, एनी योजनानो लाभ स्वाभाविक रीते अहीं मने मळ्यो हतो, एकत्रित सामग्रीनी व्यवस्थानो श्रम प्रमाणमां हळवो थयो हतो.

आ पुस्तकनी तैयारीनां प्रारंभनां केटलांक वर्ष दरमियान अमे बन्ने मो. जे. विद्याभवनमां सहाध्यापको हता त्यारे एमनो साथे वारंवार उपयोगी विचारविनिमय, अन्य उपरांत, आ काम अंगे पण थयो हतो. प्रूफ जोवाना तेमज मुद्रणनी व्यवस्थाना कार्यमां विद्याभवनना क्युरेटर अने गुजरातीना अध्यापक श्री. केशवराम का. शास्त्रीनी सहाय घणी मूल्यवान हती तथा डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री अने अन्य सहाध्यापको साथे पण केटलाक अगत्यना मुद्दाओ अंगे चर्चा–विचारणा थई हती. तपस्वी मुनिश्री कान्तिविजयजीए केटलाक ग्रन्थो पूरा पाड्या हता तथा श्री. धीरुभाई ठाकरे 'निशीथ चूर्णि'ना टाइप करेला पांच दुर्लभ ग्रन्थो उपयोग माटे मेळवी आप्या हता. श्री. अंबालाल आशाराम जेतलपुरियाए केटलुंक आगमसाहित्य तपासवामां सहाय करी हती. वडोदरा युनिवर्सिटीमां मारा सहकार्यकर श्री. इन्दुवदन अंबालाल दवेए आ पुस्तकनी सूचि काळजीपूर्वक तैयार करी आपी छे. ए सर्व सज्जनो प्रत्ये आ स्थळे हुं कृतज्ञभाव व्यक्त करुं छुं.

'अध्यापक निवास'
प्रतापगंज, वडोदरा
ता. ११–४–१९५२

भोगीलाल जयचंदभाई सांडेसरा

## संक्षेप-सूचि

अनु : अनुयोगद्वार सूत्र – मलधारी हेमचन्द्रनी वृत्ति समेत : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स १९२४

अनुचू : अनुयोगद्वार सूत्र–चूर्णि : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम

अनुहा : अनुयोगद्वार सूत्र–हारिभद्रीया वृत्ति (ई. स नो ८ मो सैको) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम

अनुहे : अनुयोगद्वार सूत्र–मलधारी हेमचन्द्रनी वृत्ति (ई. स नो १२ मो सैको) . प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९२४ (उपर 'अनु' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

अरा : अभिधान राजेन्द्र : ग्रन्थ १ थी ७ : संपादक विजयराजेन्द्रसूरि, रतलाम, ई. स. १९१३–३४

आचू : आवश्यक सूत्र–चूर्णि, पूर्वभाग अने उत्तरभाग : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम

आनि : आवश्यक सूत्र–निर्युक्ति (नीचे 'आम' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

आम : आवश्यक सूत्र–आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (ई स. नो १२ मो सैको), भाग १ थी ३ : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स १९२८–३२

आशी : आचारांग सूत्र–शीलाकदेवनी वृत्ति (८ मा सैका आसपास), भाग १–२ : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७२–७३, एनुं पुनर्मुद्रण जैनानंद पुस्तकालय, सूरत तरफथी थयुं छे.

आमूचू : आचारांग सूत्र–चूर्णि . कर्ता जिनदासगणि महत्तर (ई.

स. नो ७ मो सैको ) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं. १९९८

आह : आवश्यक सूत्र–हरिभद्रसूरिनी वृत्ति ( ई. स. नो ८ मो सैको): प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई

आहेहा : मलधारी हेमचन्द्र ( ई. स. नो १२ मो सैको ) सूचित हारिभद्रीय आवश्यकवृत्तिटिप्पण : प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, ई. स. १९२०

ओनिद्रो : ओघनिर्युक्ति–द्रोणाचार्यनी वृत्ति ( ई. स. नो ११ मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७५

ओनिभा : ओघनिर्युक्ति–भाष्य,
( उपर 'ओनिद्रो' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

ओसूअ : औपपातिक सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स. नो ११ मो सैको ) प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७२

अंद : अंतकृत्दशा सूत्र : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७६

अंदवृ : अंतकृत्दशा सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति ( ई. स. नो ११ मो सैको ).
( उपर 'अंद' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

उ : उत्तराध्ययन सूत्र
( नीचे 'उशा' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

उक : उत्तराध्ययन सूत्र–उपाध्याय कमलसंयमकृत टीका :( सं. १५४४=ई. स. १४८८) : संपादक मुनि जयंतविजयजी

उचू : उत्तराध्ययन सूत्र–चूर्णि · प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं. १९९८

उनि उत्तराध्ययन सूत्र–निर्युक्ति
( नीचे 'उशा' वडे निर्दिष्ट सस्करण )

उने उत्तराध्ययन सूत्र–नेमिचन्द्रनी वृत्ति ( स ११२९=ई. स. १०७३ ) संपादक विजयउमगसूरि, स. १९९३

उशा उत्तराध्ययन सूत्र–शान्तिसूरिनी वृत्ति ( ई स नो ११ मो सैको ) प्रकाशक दे. ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, भाग १ अने २, स. १९७२, भाग ३, सं. १९७३

कंकि कल्पसूत्र–उपाध्याय धर्मसागरकृत किरणावली टीका ( स १६२८=ई स १५७२ ) संपादक प दानविजय, भावनगर, स १९७८

कको , कल्पसूत्र–उपाध्याय शान्तिसागरकृत कौमुदी टीका ( स १७०७=ई. स १६५१ ), प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर सस्था, रतलाम, सं १९९२

कदी कल्पसूत्र–जयविजयकृत दीपिका टीका ( स १६७७=ई स १६२१ ) संपादक प मफतलाल झवेरचद, प्रकाशक महोपाध्याय यशोविजय पुस्तकालय, राधनपुर, स. १९९१

कसु : कल्पसूत्र–उपाध्याय विनयविजयकृत सुबोधिका टीका ( स १६९६=ई. स १६४० ) प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फड, सूरत, स १९६७

कस ‵ कल्पसूत्र–खरतरगच्छीय जिनप्रभसूरिकृत संदेहविषौषधि टीका ( स १३६४=ई स १३०८ ) सपादक पं हीरालाल हसराज, जामनगर, स १९६९

चं चंदाविझय प्रकीर्णक ( 'प्रकीर्णकदशक 'मा मुद्रित, प्रकाशक :

आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९८३). अलग पण छपायुं छे : संपादक विजयक्षमाभद्रसूरि, पाटण, सं. १९९७

जिरको : जिनरत्नकोश : हरि दामोदर वेलणकर, भाग १, पूना, ई. स. १९४४

जीकचू : जीतकल्पचूर्णि : संपादक मुनि जिनविजयजी, अमदावाद, सं. १९८३

जीकचूव्या : जीतकल्पचूर्णि : विषमपद व्याख्या–कर्ता श्रीचन्द्रसूरि (सं. १२२७=ई. स. ११७१)
(उपर 'जीकचू' वडे निर्दिष्ट संस्करण).

जीकभा : जीतकल्पभाष्य :
(नीचे 'जीकसू' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

जीकसू : जीतकल्पसूत्र–कर्ता जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण (ई. स. नो ७ मो सैको) : संपादक मुनिश्री पुण्यविजयजी, अमदावाद, सं. १९९४

जीम : जीवाभिगम सूत्र–आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स. नो १२ मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई.

जेसू : जेसलमेर भांडागारीय ग्रन्थसूचि : पं. लालचंद्र भगवानदास गांधी, वडोदरा, ई. स. १९२३

जैसाइ : जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास : श्री. मोहनलाल दलीचंद देसाई, मुंबई, ई. स. १९३३

जंप्र : जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति
(नीचे 'जंप्रशा' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

जंप्रशा : जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति–वाचक शान्तिचंद्रनी वृत्ति (सं. १६५० =ई. स. १५९४) : प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं. १९७६

ज्ञाभ : ज्ञाताधर्मकथा-सूत्र

( नीचे 'ज्ञाधअ' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

ज्ञाधअ : ज्ञाताधर्मकथा सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति (सं. ११२० =ई. स. १०६४ ), प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९१६

ज्योकम : ज्योतिष्करंडक–मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स. नो १२ मो सैको ) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं. १९८४

ज्योडि : ज्योग्रोफिकल डिक्शनेरी ऑफ एन्श्यन्ट ॲन्ड मिडीवल इन्डिया · नंदलाल दे, लंडन, ई. स. १९२७

दवै : दशवैकालिक सूत्र

( नीचे 'दवैहा' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

दवैचू . दशवैकालिक चूर्णि–जिनदासगणि महत्तरकृत (ई. स नो ७ मो सैको ) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं. १९८९

दवैस : दशवैकालिक सूत्र–समयसुन्दरकृत टीका (सं. १६९१ =ई. स. १६३५) : जिनयश सूरि ग्रन्थमाळा, खंभात, सं. १९७५

दवैहा : दशवैकालिक सूत्र–हारिभद्रीया वृत्ति (ई. स. नो आठमो सैको ) : प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, सं. १९७४

निचू : निशीथ सूत्र–चूर्णि ( टाइप करेली नकल ) : संपादक आचार्य विजयप्रेमसूरि, भाग १ थी ५, सं. १९९५–९६

निभा : निशीथ सूत्र–भाष्य

( उपर 'निचू' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

नंचू : नंदिसूत्र चूर्णि–जिनदासगणि महत्तरकृत ( ई. स. नो ७ मो सैको ) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, ई. स. १९२८

नंम : नंदिसूत्र–आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति ( ई. स. नो १२मो सैको ) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९२४

नंसू : नंदिसूत्र

( उपर 'नंम' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

नंहा : नंदिसूत्र–हारिभद्रीया वृत्ति ( ई. स. नो ८मो सैको ) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, ई. स. १९२८

पाय : पाक्षिकसूत्र–यशोदेवसूरिनी वृत्ति ( सं. ११८०=ई. स. ११२४ ) : प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं. १९६७.

पिनिम : पिंडनिर्युक्ति–भाष्य अने मलयगिरिनी टीका ( ई. स. नो १२ मो सैको ) सहित : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९७४

पुगु : पुराणोमां गुजरात : उमाशंकर जोषी, अमदावाद, ई. स. १९४६

प्रच : प्रभावकचरित ( सं. १३३४=ई. स. १२७८ )–प्रभाचन्द्रसूरिकृत : संपादक मुनि जिनविजयजी, अमदावाद–कलकत्ता, ई. स. १९४०

प्रम : प्रज्ञापना सूत्र–मलयगिरिनी वृत्ति ( ई. स. नो १२मो सैको ) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, पूर्वार्ध–उत्तरार्ध, सं. १९७४–७५

प्रव्या : प्रश्नव्याकरण सूत्र

( नीचे 'प्रव्याअ' वडे निर्दिष्ट संस्करण )

ई. स. १४४० ) : प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं. १९६८

ससूम : समवायांग सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति ( सं ११२०=ई. स. १०६४ ) ' प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९७४

सुकृचू . सूत्रकृतांग सूत्र–जिनदासगणि महत्तरकृत चूर्णि ( ई. सनो ७ मो सैको ) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, स १९९८

सुकृशी : सूत्रकृतांग सूत्र–शीलांकदेवनी वृत्ति ( ई स. ना ८मा सैका आसपास ) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं १९७३

सूप्रम : सूर्यप्रज्ञप्ति–मलयगिरिनी वृत्ति ( ई. स. नो १२मो सैको ) ' प्रकाशक आगमोदय समिति, सं १९७५

संप्र ' संस्तारक प्रकीर्णक ( 'प्रकीर्णकदशक 'मां मुद्रित) . प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९८३

स्थासूम : स्थानांग सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति (सं ११२०=ई स. १०६४ ) : प्रकाशक आगमोदय समिति, भाग १–२, सं. १९७६



# सन्दर्भसूचि

[ आ पूर्वे निर्देशावेला उपरांत उपयोगमां लेवायेला महत्त्वना ग्रन्थोनी सूचि ]

## आगमसाहित्य

अनुत्तरोपपातिकदशा सूत्र-अभयदेवसूरिनी वृत्ति ( ई. स.नो ११मो सैको ) समेत : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७६

उपासकदशा सूत्र—अभयदेवसूरिनी वृत्ति ( ई. स. नो ११ मो सैको ) समेत : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७६

दशाश्रुतस्कन्ध-संपादक उपाध्याय आत्मारामजी पंजाबी, जैन शास्त्रमाला नं. १, लाहोर, सं. १९९७

निर्यावलिका ( कप्पिया, कप्पवडंसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वह्निदसा ए पांच सूत्रो )-श्रीचन्द्रसूरिनी वृत्ति ( सं. ११२८=ई स. १०७२ ) समेत : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७८

प्रकीर्णकदशकम् ( चउसरण, आतुरप्रत्याख्यान, महापरिज्ञा, भक्तपरिज्ञा, तंदुलवेयालिय, संस्तारक, गच्छाचार, गणिविद्या, देवेन्द्रस्तव, मरणसमाधि ए दश प्रकीर्णको ) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९८३

श्रमणप्रतिक्रमण सूत्र वृत्ति–पूर्वाचार्यकृत : प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं. १९६७

## इतर साहित्य

अर्ली हिस्टरी ओफ इन्डिया: विन्सेन्ट स्मिथ, ४ थी आवृत्ति, ओक्स्फर्ड, ई. स. १९३२

अलंकारसर्वस्व ( रुय्यककृत ) : संपादक पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, २ जी आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९३९

आबु, भाग १ : मुनि जयंतविजयजी, उज्जैन, ई. स. १९३३

इतिहासनी केडी : भोगीलाल ज. साडेसरा, वडोदरा, ई. स. १९४५

इन्डिया ॲज डिस्क्राइब्ड इन धी अर्ली टेक्स्ट्स ऑफ बुद्धिझम ॲन्ड जैनिझम : बिमलाचरण लॉ, लंडन, ई. स. १९४१

इन्डो–आर्यन ॲन्ड हिन्दी : सुनीतिकुमार चेटर्जी, अमदावाद, ई. स. १९४२

उज्जयिनी इन ॲन्श्यन्ट इन्डिया बिमलाचरण लॉ, कलकत्ता, ई. स. १९४४

अे कम्पेरेटिव ॲन्ड इटिमोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ धी नेपाली लॅंग्वेज : राल्फ लीली टर्नर, लंडन, ई. स. १९३१

अे हिस्टरी ऑफ इन्डियन लिटरेचर : वॉल्यूम २ जुं : ऑम. विन्टरनित्स, कलकत्ता, ई. स. १९३३

अे हिस्टरी ऑफ इम्पोर्टन्ट ॲन्श्यन्ट टाउन्स ॲन्ड सिटीझ इन गुजरात ॲन्ड काठियावाड : अनंत सदाशिव अल्टेकर, मुंबई, ई. स. १९२६

ऐतिहासिक संशोधन : दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री, मुंबई, ई. स. १९४१

कनिंगहॅमस ॲन्श्यन्ट ज्योग्रफी ऑफ इन्डिया : संपादक सुरेन्द्रनाथ मजमूदार शास्त्री, कलकत्ता, ई. स. १९२४

करकंडचरिउ (कनकामरकृत) : संपादक हीरालाल जैन, जा, ई. स. १९३४

कादंबरी (बाणभट्टकृत) : निर्णयसागर प्रेसनी सातमी आवृत्ति, ई. स. १९२८

काव्यानुशासन (हेमचन्द्रकृत), भाग २ जो, प्रस्तावना: रसिकलाल छो. परीख, मुंबई, ई. स. १९३८

कुमार (मासिक)

कैम्ब्रिज हिस्टरी ओफ इन्डिया, वोल्युम १ (ॲन्श्यन्ट इन्डिया): संपादक इ. जे. रेप्सन, कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस, ई. स. १९२२

खंभातनो इतिहास : रत्नमणिराव भीमराव जोटे · अमदावाद, ई. स. १९३५

गुजराती साहित्यसंमेलन : १२मुं अधिवेशन : अहेवाल अने निबंधसंग्रह, अमदावाद, ई. स. १९३७

गाथासप्तशती (सातवाहन हालकृत) . संपादक पं. मथुरानाथ शास्त्री, ३ जी आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९३३

गुजरातनो मध्यकालीन राजपूत इतिहास, भाग १–२ दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री, अमदावाद, ई. स. १९३७–३९

गुजरातना ऐतिहासिक लेखो भाग १ . संपादक गिरिजाशंकर: वल्लभजी आचार्य, मुंबई, ई. स. १९३३

चतुर्भाणी : संपादक एम. रामकृष्ण कवि अने एस. रमानाथ शास्त्री, पटणा, ई. स. १९२२

चत्वारः कर्मग्रन्था. (देवेन्द्रसूरिकृत) . संपादक मुनि चतुरविजयजी, भावनगर, ई. स. १९४७

जर्नल ओफ धी ओरियेन्टल इन्स्टिट्यूट (त्रैमासिक)

जैन साहित्य और इतिहास : नाथुराम प्रेमी, मुंबई, ई. स. १९४२

जैन साहित्य संशोधक (त्रैमासिक)

जैनिझम इन नॉर्थ इन्डिया : सी. जे. शाह, मुंबई, ई. स. १९३२

बुद्धिस्ट इन्डिया : र्‍हाइस डेविड्झ, न्यूयोर्क, ई. स. १९०३

बृहत् कथाकोश (हरिषेणाचार्य कृत) : संपादक आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, मुबई, ई स. १९४३

भारत के प्राचीन जैन तीर्थ : डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, बनारस, ई. स. १९५२

भारतीय विद्या (अंग्रेजी मासिक)

भारतीय विद्या (हिन्दी-गुजराती त्रैमासिक)

मराठी व्युत्पत्तिकोश. कृष्णाजी पांडुरंग कुलकर्णी, मुंबई, ई. स. १९४६

महावीर जैन विद्यालय रजत महोत्सव ग्रन्थ, मुंबई, ई. स. १९४१

मालविया कोमेमोरेशन वॉल्यूम, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी, ई. स. १९३२

मेघदूत (कालिदासकृत) : संपादक वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पणशीकर, १४ मी आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९३५

मोढेरा : मणिलाल मूळचंद मिस्त्री, वडोदरा, ई. स. १९३५

लाइफ इन ऍन्श्यन्ट इन्डिया एझ डिपिक्टेड इन धी जैन केनन : जगदीशचन्द्र जैन, मुंबई, ई. स. १९४७

लाइफ ऑफ हेमचन्द्राचार्य : डॉ. ग्योर्ज व्यूलर, अनुवादक डॉ. मणिलाल पटेल, शान्तिनिकेतन, ई. स. १९३६

लीलावइ कहा (कोऊहलकृत) : संपादक डॉ. ए. एन. उपाध्ये, मुंबई, ई. स १९४९

लेखपद्धति : संपादक सी. डी. दलाल, वडोदरा, ई. स. १९२५

वदनगर : कनैयालाल भाईशंकर दवे, वडोदरा, ई. स. १९३७

वसुदेव–हिंडी प्रथम खंड (संघदासगणि वाचककृत): भाषान्तर : भोगीलाल ज. सांडेसरा, भावनगर, ई. स. १९४६

वसुदेव–हिंडी प्रथम खंड (संघदासगणि वाचककृत) : मूल. संपादक मुनि चतुरविजयजी अने मुनि पुण्यविजयजी, भावनगर. ई. स १९३०–३१

वसंत रजतमहोत्सव स्मारक ग्रन्थ, अमदावाद, ई स १९२७

विविध तीर्थकल्प (जिनप्रभसूरिकृत) संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई. स. १९३४

वीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना मुनि कल्याणविजय, जालोर, सं. १९८७

शत्रुंजय महातीर्थ मुनि जयंतविजयजी, उज्जैन, सं. १९९८

श्रमण भगवान महावीर . मुनि कल्याणविजयजी, जालोर, सं. १९९८

श्रीकालककथासंग्रह संपादक पं. अबालाल प्रेमचंद शाह, अमदावाद, ई. स. १९४९

सन्मतिप्रकरण (अनुवाद अने प्रस्तावना) पं. सुखलालजी संघवी अने पं. बेचरदास दोशी अमदावाद, ई. स. १९३२

सरस्वतीपुराण संपादक कनयालाल भाईशंकर दवे, मुंबई, ई. स. १९४०

सिलेक्ट इन्स्क्रिप्शन्स बेरिंग ऑन इन्डियन हिस्टरी ॲन्ड सिविलाइझेशन, वॉ. १ संपादक दिनेशचन्द्र सरकार, कलकत्ता, ई स. १९४२

# शुद्धिपत्रक

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ७ | १८ | मारी | मारो |
| २३ | छेल्ली | नाम | नाम. |
| ३८ | ८ | पारसकुल | पारस कूल |
| ४३ | १० | ए | अ |
| ५१ | ३ | इर्ष्याळु | ईर्ष्याळु |
| ६१ | ७ | हती | हतो |
| ७० | १४ | टिकाकारोए | टीकाकारोए |
| १३० | ११ | 'जंबुद्वीपप्रज्ञाप्ति' | 'जबुद्वीपप्रज्ञप्ति' |
| १८२ | ५ | तथा तथा | तथा |
| १८३ | ५ | 'वसुदेव विंडी' | 'वसुदेव-हिंडी' |
| १९६ | २० | अर्वाचीत | अर्वाचीन |
| १९९ | १२ | ताम्रलिप्त | ताम्रलिप्ति |

# जैन आगमसाहित्यमां गुजरात

## अगडदत्त

अगडदत्तनी कथा उत्तराध्ययन सूत्र (अध्य. ४) उपरनी शान्तिसूरिनी वृत्ति (पृ. २१३–१६)मां तथा ए ज सूत्र उपरनी नेमिचन्द्रनी वृत्ति (पृ. ८४–९४)मां आवे छे. शान्तिसूरिकृत वृत्त्यन्तर्गत कथा प्रमाणे, अगडदत्त उज्जयिनीना जितशत्रु राजाना रथिक अमोघरथनो पुत्र हतो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, शंखपुरना राजा सुन्दरनो पुत्र हतो). पिताना मरण पछी अस्त्रविद्या शीखवा माटे ए पिताना एक मित्र पासे कौशांबीमां गयो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, अगडदत्तना स्वच्छंदाचारथी कंटाळी राजाए एने देशवटो आप्यो; वाराणसीमां पवनचंड नामे एक कलाचार्य साथे परिचय थतां एने त्यां रही अगडदत्त अभ्यास करवा लाग्यो). त्यां विद्या शीख्या पछी गुरुनी आज्ञा लई पोतानी प्रवीणता दर्शाववा माटे ए राजकुलमां गयो; नगरमां अश्रुतपूर्व संधिच्छेद करता–खातर पाडता एक चोरने पकडी लाववानी राजाए सूचना करता एणे युक्तिपूर्वक ए चोरने तेम ज एणे एकत्र करेलो भंडार साचवनारी एनी बहेनने–बन्नेने पकडी दीधा.

शान्तिसूरिनी वृत्तिमां अगडदत्तनी कथानो आटलो ज अंश आवे छे; पण नेमिचन्द्रवाळी कथामां प्रसंगविस्तार लांबो छे. चोर पकडवाना एना पराक्रमथी प्रसन्न थईने राजाए अगडदत्तने पोतानी पुत्री कमलसेना परणावी. कमलसेनाने तथा अगाउ कौशांबीमां अस्त्रविद्या शीखतां जेनी साथे पोताने प्रेम थयो हतो ते, श्रेष्ठी बंधुदत्तनी पुत्री मदनमंजरीने साथे लईने मार्गमां अनेक पराक्रम करतो अगडदत्त घेर जाय छे अने सुखपूर्वक रहे छे. पण एक वार पोतानी पत्नीनुं दुश्चरित जाणवामां आवतां निर्वेद पामी दीक्षा ले छे

स्पष्ट छे के बन्ने वृत्तिओमां आपेली अगडदत्तनी कथा बे विभिन्न परंपराओने अनुसरे छे. शान्तिसूरिनी वृत्तिमांनी कथा अति संक्षेपमां, सरल गद्यमां रजू थयेली छे, ज्यारे नेमिचन्द्रनी टीकामांनी कथा ३२९ पद्योमां विस्तरेली होई एक स्वतंत्र कृति बनी रहे छे. बन्नेय संस्कृत टीकाओमां आ कथाओ तो प्राकृतमां ज छे ए दर्शावे छे के तुलनाए पछीना समयनी टीकाओमां बन्युं छे तेम, आ कथाओ प्राचीनतर मूल ग्रन्थोमांथी यथावत् उद्धृत करेली छे. उत्तराध्ययन सूत्र उपरनी चूर्णि (पृ. ११६)मां चारेक पंक्तिमां अगडदत्तनी कथानुं मात्र सूचन करवामां आवेलुं छे.

बौद्ध अथवा ब्राह्मण साहित्यमां क्याय अगडदत्तनी कथानुं स्पष्ट स्वरूपान्तर जोवामां आवतुं नथी. एवुं स्वरूपान्तर प्राप्त थाय तो मूळ कथानुं स्वरूप तेम ज समय नक्की करवामां ए अवश्य उपयोगी थाय, केम के ए तो स्पष्ट छे के जैन कर्ताए एक पराक्रमी क्षत्रिय युवकनां 'साहसोनुं' निरूपण करती लोककथाने धर्मकथानुं रूप आप्युं छे.

जैन आगमेतर साहित्यमां अगडदत्तनी कथा एना सौथी प्राचीन स्वरूपे संघदासगणिकृत बृहत् प्राकृत कथाग्रन्थ 'वसुदेवहिंडी' (ई. स.ना पांचमा सैका आसपास) जे गुणाढ्यनी लुप्त 'बृहत्कथा'नुं जैन रूपान्तर छे तेमा (पृ. ३७–३९) छे. शान्तिसूरिए जे कथानक उद्धृत कर्युं छे तेनी उपर 'वसुदेव-हिंडी'नी स्पष्ट असर छे अने केटलेक स्थाने तो देखीतुं शाब्दिक साम्य छे, ज्यारे नेमिचन्द्रे उद्धरेलुं कथानक, पात्रो अने स्थानोनां भिन्न नामो तथा केटलाक भिन्न कथाप्रसंगो सूचवे छे ते प्रमाणे, कोई जुदी परपराने अनुसरे छे.[1]

अगडदत्तनी कथा एक लोकप्रिय जैन धर्मकथा गणाई छे. ए विशे संस्कृतमां एक 'अगडदत्त पुराण' रचायुं छे,[2] अने जैन गुर्जर साहित्यमां अगडदत्त विशे अनेक नानी मोटी कृतिओ प्राप्त थई छे.[3]

१ उत्तराध्ययननी उपर्युक्त बे टीकाओमां सचवायेली अगडदत्तनी कथानी बे विभिन्न पाठपरपराओनो समावेश डॅा. याकोबीए Erzahlungen in Maharastri ए ग्रन्थमां कर्यो छे, तथा ए ग्रन्थना केटलीक युरोपीय भाषाओमा अनुवाद पण थया छे. 'वसुदेव-हिंडी'-अंतर्गत कथाना अनुवाद माटे जुओ ए ग्रन्थनु में करेलु गुजराती भाषान्तर, पृ ४५-६०. उत्तराध्ययन-टीकाओमांनी कथाओ साथे 'वसुदेव-हिंडी'मांना कथानकनी तुलना माटे जुओ 'न्यू इन्डियन ॲन्टीक्वेरी,' वॉ १ (पृ २८१-९९) मां डॅा. आल्सडॉर्फनो लेख 'ए न्यू वर्झन ओफ धी अगडदत्त स्टोरी.'

२ जिरको, पृ. १

३ जुओ 'जैन गुर्जर कविओ,' भाग १-२-३

## अचलग्राम

अचलग्रामना भद्रिक कौटुम्बिकोए यशोधरमुनिनी पासे दीक्षा लीधी हती. आ अचलग्राम ए ज आभीरदेशमां आवेलुं अचलपुर के एथी भिन्न ए नक्की थई शक्युं नथी.

१ मस, गा. ४४९-५१

## अचलपुर

आभीरदेशमां कृष्णा-वेणा नदीओना संगमस्थान पासे आवेलुं नगर. कृष्णा-वेणाना संगम आगळ आवेला ब्रह्मद्वीप नामे द्वीपमां वसता पांचसो तापसोने आर्य वज्रना मामा आर्य समितसूरिओ प्रतिबोध पमाडयो हतो; ए प्रतिबोध पामेल तापसोथी जैन साधुओनी ब्रह्मद्वीपक नामे शाखानो आरंभ थयो हतो.[१]

जुओ आभीर

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ५४३; आम, पृ ५१५; कस, पृ १३२; कसु, पृ. १३४; ककि, पृ. १७१; कदी, पृ १४९-५०; नसू, पृ. ५१; पिनिम, पृ. १४४.

## अजमेरु

अजमेर. अजमेर पासेना, राजा सुभटपाल-शासित गाम हर्षपुरमां ब्राह्मणो यज्ञमां बकराने मारता हता त्यारे प्रियग्रन्थसूरिए पोतानी

मंत्रशक्तिथी वकराने वाचा अर्पी, ब्राह्मणोने बोध आप्यो हतो.'

१ कथु, पृ. ५०९-१०; कक्षि, पृ. १६९; कथी, पृ. १४८-४९.

अट्टण

अट्टण ए उज्जयिनीनो एक अजेय मल्ल हतो. सोपारकनो सिंहगिरि राजा मल्लोनी साठमारी करावतो अने जे जीते एने घणुं द्रव्य आपतो. अट्टण प्रतिवर्षे सोपारक जईने विजयचिह्न तरीके पताका लई आवतो. आथी सिंहगिरि राजाए एक माछीनुं बळ पारखीने एने पोष्यो; अने ए मात्स्यिक-माछी मल्ल तरीके ओळखायो. बीजे वर्षे अट्टण आव्यो त्यारे मात्स्यिक मल्ले एने हरावी दीधो. एक युवके पोताने हराव्यो तेथी मानभंग थयेलो अट्टण सुराष्ट्रमां एनी बराबरी करे एवो बीजो मल्ल छे एम सांभळीने एनी शोधमां सोपारकथी सुराष्ट्र तरफ जतो हतो त्यां मार्गमां भरुकच्छ पासे एणे एक खेडूत जोयो. ए एक हाथे हळ चलावतो हतो अने बीजे हाथे फलही-कपास चूंटतो हतो' (एगेणं हत्थेणं हलं वाहेति, एकेणं फलहीओ उप्पाडेइ). अट्टणे सुराष्ट्र जवानो विचार मांडी वाळ्यो अने ए खेडूतने धनवान बनाववानी लालच आपी पोतानी साथे उज्जयिनी लई गयो अने एने मल्लविद्या शीखवी. ए मल्ल फलहीमल्ल तरीके प्रसिद्ध थयो. पछी एओ बन्ने सोपारक आव्या. त्यां फलहीमल्ल साथे मात्स्यिक मल्लनुं युद्ध थयुं. पहेला दिवसे मल्लयुद्धनो कंई निर्णय थई शक्यो नहि. ए सांजे अट्टणे पोताना शिष्य फलहीने पूछ्युं के 'तारां क्यां अंग दुखे छे?' अने पछी तेणे कह्युं त्यां एने खूब मर्दन करावीने ताजो कर्यो. बीजी बाजू, सिंहगिरि राजाए पोताना मात्स्यिक मल्लने एवो ज प्रश्न कर्यो; त्यारे एणे गर्वथी उत्तर आप्यो के 'फलही बिचारो कोण छे! हुं एना बापनो पण पराजय करी शकुं एम छुं.' आथी बीजे दिवसे बन्ने वच्चे सम युद्ध थयुं अने त्रीजे दिवसे मात्स्यिक मल्ल हार्यो अने मरण

पाम्यो, तथा अट्टण सत्कार पामीने उज्जयिनी गयो. (आवश्यकसूत्र उपरनी चूर्णिमां अहीं सुधीनुं ज कथानक आप्युं छे.)

उज्जयिनी गया पछी एणे मल्लयुद्धनो त्याग करी दीधो. वळी वृद्ध थई गयो होवाथी संबंधीओ एनुं अपमान करवा लाग्या. आथी संबंधीओने समाचार आप्या विना ज ए कौशांबी चाल्यो गयो. त्यां एक वर्ष आराम लईने रसायणो खाधां तथा बलिष्ठ थयो. पछी एक वार एणे कौशांबीना राजाना मल्ल निरंगणनो मल्लयुद्धमां पराजय करीने एने मारी नाख्यो. पोतानो मल्ल मरण पाम्यो एथी राजाए अट्टणनी प्रशंसा करी नहि, अने तेथी समाजनोए पण न करी. आथी अट्टणे राजानी जाण माटे कह्युं के:—

**साहह वण सउणाणं, साहह भो सउणिगा सउणिगाणं ।**
**णिहतो णिरंगणो अट्टणेण णिक्खित्तसत्थेणं ॥**

[अर्थात् हे वन! पक्षीओने कहे, अने हे पक्षीओ! बीजां पक्षीओने कहो के जेणे शस्त्रो छोडी दीधां हतां तेवा अट्टणे निरंगणने मारी नाख्यो छे.]

आ उक्ति उपरथी राजाए एने अट्टण तरीके ओळख्यो अने एनो सत्कार कर्यो, तथा जीवन पर्यंत चाले तेटलुं द्रव्य आप्युं. द्रव्यलोभथी संबंधीओ पण अट्टण पासे आव्यां. परन्तु 'आ लोको फरी पण मारी पराभव करशे' ए समजीने तथा पोतानी जातने जराग्रस्त जाणीने 'सचेष्ट छुं त्यांसुधी ज धर्म थई शकशे' एवी समजपूर्वक अट्टणे दीक्षा लीधी.[२]

आ कथा, जेमां वास्तविक सामाजिक स्थिति लोकवार्तारूपे निरूपण पामी होय एवो संभव छे ते प्राचीन भारतमां मल्लविद्याना इतिहास माटे घणी अगत्यनी छे, केम के हरिवंश भागवतादिमां कृष्ण-बलरामना तथा कंसना चरित्रप्रसंगमां तथा महाभारतादिमां दुर्योधन

भीम आदिना चरित्रप्रसंगमां आवता मल्ल अने मल्लयुद्धना निर्देश बाद करीए तो ए प्रकारना उल्लेखो के कथानको प्राचीन साहित्यमां विरल छे. मल्लविद्याविषयक स्वतंत्र रचनाओमां हमणां जाणवामां आवेलुं एक 'मल्लपुराण' तथा कल्याणीना चौलुक्य राजा सोमेश्वरकृत सर्वसंग्रहात्मक संस्कृत ग्रन्थ 'मानसोल्लास' (ई. स. नो बारमो सैको)-मानुं 'मल्लविनोद' नामे प्रकरण गणावी शकाय. प्राचीन गुर्जर देशमां मल्लविद्याना इतिहास माटे जुओ गुजरात विद्यासभा—प्रकाशित मारी पुस्तिका 'ज्येष्ठीमल्ल ज्ञाति अने मल्लपुराण.'

उपर टांकेली कथाना मल्लोनां मात्स्यिक अने फलही ए नामो जेम विशेष नामो नथी, पण अनुक्रमे जातिवाचक अने क्रियासूचक छे तेम अट्टण पण विशेष नाम लागतुं नथी, केम के 'अट्टण'नो अर्थ व्यायाम छे, अने ए उपरथी अहीं सतत व्यायाम करनार एक सुप्रसिद्ध मल्ल माटे 'अट्टण' नाम प्रचलित थयुं हशे एवुं अनुमान वधारे पडतुं नथी.

१. उने, पृ. ७९; उत्रा, पृ. १९२

२. आवू., उत्तर भाग, पृ. १५२-५३; उत्रा, पृ १९२-९३; उने; पृ. ७८-७९. वळी जुओ व्यव, पृ ३, ज्यां आम ने अनुसरतो आ कथानकनो सार आप्यो छे. आवूमां आ कथानक मात्स्यिक मल्लनु मरण थाय छे त्यांसुधी ज आप्युं छे.

अणहिल्लवाडक

अणहिल्लवाड पाटण. उत्तर गुजरातमां सरस्वतीने किनारे आवेला लाक्खाराम नामना प्राचीन गामने स्थाने चावडा वंशना वनराजे सं. ८०२=ई. स. ७४६मां पोताना मित्र अणहिल भरवाडना नाम उपरथी वसावेलुं नगर, जे मध्यकालीन हिन्दु गुजरातनुं पाटनगर, तथा ईसवी सनना दसमाथी तेरमा सैकाना अंत सुधी पश्चिम भारतनुं प्रमुख नगर अने सांस्कृतिक केन्द्र हतुं. जैन आगमसाहित्यना

इतिहासमां पाटणनुं विशिष्ट स्थान छे. आगमनां मूळ प्राकृत सूत्रो मगधमां रचायां तो ए उपरनी सौथी प्रमाणभूत विद्यमान संस्कृत टीकाओ, एक मात्र हरिभद्रसूरिकृत टीकाओना अपवादने बाद करीए तो, अणहिलवाडमां अथवा आसपासना प्रदेशमां रचाई छे. आचारांग अने सूत्रकृतांग सूत्र उपरनी शीलांकाचार्यनी सुप्रसिद्ध टीकाओ पाटणथी थोडाक ज माइल दूर आवेला गंभूता (गांभू)मां लखाई हती. विक्रमना बारमा शतकना प्रारंभमां अर्थात् ईसवी अगियारमी सदीना उत्तरार्धमां नवांगीवृत्तिकार तरीके जाणीता थयेला अभयदेवसूरिए जैन आगमनां नव अंग उपर प्रमाणभूत टीकाओ पाटणमां रची अने ए ज नगरमा वसता बीजा एक प्रकांड पंडित द्रोणाचार्ये त्यां ज ए टीकाओनुं संशोधन कर्युं. सं. ११२९=ई. स. १०७३मां दोहडि श्रेष्ठीनी वसतिमां रहीने रचायेली नेमिचन्द्रनी उत्तराध्ययन उपरनी वृत्ति, सं. ११८०=ई. स. ११२४मां सौवर्णिक नेमिचन्द्रनी पौषधशाळामां रहीने रचायेली पाक्षिकसूत्र उपरनी यशोदेवसूरिनी वृत्ति, तथा सं. १२२७=ई. स. ११७१मा जीतकल्पसूत्र उपरनी श्रीचन्द्रसूरिनी व्याख्यानी रचना पाटणमां थई. शान्तिसूरिनी उत्तराध्ययन वृत्ति, आचार्य मलयगिरिनी सरल अने शास्त्रीय वृत्तिओ, द्रोणाचार्यकृत ओघनिर्युक्ति वृत्ति तथा मलधारी हेमचंद्रकृत टीकाओ पण पाटणमां रचाई होवी जोईए एम एकंदरे पुरावाओनो विचार करता अनुमान थाय छे. आगमेतर विषयोमां पण गुजरातनी जे सर्वांगीण साहित्यप्रवृत्तिनुं पाटण सैकाओ सुधी केन्द्र हतु तेनी चर्चा करवानुं आ स्थान नथी.

वधु माटे जुओ **अभयदेवसूरि, द्रोणाचार्य, नेमिचन्द्र, मलयगिरि, यशोदेवसूरि, शान्तिसूरि, शीलाचार्य, श्रीचन्द्रसूरि, हेमचन्द्र मलधारी** इत्यादि.

**अन्धकवृष्णि**

यदुकुळना शौरि राजाना पुत्र. एओ शौरिपुरमां राज्य करता

हता अने पाछळथी एमणे द्वारकामां आवीने राज्य स्थाप्युं हतुं. एमने सुभद्रा राणीथी समुद्रविजय वगेरे दश पुत्रो थया हता, जेओ दश दशार्ह तरीके ओळखाया. एमणे पोताना मोटा पुत्रने राज्य सोंपीने दीक्षा लीधी हती.[२]

१ जुओ दशार्ह
२ अंद, वर्ग १

## अभयदेवसूरि

चंद्र (पाछळथी खरतर) गच्छना आचार्य जिनेश्वरसूरि तथा एमना भाई बुद्धिसागरसूरिना शिष्य आचार्य अभयदेवसूरिए जैन आगमग्रन्थो पैकी नव अंग उपर संस्कृत टीकाओ रची अने तेथी तेओ नवांगीवृत्तिकार तरीके ओळखाया. नीचे प्रमाणे नव अंगो उपर एमनी टीकाओ छे. ज्ञाताधर्मकथा (सं. ११२०=ई. स. १०६४),[१] स्थानांग (सं. ११२०),[२] समवायांग (सं. ११२०),[३] भगवती (सं. ११२८= ई. स. १०७२)[४], उपासक दशा, अंतकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिक दशा, प्रश्नव्याकरण अने विपाक. औपपातिक टीका अने प्रज्ञापना तृतीय पद संग्रहणी गाथा १३३ एमनी रचनाओ छे. आ उपरांत अभयदेवसूरिए जिनेश्वरसूरिकृत षट्स्थानक उपर भाष्य, हरिभद्रसूरिकृत पंचाशक उपर वृत्ति तथा आराधनाकुलक नामे स्वतंत्र ग्रन्थ पण रच्यो छे. वळी अभयदेवसूरिनी विनंतिथी एमना गुरुभाई जिनचंद्र सूरिए 'संवेगरंगशाला' (स. ११२५=ई. स. १०६९) नामे ग्रन्थ रच्यो हतो.[५]

अभयदेवसूरिनी उपर्युक्त आगमग्रन्थो उपरनी वृत्तिओनी प्रशस्तिमां उल्लेख मळे छे ते प्रमाणे, ए वृत्तिओनुं संशोधन निर्वृतिकुलना द्रोणाचार्ये कर्युं हतुं. वळी प्रशस्तिओ उपरथी अनुमान थाय छे के द्रोणाचार्य जेमां मुख्य हता तेवी एक पंडितपरिषद् आ वृत्तिओना

संशोधनमां रस लेती हती.[६] भगवतीवृत्तिना लेखनमां जिनभद्रना शिष्य यशश्चंद्रे अभयदेवने सहाय करी हती.[७]

स्थानांगवृत्तिनी प्रशस्तिमां अभयदेवसूरिए पोतानी वृत्तिरचनाना मार्गमां रहेली मुश्केलीओनो निर्देश करतां उत्तम संप्रदाय–अध्ययन-परंपरानो अभाव, उत्तम ऊहनो अभाव, वाचनाओनी अनेकता, पुस्तकोनी अशुद्धि आदिनो उल्लेख कर्यो छे.[८] खास करीने भगवती सूत्र उपरनी वृत्तिमां एमणे पोताना पूर्वकालीन टीकाकारोना निर्देश कर्या छे, अने ए निर्देशोनुं स्वरूप जोतां ए स्पष्ट छे के ए पूर्वकालीन टीकाओ पैकी अमुक तो एमनी सामे हती, एटलुं ज नहि पण चूर्णिथी ते भिन्न हती.[९]

आ संबंधमां बीजी एक अनुश्रुतिनी नोंध करवा जेवी छे. 'प्रभावकचरित' (सं. १३३४=ई.स. १२७८)ना अभयदेवसूरि–चरित'मां शासनदेवी अभयदेवसूरिने कहे छे के 'पूर्वे निर्दोष एवा शीलांक अथवा कोट्याचार्य नामे आचार्ये अगियार अंगो उपर वृत्ति रची हती; तेमां काळे करीने बे सिवाय बधां अंगोनो विच्छेद थयो छे, माटे संघ उपर अनुग्रह करवा माटे ए अंगोनी वृत्ति रचवानो उद्यम करो.' आ उपरथी अभयदेवसूरिए नव अंगो उपर वृत्ति रची.[१०]

आ अनुश्रुतिमांना शीलांक आचार्य ते शीलाचार्य होवा जोईए. एने आधारे कहीए तो शीलाचार्यनी आचारांग अने सूत्रकृतांग सिवाय बीजां ११ अंगो उपरनी वृत्तिओ अभयदेवसूरिना समय पहेलां नाश पामी गई हती. आथी अभयदेवसूरिए सूचित करेली वृत्तिओ कोई बीजा विद्वाने रचेली होवी जोईए.

आगमसाहित्यना सौथी प्रमाणभूत टीकाकारोमां अभयदेवसूरिनी गणतरी थाय छे. ए टीकाओनी सहाय विना अंगसाहित्यनां रहस्य समजवानुं पछीना समयमां गमे तेवा आरूढ विद्वानो माटे पण लगभग

अशक्य बन्युं होत. पछीना समयना टीकाकारो अने अभ्यासीओए निरंतर अभयदेवसूरिनो आधार लीधो छे.[११]

अभयदेवसूरिनुं परंपरागत चरित्र 'प्रभावकचरित'ना 'अभयदेवसूरि–चरित'मां निरूपेलुं छे.

'सन्मतितर्क' उपर 'तत्त्वबोधविधायिनी' अथवा 'वादमहार्णव' नामे टीका रचनार अभयदेवसूरि राजगच्छना होई नवांगीवृत्तिकारथी भिन्न छे. एक काळे अभयदेव नाम जैन साधुओमां खूब प्रचलित हतुं, अने अभयदेवसूरि नामना दश आचार्यो अत्यार सुधी जाणवामां आव्या छे.[१२]

१ ज्ञाधअ, प्रशस्ति २ स्थासूअ, प्रशस्ति ३ समूअ, प्रशस्ति

४ भसूअ, प्रशस्ति ५ जैसू, पृ २१

६ निर्वृतककुलनभस्तलचन्द्रद्रोणाख्यसूरिमुख्येन ।
पण्डितगणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम् ॥
ज्ञाधअ, प्रशस्ति, श्लो. १०; प्रव्याअ, प्रशस्ति, श्लो. १०

तत्र प्रस्तुतानुयोगशोधिकायां श्रीद्रोणाचार्यप्रमुखपण्डितपर्षदि—
स्थासूअ, प्रशस्ति

शास्त्रार्थनिर्णयसुसौरभलम्पटस्य विद्वन्मधुव्रतगणस्य सदैव सेव्यः ।
श्रीनिर्वृताख्यकुलसन्नदपद्मकल्पः श्रीद्रोणसूरिरनवद्ययशःपरागः ॥
शोधितवान् वृत्तिमिमां युक्तो विदुषां महासमूहेन ।
शास्त्रार्थनिष्कनिकषणकषपट्टककल्पबुद्धीनाम् ॥
—भसूअ, प्रशस्ति, श्लो. ९–१०

अणहिलपाटकनगरे श्रीमद्द्रोणाख्यसूरिमुख्येन ।
पण्डितगणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम् ॥
औसूअ, प्रशस्ति, श्लो. ३

७ भसूअ, प्रशस्ति, श्लो. ७–८

८ असम्बद्धमयहीनवाद् छद्मस्थस्य वियोगतः ।
सर्वज्ञपादपद्मानामद्रोहस्तत्र मे ॥

वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धित. ।
सूत्राणामतिगाम्भीर्यान्मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥
क्षूणानि सम्भवन्तीह केवलं सुविवेकिभिः ।
सिद्धान्तानुगतो योऽर्थः सोऽस्माद् ग्राह्यो न चेतरः ॥

—भसूअ, प्रशस्ति, श्लो १–२

९ 'आयचणिओदएणं'ति इह टीकाव्याख्या–आतञ्चनिकोदकं कुम्भकारस्य यद्भाजने स्थित तेमनाय (?) मृन्मिश्रं जलं तेन । — ए ज, पृ. ६८४

क्वचिट्टीकावाक्यं क्वचिदपि वचश्चौर्णमनघ
क्वचिच्छाब्दीं वृत्तिं क्वचिदपि गम वाच्यविषयम् ।
क्वचिद्विद्वद्वाच क्वचिदपि महाशास्त्रमपर
समाश्रित्य व्याख्या शत इह कृता दुर्गमगिराम् ॥

—ए ज, २५मा शतकनी वृत्तिने अंते

यद्वाङ्महामन्दरमन्थनेन शास्त्रार्णवादुच्छलितान्यतुच्छम् ।
भावार्थरत्नानि ममापि दृष्टौ यातानि ते वृत्तिकृतो जयन्ति ॥

—ए ज, ३०मा शतकनी वृत्तिने अंते.

१० प्रच, १६–श्लो. १०४–१३

११ उदाहरण तरीके जुओ कसु, पृ. २०–२१; ककि, पृ. १२; जैप्रशा, पृ. २०१.

१२ जुओ जैसाइ.

## अभीचि

सिन्धु–सौवीरना राजा उदायननो पुत्र. उदायन राजाए महावीर पासे दीक्षा लेतां पोताना पुत्र प्रत्येनी श्रेयबुद्धिथी राज्य तेने नहि आपतां पोताना भाणेज केशीने आप्युं हतुं. आथी रिसाईने अभीचि पोताना अंतःपुर साथे सिन्धु–सौवीरनुं पाटनगर वीतभय छोडीने चंपामां कूणिक राजा पासे चाल्यो गयो हतो.[१]

आमां आवतो कूणिक ते महावीरनो समकालीन मगधनो राजा, जेने बौद्धो अजातशत्रु कहे छे. एनुं ऐतिहासिकत्व निःसंदिग्ध छे.

आमां आवतो बीजी व्यक्तिओ केशी, अभीचि वगेरे पण ऐतिहासिक होवा संभव छे.

१ भगू, शतक १३, उद्देशक ६

## अरिट्ठपुर

महाराष्ट्रनुं एक नगर.[1]

पालि साहित्यमां शिबिराजाना राज्यनी राजधानी तरीके एक अरिट्ठपुरनो उल्लेख छे, पण ते मिथिलाथी पांचालना मार्ग उपर आवेलुं होय एम जणाय छे.[2] 'प्रश्नव्याकरणवृत्ति'[3] अने 'वसुदेवहिंडी'मां[4] अनुक्रमे अरिट्ठपुर अने रिट्ठपुरनो उल्लेख छे, पण एनो स्थाननिर्णय ए उपरथी थई शकतो नथी. अरिट्ठपुर ते ज रिट्ठपुर, एम पण एटला उपरथी निश्चितपणे कही शकाय नहि.

कदाच मथुरानी जेम अरिट्ठपुर पण बे होय–एक उत्तरमां अने बीजुं दक्षिणमां.

जुओ रिट्ठपुर

१ रम्यमस्ति महाराष्ट्रेष्वरिष्टपुरपत्तनम् ।
तत्र त्रिलोचनो राजा बभूव भुवि विश्रुतः ॥

—बृं, पृ ६७

२ मलालसेकर, 'पालि प्रोपर नेम्स'

३ प्रश्नाभ, पृ ८८

४ वसुदेव-हिंडी, पृ. ७८

## अर्कस्थली

आनंदपुरनुं बीजुं नाम.[1] अर्कस्थली नामनुं निर्वचन एक ज रीते शक्य छे अने ते ए के कोई काळे अर्कस्थली पण कोटयर्कनी जेम अर्क–सूर्यनी पूजानुं केन्द्र होय.

जिनप्रभसूरिना 'विविध तीर्थकल्प'मां वर्णवेलां मथुरानां नीचे प्रमाणे पांच स्थळोमां एक अर्कस्थल छे–अर्कस्थल, वीरस्थल, पद्म-

स्थल, कुशस्थल अने महास्थल:[2] जो के आमांनुं अर्कस्थल ए आपणुं अर्कस्थली नथी.

१ सेत्तविवज्जासो दुणामे फए, जहा–आणंदपुरं अक्कत्थली, अक्कत्थलि आणंदपुर, निचु, उ॰ ११. जुओ आनन्दपुर.

२ 'विविध तीर्थकल्प,' पृ. १८

## अर्धमागध

अर्धमागध–थी जेम प्राकृत भाषानुं एक मिश्र स्वरूप छे तेम स्थापत्यनो पण एक पद्धति होय एम जणाय छे.[1] अमुक प्रकारना मिश्र स्थापत्यने अर्धमागध नाम आपवामां आव्तुं हशे.

१ जंप्रनी वृत्तिमां उतारेलो वर्णक–धवलहर अद्धमागहविब्भमसेलद्ध-सेलसठिअ...तथा ए उपर शान्तिचन्द्रनो वृत्ति–धवलगृह सौधं अर्धमागध-विभ्रमाणि–गृहविशेषाः शैलसंस्थितानि पर्वताकाराणि गृहाणि, जप्रशा, पत्र १०७

## अर्बुद

गुजरातनी उत्तर सरहदे आवेलो आबुनो पहाड, जैनोनां मुख्य तीर्थो पैकी एक.

प्रभास तीर्थमां अने अर्बुद पर्वत उपर यात्रामां संखडि (उजाणी) करवामां आवती हती.[1]

१ कोंडलमेंड पभासे, अब्बुय० ॥३१५०॥ प्रभासे वा तीर्थे अर्बुदे वा पर्वते यात्रायां संखडिः क्रियते । बृक्षे, वि. ३, पृ ८८४. "पभासे अब्बुए य पव्वए जत्ताए सखडी कीरति" इति चूर्णी विशेषचूर्णो च । –ए ज, पृ. ८८३ टि.

## अवन्ति

उज्जयिनी जे जनपदनी राजधानी हतुं ते प्रदेशनुं–माळवानुं प्राचीन नाम.[1] जो के जैनधर्मनुं ए एक प्रमुख केन्द्र हतुं, पण जैन आगम साहित्यमां जे 'आर्यक्षेत्र' तथा एमांना साडोपचीस आर्यदेशोनो उल्लेख छे तेमां अवंति नथी.[2]

जुओ उज्जयिनी, मालव

१ उदाहरण तरीके—अवतीजणवए उज्जेणीए नयरीए ण्हवणुज्जाणे खाइणो ममोर्वारया, उने, पृ ४; अवतीजणवए पज्जोयस्स रण्णो मती रायहण्णो नाम, व्यम, पृ ५१, जनानां लोकानां पदानि आस्थानानि येषु ते जनपदा अवन्त्यादय .., आवी, पृ २११, इत्यादि. जुओ पुगु मां अवन्ति

२ जुओ पृकम्, उद्दे १, सू ५० तथा ए उपरनी क्षेमकीर्त्तिनी वृत्ति

## अवन्तिवर्धन

उज्जयिनीना पालक राजानो पुत्र. राजाए दीक्षा लेता अवन्ति-वर्धनने राज्य सोंप्युं हतुं अने बीजा पुत्र राष्ट्रवर्धन (राज्यवर्धन)ने युवराज बनाव्यो हतो. अवन्तिवर्धने पोताना भाईनी स्त्रीने वश करवा माटे भाईने मारी नाख्यो हतो; पण पाछळथी पश्चात्ताप थतां भाईना पुत्र अवन्तिसेनने राज्य सोंपीने एणे दीक्षा लीधी हती

महावीरना समकालीन, उज्जयिनीना राजा प्रद्योतने बे पुत्रो हता— पालक अने गोपालक. पालक अने अवन्तिवर्धन राजाना उल्लेखो पुराणादिमां पण छे (जुओ केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया, वो. १, पृ. ३११)

जुओ पालक, मणिप्रभ, राष्ट्रवर्धन

१ आनू, उत्तर भाग, पृ १८९-९०. वळी वृ, पृ, ९०-९२

## अवन्तिसुकुमाल

उज्जयिनीनी भद्रा नामे शेठाणीनो पुत्र आर्य सुहस्ती विहार करता एनी यानशाळामां आवीने वस्या हता एक वार संध्याकाळे अवंतिसुकुमाल पोतानी बत्रीस पत्नीओ साथे रमण करतो हतो त्यारे नलिनीगुल्म अध्ययननुं आवर्तन करता आचार्यने एणे सांभळ्या. आथी एने जातिस्मरण थयुं अने ए आचार्यनो शिष्य थयो पछी अवंति सुकुमाले आचार्यनी अनुज्ञा लई, स्मशानमां जई अनशनपूर्वक कायो-

त्सर्ग कर्यो. एना सुकुमार पगमांथी लोही टपकतुं हतुं तेनी वासथी पोतानां बच्चां सहित आवेली एक शियाळणी अवंतिसुकुमालनुं शरीर खाई गई अने ए कालधर्म पाम्या एक सगर्भा पत्नी सिवाय एमनी एकत्रीस पत्नीओए तथा माताए दीक्षा लीधी. सगर्भा वधूओ जन्मेला पुत्रे पोताना पिताना मरणस्थान उपर एक देवमन्दिर कराव्युं, जे महाकाल तरीके ओळखाय छे.¹

१ आचू, उत्तर भाग, पृ १५७. आगमसाहित्यमां अन्यत्र अवंतिसुकुमालना उल्लेखो माटे जुओ व्यम, पृ. ८०, तथा मस (गा. ४३५–३८), सप्र (गा. ६५–६६) अने भप (गा. १६०). हेमचन्द्रे आ प्रसंगनुं वर्णन वधु विस्तारथी कर्युं छे; जुओ 'परिशिष्ट पर्व,' सर्ग ११, श्लो. १५१–७७. अवन्तिसुकुमालना मृत्युनु स्थान आचूमां 'स्मशानमां कथारकुडंग' अने मसमां 'वंशकुडंग' बतावेलुं छे आज पण ए स्थळे कुडगेश्वरनुं स्थान छे एम मस (गा ४३८) नोंधे छे. कुडगेसर,' 'कुडगेश्वर' अथवा 'कुडुंगेश्वर' एवां नामे आ स्थाननो निर्देश अनेक प्रबन्धात्मक ग्रन्थोमा छे 'विविधतीर्थकल्प' (१४मो सैको)नी कोई कोई प्रतोमां एनो 'कुडुंगेश्वर' एवो पाठ छे (अरा, भाग ३, पृ. ५७८).आ 'कुडुंगेश्वर' नाम स्कन्दपुराणना आवन्त्यखंडमा पण छे ए सूचक छे (पुगु, पृ. ३०). महाकाल अने कुडगेश्वरनी एकता संबंधमां जुओ 'विक्रमस्मृतिग्रन्थ'मां डॉ. शार्लोटे क्राउझेनो लेख 'जैन साहित्य और महाकाल मन्दिर.'

## अशकटापिता

आभीर जातिना एक साधु. एमनुं नाम अशकटापिता पड्युं ए विशे आवी कथा आगमोमां आवे छे. ज्यारे गृहस्थावस्थामां हता त्यारे एमने त्यां अत्यंत रूपवती पुत्री जन्मी हती. ए मोटी थया पछी एने गाडानी आगळ बेसाडीने एओ जता हता, ते समये ए तरुणीने जोवा माटे पाछळ आवता आभीर तरुणोए आगळ पहोंची जवानी स्पर्धामां पोतानां गाडां उत्पथ उपर लई जतां गाडां भांगी गयां. आथी लोकोए ए तरुणीनुं नाम 'अशकटा' अने एना पितानुं 'अशकटापिता'

पाड्युं. आ प्रसंगथी निर्वेद पामी अशकटापिताए पोतानी पुत्रीने परणावीने दीक्षा लीधी.[१]

१ उशा पृ १२९-३० (निर्युक्ति गा १२१), निवृ उद्दे० १

अश्वसेन वाचक

आ कोई दार्शनिक छे, अने 'वाचक' पदवी उपरथी जैन होय एम अनुमान थाय छे. विक्रमना अगियारमा शतकमां थयेला आचार्य शान्तिसूरिए पोतानी 'उत्तराध्ययन' टीकामां एमनो मत टांक्यो छे,[१] एटले तेओ एथी प्राचीनतर छे. अश्वसेन वाचक विशे कंई विशेष जाणवामां नथी.

१ उक्तं चाश्वसेनवाचकेन-'आत्मप्रत्यक्ष आत्माय'-मित्यादि, अथाय न दृग्गोचर इति नास्तीत्युच्यते, नायमर्थः सन्तो, यतस्तैरेवोक्तम्-"न च नास्तीह तत् सर्व चक्षुपा यत्र गृह्यते," इत्यादि, उशा, पृ १३२

आनन्दपुर

उत्तर गुजरातमां आवेलुं वडनगर, एनुं बीजुं नाम अर्कस्थली हतुं (जुओ अर्कस्थली)- जमीन मार्गे वेपारनुं ए मोटुं मथक होवाथी तेने स्थलपत्तन कह्युं छे.[१] आ नगरनो किल्लो ईंटोनो बनेलो हतो.[२] आनंदपुर जैन धर्मनुं मोटुं केन्द्रस्थान होवुं जोईए. आनंदपुरथी मथुरा अने मथुराथी आनंदपुर जता तेम ज आनंदपुरमां वसता साधुओना अनेक उल्लेखो मळे छे[३] वीरनिर्वाण सं. ९८०मां (अथवा ९९३मां) =ई. स. ४५४ (अथवा ४६७)मां ध्रुवसेन राजाने पुत्र वीरसेनना मरणथी थयेलो शोक शमाववा माटे आनंदपुरमां सभा समक्ष 'कल्प-सूत्र' वाचवामा आव्युं हतुं एवा उल्लेख 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां छे.[४]

पुष्पमय मुकुट आनंदपुरमां सारा बनता हता तथा 'वेढिम' (जे प्राकृत शब्दनुं 'वेष्टिम' एवुं संस्कृत रूप टीकाकारो आपे छे) एटले के वस्त्रादिना वेष्टनथी बनावेली पूतळीओ वगेरे माटे पण ए

प्रख्यात हतुं.[6] आनंदपुरमां थती यक्षपूजा जाणीती हती.[7] आनंदपुरना लोको शरदऋतुमां प्राचीनवाहिनी सरस्वतीना किनारे जईने संखडि —उजाणी करता हता.[8] प्राचीनवाहिनी सरस्वती उत्तरगुजरातमां सिद्धपुर पासे छे, ज्यां हजी पण कार्त्तिकी पूर्णिमानो मोटो मेळो भराय छे अने आसपासना प्रदेशना लोको एकत्र थाय छे. वळी उपर्युक्त उल्लेख बतावे छे के आनंदपुर ए प्राचीनवाहिनी सरस्वतीथी अदूरवर्ती होवुं जोईए, जे हालना वडनगर साथे ठीक बंध बेसे छे.

आनंदपुरमां प्रचलित केटलांक धाराधोरणोनो पण निर्देश मळे छे; जेम के कोईना उपर खड्गनो प्रहार थवाथी ए मरी जाय तो मारनारनो ऐंशी रूपक दंड थतो,[9] प्रहार थाय पण मरे नहि तो पांच रूपक, अने मोटो कलह करवा माटे साडातेर रूपक दंड थतो.[10]

*आनंदपुर संबंधमां केटलीक लोकवार्ताओ पण आगमसाहित्यनी* टीकाचूर्णिओमां संघराई छे :

*आनंदपुरमां एक ब्राह्मण पुत्रवधूनो सहवास करतो हतो अने* पछी उपाध्यायने कहेतो के— आजे स्वप्नमां मने पुत्रवधूनो सहवास थयो हतो.[11] आनंदपुरनो बीजो एक चतुर्वेदी ब्राह्मण कच्छमां गयानो उल्लेख छे.[12] आनंदपुर ब्राह्मणोनुं केन्द्रस्थान हतुं ए वस्तु आमांथी पण फलित थाय छे.

आनंदपुरनुं 'फालनगर' एवुं पर्याय नाम एक स्थळे आपेलुं[13] छे.

सेंकडो अने हजारो हाथीओथी संकुल विन्ध्य नामे अरण्य आनंदपुरनी पासे आवेलुं हतुं एवो एक उल्लेख 'पिंडनिर्युक्ति'नी टीकामां छे.[14] आ आनंदपुर ए उत्तरगुजरातनुं वडनगर नहि पण विन्ध्याटवी पासेनुं बीजुं कांई आनंदपुर होवु जोईए

१ एना स्थान विषेनी साधारण चर्चा माटे जुओ पृ॰ मां आनन्दपुर. विविध साधनो उपरथी संकलित करेला वडनगरना संक्षिप्त इतिहास माटे जुओ श्री. कनैयालाल दवेकृत पुस्तिका 'वडनगर.'

२ यत्र तु स्थलपथेन शकटादौ स्थापितं भाण्डमायाति तत् स्थलपत्तनम्, यथा आनन्दपुरम्। – बृकभा ग्रन्थ २, पृ ३४२; वळी निचू, भाग २, पृ ४११

३ इष्टरामय प्राकारो यथाऽऽनन्दपुरे, बृकक्षे, ग्रन्थ २ पृ २५१

४ निचू, भाग २, पृ. ४३४; व्यम, भाग ३, पृ. ८६; ए ज, (उद्दे० ८ उपरनी वृत्ति) पृ ४७; सूकृचू, पृ. २५३

५ कस, पृ. ११८–१९; ककि, पृ १२१–१२; कदी, पृ. ११३–१५; कसु, पृ. ३७५–७८.

६ दवैचू, पृ. ७६; अनुहे, पृ. १३, अनुहा, पृ ७

७ आचू, पृ. ३३१

८ बृकक्षे, ग्रन्थ २, पत्र ८८३–८४

९ अशुद्धिओथी भरेली व्यमनी मुद्रित प्रतिमां (भाग १, पृ ५–६) 'रूपकाणामशीतिसहस्रदण्डो' पाठ छे, परन्तु पछीथी बीजा दंडोना जे आंकडा आप्या छे तेनी तुलनाए अहीं ८० 'सहस्र' न होय; आथी 'सहस्रदण्डो' पाठ सुधारीने 'साहस्रदण्डो' लीधो छे

१० व्यम, भाग १, पृ ५–६

११ आम, पृ ५८५; पाय, पृ. ११

१२ आचू उत्तर भाग, पृ. २९१

१३ कथानि, पृ ११९, जुओ कालनगर

१४ आनन्द नाम पुरं तत्र रिपुमर्दनो नाम राजा, तस्य भार्या धारिणी, तस्य च पुरस्य प्रत्यासन्न गजकुलशतसहस्रसंकुल विन्ध्यमरण्य। विनिम, पृ ३१

## आभीर

[१] दक्षिणापथमां कृष्णा अने वेणा नदीनो आसपासनो प्रदेश, जेमां अचलपुर,[1] वेणातट,[2] तगरा[3] वगेरे नगरो आवेलां हतां. आभीर जाति उपरथी जेनु नाम पडेलुं छे तेवा आभीर प्रदेश माटे जुदां जुदां पुराणोमां जे स्थाननिर्देश छे ए जोतां लागे छे के आभीरोनी वसाहतो उत्तरोत्तर दक्षिण तरफ ख़सती हती.[4] जैन आगमोमां आभीरदेश दक्षिणापथमां होवानो निर्देश छे. आर्यसमित अने आर्यवज्र आ प्रदेशमां गया हता.[5]

'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां जुदां जुदां राज्यो अने देशोनां नामोनी एक सूचि छे तेमां 'आभीर' पण छे.[1]

[२] वर्तमानकाळमां 'आभीर' प्रदेशनाम तरीके रह्यो नथी, 'आहीर' जातिमां टकी रह्यो छे. जुदा जुदा वर्णो माटे खीजमां वपराता शब्दोनो निर्देश करतां 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपरनी शीलांकदेवनी वृत्तिमां कह्युं छे के— ब्राह्मणने 'डोड,' वणिकने 'किराट' तथा शूद्रने 'आभीर' कहेवामां आवे छे.'[2]

आभीर जातिमां प्रचलित दियरवटाना रिवाजनुं सूचन पण एक कथानकमां करवामां आव्युं छे : सुरग्राममां यशोधरा नामे कोई आभीरी हती, तेनो योगराज नामे पति अने वत्सराज नामे दियर हता. दियरनी पत्नीनुं नाम योधनी हतुं. एक वार दैवयोगे योधनी अने योगराज समकाळे मरण पाम्यां, एटले यशोधराए पोताना दियर वत्सराज पासे याचना करी के 'हुं तमारी पत्नी थाउं.' पोतानी पत्नी मरण पामी हती ए विचारीने वत्सराजे पण एनो स्वीकार कर्यो.[3] कुलाचारनी वात करतां आभीरोनी मंथनिकाशुद्धिनो खास निर्देश करवामां आव्यो छे, ए वस्तु एमनी गोपालनप्रधान जीवनप्रथानी द्योतक छे.[4]

कच्छमां जैन धर्म पाळता आभीरो हता एम एक स्थळे कह्युं छे. आनंदपुरनो एक दरिद्र चतुर्वेदी ब्राह्मण कच्छमां गयो हतो अने त्यांना आभीरोए एने प्रतिबोध पमाडचो हतो.[12]

१ आभीरदेशेऽचलपुरासन्ने कन्नाबेन्नानद्योर्मध्ये ब्रह्मद्वीपे पञ्चशती तापसानामभूत्, कसु, पृ. ५१२, आहेज जुदा शब्दोमां आ ज उल्लेख माटे जुओ ककि, पृ. १७१ तथा कदी, पृ. १४९.

२ जुओ वेणातट.

३ जुओ तगरा.

४. जुओ पुगु मा आभीर.

५ आचू, पृ. ३९७. वळी जुओ वज्र आर्य तथा समित आर्य.

६ कसु, पृ. ४५७; ककि पृ १५२; फको, पृ. १८१–८२.

७ जगत्यर्था जगदर्था ये यथा व्यवस्थिता पदार्थास्तानाभाषितु शीलमस्य जगदर्थभाषी, तद्यथा–ब्राह्मणं टोडमिति ब्रूयात्तथा वणिजं किराटमिति शूद्रमाभीरमिति श्वपाकं चाण्डालमित्यादि तथा काणं काणमिति तथा खञ्जं कुब्जं वडभमित्यादि तथा कुष्ठिनं क्षयिणं चो यस्य दोषस्त तेन खरपरुष ब्रूयात् य. स जगदर्थभाषी । सूकृशी, पृ. २३४ जुओ 'भारतीय विद्या' मार्च–एप्रिल १९४७ मां मारो लेख 'ए नोट ओान धी वर्ड किराट–ए डिसीटफुल मर्चन्ट.' वळी जुओ गुजराती साहित्य परिषद प्रकाशित मारा वडे अनूदित 'पंचतत्र,' पृ. ११–१२, टिप्पण; तथा एनो उपोद्घात, पृ. ४३–४४ टिप्पण.

८ निनिम पृ ६४.

९ कुलसमय.—कुलाचारो यथा शकानां पितृशुद्धिः, आभीराणां मन्थनिकाशुद्धिः, सूकृशी, पृ ११.

१० आचू, उत्तर भाग, पृ. २९१. जुओ कच्छ.

## आषाढभूति

उज्जयिनीमां आषाढ अथवा आषाढभूति नामे आचार्य हता. कालधर्म पामता एक साधुने तेमणे कह्यु हतुं के 'तुं देवलोकमां जाय तो मने दर्शन आपजे.' आ पछी उन्मार्गे जता आचार्यने देवलोकमां गयेला पेला साधुए नमस्कारपूर्वक प्रतिबोध पमाड्यो हतो, एवुं कथानक छे.'

१ निचू, भाग १, पृ. १९–२०; आप्रर, पृ. ३०

## इक्षुगृह उद्यान

आ उद्यान दशपुरमां आवेलुं हतुं. त्यां रहीने आर्य रक्षिते चातुर्मास कर्यो हतो.'

'इक्षुगृह'नो शब्दार्थ 'शेरडीनुं घर' एवो थाय. तो आ प्रदेशमां ए काळे शेरडीनुं वावेतर थतुं हशे एवी अटकळ करी शकाय!

जुओ दशपुर.

१ व्यसूम, पृ. ४१–४२

इन्द्रदत्त

चिरकालप्रतिष्ठित मथुरा नगरीमां इन्द्रदत्त पुरोहित हतो. प्रासादमां बेठेला एणे नीचे थईने जता जैन साधु उपर पग लटकतो राख्यो अने ए रीते एने माथे पग मूक्यानो संतोष मेळव्यो. एक श्रावक श्रेष्ठीए आ जोयुं, अने क्रोधायमान थईने एणे पुरोहितनो पग कापवानी प्रतिज्ञा करी. ए माटे ए पुरोहितनां छिद्रो शोधवा लाग्यो, पण एमां सफळता नहि मळतां एणे साधुने वात करी. साधुए कह्युं के 'आनां पूछवानुं शुं छे? सत्कार–पुरस्कार परीषह तो सहन करवो जोइए.' श्रेष्ठीए कह्युं: 'पण में प्रतिज्ञा करी छे.' साधुए पूछ्युं: 'पुरोहितने घेर अत्यारे शुं चाले छे?' श्रेष्ठीए उत्तर आप्यो: 'प्रासाद कराव्यो छे; एना प्रवेशमहोत्सव वखते ए राजाने भोजन आपशे.' आचार्य बोल्या: 'ज्यारे राजा प्रासादमां प्रवेश करतो होय त्यारे तमारे एने हाथ खेंचीने आघो करवो अने कहेवु के–*प्रासाद पडे छे*. एटले ए समये हुं विद्याथी प्रासादने पाडी नाखीश.' पछी श्रेष्ठीए ए प्रमाणे कर्युं अने राजाने कह्युं: 'आ पुरोहित तो तमने मारी नाखवा इच्छतो हतो.' क्रुद्ध थयेला राजाए पुरोहित श्रेष्ठीने सोंपी दीधो. श्रेष्ठीए पुरोहितनो पग इन्द्रकीलमां मूक्यो अने पछी कापी नाख्यो.[1]

विक्रमना तेरमा सैकामां गुजरातमां मंत्री वस्तुपाले एक जैन साधुनुं अपमान करनार, वीसलदेव राजाना मामानो हाथ कापी नाख्यो हतो–एवी प्रबन्धोमां मळती अनुश्रुति आ कथानक साथे सरखाववा जेवी छे.

१ उशा, पृ. १२५–२६; उने, पृ ४९

इन्द्रपुर

मथुरानुं बीजुं नाम जो के मथुराथी भिन्न एवुं इन्द्रपुर नामे

एक नगर हतु एवो उल्लेख पण अन्यत्र छे.[२] आ बीजुं इन्द्रपुर ते उत्तर प्रदेशमा बुलंदशहर जिल्लामां डिभाई पासे आवेलुं इन्दोर होवुं घटे, ज्याथी स्कन्दगुप्तनुं गुप्त सं. १४६ (ई. स. ४६६)नुं ताम्रपत्र मळेलुं छे. ए ताम्रपत्रमां ज ए स्थाननुं इन्द्रपुर नाम आप्युं छे (जुओ दिनेशचन्द्र सरकार, 'सिलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स', नं. २७), जेमांथी प्रा. 'इन्दउर' द्वारा 'इन्दोर' व्युत्पन्न थाय.

१ एत्त महुराए चेव बीय नाम इंदपुरं ति । आचू., उत्तर भाग पृ १९३

२ आचू., पूर्व भाग, पृ. ४४८–५०, आम, पृ. ४५३–५४

## उग्रसेन

भोजवृष्णिना पुत्र अने कंसना पिता. एमनां बीजां संतानो अतिमुक्तक, राजीमती वगेरे हतां, जेमणे दीक्षा लीधी हती. जरासंधना भयथी नासीने ए कृष्णनी साथे द्वारकामां आव्या हता. उग्रसेनना वृत्तान्त अनेक जैन चरित्रग्रन्थोमां आवे छे, पण आगमसाहित्यमां तो एमने विशेना केवळ प्रकीर्ण प्रासंगिक उल्लेखो ज प्राप्त थाय छे.[१]

१ उदाहरण तरीके ज्ञाद (पृ ३८–४१) आदिमां द्वारवतीनो वर्णक; वसुनी विविध टीकाओमां नेमिनाथनो चरित्रप्रसंग, इत्यादि.

## उज्जयन्त

गिरनार पर्वत. एना स्थान अने नाम विशेनी चर्चा माटे जुओ पुगुमा 'उज्जयन्त'.

जैन आगम साहित्य अनुसार, उज्जयंतनुं शिखर २२मा तीर्थंकर नेमिनाथनां दीक्षा, केवळज्ञान अने निर्वाणथी पवित्र थयेलुं छे.[१] नेमिनाथना निर्वाणना समाचार सांभळीने दक्षिणनी पाण्डुमथुरामांथी सुराष्ट्र यात्रु आवेला पाण्डवो उज्जयंत उपर आवी, घणुं तप करीने सिद्धिमां गया हता.[२]

उज्जयंत, वैभार वगेरे पर्वतोने क्रीडापर्वत कहेवामां आव्या छे.[2] उज्जयंत उपर घणा प्रपात-जळधोध हता.[4] हाल तो गिरनार धोध माटे जाणीतो नथी, पण गिरनारनी तळेटीमां अशोके बंधावेलुं सुदर्शन तळाव पुष्कळ पाणी भरावाने कारणे वारंवार फाटी जतुं एमां जूना काळना आ धोधनो पण हिस्सो होय.

उज्जयंतादि तीर्थोमां प्रतिवर्ष यात्राओ-उजाणीओ थती हती.[5]

जुओ गिरिनगर तथा रैवतक

१ शाध, पृ. १२६-२७; वश्र. पृ. ३०; आम, पृ. २१४; फसु, पृ ३९९ थी आगळ; ककौ, पृ. १६९-७०, इत्यादि

२ शाध, पृ. १२६-२७

३ भसूभ, शतक ५, उद्दे. ६

४ बृकसे, भाग ३, पृ. ८२७; भाग ४, पृ. ९५७

५ उज्जेंत णायसंडे सिद्धसिलादीण चेव जत्तासु ।
समत्तभाविएसु ण हुंति मिच्छत्तदोसा उ ॥३१९२॥

उज्जयन्ते ज्ञातखण्डे सिद्धशिलायामेवमादिषु तीर्थेषु या प्रतिवर्ष यात्रा:-सङ्खड्यो भवन्ति तासु गच्छतो मिथ्यात्वस्थिरीकरणादयो दोषा न भवन्ति। ए ज, भाग ३, पृ. ८९३

## उज्जयिनी

अवन्ति जनपदनुं पाटनगर. सम्राट् अशोके पोताना पुत्र कुणालने उज्जयिनी कुमारभुक्तिमां आप्युं हतुं,[1] अने कुणालना पुत्र संप्रतिए त्यां रहीने आखा दक्षिणापथ तेम ज सुराष्ट्र उपर आधिपत्य जमाव्युं हतुं.[2]

उज्जयिनीमां जीवंतस्वामीनी प्रतिमा हती, तेने वंदन करवा माटे आर्य सुहस्ती उज्जयिनी आव्या[3] हता. आ सिवाय आर्य महागिरि,[4] चण्डरुद्राचार्य,[5] आर्य रक्षित,[6] भद्रगुप्ताचार्य,[7] आर्य आषाढ[8] वगेरे अनेक आचार्यो उज्जयिनीमां आवता हता. उज्जयिनीना

गर्दभिल्ल राजाए कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनुं हरण कर्युं हतुं, तेथी कालकाचार्य शक लोकोने तेडी लाव्या हता ए ऐतिहासिक अनुश्रुति पण जाणीती छे.[९] उज्जयिनीमां स्नपन नामे उद्यान आवेलुं हतुं, ज्यां साधुओ आराम करता.[१०] उज्जयिनीमां एक काळे पांचसो उपाश्रयो हता.[११]

पण उज्जयिनी केवळ जैन धर्मनुं केन्द्र हतुं एम नहि. भारतवर्षना हृदयभागमां आवेलुं होइ ए जेम एक संस्कृतिकेन्द्र हतुं तेम वेपारनुं पण मोटुं मथक हतुं. दूर दूरना प्रदेशना लोको कार्यवशात् उज्जयिनी आवता. उज्जयिनीना प्रद्योत राजानो आण भरुकच्छ उपर पण हती, एटले लाट अने उज्जयिनीनो संबंध तो स्वाभाविक छे. भरुकच्छमांथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने प्रयोजनवशात् उज्जयिनी मोकल्यो हतो.[१२] दुष्काळना समयमां सुराष्ट्रनो एक श्रावक उज्जयिनी जवा नीकळ्यो हतो अने मार्गमां एने रक्तपट (बौद्ध) भिक्षुओनो संगाथ थई गयो हतो.[१३] आभीर देशना अचलपुर अने उज्जयिनी वच्चे पण एवो ज संबंध हतो अने एक समुदायना साधुओ आभीर देशनां नगरोमां तेम ज उज्जयिनी आसपासना प्रदेशमां विहरता.[१४] उज्जयिनी अने कौशांबी वच्चे पण अरग्जवरनो घणो संबंध हतो (जुओ टशा, पृ. १११). जो के मार्गमां गाढ अटवीमांथी पसार थवानुं होवाथी प्रवासमां विघ्न घणां हतां एम 'उत्तराध्ययन'नी नेमिचन्द्रनी वृत्तिमां तथा 'वसुदेवहिंडी'-मां आवता अगडदत्तना प्रवासवर्णन उपरथी जणाय छे.

'कुत्रिक' अर्थात् त्रिभुवननी कोई पण वस्तु जेमां मळे एवा 'आपण' अर्थात् मोटा वस्तुभंडारो—'कुत्रिकापण' प्राचीन भारतनां बे महानगरो—उज्जयिनी तेम ज राजगृहमां हता.[१५] राजा प्रद्योतना राज्यकाळ दरमियान उज्जयिनीमां नव कुत्रिकापण हता. आ भंडारोमां वस्तुनी कीमत ते खरीदनारना सामाजिक दरज्जा प्रमाणे लेवामां

आवती. जे माणस दीक्षा लेवानो होय ते पोतानां जरूरी उपकरण, पोते सामान्य माणस होय तो कुत्रिकापणमांथी पांच रूपियानी कीमते खरीदी शकतो, जो ते इभ्य (लक्षाधिपति) अथवा सार्थवाह होय तो तेने एक हजार आपवा पडता अने जो ते राजा होय तो तेने एक लाख रूपिया आपवा पडता. एवो कथा छे के तोसलि नगरवासी एक वणिके उज्जयिनीना कुत्रिकापणमांथी ऋषिपाल नामे एक व्यंतर खरीद्यो हतो अने पछी तेने प्रसन्न करीने एनी पासे ऋषितडाग नामे एक तळाव बंधाव्युं हतुं.[१६] ए ज प्रमाणे भरुकच्छ-वासी बीजा एक वणिके कुत्रिकापणमांथी एक भूत खरीद्यो हतो अने तेनी पासे भूततडाग नामे तळाव बंधाव्युं हतुं.[१७] त्रिभुवननी कोई पण सजीव के निर्जीव वस्तु—भूत सुद्धां—कुत्रिकापणमां अलभ्य नहोती एवुं आ कथानको सूचवे छे अने लोकमानसमां उज्जयिनी अने राजगृह जेवां नगरोनी वाणिज्यसमृद्धिए केवुं स्थान जमाव्युं हतुं ए बतावे छे.

प्राचीन भारतना सार्थ मार्गो—'ट्रेड रूट्स'—ना एक महत्त्वना संगमस्थान उपर उज्जयिनी आवेलुं हतुं

एक भोळा पतिने तेनी पुंश्चली पत्नी ऊंटनां लींडां वेचवा माटे उज्जयिनी मोकले छे अने पछी पोते विटसेवा करे छे एवुं कथानक पण मळे छे.[१८]

ऐहिक समृद्धि साथे जोडायेला मोजशोख अने भोगविलास पण स्वाभाविक रीते ज उज्जयिनीमां प्रवर्तमान हता. 'बृहत्कल्पसूत्र'-वृत्तिमांना एक कथानक प्रमाणे—एक देवीए विधवानुं रूप धारण कर्युं अने दासीओथी वींटायेली ते उपाश्रयमां आवी साधुने वंदन करीने बेठी. साधुए पूछ्युं के 'श्राविका! तुं क्यांथी आवी छे?' त्यारे ते बोली के 'पाटलिपुत्रमां हुं जन्मी छुं अने साकेतना एक

श्रेष्ठी साथे मारुं लग्न थयुं हतुं. पतिनुं मरण थतां तीर्थयात्राना मिषथी वडीलोनी रजा लईने भोगनी आकांक्षा करती हुं उज्जयिनी जाउं छुं. में सांभळ्युं छे के उज्जयिनीमां परीषहथी पराजित थयेला घणा साधुओ छे. पण हवे तमने जोया पछी मारुं मन आगळ जवानो ना पाडे छे.[19]

सर्वगणिकाप्रधान देवदत्ता उज्जयिनीनी गणिका हती अने विटोमां प्रधान मूलदेव पण उज्जयिनीमां वसतो हतो.[20]

उज्जयिनी, माहेश्वरी, श्रीमाल वगेरे नगरीओमां लोको उत्सव-प्रसंगोए एकत्र थईने मदिरापान करता हता.[21] अने एवा लोकोमां ब्राह्मणोनो पण समावेश थतो हतो.[22]

उज्जयिनीमां अने तेनी आसपासमां राजाओ अने धनिकोनुं मनोरंजन करनारा वर्गोनी पण वस्ती हती उज्जयिनीनी पासे नटोनुं एक गाम हतुं.[23] उज्जयिनीवासी अट्टणमल्लनुं कथानक पण आ दृष्टिए रसप्रद छे.[24]

उज्जयिनीमां एक वार मोटी आग लागी हती अने नगरनो घणो भाग बळी गयो हतो. आथी जे वेपारीओए नगरनी बहार पोतानो माल भर्यो हतो तेमणे अनेकगणा नाणां उपजाव्यां हता.[25]

मालव जातिना आक्रमणकारो उज्जयिनी अने आसपासना प्रदेशो उपर घणी वार हुमला करता अने माणसोनुं हरण करी जता तथा तेमने गुलाम तरीके वेची नाखता.[26] समय जतां मालव जातिना लोको अवंतिजनपदमां वस्या हशे अने तेथी ए प्रदेश पण पाछळथी 'मालव' नामथी ओळखायो हशे सातमा–आठमा सैकाथी अवन्ति मालव तरीके ओळखाय छे,[27] एवो केटलाक विद्वानोनो मत छे, पण 'अनुयोगद्वारसूत्र' माना एक उल्लेखनो विचार करतां आथी ये जूना समयथी अवंति माटे 'मालव' नाम प्रचारमां होवुं जोईए.[28]

नोंधः—जुदा जुदा साधनो उपरथी रचायेला उज्जयिनीना कालानुक्रमिक इतिहास माटे जुओ विमलाचरण लॉ कृत 'उज्जयिनी इन एन्श्यन्ट लिटरेचर' जो के ए इतिहास मुख्यत्वे बौद्ध अने बीजां साधनोने आधारे लखायो छे जैन साधनोने एमना ध्यानमां तुलनाए ओछां आव्यां जणाय छे

१ बृकसे, भाग ३, पृ ९१७, भनुहा, पृ १०.

२ ए ज. वळी निचू, भाग २, पृ ४३८

३ बृकसे, भाग ३, पृ ९१८

४ जुओ महागिरि आर्य.

५ जुओ चण्डरुद्राचार्य

६ जुओ रक्षित आर्य

७ जुओ भद्रगुप्ताचार्य

८ जुओ आषाढभूति.

९ जुओ कालकाचार्य.

१० उने, पृ ४.

११ आचू, उत्तर भाग, पृ १५६

१२ ए ज, पृ २०९

१३ ए ज, पृ २७८

१४ उशा, पृ १००

१५ बृकभा, गा. ४२१९, बृकसे भाग ४, पृ ११४५. आ विशे जुओ सातमी ओरियेन्टल कोन्फरन्समां मारो लेख 'ए नोट ओन धी कुत्रिकापण'. एना गुजराती सार माटे जुओ 'इतिहासनी केडी'मां 'कुत्रिकापण-प्राचीन भारतना जनरल स्टोर्स' ए लेख, वळी जुओ कुत्रिकापण.

१६ बृकसे, भाग ४, पृ. ११४५-४६,

१७ ए ज.

१८ दवेहा, पृ ५७; स्थासूअ, पृ. २६१

१९ बृकभा, गा. ५७०५-६; बृकसे, भाग ५, पृ १५०९

२० उशा, पृ. २१८; जुओ मूलदेव.

१ आचू, पूर्व भाग, पृ २८१; आनि, गा. ४६९–७१; बृकसे, भाग ५, पृ. १४८९; कसु, पृ. ३०६–७; ककि, पृ. १०५; कसी पृ ९०; निचू, भाग ४, पृ. ८२४ मां आ कथानक छे, पण त्यां 'कंबल-संबल'नो नामनिर्देश नथी.

## कसेरुमती

ए नामनी नदी. ए घणी प्रसिद्ध हती. एने विशेना एक मात्र उपलब्ध उल्लेख उपरथी अनुमान थाय छे के कां तो एमां पाणी रहेतुं नहोतुं अथवा ए पाणी बेस्वाद हतुं.[1]

आ नदीनो उल्लेख भरुकच्छवासी वज्रभूति आचार्यना संबंधमां आवे छे.[2] एथी लाटमां अथवा आसपासना प्रदेशमां ते आवेली हशे.

राजशेखरनी 'काव्यमीमांसा' (त्रीजी आवृत्ति, पृ. ९२ तथा परिशिष्ट पृ. २८४)मां तेम ज अन्यत्र पौराणिक भूगोळ वर्णवतां भारतवर्षना नव भागोमां एक 'कसेरुमान्' प्रदेशनो उल्लेख छे; पण एने आ कसेरुमती नदी साथे कंई संबंध होय एम लागतुं नथी.

१ दिट्ठा वि कसेरुमती, पीयं ते पाणियं, वर तुह नाम न दंसणयं। अत्र कसेरु नाम नदी। तस्या प्रसिद्धिरतीव। नवरं न प्रसिद्ध्यनुरूप तस्याः पानीयमिति क्षेप.। व्यभ (भा. गा. ५८–५९ उपरनी वृत्ति).

२ जुओ वज्रभूति आचार्य.

## काकिणी

एक नानो सिक्को. वीस कपर्दक–कोडी बराबर एक काकिणी थतो.[1] ए सिक्को तांबानो हतो अने दक्षिणापथमां पण तेनो व्यवहार चालतो हतो.[2] एक भिखारीए रूपक वटावीने काकिणीओ करी हती अने दररोज एक–एक काकिणी ते वापरतो हतो एवुं कथानक 'उत्तराध्ययन सूत्र'नी शान्तिसूरिनी वृत्तिमां छे.[3] आम छतां राजपुत्रोनी बाबतमां 'काकिणी' शब्दनो अर्थ 'राज्य' एवो थतो हतो.[4] जैन

मान्यता प्रमाणे चक्रवर्तीनां रत्नोमां 'काकिणी' रत्ननो पण समावेश थाय छे.

काकिणीनी कीमत रूपकना अेंशीमा भाग बराबर हती एम डॉ. याकोबीए केटली टीकाओने आधारे कह्युं छे.[5] 'काकिणी'नुं बीजुं नाम 'बोडी' हतुं एम सं. १४४९=ई. स. १३९३ मां पाटणमां लखायेला 'गणितसार'ना गुजराती अनुवादमां आपेलां तोल, माप अने नाणानां कोष्टको उपरथी जणाय छे.[6] हलकी कीमतना सिक्का तरीके आचार्य हेमचन्द्रनां अपभ्रंश अवतरणोमां 'बोड्डि'नो प्रयोग छे.[7]

१ 'काकिणि' विंशतिकपर्दका', उशा, पृ. २७२

२ ताम्रमय वा नाणकं यद् व्यवह्रियते यथा दक्षिणापथे काकिणी। बृकसे, भाग २ पृ ५७४

३ उशा, पृ २७६

४ जुओ कुणाल.

५ उ. नो अंग्रेजी अनुवाद (सेक्रेड बुक्स ओफ ध इस्ट, ग्रन्थ ४५), पृ. २८

६ '२० कउडे कागिणी ते भणीइ बोडी'—बारमुं गुज. साहित्य-संमेलन, अहेवाल, इतिहास विभाग, पृ. ४०

७ 'केसरि न लहइ बोड्डिअ वि गय लक्खेहिं घेप्पंति'—'प्राकृत व्याकरण,' ४. ३३५

## काननद्वीप

ज्यां जुदी जुदी दिशाओमांथी जळमार्गे माल आवतो हतो एवा जलपत्तन तरीके काननद्वीपनो निर्देश छे.[1] एमां बहारथी नावद्वारा आवतुं धान्य खवातुं हतुं.[2] आ द्वीपनुं 'काळणद्वीप' एवुं नाम पण पाठफेरथी मळे छे.[3]

आ द्वीपनुं स्थान निर्णीत थई शक्युं नथी.

१ आसूचू, पृ २८१; उशा, पृ. ६०५ बन्नेमां आ साथे स्थलपत्तन तरीके मथुरानो उल्लेख छे.

२ दृश्दे, भाग ३, पृ. १८३-८४

३ आसूचू, पृ २८१

**कान्यकुब्ज**

कनोज शहेर. कान्यकुब्ज नगरना राजा साथे एक जैन सूरिनो गोष्ठिप्रबंध 'आवश्यक सूत्र' उपरनी मलयगिरिनी वृत्तिमां छे.[1] प्रस्तुत राजा ते कान्यकुब्जनो प्रतिहारवंशीय आम राजा अथवा नागभट्ट बीजो (सं. ८६४-८९०=ई. स. ८०८-८३४)[2] अने ए सूरि ते बप्पभट्टिसूरि होवा घटे. मोढेराथी कान्यकुब्ज अने कान्यकुब्जथी मोढेरानां बप्पभट्टिसूरिनां पर्यटनो तथा आम राजा साथेनी तेमनी गोष्ठि इत्यादिनु वर्णन 'प्रभावकचरित'-अंतर्गत 'बप्पभट्टिसूरिचरित'मां प्राप्त थाय छे.

कान्यकुब्ज ए निःशंक रीते मध्यकालीन भारतनां सौथी समृद्ध नगरो पैकी एक हतुं. 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपरनी शीलाचार्यनी वृत्तिमां उद्धृत करवामां आवेला एक हालरडामां नकपुर, हस्तकल्प, गिरिपत्तन, सिंहपुर, कुक्षिपुर, आयामुख अने शौरिपुरनी साथे कान्यकुब्जनो पण निर्देश छे. रडता बाळकने आ बधां नगरोना राजा तरीके वर्णवीने छानुं राखवानो प्रयास एमां छे.[3]

१ आम, पृ. ९२-९३

२ मुनशी, 'ग्लोरी धेट वोझ गुर्जर देश,' वो ३, पृ ५९, ७५; ओझा, 'राजपूताने का इतिहास,' खंड १, पृ. १६७

३ रात्रावप्युत्थिता सन्तो रुदन्तं दारकं धात्रीवत् संस्थापयन्त्यनेकप्रकारैरुल्लापनैः तद्यथा—"सामिओ सि णगरस्स य णक्कउरस्स य हत्थकप्पगिरिपट्टणसीहपुरस्स य उज्जयस्स निन्नस्स य कुच्छिपुरस्स य कण्णकुज्जआयामुहसोरियपुरस्से य," सूत्रशी, पृ. ११९

**कार्तवीर्य**

हस्तिनापुरनो राजा, जे पुराणो प्रमाणे माहिष्मतीना सहस्रार्जुन तरीके प्रसिद्ध छे.

जमदग्नि ऋषिनी पत्नी रेणुकानुं हरण कार्तवीर्यनो पिता अनंतवीर्य करी गयो हतो, एथी जमदग्निना पुत्र रामे-परशुरामे एने मार्यो. आथी कार्तवीर्ये जमदग्निनो वध कर्यो; परिणामे परशुरामे सात वार पृथ्वी नक्षत्री करी, जेना बदलामां कार्तवीर्यना पुत्र सुभूमे एकवीस वार ब्राह्मणोनो संहार कर्यो.[1]

सुभूमे एकवीस वार ब्राह्मणोनो संहार कर्यो ए वस्तु पुराणोमां क्यांय नथी ए नोंधपात्र छे.

१ सूकृशी, पृ. १७०

## कालकाचार्य-१

तुरुमिणी नगरीमां रहेती भद्रा नामे ब्राह्मणीना तेओ भाई हता. तेमनो भाणेज-भद्रानो पुत्र दत्त ए नगरना राजाने हांकीने गादी पचावी पड्यो हतो. एणे घणा यज्ञो कर्या हता. तेनी समक्ष कालकाचार्ये यज्ञोनी निन्दा करवाथी दत्ते आचार्यने केद कर्या हता. आचार्यनी भविष्यवाणी अनुसार, राजा पाछळथी भूंडे हाले मरण पाम्यो हतो.[1] आ कालकाचार्ये इन्द्र समक्ष निगोदना जीवो संबंधी व्याख्यान कर्युं होवानी पण कथा छे.

आ कालकाचार्य गर्दभिल्लनो नाश करनार कालकाचार्यथी भिन्न तेम ज एमना पूर्ववर्ती होवानो मुनि कल्याणविजयजीनो मत छे.[2] आ प्रथम कालकाचार्यनो समय तेमणे वीरनिर्वाण सं. ३०० थी ३७६ (=ई. स. पूर्वे २२६थी १५०)नो गण्यो छे.[3]

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ४९५-९६; आम, पृ. ४७८-७९
२ 'प्रभावकचरित,' प्रस्तावना, पृ. २३-२४
३ एज

## कालकाचार्य-२

उज्जयिनीना विषयी राजा गर्दभिल्लनो नाश करावनार तथा पर्युषणपर्वने भादरवा सुद पांचमने बदले चोथना दिवसे करावनार

तरीके आ आचार्य जैन इतिहासमां प्रसिद्ध छे. प्रथम कालकाचार्य ब्राह्मणपुत्र हता, ज्यारे आ द्वितीय कालकाचार्य, 'प्रभावकचरित' अनुसार, धारावासनगरना क्षत्रिय राजा वीरसिंहना पुत्र हता.[1] एमनो जीवनकाळ मुनिश्री कल्याणविजयजीना मत प्रमाणे, वीरनिर्वाणनी पांचमी शताब्दीमां अर्थात् ईसवी सन पूर्वे १ली सदीना अरसामां छे.[2]

उज्जयिनीना गर्दभिल्ल राजाए कालकाचार्यनी युवान बहेन सरस्वती जे पण साध्वी हती तेनुं हरण करीने एने अंतःपुरमां दाखल करी हती. आथी कालकाचार्य पारसकुल–ईरानने किनारे जईने शकोने हिन्दुकदेश–हिन्द (जुओ हिन्दुकदेश) उपर आक्रमण करवा माटे तेडी लाव्या हता. पहेलां तो तेओ बधा सुराष्ट्रमां आव्या. वरसादनो समय होवाथी त्यां रोकाई जवुं पड्युं. पछी चोमासुं पूरुं थतां कालकाचार्ये शकोने गर्दभिल्ल उपर आक्रमण करवा माटे प्रेर्या. लाटना राजाओ जेमनुं गर्दभिल्ले अपमान कर्युं हतुं तेओ पण साथे मळ्या; अने बधाए मळी उज्जयिनीने घेरो घाल्यो. आ बाजू, गर्दभिल्ल राजा गर्दभीविद्यानी साधना करतो हतो. गर्दभीना स्वरूपमां ए विद्या आवीने मोटो अवाज करती, एटले शत्रुसैन्यमां जे कोई एनो अवाज सांभळे ते रुधिर ओकतो धरती उपर पडतो. कालकाचार्ये आ रहस्य जाणीने अनेक बाणावळी योद्धाओने तैयार रहेवा कह्युं के 'गर्दभी पोतानुं मों पहोळुं करीने शब्द करे त्यार पहेलां तमारे ते बाणवर्षाथी पूरी देवुं.' तेओए तेम कर्युं, एटले गर्दभी कोपायमान थई गर्दभिल्ल उपर विष्टामूत्र करी, तेने लात मारीने चाली गई. अबळ बनेला गर्दभिल्लनो नाश करीने उज्जयिनी कब्जे लेवामां आवी, तथा कालकाचार्ये पोतानी बहेनने पाछी संयममां स्थापित करी.[3]

पर्युषणपर्वना तिथिपरिवर्तन संबंधमां आगमोक्त कथानक आ प्रमाणे छे: भरुकच्छमां[4] बलमित्र राजा हतो, अने तेनो भाई भानुमित्र

युवराज हतो. तेमनी बहेन भानुश्री नामे हती, जेनो पुत्र बलभानु हतो. कालकाचार्य एक वार विहार करता त्यां आव्या अने तेमनी देशना सांभळी बलभानुए दीक्षा लीधी. आथी रुष्ट थयेला बलमित्र—भानुमित्रे कालकाचार्यने निर्वासित कर्या. वळी बीजी एक प्राचीन परंपरा प्रमाणे, बलमित्र—भानुमित्र कालकाचार्यना भाणेज हता. तेमणे पोताना पुरोहितनी शिखवणीथी तेमने निर्वासित कर्या हता. ज्यारे त्रीजा एक मत प्रमाणे, राजाए आखा शहेरमां अनेषणा करावी हती—एटले आचार्यने क्यांयथी भिक्षा मळती नहोती. आथी तेमणे नगर छोडी दीधुं. वर्षाकाळमां ज आचार्य प्रतिष्ठान जवा नीकळ्या अने त्यांना संघने तथा श्रावक राजा सातवाहनने अगाउथी पोताना आगमननी खबर आपी. त्यां जईने आचार्ये भादरवा सुद पांचमने दिवसे पर्युषण करवानुं कह्युं, त्यारे राजाए कह्युं, 'ते दिवसे तो मारे लोकरूढि अनुसार इन्द्रमहोत्सव करवानो होय छे, माटे पर्व आपणे छठने दिवसे करीए.' आचार्य बोल्या के 'पर्वनुं अतिक्रमण न थई शके.' आथी राजाए चोथनुं सूचन कर्युं अने ते आचार्ये स्वीकार्युं. त्यारथी चोथना दिवसे पर्युषणनी उजवणी शरू थई.

अविनीत शिष्यना परित्यागनुं एक कथानक पण कालकाचार्यना संबंधमां छे. ए समये कालकाचार्य उज्जयिनीमां रहेता हता. तेमनो कोई शिष्य भणवा इच्छतो नहोतो; आथी नाराज थईने, एमना बहुश्रुत प्रशिष्य सागरश्रमण सुवर्णभूमिमां विहरता हता त्यां, कोईने खबर आप्या सिवाय तेओ चाल्या गया हता. सागरश्रमणे कालकाचार्यने ओळख्या विना गर्वथी व्याख्यान करवा मांड्युं. पाछळथी बीजा साधुओ आवी पहोंचतां रहस्यस्फोटन थयुं अने कालकाचार्ये सागरश्रमणने प्रज्ञापरीषह सहन करवा—ज्ञाननो गर्व नहि करवा विशे उपदेश आप्यो. कालकाचार्य आजीवको पासे अष्टांग महानिमित्तनो अभ्यास करवा माटे गया होवानो उल्लेख संघदासगणिना 'पंचकल्प'

माण्यता छे;[9] एटले बीजा अनेक प्राचीन जैन आचार्योनी जेम तेओ नैमित्तिक–ज्योतिषी हता. वळी निमित्तशास्त्रमां जैन आचार्यो करता पण ए काळे आजीवको चढियाता हता एम आ उल्लेख पुरवार करे छे.

कालकाचार्य एक ग्रन्थकार पण हता एनो पुरावो मळे छे. सुप्रसिद्ध जैन कथाग्रन्थ 'वसुदेव–हिंडी'ना प्रारंभमां 'प्रथमानुयोग'नो आधार टांक्यो छे अने 'वसुदेव–हिंडी'नी कथानो सारांश 'प्रथमानुयोग' ग्रन्थमांथी उद्धृत थयो होवानुं सूचन त्यां करवामां आव्युं छे. संघदासगणिना 'पंचकल्प' भाष्य प्रमाणे 'प्रथमानुयोग'ना कर्ता आर्य कालक हता. बारमा अंग 'दृष्टिवाद'–अंतर्गत 'मूळ प्रथमानुयोग' जेनो सविस्तर उल्लेख 'नंदिसूत्र'मां श्रुतज्ञाननुं स्वरूप वर्णवता करेलो छे ते सुसंबद्ध ग्रन्थरूपे नष्ट थता तेनो पुनरुद्धार आर्य कालके कर्यो होय एम अनुमान थाय छे पण आर्य कालकनो पुनरुद्धृत 'प्रथमानुयोग' पण आजे घणा सैका थया नाश पामी गयेलो छे.[8]

कालकाचार्य विशेना प्रासंगिक उल्लेखो पण आगम साहित्यमां अनेक स्थळे छे[9]

आगमोत्तर साहित्यमां पण कालकाचार्यनी कथा ए साहित्यरचना माटे एक खूब ज लोकप्रिय विषय रह्यो छे. संस्कृत, प्राकृत तेम ज जूनी गुजरातीमां–गद्यमां तेम ज पद्यमां मोटी संख्यामां जुदा जुदा ज्ञात तेम ज अज्ञात लेखकोने हस्ते कालकाचार्यनी कथाओ रचाई छे अने 'कल्पसूत्र' तेम ज 'उत्तराध्ययन' जेवा आगमसाहित्यना पवित्र ग्रन्थोनी जेम 'कालकाचार्य कथा'नी पण सचित्र हस्तप्रतो मळे छे[10]

'प्रज्ञापना सूत्र'ना कर्ता आर्य श्यामने केटलाक विद्वानो कालकाचार्यथी अभिन्न गणे छे.[11]

उपर्युक्त बे कालकाचार्य उपरांत ए ज नामना त्रीजा एक

आचार्य पण थया होवानुं अनुमान जैन शास्त्रो अने स्थविरावलीओ उपरथी केटलाक विद्वानो करे छे.[12]

१ प्रच, ४–श्लो. ३–७.

२ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना पृ १३–१४

३ निचू, भाग ३, पृ. ५७१–७२

४ निचूनी टाइप करेली प्रतमा अहीं मरुकच्छने बदले उज्जयिनी छे, पण अन्य मूळ ग्रन्थोमां मरुकच्छ छे एटले निचूना पाठमां कंईक भ्रष्टता होवानुं अनुमान थाय छे.

५ निचू, भाग ३, पृ. ६३३

६ उचू, पृ. ८३–८४; उशा, पृ १२५ (नि. गा. १२०); उने, पृ. ५०

७ प्रच (अनुवाद), पृ. २३

८ 'वसुदेव-हिंडी' (अनुवाद) पृ. ३६

९ व्यभ (उद्दे. १०), पृ. ९४; बृकक्षे, भाग ५, पृ १४७८ तथा १४८०; बृकम, भाग १, पृ ७३–७४; कसु, पृ. ५२४–२५; करी, पृ ११३–१५, वकि, पृ १७३, १७६–७९; कदी, पृ. ३–५; कसवि, पृ ११८–१९, आप्र, पृ ७, इत्यादि

१० कालकाचार्य विशेनी जूनी कथाओ माटे जुओ साराभाई नवाब-प्रकाशित 'श्रीकालक-कथासंग्रह' एमां नथी संघराई एवी सोळमा सैकानी गुजराती गद्यमां लखायेली कथा माटे जुओ 'प्रस्थान,' फागण-चैत्र, सं १९८८ मां मारो लेख 'कालकाचार्यकथा' कालककथानी हाथप्रतोमां मळतां चित्रोना अभ्यास माटे जुओ नॉर्मन ब्राउनकृत 'स्टोरी ओफ कालक'

११ जुओ *श्याम आर्य.*

१२ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ. २३; 'कालककथासंग्रह,' प्रस्तावना, पृ ५२–५३.

कालणद्वीप

जुओ काननद्वीप

### कालनगर

आनंदपुरनुं बीजुं नाम. त्यां ध्रुवसेन राजानो पुत्रमरणनो शोक शमाववा माटे 'कल्पसूत्र'नी वाचना थई हती.[1]

जुओ आनन्दपुर

१ ध्रुवसेननृपस्य पुत्रमरणार्त्तस्य समाधिनाधातुमानन्दपुरे, संप्रति कालनगरमहास्थानाख्यया सङ्घे समासमक्षमयं ग्रन्थो वाचयितुमारब्ध इति। कसंवि, पृ. ११८–१९. आ उल्लेखने शब्दशः स्वीकारीए तो कसंविना कर्ता जिनप्रभसूरिना समयमां ( १४ मो सैको ) आनंदपुर 'कालनगर' तरीके जाणीतुं हतुं. आ उल्लेख विचारणीय एटला माटे छे के जैन के अन्य साहित्यमां उपलब्ध थतां आनंदपुरनां अनेक नामोमां आ नाम नथी.

### कालवेशिक

मथुराना जितशत्रु राजाना काला नामे वेश्याथी थयेलो पुत्र. दीक्षा लीधा पछी विहार करता तेओ मुद्गशैलपुर ज्यांना हतशत्रु राजा साथे तेमनी बहेन परणावी हती त्यां गया हता. त्यां प्रतिमा—कायोत्सर्ग ध्यानमां[1] रहेला हता त्यारे एक शियालणीए तेमने फाडी खाधा हता.[2]

'भगवती सूत्र' ( शतक १, उद्दे० ९ )मां पार्श्वापत्य कालास्यवेशिपुत्र अणगारनो वृत्तान्त आवे छे ते आथी भिन्न छे के केम ए कहेवुं मुश्केल छे

१ आ जैन पारिभाषिक शब्द छे, अने मूर्तिवाचक सर्वसाधारण 'प्रतिमा' शब्दथी भिन्न छे.

२ उशा, पृ. १२१; उने, पृ. ४७.

### कुङ्कण

जुओ कोङ्कण

### कुञ्जरावर्त

कुंजरावर्त्त अने रथावर्त्त ए बे पर्वत पासे पासे आवेला हता.

जुओ रथावर्त्तगिरि

**कुडङ्गेश्वर**

उज्जयिनीमां अवंतिसुकुमालना देहोत्सर्गना स्थान उपर तेना पुत्रे बंधावेलुं मन्दिर.

जुओ अवन्तिसुकुमाल

**कुणाल**

सम्राट् अशोकनो पुत्र. अशोके तेने उज्जयिनी कुमारभुक्तिमां आप्युं हतुं. ते आठ वर्षनो थयो त्यारे अशोके तेना उपर एक पत्र पाठव्यो अने तेमां लख्युं के–'अधीयतां कुमारः' (कुमार विद्याभ्यास करे). पण कुणालनी अपर माताए ए उपर अनुस्वार मूकीने 'अंधीयतां कुमारः' (कुमारने अंध बनाववामां आवे) एम करी दीधुं. कुणाले तो पितानी आज्ञा शिरोधार्य गणीने तपावेली सळीथी आंखो आंजी अने अंध बन्यो. आ वात जाणीने राजाए उज्जयिनी अन्य कुमारने आपी, अने कुणालने बीजां गामडां आप्यां. कुणाल संगीतविद्यामां निपुण हतो. एक वार अशोक पासे आवीने पडदा पाछळथी गान करीने तेणे अशोकने प्रसन्न कर्यो. अशोके पूछ्युं, 'तने शुं आपुं?' त्यारे कुणाल बोल्योः

चंदगुत्तपपुत्तो य बिंदुसारस्स नत्तुओ।
असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जायइ कागिणिं॥

(चंद्रगुप्तनो प्रपौत्र, बिन्दुसारनो पौत्र अने अशोकश्रीनो अंध पुत्र काकिणी मागे छे.)

अशोके पुत्रने ओळख्यो अने आलिंगन कर्युं. अमात्योए कह्युं के 'राजपुत्रोनी बाबतमां काकिणीनो अर्थ राज्य थाय छे.' पछी कुणालना पुत्र संप्रतिने राज्य आपवामां आव्युं.[2]

आ वृत्तांतमांनी बधी व्यक्तिओ ऐतिहासिक छे.

जुओ संप्रति

१ जुओ काकिणी. 'काकिणी'मां राज्यनो अर्थ तो केवळ लक्षणाथी ज आवी शके

२ बृकभा, गा, २९२-९४; बृक्म, भाग १, पृ ८८-८९; बृक्षे, भाग ३, पृ. ९१७; अनुहा, पृ. १०-११; फकि, पृ १६४-६५, इत्यादि.

कुण्डलमेण्ठ

कुंडलमेंठ नामे व्यंतरनी यात्रामां भरुकच्छनी आसपासना घणा लोको संखडि–उजाणी करता हता.[1]

१ कोंडलमेंड पगाछे० बृकभा, गा. ३१५०. तथा कुण्डलमेण्ठनाम्नो वानमन्तरस्य यात्रायां भरुकच्छपरिसरवर्ती भूयान् लोकः संखडिं करोति। बृक्षे, भाग ३, पृ. ८८३-८४. वळी जुओ १ शां ज टिप्पणमां आपेलुं चूर्णि अने विशेषचूर्णिनुं अवतरण—"अहवा कोंडलमिंढे कोंडलमेंढो वाणमंतरो। देवद्रोणी भरुयच्छाहरणीए, तत्थ यात्राए बहुजणो संखडिं करेइ। ...' इति चूर्णौ विशेषचूर्णौ च।

कुत्रिकापण

कुत्रिक एटले त्रणे भुवननी तमाम वस्तुओ जेमां मळे एवो आपण एटले दुकान ते कुत्रिकापण.[1] कुत्रिकापणमां वस्तुनुं मूल्य खरीदनारना सामाजिक दरज्जा प्रमाणे लेवामां आवतुं. जे माणस दीक्षा लेवानो होय ते पोतानां जरूरी उपकरण, पोते सामान्य माणस होय तो पांच रूपियाने कीमते खरीदी शकतो, जो इभ्य (लक्षाधिपति) अथवा सार्थवाह होय तो तेणे एक हजार आपवा पडता, अने जो ते राजा होय तो तेणे एक लाख आपवा पडता.[2] राजगृहमां श्रेणिकना राज्यकाळमां धनिक श्रेष्ठीपुत्र शालिभद्रे दीक्षा लेती वखते पोतानुं रजोहरण अने पात्र कुत्रिकापणमांथी दरेक माटे एक लाख आपीने खरीद्यां हतां.[3] महावीरस्वामीना जमाई क्षत्रियकुमार जमालिए दीक्षा

लीधी त्यारे[4] तेम ज राजा श्रेणिकना पुत्र मेघकुमारे दीक्षा लीधी त्यारे[5] पण एटली ज कीमते पात्र अने रजोहरण कुत्रिकापणमाथी खरीदवामां आव्या हता

राजा चंडप्रद्योत ज्यारे अवन्तिजनपद उपर राज्य करतो हतो त्यारे उज्जयिनीमा आवा नव कुत्रिकापण हता, तथा राजगृहमा श्रेणिकना राज्यकाळमा पण कुत्रिकापण हतो.[1] वळी कुत्रिकापण साथे केटलीक लोकवार्ताओ पण जोडाई छे, जेमा कुत्रिकापणमा भूत पण मळता एम कह्युं छे.[2] आ प्रकारनी लोकप्रसिद्ध वार्ताओ कुत्रिकापणना वृत्तान्त साथे वणाई गई छे ए वस्तु ज बतावे छे के कुत्रिकापण ज्यारे केवळ भूतकाळनी वस्तु बनी गयो हतो त्यारे पण लोकमानसे एनी स्मृति केवी रीते संघरी राखी हती.

कुत्रिकापण जेम त्रिभुवननी सर्व वस्तुओनो भंडार हतो तेम इच्छित वस्तु संपादित करवानी लब्धिवाळा अथवा सकल गुणना भंडार साधुने 'कुत्तियावणभूआ' ('कुत्रिकापण जेवा') कह्या छे[6]

[ नोंध —कुत्रिकापण विशेना आगमसाहित्यना केटलाक प्रासंगिक उल्लेखो माटे जुओ 'अभिधानराजेन्द्र,' ग्रन्थ ३ वळी सातमी अखिल भारत प्राच्यविद्या परिषदना अहेवालमा मारो लेख 'ए नोट ओन धी कुत्रिकापण' तथा 'इतिहासनी केडी मा ग्रन्थस्थ थयलो लेख 'कुत्रिकापण अर्थात् प्राचीन भारतना जनरल स्टोर्स' जोवो ]

१ बृकभा, गा ४२१४ तथा ते उपरथी क्षमकीर्तिनी वृत्ति; भसूअ, शतक ९, उद्दे. ३३

२ बृकभा, गा ४२१५ तथा ४२२०–२२, बृकक्षे, भाग ४, पृ ११४४–४६.

३ एज

४ भसू, शतक ९, उद्दे. ३३

५ ज्ञाध, पृ ५३

६ बृकभा, गा. ४२२०, बृकक्षे, पृ ११४५–४६.

७ जुओ उज्जयिनी

८ ते णं काले णं ते णं समये णं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो कुत्तियावणभूआ, बहुस्सुया, बहुपरिवारा पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा...भगु. शतक २, उद्दे. ५. जुओ एमांना अपोरेखित शब्द उपरनी अभयदेवसूरिनी वृत्ति—× × 'कुत्तिआवणभूय'त्ति कुत्रिकं स्वर्ग-मर्त्य-पाताललक्षणं भूमित्रयं, तत्संभव वस्तु अपि कुत्रिकम्, तत्संपादक आपणो हट्ट कुत्रिकापणः—तद्भूताः । समीहितार्थसंपादनलब्धियुक्तत्वेन सकलगुणोपेतत्वेन वा तदुपमाः ।

## कुमारपाल

गुजरातनो प्रसिद्ध चौलुक्यवंशीय राजा (सं. ११९९–१२२९ =ई. स. ११४३–११७३). जैनधर्म प्रत्येनुं एनुं वलण जाणीतुं छे. कुमारपालनां बहेन अने बनेवी एकवार द्यूत रमतां हतां तेमा बनेवीए 'मूंडियाने मार' एम कहीने जैन साधुनी मश्करी करी हती एमांथी घोर वेरनां बीज वावयां हतां.[1]

१ धात्र्य, पृ. १३५.

## कुम्भकारकट

चंपानगरीना (केटलाकना मत मुजब, श्रावस्तीना) स्कन्दक राजाए पोतानी बहेन पुरंदरयशा कुंभकारकटना राजा दंडकी साथे परणावी हती. केटलाक समय पछी स्कन्दके दीक्षा लीधी अने विहार करतां ते कुंभकारकट लई पहोंच्यो, त्यां दंडकीना आदेशथी एनो वध करवामां आव्यो. स्कन्दक मरीने अग्निकुमार देव थयो अने तेणे आखुं ये नगर बाळीने भस्म करी नाख्युं. आम कुंभकारकट नगरने स्थाने अरण्य बन्युं अने दंडकना नाम उपरथी दंडकारण्य तरीके ओळखायुं.[1]

दक्षिण गुजरातमां डांगथी शरू थता अने गोदावरी नदीनी आसपास सुधी [illegible] अरण्यने दंडकारण्य गणवामां आवे छे. वळी कुंभकार[illegible] पात्र कुत्रिक[illegible]तो 'कट' पदान्त नोंधपात्र छे. जो के जैन [illegible] हता. महावीरस्वामी[illegible]ने प्राकृतमां एनुं 'कड'.एवुं रूप अपाय

छे, छतां मूळे ते संस्कृत 'कृत'मांथी व्युत्पन्न थयेल छे. प्राचीन अने मध्यकालीन भारतमां संख्याबंध नगरोनां नामने अंते 'कट' पदान्त मळे छे, जेमके कोपकट,[2] भोगकट,[3] वंशकट,[4] वेणाकटक,[5] इत्यादि. पंचासरना जयशिखरी उपर आक्रमण करनार भुवड कल्याणकटकनो राजा हतो ए जाणीतुं छे. ओरिसाना पाटनगर 'कटक'नुं नाम आवी रीते मूळ कोई आखा नामनो संक्षेप हशे—जेम 'अणहिलवाड पाटण'नो संक्षेप 'पाटण' छे तेम. जावा वगेरे भारतनी प्राचीन वसाहतोमां 'जोग्यकर्त,' 'जकर्त' वगेरे नगरोमां नामोने अंते 'कर्त' पदान्त छे, ए संस्कृत 'कृत'मांथी छे,[6] जेमांथी उपर्युक्त 'कट' पण व्युत्पन्न थयेलो छे. गुजरातनां 'कडुं' 'कडी' वगेरे स्थळनामोनी व्युत्पत्ति आ रीते कृतकम्7 7कटकम्7कडउं7कडुं तथा*कृतिका7कडिआ7कडी एम साधी शकाय. संस्कृतमां 'कटक'नो एक अर्थ 'सैन्यनी छावणी' एवो थाय छे, ए आ साथे सरखावी शकाय. जो के त्यां पण ए शब्द प्राकृतमांथी संस्कृतमां लेवामां आव्यो होय ए ज संभवित छे.

जुओ दण्डकारण्य

१ बृकमा, गा. ३२७४; उचू, पृ. ७३; उने, पृ. ३६; उशा, पृ. ११४–१६; निचू, पृ १११३.

२ कदी, पृ ११८

३ उशा, पृ. ८५

४ 'गुजरातना ऐतिहासिक लेखो,' भाग १ नं. ५४, ६०, ८८

५ 'तंत्रोपाख्यान,' पृ १२; 'पंचतंत्र' (अनुवाद), उपोद्घात, पृ. ३९.

६ चेटरजी, 'इन्डो-आर्यन ॲन्ड हिन्दी,' पृ. ६९.

## कुम्भकारप्रक्षेप

वीतमय नगरनुं बीजुं नाम. ए सिनवल्लीमां आवेलुं हतुं. सिन्धु–सौवीरनो उदायन राजा जे साधु बनी गयो हतो तेणे अहीं एक

४ निचू, भाग १, पृ ४६.

५ बृकमा, गा. २८५५; बृकक्षे, भाग ३, पृ. ८०७ चूर्णि अने विशेषचूर्णिनु अवतरण पण त्यां आपेलुं छे.

६ स्थासूअ, पृ ४९०; पाय, पृ ५०.

७ आहे, पृ ५५; आम, पृ ५१२

८ आरी, पृ. ३७१.

९ निचू, पृ ८२७,

१० तत्थ जो आसासदीवो सो दुविधो-सदीणो असदीणो य, तत्थ सदीणो णाम जो जलेण छादेज्जति, सो ण जीवितत्थसत्ताणाय, जो पुण सो विरिछण्णत्तणेण उसितत्तणेण य जलेण ण छादेज्जति सो जीवितत्थीण त्राणाय, असदीणो दीवो जहा कोंकणदीवो, उचू, पृ ११४–१५.

११ आचू, उत्तर भाग, पृ. ७७; पाय, पृ ५६; कसु, पृ. ९; ककि, पृ. ५; कोंकणार्यना मात्र सूचनरूप निर्देश माटे जुओ जीकचू, पृ १०, १४, १५ तथा जीकचूव्या, पृ ४३

१२ आचू, उत्तर भाग, पृ २८२–८३, आम, पृ. १३६; बृकम, भाग १, पृ ५५

## कोङ्कणक

एक अनार्य जाति,[1] 'कुकणा' नामथी ओळखाती आदिवासी प्रजा सुरत, थणा, पश्चिम खानदेश, वगेरे जिल्लाओमा वसे छे तेने ज आ 'कोंकणक' गणवी जोईए. 'कोंकण' ए प्रदेशनाम आ जाति नाम उपरथी पड्युं हशे.

१ प्रव्या, पृ. १४.
२ प्रसू, पृ. ५४.

## कोटिपताका

करोडपतिओ महोत्सवप्रसंगे पोताना मकान उपर समृद्धिसूचक कोटिपताका चढावता.[1]

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ४७७–४८; आम, पृ. ४५२.

## कोट्याचार्य

जिनभद्रगणिकृत 'विशेषावश्यक भाष्य'ना विवरणकार. एमने 'आचारांग,' 'सूत्रकृतांग' आदि उपर वृत्तिओ लखनार शीलाचार्यथी अभिन्न गणवामां आवे छे.

जुओ शीलाचार्य

## कोरण्टक उद्यान

भरुकच्छनुं एक उद्यान. वीसमा तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामी त्या घणी वार समोसर्या[1] हता. कोरंटक आदि उद्यानोमां जईने देवतानी समक्ष आलोचना करी प्रायश्चित्त लेवानुं विधान छे.[2] वादी देवसूरिकृत 'स्याद्वादरत्नाकर'ना मंगलाचरण उपरथी जणाय छे के आ उद्यान भरुकच्छना ईशान खूणे आवेलुं हतुं.

कोरंट अथवा कोरंटक एक वनस्पतिविशेष छे अने प्राकृत साहित्यमां एना उल्लेखो छे (जुओ 'पाइअ सद्द महण्णवो'). हेमचन्द्रना 'निघंटुशेष'मां गुल्मकांडमां, नरहरिकृत 'राजनिघंटु'मां तेम ज अन्य निघंटुओमां तेनो 'कुरंटक' तरीके उल्लेख छे. आ 'कोरंटक' के 'कुरंटक'ने गुजरातीमां 'कांटासेरियो' कहे छे. एनी जुदी जुदी चार जातो छे.[3] 'निघंटु आदर्श'ना कर्ता श्री. बापालाल ग. वैद्य ए विशे ता. १४–१२–५० ना पत्रमां मने लखे छे "आप कोरंटक नामे उद्याननी वात करो छो ए मारे माटे नवी माहिती छे, परन्तु आवो उद्यान होय तो नवाई जेवुं न कहेवाय. आ छोड अने तेमा ये एनी चारे जातो उद्यानमां होय तो एनुं दृश्य खरेखर रमणीय लागे तेवुं छे ज. परन्तु आ छोड छे. बहु सारुं पोषण मळे तो गुल्मनी कोटिमां आवे, परन्तु वृक्ष तो आ नथी ज–सघन छायादार वृक्ष तो नथी ज परन्तु भरूचना ईशान खूणामा कोरंटक नामे उद्यान हतो ए माहिती मने खूब ज गमी छे. उद्यानमां बीजा वृक्षो तो होय ज, परन्तु आ

कमनीय छोडीए कोई रसिक कवि के बीजानी दृष्टि खेंची लागे ठे अने एटले ज आ नाम उद्यानने आप्युं लागे छे."

१ तीर्थंकरना महामंगल आगमन माटे प्रयोजातु कियापद 'समोसरडुं' अने नाम 'समोसरण' छे. ए जैन पारिभाषिक शब्द छे. एनी व्युत्पत्ति संस्कृत सम् + अव + सृ उपरथी छे

२ व्यम, विभाग १, पृ. १३७.

३ 'निषद्ध आदर्श,' उत्तरार्ध, पृ. २१९-२४.

**कोसुंबारण्य** --

एक अरण्य, ज्यां जराकुमारनुं बाण वागवाथी कृष्ण वासुदेव मरण पाम्या हता.

द्वैपायन नामे परिव्राजक जे सांब आदि सुरामत्त यादवकुमारोने हाथे मरण पामी अग्निकुमार देव थयो हतो.तेणे द्वारकानुं दहन कर्या पछी बलराम अने कृष्ण सुराष्ट्र देश छोडीने पांडवो पासे दक्षिण मथुरा तरफ जता हता. द्वारकाथी पूर्व तरफ नीकळी तेओ हस्तिकल्प नगरमां आव्या, त्यांना राजा अच्छदंतने हरावी दक्षिण तरफ जतां तेओ कोसुंबारण्य (प्रा. कोसुंबारन्न) नामे अरण्यमां आव्या. त्यां कृष्णने तरस लागतां बलदेव पाणी लेवा गया. ए समये कृष्णना मोटा भाई जराकुमार, जेओ एमने हाथे कृष्णनु मरण थशे एवी भविष्यवाणी नेमिनाथे भाखी होवाने कारणे द्वारकानो त्याग करीने अरण्यमां जईने रह्या हता ते शिकारीरूपे आव्या अने ढींचण उपर एक पग राखीने सूतेला वासुदेवने मृग धारी तेमना पग उपर मर्मस्थाने बाण मार्यु तेमना मृत्युनुं कारण बन्या'

हस्तिकल्प ए भावनगर पासेनुं हाथब होवा संभव छे.[२] कोसुंबारण्य ए उपर्युक्त वर्णन प्रमाणे, सुराष्ट्रमांथी दक्षिण तरफ जतां आवे छे, अने दक्षिण गुजरातमां आवेला कोसंबा आसपासनो विस्तार जे आजे पण गुजरातनो समृद्ध अरण्यप्रदेश छे ते ज ए होई शके.

भरुकच्छथी दक्षिणापथ जवाना मार्गमां 'भल्लीगृह'[1] नामथी ओळखातुं एक मन्दिर हतुं अने एमां भल्ली-बाणथी वींधायेला पगवाळी कृष्ण वासुदेवनी मूर्ति हती, एम 'निशीथचूर्णि' नोंधे छे, तेथी आ विधानने सबळ अनुमोदन मळे छे.[3]

वळी आर्य महागिरि अने आर्य सुहस्ती एक वार विहार करता 'कोसंबाहार'मां आव्या हता, एम संप्रति राजाना पूर्वजन्मना वर्णन-प्रसंगमां 'निशीथचूर्णि' ( भाग २, पृ. ४३७ ) नोंधे छे.[4] पण अहीं 'कोसंबाहार' ए 'कोसंबी आहार'—'कौशांबी आहार'नो अपभ्रष्ट पाठ छे, अने उपर्युक्त गुजरातना कोसंबा साथे एने संबंध नथी, एम 'बृहत्कल्पसूत्र' (क्षेमकीर्तिनी वृत्ति, भाग ३, पृ. ९१७–२१ ), 'परिशिष्टपर्व' ( सर्ग ११ ) आदि ग्रन्थोमांना वर्णननी एनी साथे तुलना करतां जणाय छे.

१ उने, पृ. ४०–४१; वद्र, पृ. ६७–६९. वळी जुओ अद, पृ. १५–१६; स्यासूभ, पृ. ४३३. अदमां आ स्थाननुं नाम 'कोसबवणकाणण' ( = कौसाम्बवनकानन ) अने स्यासूभमां 'कोशांबकानन' आप्युं छे.

२ जुओ हस्तिकल्प.

३ जुओ भल्लीगृह.

४ अन्नया ते दो वि विहरंता कोसंबाहारं गता। निचू, भाग २, पृ. ४३७.

## कौमुदिका

कृष्ण वासुदेवनी एक भेरी ( प्रा. कोमुइआ ). सामुदायिक उत्सवोनी घोषणा करवाना प्रसंगे वगाडवानुं ए उत्सववाद्य हतुं.[1]

पुराणोमां चतुर्भुज विष्णुना आयुधो पैकी एक कौमोदकी गदा छे, ए अहीं नोंधवुं जोईए.

१ ज्ञाध, पृ. १००–१०१; ज्ञाधअ, पृ. १०१.

## क्षेमकीर्त्ति

वृद्ध तपागच्छना स्थापक विजयचन्द्रसूरिना त्रण शिष्यो–वज्रसेन, पद्मचन्द्र अने क्षेमकीर्ति नामे आचार्यो हता ए पैकी क्षेमकीर्तिए 'बृहत् कल्पसूत्र' उपरनी वृत्ति जे पूर्वकालीन आचार्य मलयगिरिए अधूरी मूकी हती ते[१] सं १३३२ (ई. स. १२७६)ना वर्षमा पूर्ण करी. ए वृत्तिनो प्रथमादर्श नयप्रभ आदि साधुओए लख्यो हतो[२]

१ जुओ मलयगिरि

२ बृक्षे, विभाग ६, पृ १७१०–१२, प्रशस्ति

## क्षेमपुरी

सुराष्ट्रनुं एक नगर. त्याना श्रावक राजा ताराचन्द्रना कुमार नरदेवनी धर्मकथा 'वन्दारुवृत्ति'मा छे.[१]

क्षेमपुरीनो स्थाननिर्णय थई शक्यो नथी.

१ क्षेमपुर्यां सुराष्ट्रासु ताराचन्द्रस्य भूभुजः ।
पद्मत्र पद्मनामस्य प्रिया पद्मावतीत्यभूत् ॥
प्रजायेतां तयोः पुत्रौ रूपलावण्यसयुतौ ।
तत्राद्यो नरदेवाख्यो देवचन्द्रो द्वितीयकः ॥ वृवृ, पृ ८६.

## खण्डकर्ण

उज्जयिनीना राजा प्रद्योतनो मंत्री एक सहस्रयोधी मल्ल प्रद्योतना दरबारमा आव्यो हतो अने पोतानी सेवा बदल एक हजार योद्धाओने अपाय एटला वेतननी तणे मागणी करी हतो खंडकर्णनी सूचनानुसार एना साहसनी परीक्षा कर्या पछी एनी मागणी मुजब वृत्ति बाधी आपवामा आवी हती.[१]

१ व्यभ, विभाग ३, पृ ९३

## खपुटाचार्य

एक प्रभावक आचार्य. 'आवश्यकसूत्र'नी चूर्णि अने वृत्तिमा

प्राप्त थता एमना वृत्तान्तनो सार आ प्रमाणे छे: खपुटाचार्य एक विद्यासिद्ध आचार्य हता. तेमनो एक भाणेज तेमनो शिष्य हतो. ते सांभळवा मात्रथी विद्याओ शीखी जतो हतो. हवे, गुडशस्त्र नगरमां एक बौद्धाचार्य जैन साधुओ वडे वादमां पराजित थया पछी काळ करीने वृद्धकर नामे व्यंतर थयो हतो, ते साधुओने उपद्रव करतो हतो. आथी खपुटाचार्य पोताना भाणेज शिष्यने भरुकच्छमां बीजा साधुओ पासे राखीने गुडशस्त्रमां गया. त्यां यक्षना मन्दिरमां प्रवेशी वस्त्र ओढी सूई गया. पूजारी आव्यो, पण तेओ ऊठ्या नहि. पछी राजानी आज्ञाथी तेमना उपर अनुचरो लाकडीओनो प्रहार करवा मंड्या, तो ए प्रहारो ऊलटा अंत:पुरमांनी राणीओने वाग्या. आथी राजा आचार्यने करगरवा लाग्यो. पछी आचार्य ऊठीने चाल्या अने यक्ष तथा बीजी मूर्तिओने पोतानी पाछळ चालता कर्युं, एटले ते पण चालवा मांडी, बे मोटी पाषाणनी कूंडीओने पण ए रीते पाछळ चलावी. गामना सीमाडे आवीने यक्ष अने बीजा व्यंतरोने मुक्त कर्या, एटले तेमनी मूर्तिओ पोतपोताने स्थाने गई, परन्तु बे कूंडीओ त्यां ज रहेवा दीधी.

बीजी बाजू, आचार्यने खबर पडी के तेमनो शिष्य-भाणेज विद्याप्रभावथी श्रावकोने घेरथी स्वादिष्ट खोराक आकाशमार्गे ऊडतां पात्रोमां मंगावीने खाय छे तथा बौद्धोमां भळी गयो छे. भरुकच्छना संघ तरफथी पण आचार्य उपर संदेशो आव्यो. आचार्य भरुकच्छ गया. पेलां ऊडतां पात्रोनी आगळ तेमणे एक शिला गोठवी, एटले बधां पात्रोनो तेनी साथे अथडाईने भूको थई गयो, अने शिष्य डरीने नासी गयो. पछी आचार्य बौद्धो पासे गया. बौद्धोए तेमने कह्युं के 'भगवान बुद्धने पगे पडो.' त्यारे आचार्य बोल्या, 'आव वत्स, शुद्धोदनसुत! मने वंदन कर!' एटले बुद्धनी मूर्ति तेमने पगे पडी. त्यां द्वार आगळ एक स्तूप हतो तेने पगे पडवा कह्युं, एटले ते पण नमी

पड्यो पछी बुद्धना मूर्तिने ऊठवा पड्यु, एटले ते अर्धनत अवस्थामा रही, अने 'निर्ग्रंथनामित' एवा नामथी प्रसिद्ध थई

'प्रभावकचरित'ना 'पादलिप्तसूरिचरित'मा खपुटाचार्यनो वृत्तांत आप्यो छे त्या तेमने भृगुकच्छना राजा बलमित्र–भानुमित्र तथा कालकाचार्यना समकालीन कह्या छे [२] ए उल्लेखने जो ऐतिहासिक वस्तुसूचक गणीए तो, कालकाचार्य विशेनो मुनि कल्याणविजयनो समय निर्णय ध्यानमा लेता, तेओ वीरनिर्वाण पछी चोथा सैकामा थयेला गणाय 'प्रभावकचरित' अनुसार, बौद्धोए भृगुकच्छना अश्वावबोध तीर्थनो कबजो लई लीधो हतो ते तीर्थ खपुटाचार्ये 'बिलाडा पासेथी दूध मुकाववामा आवे तेम' छोडाव्यु हतु [३] 'आवश्यकसूत्र'नी चूर्णि अने वृत्तिमा बौद्धोना खपुटाचार्यें करेला पराजयनो जे निर्देश छे ते अश्वावबोधतीर्थ विशेनो हशे [४] वळी 'प्रभावकचरित' कहे छे के आर्य खपुटनी पाट तेमना शिष्य उपाध्याय महेन्द्र बेठा हता, अने अश्वावबोधतीर्थमा तेमनी परपरा हजी पण (एटले के 'प्रभावकचरित'ना रचनाकाळ, स १३३४=ई स १२७८ मा) विद्यमान छे [५]

उपर्युक्त परपरागत वृत्तान्तोमाथी चमत्कारनु तत्त्व बाद करीए तो एटलु स्पष्ट छ के खपुटाचार्यनो विहारप्रदेश मुख्यत्वे लाट आसपासनो हतो, भरूचमा ए काळे बौद्धो अने जैनोनी मोटी वसती हती तथा तेमनी वच्चे स्पर्धा चालती हती, एक बौद्ध स्तूप पण भरूचमा हतो, खपुटाचार्यनो एक शिष्य बौद्धो साथे मळी गयो हतो, बौद्धोए आचार्यनी गेरहाजरीमा जैनोना अश्वावबोध तीर्थनो कबजो लई लीधो हशे, पण आचार्ये युक्तिप्रयुक्तिथी बौद्धोने दूर कर्या हशे अने पोतानी पट्टपरपरा त्या पुन स्थापित करी हशे

१ आचू पूर्व भाग पृ ५४२-४२, आम पृ ५१४ वृत्कमा

(गा ५५९१) तथा बृकभा (भाग ५, पृ. १४८०) मां 'विद्याबली' तरीके खपुटाचार्यनो उल्लेख छे.

२ प्रच, ५-श्लो. १४३-४६. जुओ बलमित्र-भानुमित्र अने कालकाचार्य.

३ प्रच, ५-श्लो. २२४.

४ शकुनिकाविहार, जेना उपर वस्तुपाल-तेजपाले सुवर्णना ध्वजदंडो कराव्या हता ते, अश्वावबोधतीर्थमां हतो (जुओ ए प्रसंगना स्मारकरूपे रचायेली जयसिंहसूरिनी 'वस्तुपाल-तेजपालप्रशस्ति'), शकुनिकाविहारनी पाछळथी मस्जिद बनी गई छे, पण एनु आलेखन करतां शिल्पो आबु उपरना तेजपालना मन्दिरमां छे. (अश्वावबोधतीर्थ तथा शकुनिकाविहारना परंपरागत इतिवृत्त तथा ए शिल्पोनां चित्र माटे जुओ मुनि जयन्तविजयजीकृत 'आबु,' पृ. १०६-१५. वळी 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' पर्व ७, तथा 'विविधतीर्थकल्प' मां 'अश्वावबोधकल्प.')

५ टि. ४ मां निर्दिष्ट जयसिंहसूरि (ई. स नो तेरमो सैको), जेओ आ तीर्थमां आवेला मुनि सुव्रतचैत्यना अधिष्ठायक हता तेओ खपुटाचार्यनी परंपरामां थयेला होवा जोईए.

## खेट

[१] जेनी आसपास धूळनो प्राकार होय एवा गामने खेट अथवा खेड कहेवामां आवे छे.[1]

[२] समय जतां 'खेट' ए सामान्य नाममांथी विशेष नाम बनी गयुं. संख्यायंध टीकाग्रन्थोमां मळता एक कथानक प्रमाणे, खेडनो वतनी रुद्र नामे ब्राह्मण खेतर खेडतो हतो त्यारे तेनो एक बळद गळियो थई जवाथी तेणे बळदने निर्दयपणे मार मार्यो अने परिणामे बळद मरण पाम्यो, आथी तेनी ज्ञातिए तेने पंक्ति बहार कर्यो हतो.[2]

-आ खेट अथवा तेनो तद्भव शब्द जेना नाममां अंगभूत होय एवां गामो अनेक स्थळे छे; जेमके गुजरातनां खेडा,[3] खेडब्रह्मा, संखेडा, चानखेडा,

आदि; महाराष्ट्रनां खेडेगाव, आदि. आथी उपर्युक्त कथामांनुं 'खेट' कयुं गाम हशे ए कही शकाय नहि. 'उज्जड खेडे थाग्यो ढोल' ए कहवानी पंक्तिमां तथा 'उज्जड खेडां फरी वसे निर्धनियां धन होय' ए सुभाषितमां 'खेडुं' शब्द 'गामडा'ना अर्थमां छे. मराठी 'खेडें,' तथा हिन्दी-पंजाबी 'खेडा' पण आ ज अर्थमां छे.

१ पांशुप्राकारबद्ध खेड, आशी, पृ २५८; धूलिप्राकारोपेत खेटं एज, पृ. २५९. आ प्रकारना बीजा उल्लेखो माटे जुओ दशा, पृ ६८५; शाधअ, पृ ५५, १४०; बृकमा तथा बृकटी, भाग २, पृ. ३४२, इत्यादि.

२ वमु, पृ ५८५-८६; कफि, पृ. १९९; कटी, पृ. २२; कचौ, पृ. २३४.

३ खेडा माटे जुओ पुगु मां खेटक.

## खेट आहार

खेटकाहारनो उल्लेख वलभीनां दानपत्रोमां अनेक वार आवे छे.[१] गुजरातना खेडा आसपासनो ए प्रदेश हतो. आहार ए एक वहीवटी एकम छे. वळी वलभीना लेखोमां आहार अथवा आहरणीनो उल्लेख पर्याय तरीके कर्यो जणाय छे. (जुओ हस्तकल्प टि. ६) 'आवश्यकचूर्णि' उत्तर भाग पृ. १५२-५३ मां भरुकच्छ 'आहरणी'नो निर्देश छे ते आ दृष्टिए रसप्रद छे. अट्टण मल्लनो सहायक फलही मल्ल भरुकच्छ आहरणीना एक गामनो ('भरुकच्छाहरणीए गामे') हतो एम त्यां कह्युं छे. 'उत्तराध्ययन'नी शान्तिसूरिनी (पृ. १९२) तथा नेमिचन्द्रनी वृत्ति (पृ ७९)मा 'भरुकच्छहरणीगामे' एवो पाठ छे ते देखीती अशुद्धि छे.

धान्य, इन्धनादि पूरां पाडवा वडे जे प्रदेश जे नगरने मा उपभोग्य बने ते एनो आहार गणाय एवो निर्देश आगमसाहित्य

छे. आहारनां उदाहरण तरीके मथुराहार, मोढेरकाहार, खेटाहार वगेरे आपेलां छे.[2]

१ पुप्र, पृ. ७१.

२ क्षेत्राहारस्तु यस्मिन् क्षेत्रे आहारः क्रियते उत्पद्यते व्याख्यायते (?) यदि वा नगरस्य यो देशो धान्येन्धनादिनोपभोग्यः स क्षेत्राहारः, तद्यथा —मथुरायाः समासन्नो देशः परिभोग्यो मथुराहारो मोढेरकाहारः खेडाहार इत्यादि, सूकृशी, पृ. ३४३; खेत्ताहारो जो जस्स णगरस्स आहारो, आहार्यत इत्याहारः, विसओ आहारोत्ति वुच्चति, जहा मधुराहारो खेडाहारो, सुकृचू, पृ. ३७६. सुकृचूमां 'आहार' अने 'विषय'ने पर्याय गण्या छे ए सूचक छे.

## गजसुकुमाल

कृष्ण वासुदेवना नाना भाई. तेमनां लग्न द्वारकाना सोमिल नामे एक ब्राह्मणनी पुत्री साथे नक्की थयां हतां, पण गजसुकुमाले तीर्थंकर नेमिनाथनो उपदेश सांभळीने दीक्षा लीधी, अने रात्रे स्मशानमां जई कायोत्सर्ग ध्यानमां रह्या. आ वातनी सोमिल ब्राह्मणने खबर पडतां तेने गजसुकुमाल उपर घणो क्रोध चढ्यो अने रात्रे स्मशानमां जई गजसुकुमालना माथा उपर बळतां लाकडां मूकीने तेणे तेमनो वध कर्यो. ए समये शुक्ल ध्यानमां रहेला गजसुकुमालने केवल ज्ञान थयुं. श्रीकृष्णने आ वातनी खबर पडतां तेमणे सोमिल ब्राह्मणने देहान्त दंड कर्यो.[1]

१ अंद पृ. ५–१४, आचू, पूर्व भाग, पृ ३५५–५६; आम, पृ. ३५६–५९. गजसुकुमाल विशेना प्रासंगिक उल्लेखो माटे जुओ वृकभा, गा. ६१९६ तथा वृक्क्षे, भाग ६, पृ. १६३७, व्यभ, विभाग ४, पेटा विभाग १, पृ २८, इत्यादि.

## गजाग्रपद

दशार्णपुर पासेना दशार्णकूट पर्वतनुं आ बीजुं नाम छे. एक वार त्यां महावीर स्वामी समोसर्या त्यारे इन्द्रे ऐरावत उपर बेसीने,

मारे समृद्धिपूर्वक त्यां आवीने तेमने वंदन कर्यां हतां. ए समये दशार्णकूट उपर ऐरावतनां पगलां पडवाथी ते पर्वत गजाग्रपद नामथी ओळखायो.[1] आर्य महागिरि विदिशामां जिनप्रतिमाने वंदन करीने गजाग्रपद तीर्थनी यात्रा माटे एलकच्छ ( दशार्णपुर ) गया हता.[2]

जुओ एलकच्छ, दशार्णपुर

१ आम, पृ. ४६८.
२ आवृ., उत्तर भाग, पृ. १५६–५७.

**गन्धहस्ती**

एक प्राचीन आचार्य. 'आचारांग सूत्र'ना 'शस्त्रपरिज्ञा' अध्ययन उपरना तेमना विवरणनो उल्लेख ए सूत्र उपरनी शीलाचार्यनी टीकामां छे.[1] 'तत्त्वार्थसूत्र'ना टीकाकार तरीके पण अन्यत्र तेमनो उल्लेख छे.[2] 'जीतकल्पभाष्य'मां गंधहस्तीनो श्रुतधर तरीके निर्देश छे.[3] 'उत्तराध्ययन सूत्र' उपरनी शान्तिसूरिनी वृत्तिमां तथा 'आवश्यक' उपरना मलधारी हेमचन्द्रना टिप्पणमां पण गंधहस्तीनो मत टांकेलो छे.[4]

गंधहस्ती कोण ए विशे केटलोक मतभेद छे. प्रसिद्ध स्तुतिकार स्वामी समंतभद्र ए गंधहस्ती अने तेमणे 'तत्त्वार्थसूत्र' उपर रचेल भाष्य ए ज गंधहस्तिमहाभाष्य एवी मान्यता दिगंबर संप्रदायमां सामान्य रीते छे, ज्यारे वृद्धवादिशिष्य सिद्धसेन दिवाकर ए गंधहस्ती अने 'तत्त्वार्थसूत्र' उपर तेमणे व्याख्या लखी हती एवी मान्यता सामान्य रीते श्वेतांबर संप्रदायमां छे.[5] पण पं. सुखलालजी अने पं. बेचरदासे 'सन्मतितर्क'नी तेमनी प्रस्तावनामां सप्रमाण बताव्युं छे के गंधहस्ती ए सिंहसूरिना प्रशिष्य अने भास्वामीना शिष्य, 'तत्त्वार्थ-भाष्य'नी वृत्तिना कर्ता सिद्धसेन छे.[6] आ वृत्तिमां सिद्धसेने अकलंकना 'सिद्धिविनिश्चय'मांथी अवतरणो आप्यां छे, एटले तेओ ईसवी सनना सातमा सैकाथी तो अर्वाचीन छे.

१ शास्त्रपरिज्ञाविवरणमतिगहनमितीव किल वृतं पूज्यैः ।
श्रीगन्धहस्तिमिश्रैर्विवृणोमि ततोऽहमवशिष्टम् ॥ आशी, पृ ७४.

२ यदाह तत्त्वार्थमूलटीकाकृद् गन्धहस्ती, जप्रशा, पृ. ३०६.

३ जीकभा, पृ. ११

४ उशा, पृ ५१९; आहे, पृ. १११

५ 'सन्मतितर्क,' प्रस्तावना, पृ. ५९.

६ एज, पृ. ५९–६०.

## गम्भूता

उत्तर गुजरातमां पाटण पासेनुं गांभू गाम. त्यां रहीने शीलाचार्ये 'आचारांगसूत्र'नी वृत्ति रची हती.[1]

जुओ शीलाचार्य

१ आशी, पृ २८८

## गर्दभ

उज्जयिनीना यव राजानो युवराज. एणे पोतानी बहेन अडोलिकाने विषयसेवन माटे भोंयरामां पूरी हती.[1]

कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनुं अपहरण करनार उज्जयिनीना राजा गर्दभिल्लनुं आ स्मरण करावे छे. गर्दभ अने गर्दभिल्ल एक ज जणाय छे.

जुओ कालकाचार्य अने गर्दभिल्ल

१ बृकसे, भाग २, पृ ३५९

## गर्दभिल्ल

उज्जयिनीनो राजा. एणे कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनुं अपहरण कर्युं हतुं, तेथी कालकाचार्ये शकोने बोलावी गर्दभिल्लनो उच्छेद कर्यो हतो.

जुओ कालकाचार्य अने गर्दभ

१

## गिरिनगर

जूनागढ गिरिनी तळेटीमां आवेलुं होवाथी ते 'गिरिनगर' कहेवाय छे.

गिरिनगरमां एक अग्निपूजक वणिक दरवर्षे एक घरमां रत्नो भरीने पछी ए घर सळगावी अग्निनुं संतर्पण करतो हतो. एक वार तेणे घर सळगाव्युं, ए समये खूब पवन वायो, तेथी आखु नगर दळी गयुं. बीजा एक नगरमां एक वणिक आ प्रमाणे अग्निनुं संतर्पण करवानी तैयारी करे छे एम त्यांना राजाए सांभळ्युं, एटले गिरिनगरनो आगनो प्रसंग याद करीने तेणे एनुं सर्वस्व हरी लीधुं.[1] गिरिनगरनो त्रण नवप्रसूता स्त्रीओ उज्जयंत उपर गई हतो त्यारे चोरो तेमनुं हरण करी गया हता अने पारसकूल–ईरानी अखातना किनारा उपर तेमने वेची दीधी हती एवुं पण एक कथानक छे.[2]

'सूत्रकृतांग'नी शीलाचार्यनी वृत्तिमां उद्धृत थयेला एक हालरडामा रडता बाळकने गिरिनगर आदि नगरोनो राजा कहीने छानुं राखवानो प्रयास छे.[3]

विशिष्ट पर्वतनाचो 'गिरनार' शब्द गिरिनगर>गिरिनअर>गिरनार ए क्रमे व्युत्पन्न थयेलो छे. गुजरातमां 'नार' पदान्तवाळां बीजां पण स्थळनामो छे, जे आ साथे सरखावी शकाय, दा. त. नगर–नअर–नार (पेटलाद पासेनुं), कोटिनगर–कोडिनअर–कोडिनार, इत्यादि.[4] 'गिरनार'नी बाबतमां, 'नगर' पदान्तवाळुं नाम पर्वत माटे रूढ थयुं एटलुं ज नहि पण 'उजयंत', 'रैवतक' आदि पर्यायोने तेणे स्थानभ्रष्ट करी दीधा ए वस्तु शब्दोनी अर्थसक्रान्तिनी दृष्टिए नोंधपात्र छे.

जुओ उज्जयन्त अने रैवतक

१ आवू, पूर्व भाग, पृ ७१; आम, पृ. ८८, विको, पृ. २७८; अनुहा, पृ. १८; अनुहे, पृ २५.

२ आचू, उत्तर भाग पृ २८९

३ जुओ कान्यकुब्ज थीना केटलाक उल्लेखो माटे जुओ अनु, पृ १५९, आसुवृ, पृ. ३३९, जीम, पृ ५६, इत्यादि

४ जुओ 'इतिहासनी केडी मां प्रगट थयेलो 'गुजरातनां स्थळनामो' ए मारो लेख

## गिरिनार

सौराष्ट्रमां आवेलो पर्वत, जेने प्राचीनतर साधनग्रन्थोमां 'उज्जयंत' कह्यो छे ए माटे 'गिरिनार' एवुं तुलनाए अर्वाचीन नाम 'कल्पसूत्र 'नी 'कौमुदी' टीकामां मळे छे.[1]

जुओ उज्जयन्त अने **गिरिनगर.**

१ तत प्रभुरन्यत्र विहृत्य पुनरपि **गिरिनारे** समवसृत, तदा रथनेमिर्दीक्षां जग्राह । ककौ, पृ १६९

## गुडशस्त्र नगर

आ नगर लाटदेशमां भरुकच्छथी बहु दूर नहि एवे स्थळे आव्युं हशे, केमके खपुटाचार्य पोताना शिष्यने भरुकच्छमां राखीने वृद्धकर व्यंतरनो उपद्रव शमाववा माटे गुडशस्त्रमां गया हता, अने पोतानो शिष्य शिथिलाचारी थईने बौद्धोमां भळी गया होवाना समाचार मळतां पाछा भरुकच्छ आव्या हता[1]

वधु माटे जुओ खपुटाचार्य

१ आचू, पूर्व भाग पृ ५४२, आम, पृ ५१४

## गुर्जर

गुजरातनो वासी

जुदा जुदा प्रकारना वैपरीत्यनां उदाहरण आपतां गुर्जरो मध्य देशनी भाषा बोले एने भाषावैपरीत्य कह्यु छे आवां वैपरीत्यथी हास्यरस निष्पन्न थाय छे[1] 'कल्पसूत्र 'नी टीकाओमां 'राज्यदेश

नाम ' आप्यां छे तेमां अंग, वंग, कलिंग, गौड, चौड, कर्णाट, लाट, सौराष्ट्र, काश्मीर, सौवीर, आभीर, चीन, महाचीन, बंगाल, श्रीमाल, नेपाल, जहाल ( कर्कौनो पाठ सूचवे छे के 'डाहल' जोईए ), कौशल, मालव, सिंहल अने मरुस्थलनी साथे गुर्जर पण आव्युं छे.[2]

१ रूपवयोवेशभाषाणां हास्योत्पादनार्थं वैपरीत्येन या विडम्बना-निवर्तना तत्समुत्पन्नो हास्यो रसो भवतीति संयोगः, तत्र पुरुषादेर्योषिदादि-रूपकरणं रूपवैपरीत्यं, तरुणादेर्वृद्धादिभावापादनं वयोवैपरीत्यं, राजपुत्रादेर्वणि-गादिवेशधारणं वेशवैपरीत्यं, गुर्जरादेस्तु मध्यदेशादिभाषाभिधानं भाषावैपरीत्यं, अनुहे. पृ १३९. अर्थात् अहीं 'वैपरीत्य' ने हास्योत्पादननुं एक निमित्त कह्युं छे. एने माटेनो समुचित अंग्रेजी शब्द Incongruency छे, जे वर्तमान साहित्यविवेचनमां पण हास्यनुं एक निमित्त गणाय छे.

२ कपु, पृ. ४५७; कवि, पृ १५२. कर्कौ (पृ. १८१–८२) मां 'भोट' नाम वधारेलु छे.

## गोपालगिरि

वसतिवाळा पर्वतोमां गोपालगिरि, चित्रकूट आदिनो उल्लेख छे.[1] 'प्रबन्धकोश' अनुसार गोपालगिरि कान्यकुब्ज देशमां आवेलो छे.[2] पण विशेष पुरावाने अभावे एनो चोक्कस स्थाननिर्णय थई शके एम नथी.

१ गृणन्ति शब्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरय गोपालगिरि-चित्रकूटप्रभृतयः । भसूअ, शतक ७, उद्दे० ६ उपरनी वृत्ति.

२ कन्यकुब्जदेशे गोपालगिरिदुर्गनगरे यशोवर्मनृपते 'सुयशादेवीकुक्षि-जन्मा नन्दनोऽहम् । 'प्रबन्धकोश,' पृ. १७.

## गोविन्दाचार्य

गोविन्द नामे एक बौद्ध भिक्षु हतो तेने, एक जैन आचार्ये वादमां अराढ वार पराजित कर्यो हतो. आथी तेणे विचार कर्यो के 'ज्यांसुधी हुं जैन सिद्धान्तनुं स्वरूप नहि समजुं त्यांसुधी जैन आचार्यने पराजित करी शकीश नहि.' आम विचारी, तेणे,ए ज

आचार्य पासे दीक्षा लीधी. त्यां अभ्यास करतां एने सम्यक्त्व प्राप्त थयुं. गुरु पासेथी व्रतो लीधां अने बधी वात निखालसपणे करी. पछी तेणे एकेन्द्रिय जीवनी सिद्धि करतो 'गोविन्दनिर्युक्ति' नामे ग्रन्थ रच्यो.[1]

'गोविन्दनिर्युक्ति' उपलब्ध नथी. 'बृहत्कल्पसूत्र'ना वृत्तिकार आचार्य क्षेमकीर्तिए शास्त्र तरीके 'सन्मतितर्क' अने 'तत्त्वार्थ'नी साथे 'गोविन्दनिर्युक्ति'नो सबहुमान उल्लेख कर्यो छे.[2] 'आवश्यकचूर्णि'मां पण 'गोविन्दनिर्युक्ति'ने दर्शनप्रभावक शास्त्र कह्युं छे.[3] 'गोविन्दनिर्युक्ति'नी रचना 'आचारांगसूत्र'ना 'शस्त्रपरिज्ञा' अध्ययनना विवरणरूपे थई होवी जोईए तथा गोविन्दाचार्य विक्रमना पांचमा सैकामां विद्यमान हता एम पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीए साधार रीते प्रतिपादन कर्युं छे.[4]

१ निचू, उद्दे० ११, भाग४, पृ. २७. आमां गोविन्दने 'वाचक' कह्या छे.

२ बृकक्षे, भाग ३, पृ ८१६; भाग ५, पृ. १४५२.

३ आचू, पूर्व भाग, पृ ३५३. 'गोविन्दनिर्युक्ति' मांनी केटलीक दार्शनिक चर्चाना संक्षिप्त निर्देश माटे जुओ एज, पृ ३१.

४ 'महावीर जैन विद्यालय रजत महोत्सव ग्रन्थ,' पृ. १९९–२०१.

## गोष्ठामाहिल

आर्य रक्षितसूरिना मामा तेम ज तेमना परिवारना एक साधु. एमणे मथुरामां एक अक्रियावादीने वादमां पराजित कर्यो हतो. आचार्ये गच्छाधिपति तरीके तेमने बदले दुर्बल पुष्पमित्रनो अभिषेक कर्यो तेथी विरुद्ध पडी ते सातमा निह्नव—साचा धर्मना संघमां तड पडावनार मिथ्यावादी बन्या.[1] वीर निर्वाण सं. ५८४=ई. स. ५८मां दशपुरमां आ निह्नव उत्पन्न थयो.[2] एमनो मत 'अबद्धिक' तरीके जाणीतो छे.[3] 'कर्मोनो आत्मा साथे स्पर्श ज थाय छे, अने एथी आत्मा कर्मथी बंधातो नथी' एम माननारो ए मत छे.[4]

जुओ रक्षित आर्य

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ४११; आम, पृ. ३९८–४०१; उशा, पृ. १७२–८८.

२ विभा, गा. ३००९

३ एज, गा. ३००९–५० तथा विको, पृ. ७२–२९४; आचू, पूर्व भाग, पृ. ४१३–१५; आम, पृ. ४१५–१८.

४ ए ब. बधी आध्यात्मिक मतना सरळ गुजराती निरूपण माटे जुओ मुनि धुरंधरविजयजीकृत 'निह्नववाद', पृ. १६५–८१.

## गौरीपुत्र

'गौरीपुत्रो' तरीके 'भिक्षाको' प्रसिद्ध छे' एवो उल्लेख 'कल्पसूत्र'ना टीकाकारो करे छे; एटले 'गौरीपुत्र' तरीके तेओने समाजनो कोई चोक्कस वर्ग उदिष्ट छे. 'कल्पसूत्र'नी टीकाओना रचयिताओ चौदमा सैकाथी मांडी गुजरातमां थया छे. गुजरातमां मध्यकाळथी भाटचारणो 'देवीपुत्र' तरीके प्रसिद्ध छे, तो टिकाकारोए नोंधेल 'गौरीपुत्रो' भाट–चारणो केम न होय !

१ भिक्षाका गौरीपुत्रका इति प्रसिद्धाः. कसं, पृ. ८५; कदी, पृ. ७३.

## चण्डप्रद्योत

जुओ प्रद्योत

## चण्डरुद्राचार्य

एमने विशेनुं कथानक नीचे प्रमाणे छे : उज्जयिनीमां स्नपन उद्यानमां एक वार साधुओ समोसर्या हता. एक उदात्तवेशी युवाने मित्रो सहित त्यां आवीने पोताने दीक्षा आपवा मागणी करी. 'आ अमारो परिहास करे छे' एम मानीने साधुओए तेने चण्डरुद्राचार्य नामना कोपशील आचार्य पासे मोकल्यो. चंडरुद्राचार्ये भस्म मंगावी, लोच करी तेने दीक्षा आपी. मित्रो पाछा गया. पछी परोढमां विहार करतां आचार्ये शिष्यने आगळ चालवा कह्युं. मार्गमां

एक ठूंठा उपर आचार्य पडी गया; आथी क्रोध करीने तेमणे शिष्यना माथा उपर दंडनो प्रहार कर्यो पोतानुं माथुं फूटी जवा छतां शिष्ये सम्यक्पणे ते सहन कर्युं प्रभातमां शिष्यनुं लोहीथी खरडायेलुं माथुं जोईने आचार्यने पोताना दुर्वर्तननुं भान थयुं, अने क्षपकश्रेणि उपर आरूढ थतां तेमने केवळ ज्ञान थयुं[1]

कोपशील गुरुने पण विनयशील शिष्य प्रसन्न करी शके ए विषयमां चंडरुद्राचार्यनुं दृष्टान्त आपवामां आवे छे. आ आचार्यनुं खरुं नाम रुद्र हशे, पण चंड प्रकृतिना होवाथी तेओ चंडरुद्र तरीके ओळखाया हशे—जेम अवंतिनो राजा प्रद्योत चंडप्रद्योत कहेवायो हतो तेम.

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. ७७-७८; उचू, पृ. ३१; उशा, पृ. ४९-५०; उने, पृ. ४-५; बृकभा, गा. ६१०३-४; बृकक्षे, पृ. १६१२-१३; पाय, पृ. ५६-५७.

## चित्रकूट

आ मेवाडनो चितोडगढ होवा संभव छे. चित्रकूटमां तपश्चर्या करता सुकोशल मुनिने एक वाघणे फाडी खाधा हता.[1] वसतिवाळा पर्वतोमां गोपालगिरि, चित्रकूट आदिनो उल्लेख करेलो छे.[2] आगमोना पहेला संस्कृत टीकाकार याकिनी महत्तरासूनु हरिभद्रसूरि चित्रकूटना विद्वान ब्राह्मण हता[3]

१ मस, गा. ४६६

२ गृणन्ति शब्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरयः गोपालगिरि–चित्रकूटप्रभृतयः । भसूअ, शतक ७, उद्दे० ६ उपरनी

३ जुओ हरिभद्रसूरि.

## चौलुक्य

एक क्षत्रिय जाति. कुलकथाना उदाहरण तरीके ए विशे नीचेना

आशयनो एक श्लोक उद्धृत करवामा आवे छे–' अहो ! चौलुक्य पुत्रीओनुं साहस जगतमा सौथी विशेष छे, केम के प्रेमरहित होय तो पण तेओ पतिनु मृत्यु थता अग्निमा प्रवेशे छे.'[1]

1 एव उग्रादिकुलोत्पन्नानामन्यतमाया यत् प्रशसादि सा कुलकथा, यथा—"अहो चौलुक्यपुत्रीणा साहस जगतोऽधिकम्। पत्युर्मृत्यौ विशन्त्यग्नौ या प्रेमरहिता अपि॥" स्थासूअ, पृ २१०, वळी जुओ प्रव्याअ, पृ ११९ तथा पाय, पृ ४८

## जउण

जुओ यवन

## जयविजय

तपागच्छना विजयानंदसूरिना शिष्य वाचक विमलहर्षना शिष्य तेमणे सं १६७७=ई स १६२१ मा 'कल्पसूत्र' उपर 'दीपिका' नामे टीका रची हती आ टीकानुं संशोधन भावविजयगणिए कर्युं हतुं, अने तेनो प्रथमादर्श कर्ताए पोते पोताना शिष्य वृद्धिविजयनी प्रार्थनाथी तैयार कर्यो हतो[1]

1 कदी, प्रशस्ति

## जिनदत्त

सोपारकवासी श्रावक तेनी पत्नीनुं नाम ईश्वरी हतुं वज्रस्वामीना शिष्य वज्रसेन सोपारकमा आव्या त्यारे जिनदत्त अने ईश्वरी बन्नेए पोताना चार पुत्रो नागेन्द्र, चन्द्र, निर्वृति अने विद्याधरनी साथे दीक्षा लीधी हती नागेन्द्र चन्द्र, निर्वृति अने विद्याधर ए प्रमाणे साधुओनी चार शाखाओ आ चारथी प्रवर्ती[1]

जुओ वज्रसेन

1 कसु पृ ५१३, ककि पृ १७१, कदी, पृ १५१

## जिनदास

मथुरानो श्रावक, एनी पत्नीनुं नाम साधुदासी हतुं. तेमनी पासे कंबल-संबल नामे बे उत्तम बळदो हता. एक वार मथुरामां भंडीर यक्षनी यात्रा हती त्यारे जिनदासनो एक मित्र ए बळदोने गाडे जोडी लई गयो, अने तेणे बळी बीजाने आप्या. ज्यारे पाछा लाववामां आव्या त्यारे कंबल-संबल खूब थाकी गया हता, अने थोडा समय पछी तेओ अनशन करीने मरण पाम्या,[1] एवी कथा अनेक टीका-ग्रन्थोमां छे.

जुओ कम्बल-सम्बल

१ आचू, पूर्व भाग, पृ २८१; आनि, गा. ४६९-७१; बृकसे, भाग ५, पृ १४८९; कमु. पृ. ३०६-७; ककि, पृ. १०५; कदी, पृ. ९०.

## जिनदासगणि महत्तर

परंपरा प्रमाणे, आगमो उपरनी चूर्णि नामथी प्रसिद्ध संख्याबंध प्राकृत टीकाओना कर्ता. 'नंदिसूत्र' उपरनी तेमनी चूर्णि शक सं. ५९८=ई. स. ६७६ मा रचायेली छे,[1] एटले तेमनो समय ईसवी सनना सातमा सैकामां निश्चित छे. 'निशीथसूत्र' उपरनी विशेष नामे चूर्णि पण तेमनी कृति छे.[2] 'अनुयोगद्वारसूत्र' चूर्णिनी प्रतोने अंते जिनदासगणिनो कर्ता तरीके नामोल्लेख छे[3] आ उपरांत 'आवश्यक' अने 'उत्तराध्ययन'नी चूर्णिओ पण तेमनी कृतिओ गणाय छे. 'उत्तराध्ययन' चूर्णिने अंते कर्ताए पोतानुं नाम आप्युं नथी, पण पोताना गुरु तरीके गोवालिय महत्तरनो नामोल्लेख कर्यो छे. 'उत्तराध्ययन' चूर्णिना कर्ता गोवालिय महत्तरना शिष्य जिनदासगणि महत्तर छे एम स्वीकारीए तो, चूर्णिमांना उल्लेख अनुसार तेओ वाणिज्य कुल, कोटिक गण अने वज्रशाखाना साधु हता एम मानवुं प्राप्त थाय छे.[4]

उपर्युक्त चूर्णिओनु कर्तृत्व जिनदासगणि उपर आरोपित करवा माटेना प्रमाण अहीं जणाव्या छे, पण ए सिवायनी चूर्णिओ जेमा कर्ताना नाम नथी, ते पैकी केटलीना तेओ खरेखर कर्ता छे एना पुरावा तपासवानी जरूर छे अहीं ए पण याद राखवु जोईए के केटलीक चूर्णिओमा कर्ता तरीके अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थकारोनो उल्लेख छे दा त सिद्धसेनगणिए 'जीतकल्पसूत्र' उपर चूर्णि रची छे (जुओ सिद्धसेन गणि), अने 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र' उपरनी विजयसिंहसूरिनी चूर्णिनो उल्लेख रत्नशेखरसूरिए कर्यो छे (जुओ विजयसिंहसूरि)

पछीना समयमा थयेला संस्कृत टीकाकारोए चूर्णिओनो उपयोग व्यापक प्रमाणमा कर्यो छे अने प्राकृत कथानको तो घणी वार चूर्णिमाथी ज 'शब्दश' उद्धृत कर्या छे

१ शकराज पचसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतिषु नन्द्यध्ययनचूर्णि समाप्ता । नचू, अतभाग

२ 'सन्मतितर्क,' प्रस्तावना, पृ ३५-३६

३ इति श्रीश्वेताम्बराचार्यजिनदासगणिमहत्तरपूज्यपादानामनुयोगद्वाराणां चूर्णि ।। अनुचू, पृ ९१

४ वाणिजकुलसभूओ कोडियगणिओ उ वयरसाहीतो ।
गोवालियमहत्तरओ विक्खाओ आसि लोगमि ॥
ससमयपरसमयविऊ ओयस्सी दित्तिम सुगंभीरो ।
सीसगणसपरिवुडो वक्खाणरतिप्पओ आसी ॥
तेसि सीसेण इम उत्तरज्झयणाण चुण्णिखड तु ।
रइय अणुग्गहत्थ सीसाण मदबुद्धीण ॥ उचू, पृ २८३

## जिनभटाचार्य

'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी कोट्याचार्यनी वृत्तिमा जिनभटाचार्यनो मत बहुमानपूर्वक टाकेलो छे याकिनी महत्तरासूनु हरिभद्र सूरिए जे गच्छमा जैन दीक्षा लीधी हती तेना अधिपति आचार्यनु नाम जिनभट हतु एटलु ज नहि, हरिभद्रसूरिए 'आवश्यक सूत्र'नी

ટીકાને અંતે સ્પષ્ટ કર્યું છે કે પોતે એની રચનામાં જિનભટના અભિપ્રાયને અનુસર્યા છે.[3] આનો અર્થ એ થયો કે જિનભટાચાર્યે 'આવશ્યક સૂત્ર' ઉપર એક ટીકા રચી હતી, જે અત્યારે ઉપલબ્ધ નથી. 'વિશેષાવશ્યક ભાષ્ય' ઉપરની કોટ્યાચાર્યની વૃત્તિમાં સ્થળે સ્થળે 'મૂલટીકા' અને 'આવશ્યક મૂલટીકા'માંથી ઉદ્ધરણો આપ્યાં છે[4] તે જિનભટાચાર્યની ટીકામાંથી હોવા જોઈએ.

૧ વિકો (ભા ગા ૪૬૮ ઉપરની વૃત્તિ), પૃ ૧૮૬

૨ પ્રચ, ૯-શ્લો ૩, ૩૦, ૧૮૧

૩ समाप्ता चेयं शिष्यहिता नाम आवश्यकवृत्तिटीका । वृत्तिः सिताम्बराचार्यजिनभटनिगदानुसारिणो विद्याधरकुलतिलकाचार्यजिनदत्तशिष्यधर्मतोयाकिनीमहत्तरासूनोरल्पमतेराचार्यहरिभद्रस्य । આહ, અંતભાગ.

૪ આકો, પૃ ૬૦૨, ૬૭૪, ૬૭૫, ૭૬૨, ૮૪૫, ૯૫૫ ઇત્યાદિ. જુઓ પ ભગવાનદાસની પ્રસ્તાવના, પૃ. ૧-૪

## જિનભદ્રગણિ ક્ષમાશ્રમણ

'આવશ્યક સૂત્ર'ના સામાયિક અધ્યયનની ભદ્રબાહુની નિર્યુક્તિ ઉપર ગાથાબદ્ધ 'વિશેષાવશ્યક ભાષ્ય' તથા બીજા અનેક પ્રૌઢ ગ્રન્થો રચનાર આચાર્ય. એ મહાન ભાષ્યગ્રન્થને અનુલક્ષીને આચાર્ય મલયગિરિએ જિનભદ્રગણિને 'દુષ્ષમાન્ધકારનિમગ્નજિનવચનપ્રદીપ' કહ્યા છે.[1] જેસલમેર ભંડારની એક પ્રાચીન તાડપત્રીય પ્રતને આધારે આચાર્ય જિનવિજયજીએ 'વિશેષાવશ્યક ભાષ્ય'નો રચનાકાળ શકાબ્દ ૫૩૧=ઈ. સ ૬૦૯ હોવાનું નિશ્ચિતપણે પુરવાર કર્યું છે.[2]

જિનભદ્રગણિએ પોતે 'વિશેષાવશ્યક ભાષ્ય' ઉપર એક ટીકા રચી હતી. એ અત્યારે ઉપલબ્ધ નથી, પણ કોટ્યાચાર્યે[3] તથા મલધારી હેમચન્દ્રે[4] પોતાનાં વિવરણોમાં એનો નિર્દેશ કર્યો છે. પછીના સમયમાં થયેલા આગમસાહિત્યના અનેક ટીકાકારોએ જિનભદ્રગણિના અભિપ્રાયો

टांक्या छे अथवा, तेमनी रचनाओमांथी मानपूर्वक अवतरणो आप्यां छे.[1]

हरिभद्र, हेमचन्द्र अने अभयदेवनी जेम जिनभद्र नाम पण जैन साधुओमां व्यापक प्रचार पाम्युं हतुं, अने जिनभद्र-नामधारी अनेक ग्रन्थकारो आपणे जोईए छीए.[2]

१ आह च दुष्पमान्धकारनिमग्नजिनवचनप्रदीपो जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण: × × × नम, पृ. ८७.

२ 'भारतीय विद्या', भाग ३, सिंघी स्मृति अंकमां 'श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणनो सुनिश्चित समय' ए लेख.

३ क्षमाश्रमणपादीकायां, विशेष...विको, पृ २६५; क्षमाश्रमण टीकाऽपीयं, ए ज, पृ ३०३ वळी पूज्यास्तु व्याचक्षते (पृ. ८५९) ए प्रमाणे जिनभद्रनो मोघम उल्लेख पण छे.

४ जुओ विको नी प. भगवानदासनी प्रस्तावना.

५ उदाहरण तरीके-भसूअ, भाग १, पृ १२९; नहा, पृ. ५२; बृकसे, भाग १, पृ. २५६; भाग ७, पृ ४००; जीकचू, पृ. १, ३०, कल, पृ ११५; धार, पृ. १, २८, इत्यादि

६ जैसाइ, पृ. ८४६.

## डिम्भरेलक

महिरावणमां पूर आवे त्यारे डिंभरेलक प्रदेशमां धान्य वराय छे, एवो उल्लेख छे.[1]

डिंभरेलक कोंकणमां अथवा आसपासना प्रदेशमां आव्युं हशे, केम के 'पुरातन प्रबन्धसंग्रह'मां कोंकणना राजा मल्लिकार्जुनने 'महिरावणाधिपति' कह्यो छे.[2]

१ क्वचित्पूरेण, यथा बन्नासायां पूरादवरिच्यमानायां तत्पूरपानीयभावितायां क्षेत्रभूमौ धान्यानि प्रकीर्यन्ते, यथा डिम्भरेलके महिरावणपूरेण धान्यानि वपन्ति । बृकभा, गा. १२३९ ना विवरणरूपे बृकसे, भाग २, पृ. ३८३-८४.

२ अन्यदा कुङ्कणे जालपतनं श्रुत्वा महिरावणाधिपतिं मल्लिकार्जुनं प्रति दूतं प्राहिणोत्। 'पुरातनप्रबन्धसंग्रह,' पृ ३९

ढण्ढणकुमार

कृष्ण वासुदेवनो ढंढणा नामे राणीथी थयेलो पुत्र. एने विशे आ प्रमाणे कथानक मळे छे: तेणे तीर्थंकर नेमिनाथनो उपदेश सांभळीने दीक्षा लीधी हती, पण पूर्वकर्मना उदयने कारणे एमने आहार प्राप्त थतो नहोतो. आथी पोतानी लब्धिथी आहार मळे तो ज स्वीकारवो एवो अभिग्रह तेमणे लीधो हतो. हवे, एक वार ढंढण मुनि द्वारकामां गोचरी माटे नीकळ्या त्यारे मार्गमां कृष्णे तेमने वंदन कर्युं, आथी 'आ कोई प्रभावशाळी मुनि छे' एम धारीने एक गृहस्थे तेमने लाडु वहोराव्या. पछी ढंढण मुनिए नेमिनाथ पासे जईने पोतानी लब्धिथी लाडु मळ्यानी वात करी, त्यारे नेमिनाथे कह्युं के 'ए आहार तो वासुदेवनी लब्धिनो छे.' आथी कया पूर्वकर्मने कारणे पोताने आहारप्राप्ति थती नथी ए विशे ढंढण मुनिए नेमिनाथने प्रश्न करतां, तीर्थंकरे तेमनो पूर्वभव कह्यो अने अनेक खेडूतो अने बळदोने तेमणे आहारनो अंतराय पाड्यो हतो ए वात करी. आ सांभळी ढंढणमुनिए लाडुने परठवी दीधा अने पश्चात्तापनी भावना भावतां तेमने केवलज्ञान थयुं.[1]

१ उत्ता, पृ. ११८-१९.

तगरा

'अनुयोगद्वार सूत्र'मां 'समीप-नाम'नां उदाहरण आपतां कह्युं छे के गिरि पासेनुं नगर ते गिरिनगर, विदिशानी पासेनुं नगर ते वैदिशनगर (विदिशा), वेणा पासेनुं नगर ते वेणातट अने तगरा पासेनुं नगर ते तगरातट.' आम तगरातट नगर तगरा नदीने किनारे आवेलुं हतुं. टीकाओमां एनो संक्षेपमां मात्र 'तगरा' तरीके उल्लेख करवामां आव्यो छे. राध आचार्य विहार करता तगरामां

आव्या हता अने तेमना शिष्यो उज्जयिनीथी तगरामा तेमनी पासे आवी पहोंच्या हता[1] अरहमित्र नामे बीजा एक आचार्य पण तगरामा रहेता हता[2] एक तगरावासी आचार्य पासे सोळ शिष्यो हता, जेमाना आठ व्यवहारी (व्यवहारक्रिया-प्रवर्तक) अने आठ अव्यवहारी हता ए आठ व्यवहारी शिष्योना नाम पुष्यमित्र, वीर, शिवकोष्ठक, आर्यास, अर्हतक, धर्मान्विग, स्कन्दिल अने गोपेन्द्रदत्त ए प्रमाणे हता[4]

तगरा नगर आभीर देशमा आवेलु हतु वि स ९८९=ई स ९३३ मा वढवाणमां रचायेला, दिगंबर आचार्य हरिषेणकृत 'बृहत् कथाकोश'मा 'तेरा' (तगरा>तयरा>तइरा>तेरा) नगरने 'आभोराख्य महादेश'मा बतावेलु छे दिगंबर कवि कनकामरे अगियारमा शतकमां रचेला अपभ्रंश काव्य 'करकंडचरिउ' (४–५)मा तेरापुरनु तथा त्यांना गुफामंदिरनु वर्णन छे, तथा ए ज काव्य जैन धार्मिक दृष्टिए तेरापुरनो केटलोक इतिहास पण आपे छे

हैदराबाद राज्यना उस्मानाबाद जिल्लामा तीर्णा नदीना किनारे आवेलु तेरा नामनु गामडु आ ऐतिहासिक तगरा नगरीनो अवशेष छे एम मानवामा आवे छे अत्यारे पण त्या प्राचीन जैन गुफाओना अवशेष विद्यमान छे

जुओ आभीर

१ धे कि त समावनामे[4] २ गिरिसमीवे णयर गिरिणयर विदिशासमीवे णयरं वेदिस णयर बेन्नाए समीवे णयर बेन्नायड तगराए समीवे णयर तगरायड, धे त समीवनामे। अनु, पृ १४९

२ उशा, पृ २००

३ उनि, गा ५२, उशा, पृ ९०

४ व्यम, विभाग ४, पटा विभाग २, पृ ६८–७०

५ आभीराख्यमहादेशे तेराख्यनगरं परम् ।
तदा नीलमहानीलौ प्रयातौ विजिगीषया ॥
'बृहत्-कथाकोश,' ५६. ५२

६ 'करकण्डचरिउ,' प्रस्तावना, पृ. ४१–४८.

## तरङ्गवती कथा

पादलिप्ताचार्यकृत एक धर्मकथा.

जुओ पादलिप्ताचार्य

## ताम्रलिप्ति

ताम्रलिप्तिने 'द्रोणमुख' कहेवामां आव्युं छे. जल अने स्थल एम बन्ने मार्गोए ज्यां जई शकाय ते द्रोणमुख. एना उदाहरण तरीके भरुकच्छ अने ताम्रलिप्तिनां नाम आपवामां आवे छे.[1] 'सिन्धु, ताम्रलिप्ति आदि प्रदेशोमां मच्छर पुष्कळ होय छे एवो उल्लेख 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी चूर्णिमां छे.[2]

ताम्रलिप्तिने साधारण रीते बंगाळनुं तामलुक गणवानो मत पुराविदोमां छे,[3] पण गुजरातना स्तंभतीर्थ–खंभातने पण प्राचीन काळथी ताम्रलिप्ति तरीके ओळखवामां आवे छे एना मजबूत पुरावा छे,[4] अने जैन आगमग्रन्थो उपरनी टीकाचूर्णिओ गुर्जर देशमां रचायेली होई एमां बंगाळना ताम्रलिप्ति करतां गुजरातना ज मोटा वेपारी मथक ताम्रलिप्ति (खंभात)नो द्रोणमुख तरीके निर्देश होय एम मानवुं वधारे समुचित छे.

प्रभाचन्द्रसूरिना 'प्रभावकचरित' (ई. स. १२७८)ना 'हेमाचार्यचरित' (श्लो. ३२–४१) मां 'स्तंभतीर्थ' अने 'ताम्रलिप्ति' ए बन्ने नामो पर्यायो तरीके वापरेलां छे ए वस्तु पण अहीं नोंधवी जोईए.

जुओ सिन्धु

१ दोहिं गम्मति जलेण वि थलेण वि दोणमुहं जहा भरुयच्छ ताम्रलित्ती एवमादि, आसूचू., पृ. २८२.

द्रोण्यो-नावो मुखमस्येति द्रोणमुख-जलस्थलेनिर्गम-प्रवेशं यथा भृगुकच्छं ताम्रलिप्तिर्वा, उशा, पृ ६६५.

द्रोणमुखं जलस्थलनिर्गमप्रवेशं, यथा भरुकच्छं ताम्रलिप्तिर्वा, आचा, पृ. २५८. वळी जुओ प्रश्न, पृ. ४८.

जुओ भरुकच्छ.

२ सूकृचू. पृ. १०१

३ ज्योति, पृ. २०३.

४ 'खमातनो इतिहास,' पृ. १८–१९; तथा पुगुमां स्तम्भतीर्थ.

## तुम्बवनग्राम

अवन्ति जनपदमां तुम्बवनग्राममां धनगिरि अने सुनंदा ए दंपतीना पुत्र तरीके वज्रस्वामी जन्म्या हता.[1]

जुओ वज्र-आर्य

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ३९०; आम, पृ. ३८७.

## तोसलिपुत्राचार्य

तोसलिपुत्राचार्य दशपुरमां आव्या त्यारे तेमनी पासे आर्य रक्षिते दीक्षा लीधी हती. रक्षित विद्वान होई राजाना प्रीतिपात्र हता; तेथी राजा कदाच दीक्षा नहि लेवा दे एम धारीने आचार्य तेमने लईने अन्यत्र चाल्या गया हता. जैन अनुश्रुति प्रमाणे आ पहेली शिष्यचोरी ('पढमा सेहनिप्फेडिआ') हती.[1]

१ आम, पृ. ३९४–९५; उने, पृ. २४; कवि पृ १७२–७३; इत्यादि.

## थावच्चापुत्र

एने विशेनी कथा आ प्रमाणे छे: द्वारका नगरनी समृद्ध सार्थवाही थावच्चानो ए पुत्र हतो युवावस्थामां आवतां इभ्यकुळनी बत्रीस कन्याओ साथे तेनुं लग्न थयुं हतुं. एक वार अरिष्टनेमि तीर्थंकर द्वारकामां सुरप्रिय उद्यानमां समोसर्या हता. कृष्ण वासुदेव प्रजाजनो साथे तेमने वंदन करवा माटे आव्या. तेमनो उपदेश सांभळीने

थावच्चापुत्रने प्रव्रज्या लेवानी इच्छा थई. माताए तथा वासुदेवे घणुं समजाव्या छतां ज्यारे एनो निश्चय चलायमान थयो नहि त्यारे वासुदेवे घोषणा करावी के 'जेओ मृत्युभयनो नाश करवा इच्छता होय छतां संबंधीओना योगक्षेमनी चिन्ताथी तेम करी शकता न होय तेओ थावच्चापुत्रनी साथे दीक्षा ले; एमना संबंधीओनो निर्वाह हुं करीश.' आथी केटलाक विचारक युवानोए थावच्चापुत्रनी साथे दीक्षा लीधी. पछी थावच्चापुत्रे तीर्थंकरना स्थविरो पासे चौद पूर्वोनुं अध्ययन कर्युं. पोताना अंतेवासी बधा युवानोने तीर्थंकरे थावच्चापुत्रने एमना शिष्य तरीके सोंपी दीधा. पछी विहार करतां थावच्चापुत्रे शैलकपुरना शैलक राजाने उपदेश आप्यो अने ५०० मंत्रीओ सहित तेने श्रमणोपासक बनाव्यो. सौगंधिका नगरीनो नगरशेठ सुदर्शन शुक नामे परिव्राजकना उपदेशथी तेना शौचमूलक प्रवचनमां मानतो हतो तेने पण थावच्चापुत्रे श्रमणोपासक बनाव्यो, एटलुं ज नहि, सुदर्शनना गुरु शुक पण थावच्चापुत्रनी वाणी सांभळी पोताना हजार तापसो सहित तेमना शिष्य थयो. छेवटे थावच्चापुत्र पोताना परिवार सहित पुंडरीक ( शत्रुंजय ) पर्वत उपर गया अने अनशन करीने सिद्ध, बुद्ध अने मुक्त थया.[1]

[1] ज्ञाध, श्रु. १, अध्य ५ ( शैलकज्ञात )

दण्डकारण्य

जुओ कुम्भकारकट

दशपुर

- माळवामां आवेलुं मंदसोर.[1]

दशपुरनी स्थापना केवी रीते थई एनो परंपरागत इतिहास आम आपवामां आवे छेः वीतभय नगरना राजा उदायन पासे जीवंतस्वामी महावीरनी गोशीर्षचंदननी सुन्दर काष्ठप्रतिमा हती ते उज्जयिनीनो

राजा प्रद्योत उठावी गयो हतो. ते पाछी मेळववा माटे उदायने दश राजाओने साथे लई प्रद्योत उपर आक्रमण कर्युं. प्रतिमा तो एने स्थानेथी ऊखडी नहि, पण प्रद्योतने केद पकडीने उदायन पाछो वळ्यो. वर्षाऋतुने कारणे मार्गमां तेओ पडाव नाखीने रह्या. कोई शक्य आक्रमणनो प्रतिकार थई शके ए माटे दश राजाओए छावणीनी आसपास धूळनो प्राकार बांध्यो. वर्षाकाळ पूरो थया पछी उदायन त्यांथी गयो, पण एना सैन्य साथे जे वणिकवर्ग आव्यो हतो ते त्यां ज वस्यो. दश राजाओए प्राकार बांध्यो होवाने कारणे नगरनुं नाम दशपुर पड्युं.[2]

आर्य रक्षितसूरि दशपुरना पुरोहित सोमदेवना पुत्र हता. दीक्षा पहेलां ब्राह्मण शास्त्रोनो विशेष अभ्यास करवा माटे तेओ दशपुरथी पाटलिपुत्र गया हता अने दीक्षा लीधा पछी पूर्वोनो अभ्यास करवा माटे आर्य वज्र पासे उज्जयिनी गया हता.[3] सातमो निह्नव गोष्ठामाहिल दशपुरमां थयो हतो[4]

१ ज्योडि, पृ. ५४.

२ आचू, पूर्व भाग, पृ ३९७–४०१; आम, पृ. ३९२–९४; निभा, गा. ३१७३; निचू, भाग ३, पृ. ६४६; उने, पृ. २३; इत्यादि.

३ जुओ उपर्युक्त आचू, आम

४ स्थासू, पृ. ४१०. जुओ गोष्ठामाहिल. वळी दशपुर विशेना प्रकीर्ण उल्लेखो माटे जुओ कनौ, पृ. २३४; ककि पृ. १७२-७३, १९९; कदी, पृ. २३; कसू, पृ. ५८७–८८.

## दशार्णपुर

दशार्णपुर एलकच्छपुर तरीके पण ओळखातुं हतुं, तथा गजाग्रपद तीर्थ एनी पासेना दशार्णकूट पर्वत उपर हतुं. दशार्णपुरमां दशार्णभद्र राजा राज्य करतो हतो.[1]

जुओ एलकच्छपुर, गजाग्रपद

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ४७९; आम, पृ. ४६८.

## दशार्ह

अंधकवृष्णिना दश पुत्रो, जेमां नेमिनाथना पिता समुद्रविजय सौथी मोटा हता तेओ दशार्ह अथवा दसार राजाओ तरीके जाणीता छे.[1] ए दशार्हो पैकी सौथी नाना वसुदेवना पुत्र कृष्ण वासुदेव हता. एमनां नाम–समुद्रविजय, अक्षोभ, स्तिमित, सागर, हिमवान, अचल, धरण, पूरण, अभिचंद्र, वसुदेव.[2] कुन्ती अने माद्री ए दशार्होनी बहेनो हती.

१ दवैचू, पृ. ४१.
२ अंद, वर्ग १-२.

## देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

दूष्यगणिना शिष्य.[1] परंपरानुसार तेओ 'नंदिसूत्र'ना कर्ता छे. वीरनिर्वाण स. ९८०=ई. स. ४५४ (वि सं. ५१०) अथवा ९९३=ई. स. ४६७ (वि. सं. ५२३)मां तेमनी अध्यक्षता नीचे वलभीमां एक परिषद मळी हती अने तेमां जैन श्रुतनी छेवटनी संकलना करवामां आवी हती. एमां आर्य स्कन्दिले तैयार करेली जैन श्रुतनी माथुरी वाचना देवर्धिगणिए मुख्य वाचना तरीके सर्व-संमतिथी चालु राखी हती, अने आर्य नागार्जुननी वलभी वाचनाना मुख्य पाठभेदो 'वायणंतरे' अथवा एवा अर्थनी नोंध साथे स्वीकार्या हता. वलभी वाचनाना विशेष भेदो टीकाकारोए 'नागार्जुनीयास्तु पठन्ति' एवा टिप्पण साथे टांक्या छे, एटले अध्ययन–अध्यापनमां वलभी वाचनानुं महत्त्व स्वीकारवामां आवतुं हतुं ए निश्चित छे.[2] देवर्धिगणिए जैन श्रुतनी एक नवी वाचना तैयार करी एम न कहेवाय, पण तेमणे एक पूर्वकालीन वाचनाने सर्वमान्य बनाववानुं तेम ज बीजी वाचनाना मुख्य पाठभेदो साचवी राखवानुं महत्त्वनुं कार्य कर्युं. वळी

तमाम उपलब्ध आगमग्रन्थोने तेमना नेतृत्व नीचे एक चोक्कस पद्धति अनुसार एक साथे लिपिबद्ध करवामां आव्या ए पण जैन इतिहासमां एक घणो महत्त्वनो बनाव गणाय.

'नंदिसूत्र'ना प्रारंभमां देवर्धिगणिनी गुरुपरंपरा आपवामां आवी छे. ए प्रमाणे तेओ महावीरथी बत्रीसमा युगप्रधान आचार्य छे. ए पट्टावलि नीचे प्रमाणे छे : महावीर पछी आर्य सुधर्मा, जंबुस्वामी, प्रभवस्वामी, शय्यंभव, यशोभद्र, संभूतिविजय, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, महागिरि, सुहस्ती, बलिस्सह, स्वाति, स्यामार्य, शांडिल्य, समुद्र, मंगू, आर्य धर्म, भद्रगुप्त, वज्र, रक्षित, नंदिल, नागहस्ती, रेवतिनक्षत्र, ब्रह्मद्वीपक सिंह, स्कन्दिलाचार्य, हिमवंत, नागार्जुन, गोविन्द, भूतदिन्न, लौहित्य, दूष्यगणि, देवर्धिगणि.[3] 'कल्पसूत्र' अंतर्गत स्थविरावली अनुसार देवर्धिगणि महावीरथी ३२मा नहि, पण ३४मा पुरुष हता.[4] त्यां देवर्धिगणिनो गुरुपरंपरा नीचे मुजब आपेली छे–महावीर पछी सुधर्मा, जंबु, प्रभव, शय्यंभव, यशोभद्र, संभूतविजय–भद्रबाहु, स्थूलभद्र, सुहस्ती, सुस्थित–सुप्रतिबुद्ध, इन्द्रदिन्न, दिन्न, सिंहगिरि, वज्र, रथ, पुष्यगिरि, फल्गुमित्र, धनगिरि, शिवभूति, भद्र, नक्षत्र, रक्ष, नाग, जेहिल, विष्णु, कालक, संपलित–भद्र, वृद्ध, संघपालित, हस्ती, धर्म, सिंह, धर्म, शांडिल्य, देवर्धि.

जुओ नागार्जुन, भट्टि आचार्य, मथुरा, वलभी

१ नम, पृ, ६५.

२ कस, पृ. ११८–१९; ककि, पृ. १२९–३२; कसू, २७५–७८; कको, पृ. १५६; करी, पृ. ११३–१५; इत्यादि.

३ नैसू, स्थविरावली, गा. १–४१.

४ विविध पट्टावलीओमा प्राप्त देवर्धिगणिनी गुरुपरंपरानी तुलनात्मक चर्चा माटे जुओ मुनि कल्याणविजयजीकृत 'वीरनिर्वाण संवत् और

'जैन कालगणना,' पृ. ११९ थी आगळ.

## देविलासुत

उज्जयिनीनो राजा. एनी कथा आ प्रमाणे छेः पोताना केशमां पळिया जोईने तेणे राणीनी साथे तापस तरीके दीक्षा लीधी हती. राणी ए समये सगर्भा हती. यथासमये तेणे पुत्रीने जन्म आप्यो, पण प्रसूतिकाळे ते मरण पामी. पुत्रीने बीजी तापसीओए उछेरी. पछी समय जतां युवावस्थामां आवेली पुत्रीने जोईने देविलासुत मोहित थयो अने तेने आश्लेष करवा जतां भोंय उपर पडी गयो. पोताना दुर्वर्तननुं फळ अहीं ज प्राप्त थयुं छे, एम समजीने तेणे पुत्री साध्वीओने आपी अने पोते विरक्त थईने सिद्धिमां गयो.[1]

१ आचू., उत्तर भाग, पृ २०२-३.

## देवेन्द्रसूरि

तपागच्छना स्थापक जगच्चंद्रसूरिना शिष्य अने पट्टधर. तेमणे 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र' उपर वृत्ति लखी छे, जे 'वंदारुवृत्ति' नामे प्रसिद्ध छे.[1]

देवेन्द्रसूरि मंत्री वस्तुपालना समकालीन होई ई. स. ना तेरमा शतकमां विद्यमान हता. खंभातमां तेमनुं व्याख्यान सांभळनार श्रोताओमां वस्तुपाल पण एक हतो. देवेन्द्रसूरिए प्राचीन कर्मग्रन्थोनो उद्धार करीने 'कर्मविपाक,' 'कर्मस्तव,' 'बंधस्वामित्व,' 'षडशीति' अने 'शतक' नामे नव्य कर्मग्रन्थो तथा ते उपरनी स्वोपज्ञ टीकाओ रची. आ सिवाय पण बीजा केटलाक ग्रन्थो तेमणे रचेला छे, जे पैकी प्राकृत 'सुदर्शनाचरित्र'ना सहकर्ता तेमना गुरुभाई विजयचंद्रसूरि हता. देवेन्द्रसूरिनुं अवसान सं. १३२७=ई. स. १२७१मां थयुं हतुं.[2]

१ मद्, पृ. ९६.

२ जैसाइ, पृ. ४०७-८.

## द्रोणाचार्य

'ओघनिर्युक्ति'ना टीकाकार. नवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरिकृत वृत्तिओनुं संशोधन द्रोणाचार्य जेमां मुख्य हता एवी एक पंडितपरिषदे कर्युं हतुं.[1] द्रोणाचार्य पूर्वाश्रममां क्षत्रिय हता तथा अणहिलवाडना चौलुक्य राजा भीमदेव पहेलाना मामा हता.[2] तेमनो समय विक्रमना १२मा शतकना पूर्वार्धमां अर्थात् ई. स. ना ११मा शतकना उत्तरार्धमां निश्चित छे. एमनुं मुख्य प्रवृत्तिक्षेत्र अणहिलवाड हतुं.[3]

१ जुओ अभयदेवसूरि.

२ प्रतापाक्रान्तराजन्यचक्रश्चक्रेश्वरोऽभवत् ।
श्रीभीमभूपतिस्तस्मादभवद् दुःशासनार्दनः ॥
शास्त्रशिक्षागुरुर्द्रोणाचार्यः सत्यापितव्रतः ।
अस्ति क्षात्रकुलोत्तंसो नरेन्द्रस्यास्य मातुलः ॥

प्रच, १८—श्लो. ५-६.

३ जुओ अणहिलपाटक.

## द्वारका–द्वारवती

द्वारकाना स्थान विशे सविस्तर चर्चा माटे जुओ पुगु मां द्वारका.

साडीपचीस आर्य देशो पैकी सुराष्ट्रनी राजधानी तरीके द्वारवतीनो उल्लेख छे.[1] आ नगरने नव योजन पहोळुं अने बार योजन लांबुं वर्णववामां आवेलुं छे.[2] एनी आसपास पथ्थरनो प्राकार हतो[3] ए दर्शावतो उल्लेख वस्तुस्थितिनो सूचक छे, जो के अन्यत्र एने सुवर्णना प्राकारवाळी वर्णवी छे.[4] एनाथी ईशानमां रैवतक नामे पर्वत हतो एमां नंदनवन नामे उद्यान हतुं अने त्यां सुरप्रिय यक्षनुं आयतन हतुं.[5]

जुदे जुदे प्रसंगे अंधकवृष्णि, कृष्ण वासुदेव तथा बलदेवने द्वारकाना राजा तरीके वर्णवेला छे.[6] वळी द्वारकाना विख्यात

निवासीओमां समुद्रविजय प्रमुख दस दशारो, बलदेव प्रमुख पांच महावीरो, उग्रसेन प्रमुख सोळ हजार राजाओ, प्रद्युम्न प्रमुख साडात्रण करोड कुमारो, सांब प्रमुख साठ हजार दुर्दांत पुरुषो, वीरसेन प्रमुख एकवीस हजार वीर पुरुषो, रुक्मिणी प्रमुख सोळ हजार देवीओ, अनंगसेना प्रमुख अनेक गणिकाओ तथा बीजा अनेक सार्थवाहो आदि हता. आ उपरथी यादवोनी राजपद्धति वज्जी, लिच्छवी आदिनी जेम गणसत्ताक हती अने तेमां अनेक यादव-विशेषो राजा नाम धारण करी शकता हता एम अनुमान थाय छे.

प्रतिवासुदेव जरासंधना भयथी यादवोनो समूह मथुराथी द्वारका आव्यो हतो. द्वारकाना नाश माटे आगमसाहित्यमां नीचे प्रमाणे कथा आपवामां आवे छे: यादवकुमारोए दारू पीने द्वैपायन ऋषिने मार्या हता. आथी बालतप करीने, द्वारवतीविनाशनुं निदान करीने मरण पामी द्वैपायन अग्निकुमार देव तरीके उत्पन्न थया हता. अग्निकुमारे द्वारवती बाळीने भस्म करी दीधी हती. मात्र बलराम अने कृष्ण बे ज जण बचीने नीकळ्या हता.

१ प्र, पृ. ५५; मुदनी, पृ. १२३; बृकसे, भाग ३, पृ. ६१३-१४.

२ ज्ञाध, पृ. ६६ तथा १०१; वृद, पृ. ३८-४१; इत्यादि.

३ पाषाणमयः प्राकारो यथा द्वारिकायाम्, बृकसे, भाग २, पृ. २५१.

४ द्वा त. बारवई नाम नगरी होत्था...चामीयरपवरपागारणाणा-मणिपचवन्नकविसीसकसोहिया, ज्ञाध, पृ. ९९.

५ अद, पृ. १, वृद, पृ. ३८-४१, ज्ञाध, पृ. ९९; आम्, पृ. ३५६; इत्यादि.

६ द्वा त. तत्थ ण बारवतीनयरीए कण्हे णाम वासुदेवे राया परिवसति, अद, पृ. २.

तत्थ ण बारवतीए नयरीए अंधगवण्ही णाम राया परिवसति, एज, पृ. २.

गोष्ठिमां भोजने विनोद कथनत्वापूर्वक उपदेश आपोने तेनी पासे मृगया तथा यज्ञमां पशुवधनो त्याग करा यो हतो.[2]

१ धाप्रर, पृ ११८

२ एच, पृ. ४१. धनपाल तथा तेनी कृतिओ माटे जुओ 'जैन साहित्य संशोधक,' खंड ३, अंक ३ तथा जैसाइ, पृ २००-२०६

## धनमित्र

आ मित्रोनी कथा नीचे प्रमाणे छे : उज्जयिनीना धनमित्र नामे वणिके पुत्र धनशर्मा साथे दीक्षा लीधी हती. तेओए एक वार मध्याह्नकाळे विहार कर्यो हतो. क्षुल्लक ( बाळसाधु ) धनशर्मा तृषातुर थतां पिताए मार्गमां आवती एक नदीमांथी पाणी पीवा कह्युं धनशर्माए पाणीनी अंजलि ऊंची करी, पण विचार करीने पाणीने सचित्त जाणीने न पीधुं अने पिपासा परीषह सहन करीने मरण पाम्यो.[1]

१ उशा, पृ ८७; उने, पृ १९. आ बीजी कृतिमां कथानो केटलोक चमत्कारपूर्ण विस्तार आपवामा आव्यो छे.

## धन्वन्तरि

द्वारकामां कृष्ण वासुदेवना बे वैद्यो हता—धन्वन्तरि अने वैतरणि. एमांनो धन्वन्तरि अभव्य—मुक्तिने अयोग्य हतो, ज्यारे वैतरणि भव्य—मुक्तियोग्य हतो. धन्वन्तरि साधुओने सावद्य औषध बतावतो, ज्यारे वैतरणि प्रासुक—निर्दोष औषध सूचवतो धन्वन्तरिने आनुं कारण पूछवामां आवे त्यारे ते कहेतो के—'में कंई श्रमणोने माटे वैद्यकशास्त्रनुं अध्ययन कर्युं नथी'[1]

१ आचू, पूर्व भाग, पृ ४६०-६१; आम, पृ ४६१

## धर्मसागर उपाध्याय

तपागच्छाचार्य हीरविजयसूरिना शिष्य. एमणे सं. १६२८=ई. स. १५७२ मां राजधन्यपुर—राधनपुरमां 'कल्पसूत्र' उपर 'किरणावली' नामे प्रमाणभूत टीका रची हती अमदावादनिवासी संघवी

कुंअरजीए ए टीकानी सेंकडो प्रतो लखावी हती.[1]

१ कक्रि, प्रशस्ति, पृ. २०३-४. धर्मसागरे बीजा पण अनेक ग्रन्थो रचेला छे एमनी खंडनप्रधान शैलीए तत्कालीन जैन समाजमां मोटो खळभळाट मचाव्यो हतो. एमनी रचनाओ माटे जुओ जैसाई, पृ ५८२-८३.

## ध्रुवसेन

ध्रुवसेन राजाने पुत्रमरणथी थयेलो शोक शमाववा माटे आनंदपुरमा सभा समक्ष 'कल्पसूत्र' वांचवामां आव्युं हतुं.[1]

जुओ आनन्दपुर

१ कस, पृ ११८-१९, कसु, पृ. १५-१६, ३७५-७८; कक्रि, पृ ९, १६, ११०; कदी, पृ ११३-१५; कको, पृ. ९.

## नडपिटक

भरुकच्छथी उज्जयिनी जवाना मार्गमां आवेलु एक गाम.

भरुकच्छथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने उज्जयिनी मोकल्यो हतो, पण मार्गमां कोई मांदा साधुनी सारवार माटे एने रोकावुं पड्युं हतुं, अने एम समय वीती जतां तेणे नडपिटक (प्रा. नडपिडअ) गाममा नागगृहमां चातुर्मास कर्यो हतो.[1]

१ आचू., उत्तर भाग, पृ. २०९

## नन्दन उद्यान

द्वारकाना ईशान खूणे रैवतकनी पासे आवेलु उद्यान.

जुओ द्वारका, द्वारवती अने रैवतक

## नभोवाहन

भरुकच्छनो नभोवाहन राजा कोशसमृद्ध हतो. प्रतिष्ठाननो सालवाहन बलसमृद्ध हतो. दर वर्षे सालवाहन राजा भरुकच्छने घेरो घालतो अने वर्षाऋतु बेसे एटले पोताना नगरमां पाछो जतो. नभोवाहन कोशसमृद्ध हतो, एटले घेरा

वखते जे कोई सालवाहनना सैनिकोना हाथ अथवा माथां कापी लावे तेने हजारोनां इनाम आपतो हतो. सालवाहन पोताना माणसोने पराक्रमना बदलामां कशुं आपतो नहोतो; आथी तेनुं सैन्य क्षीण थतुं अने तेने प्रतिष्ठान पाछा फरवुं पडतुं. बीजे वर्षे फरी पाछो ते सैन्य साथे आवीने घेरो घालतो. आ प्रमाणे समय वीततो हतो. एम करतां युक्तिथी विजय मेळववा माटे एकवार सालवाहनने तेना अमात्ये कह्युं के 'मारो अपराध थयो छे एम जाहेर करीने मने देशवटो आपो.' सालवाहने एम कर्युं, एटले मंत्री भरुकच्छ गयो अने एक देवकुलमां रह्यो. सालवाहननो ए निर्वासित मंत्री छे ए वात समय जतां जाहेर थई. नभोवाहने माणसो मोकलीने एने बोलाव्यो, पण ज्यारे ए आव्यो नहि त्यारे राजा पोते त्यां आव्यो अने पोताना मंत्री तरीके एनी निमणूक करी. पछी मंत्रीए नभोवाहनने सलाह आपी के 'पुण्यथी राज्य मळे छे, माटे बीजा भव माटे पुण्य संचित करो.' पछी नभोवाहने एना कहेवा प्रमाणे देवकुलो अने स्तूपो, तळावो अने वावो बंधाव्यां तथा 'नभोवाहन खाई' नामनी खाई खोदावी. एम द्रव्य वपराई गयुं, एटले मंत्रीए पोताना राजा सालवाहनने बोलाव्यो. एक वारना कोशसमृद्ध नभोवाहन पासे हवे पोताना माणसोने प्रीतिदान-रूपे आपवा जेवुं कंई नहोतुं, आथी तेने नासी जवु पड्युं अने भरुकच्छनो कबजो सालवाहने लीधो.'

नभोवाहननी राणीनुं नाम पद्मावती हतुं. वज्रभूति आचार्यनी कवि तरीकेनी ख्यातिथी आकर्षाईने ए आचार्यने मळवा गई हती.

पश्चिम भारतनो क्षहरातवंशीय शक-क्षत्रप नहपान ते ज आ नभोवाहन (प्रा. णहवाहण, णभवाहण) होई शके. एनो समय ईसवी सनना बीजा शतकना पूर्वार्धमां होय ए सौथी वधु संभवित छे. ए समये महाराष्ट्रमां सालवाहन वंशना गौतमीपुत्र शातकर्णि

राज्य करतो हतो,[4] ए ज आगमसाहित्यमां जेनो 'सालवाहन-सातवाहन' एवो नामनिर्देश कर्यो छे ए संभवे. सातवाहनो अने पश्चिम भारतना शक-क्षत्रपो वच्चे शत्रुग्रह चाली आवती हती ए इतिहाससिद्ध छे. शातकर्णिना उत्तराधिकारी वासिष्ठीपुत्र पुळुमायीना एक लेखमां[5] शातकर्णिने माटे 'खखरात-वस-निरवसेस-करस सातवाहन-कुल-यस-पतिथापन-करस' (=सं. क्षहरातवंश-निरवशेषकरस्य शातवाहनकुलयशःप्रतिष्ठापनकरस्य) एवा शब्दो वापरीने एने क्षहरातवंशनो उच्छेद करनार तरीके वर्णव्यो छे ए घणुं सूचक छे.

जुओ सातवाहन, सालवाहन

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. २००-२०१.

२ जुओ वज्रभूति आचार्य.

३ रायचौधरी, 'पोलिटिकल हिस्टरी ओफ एन्श्यन्ट इन्डिया,' पृ. ३२१ थी आगळ.

४ 'सिलेक्ट इन्स्क्रिप्शन्स,' नं. ५८, टिप्पण १.

५ एज, नं. ८३-८४.

६ एज, नं. ८६.

## नर्मदा

नर्मदा नदी. 'आवश्यक सूत्र'नो चूर्णिनी एक कथामां स्त्रीचरित्रविषयक एक प्राकृत श्लोकनो पूर्वार्ध नीचे प्रमाणे छे :

दिया कागाण बीभेसि रत्तिं तरसि नंमदं ।[1]

'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी कोट्याचार्यनी वृत्तिमां नर्मदाना पूरनो उल्लेख छे.[2]

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. ६१. एक सुप्रसिद्ध संस्कृत श्लोकार्ध-"दिवा काकरवाद् भीता रात्रौ तरति नर्मदाम्"-नुं आ प्राकृत छे. अथवा जनसमाजमां वहेती प्राकृत कहेवत उपरथी ज आ श्लोक बनाववामां आव्यो होय.

२ विको, पृ. १७८

मुनिचन्द्रना वचनथी सं. ११२९–ई. स. १०७३ मां अणहिल-पाटकमां दोहडि श्रेष्ठीनी वसतिमां रहीने 'उत्तराध्ययन सूत्र' उपर वृत्ति रची.[1] ए ज नगरमां अने ए ज वसतिमां रहीने तेमणे सं ११४१–ई. स. १०८५ मां प्राकृत 'महावीरचरित' रच्युं हतुं.[2]

नेमिचन्द्रनुं सूरिपदनी प्राप्ति पहेलांनुं नाम देवेन्द्रगणि हतुं.[3]

१ उने, प्रशस्ति.

२ उने, प्रस्तावना, पृ. २

३ जिरको, पृ. ४३; उने, प्रस्तावना, पृ. १.

## नेमिनाथ

बावीसमा तीर्थंकर. दश दशारो पैकी सौथी मोटा समुद्रविजय अने तेमनी राणी शिवादेवीना पुत्र. तेमना जन्म पूर्वे माताए चक्रनी रिष्ट–रत्नमय नेमि आकाशमां जोई हती, तेथी तेओ 'अरिष्टनेमि' कहेवाया.[1] कृष्णे तेमनो विवाह उग्रसेन राजानी पुत्री राजिमती साथे नक्की कर्यो हतो, पण लग्नमंडपमां नोतरेला माणसोने मांसनो खोराक आपवा माटे बांधेलां पशुओनो आर्तनाद सांभळीने नेमिनाथे वैराग्य पामीने रैवतक उद्यानमां दीक्षा लीधी हती.[2] यादवकुळना अनेक युवानोए नेमिनाथ पासे दीक्षा लीधी हती.[3] नेमिनाथ गिरनार उपर निर्वाण पाम्या हता

चोवीस तीर्थंकरो पैकी ऋषभदेव, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ, नेमिनाथ अने महावीरनां चरित्रो साहित्यिक दृष्टिए सौथी वधारे लोकप्रिय बन्यां छे. आगमेतर साहित्यमां नेमिनाथनां संस्कृत–प्राकृत चरित्रो, स्तोत्रो, एमना जीवन विशेनां काव्यो वगेरे मळीने कुटीबंध कृतिओ जाणवामां आवेली छे.[4]

३ अंद, वर्ग १-५

४ जिरको, पृ. २१६-१९

पत्तन

वेपारनुं केन्द्र होय एवुं नगर. पत्तन बे प्रकारनां होय छे: जलपत्तन अने स्थलपत्तन. ज्यां जळमार्गे माल आवे ते जलपत्तन अने स्थलमार्गे आवे ते स्थलपत्तन. जलपत्तनना उदाहरण तरीके द्वीप (दीव) अने काननद्वीपनां नाम अपाय छे, ज्यारे स्थलपत्तन तरीके मथुरा अने आनंदपुर आपवामां आवे छे.[1] केटलाक टीकाकारोए प्राकृत 'पट्टण' शब्दनां 'पट्टन' अने 'पत्तन' एवां बे संस्कृत रूपो स्वीकारीने बेना जुदा अर्थ आप्या छे' जेम के ज्यां नौकाओ मारफत जवाय ते पट्टन अने ज्यां गाडांमां के घोडे बेसीने तेम ज नौका मारफत जवाय ते पत्तन[2].

कालक्रमे 'पत्तन' सामान्य नाममांथी विशेष नाम बन्युं, अने गुजरातनुं मध्यकालीन पाटनगर 'अणहिलपत्तन' मात्र 'पत्तन' एवा टूंका नामे जाणीतुं थयुं. 'कल्पसूत्र'नी 'कौमुदी' नामे टीकाना कर्ता शान्तिसागर पोते ए टीका 'पत्तनपत्तन'मां[3]-एटले के पाटण-नगरमां लखी होवानुं जणावे छे.

१ उशा, पृ. ६०५; आवी, पृ. ३५८; बृकभा, गा १०९०; बृकक्षे, भाग २, पृ. ३४२; वळी जुओ ज्ञाधअ, पृ ५५, १४०.

२ जुओ भरुकच्छ.

३ कको, प्रशस्ति, श्लो. ४.

पाण्डुमथुरा

जुओ मथुरा

पादलिप्ताचार्य

एक प्रभावक आचार्य, जेमनुं नाम सौराष्ट्रना प्रसिद्ध जैन तीर्थ

पादलिप्तपुर–पालीताणा साथे जोडायेलुं छे.

पादलिप्ताचार्य पाटलिपुत्रमां मुरुंड राजाना दरबारमां हता. एक वार मुरुंड राजा उपर यवनोए मीणवाळुं सूतर, कापीने सरखी करेली लाकडी तथा मुंवाळी मुद्रित दाबडी मोकली अने साथे संदेशो कहाव्यो के 'सूतनो अंत, लाकडीनो आदिभाग अने समुद्गकनुं द्वार बतावो.' पण आ कार्य कोई करी शक्युं नहि. छेवटे पादलिप्ते सूतर ऊना पाणीमां नाख्युं, एटले मीण ओगळी गयुं अने छेडा देखाया; लाकडी पण पाणीमां नाखी, एटले मूळनो भाग भारे होवाथी अंदर डूब्यो अने दाबडी उपर लाख हती ते गरम पाणीमां बोळीने उखाडी.[1]

मुरुंड राजानी शिरोवेदना वैद्यो मटाडी शक्या नहोता, ते पादलिप्ताचार्ये मंत्रशक्तिथी मटाडी हती एवुं कथानक मळे छे.[2]

पादलिप्ताचार्य यंत्रविद्यामां पण कुशळ हता. तेमणे एक वार राजानी बहेनने बराबर मळती यंत्रप्रतिमा बनावी हती. ए प्रतिमा उन्मेषनिमेष करती हाथमां पंखो लईने ऊभेली हती.[3]

पादलिप्ताचार्ये 'तरंगवती' नामनो एक विख्यात प्राकृत धर्मकथा रची हती, जेना उल्लेखो आगमसाहित्यमां[4] तेमज अन्यत्र अनेक स्थळे प्राप्त थाय छे. मूळ कथा तो सैकाओ पहेलां नाश पामी गई छे, पण पादलिप्तनी पछी थयेला परन्तु जेनो चोक्कस समय अनिश्चित छे एवा आचार्य वीरभद्र के वीरभद्रना शिष्य नेमिचन्द्रे १९०० प्राकृत गाथाओमां करेलो तेनो संक्षेप मात्र हालमां उपलब्ध छे.[5] पादलिप्ताचार्ये 'ज्योतिष्करंडक' उपर वृत्ति लखी हती एम आगमसाहित्यना सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य मलयगिरिना कथन उपरथी स्पष्ट छे.[6] आ वृत्ति नष्ट थई गई होवानुं मानवामां आवतुं हतुं, पण एनी हस्तलिखित प्रति पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीए जेसलमेरना ग्रन्थभंडारमांथी शोधी काढी छे.

पादलिप्ते दीक्षा अने प्रतिष्ठाविधि विशे ' निर्वाणकलिका ' नामे जाणीतो ग्रन्थ रच्यो छे. आ उपरात ' प्रभावकचरित 'ना ' पादलिप्तसूरिचरित 'मा तेमणे ' प्रश्नप्रकाश ' नामे ज्योतिषग्रन्थनुं निर्माण कर्युं होवानो उल्लेख छे.[९] चूर्णिओमा ' कालज्ञान ' नामे एक रचनानुं कर्तृत्व पण पादलिप्त उपर आरोपित करेलुं छे.[६] पादलिप्तनी प्राकृत गाथाओ हालकृत प्राकृत सुभाषितसग्रह ' गाथासप्तशती 'मा उद्धृत करेली छे.

' प्रभावकचरित ' नोंधे छे के पादलिप्ताचार्य एक वार तीर्थयात्रा करता सौराष्ट्रमा ढकापुरी ( ढाक )मा गया हता. त्या एमने सिद्ध नागार्जुननो समागम थयो पछी नागार्जुने पोताना ए गुरुना स्मरणरूपे शत्रुंजयनी तळेटीमा पादलिप्तपुर नामनुं नगर वसाव्युं, शत्रुंजय उपर जिनचैत्य कराव्यु त्या महावीरनी प्रतिमा स्थापित करी अने त्या ज पादलिप्तसूरिनी मूर्ति पण स्थापित करी[९]

पादलिप्ताचार्यनो समय विक्रम संवतनी प्रारंभिक शताब्दीओमा निश्चित करवामा आव्यो छे[१०] एमनु परपरागत विस्तृत चरित 'प्रभावकचरित 'ना ' पादलिप्तसूरिचरित 'मा मळे छे.

१ आचू, पूर्व भाग, पृ ५५४, आम, पृ ५२४–२५; नम, पृ १६२

२ निचू, भाग ४, पृ ८७२, पिनिम, पृ. १४१–४२ पिनिम मां मुरुडने प्रतिष्ठानपुरनो राजा कह्यो छे, ए मुद्रणदोष होवो जोईए, केम के ए ज कर्ताए रचेली अन्य वृत्तिओमां स्पष्ट रीते पाटलिपुत्रनो उल्लेख छे ( जुओ उपर टिप्पण १ )

३ बृकमा गा ८९१५; बृकक्षे, भाग ५, पृ १३१५–१६ आ प्रकारनां ' वीरूपो ' यवनविषय ' मां पुष्कळ बन छे एम अहीं टीकाकार नोंधे छे

४ निचू, भाग ३, पृ ४७९, भाग ५, पृ १०२९, विनो, पृ ४३३, बृकम, पृ १६४–१६५, बृकक्षे भाग २, पृ ७२२ भाग

५, पृ १४८९; व्यम ( उद्दे० ५ उपरनी वृत्ति ) पृ ६, आगमेतर साहित्यमां 'तरंगवती' ना उल्लेखो माटे जुओ 'निर्वाणकलिका,' प्रस्तावना, पृ १५-१६

५ आ संक्षेपनो जर्मन अनुवाद प्रो ल्युमने कर्यो छ एना गुजराती भाषान्तर माटे जुओ 'जैन साहित्य संशोधक,' ग्रन्थ २

६ ×× ज्योतिष्करण्डकमूलटीकाया श्रीपादलिप्तसूरिभि. उक्त, सूत्रम, पृ ७१

तथा चास्यैव ज्योतिष्करण्डकस्य टीकाकार पादलिप्तसूरिराह— एए उ सुसमादयो अद्धाविसेसा जगाइणा सह पवत्तत, जुगतेण सह समप्पति" ति । उपोद्घात, पृ ५२

७ प्रच, ५-श्लो ,४७

८ प्रच गुज. अनुवाद, प्रस्तावना, पृ ३१, वळी जुओ व्यम ( भा गा २६३ उपरनी वृत्ति )-यथा पादलिप्तकृतविवरण कालज्ञाने

९ प्रच, ५-श्लो २४७-३०६

१० 'निर्वाणकलिका' प्रस्तावना, पृ १६

## पालक

उज्जयिनीना प्रद्योत राजाना बे पुत्रो हता—पालक अने गोपालक एमाथी गोपालके दीक्षा लीधी, एटले पालक राजा थयो एने बे पुत्रो हता-राष्ट्रवर्धन ( राज्यवर्धन ) अने अवंतिवर्धन तेमाथी अवंतिवर्धनने राजपदे अने राज्यवर्धनने युवराजपदे स्थापीने पालके पण रा भोगवीने दीक्षा लीधी हती[१]

'तित्थोगाली' प्रकीर्णकमा जणाव्या प्रमाण—जे रात्रिए भगवा महावीर निर्वाण पाम्या हता ते ज रात्रिए अवंतिमा पालक राजान अभिषेक थयो हतो.[२]

जुओ अवन्तिवर्धन

१ आचू, उत्तर भाग, पृ १८९, वइ, पृ ०० ०२

२ ज रयणि सिद्धिगओ अरहा तित्थकरो महावीरो ।
त रयणिमवंतीए अहिसित्तो पालगो राया ॥
'अभिधान-राजेन्द्र,' भाग १, पृ. ४९४

## प्रतिष्ठान

महाराष्ट्रमां गोदावरीने किनारे आवेलुं पैठण.

प्रतिष्ठान गोदावरी नदीना तट उपर आवेलुं हतुं. त्यां सालवाहन राजा राज्य करतो हतो. एनो अमात्य खरक नामे हतो.[1] सालवाहन दर वर्षे भरुकच्छ, ज्यां नभोवाहन राज्य करतो हतो त्यां आक्रमण करतो हतो.[2]

प्रतिष्ठानमां जैनोनी मोटी वस्ती हती तथा राजानुं वलण पण जैनधर्मने अनुकूळ हतुं. आ नगरना संघ तथा राजाना अनुमोदनथी कालकाचार्ये पर्युषण भादरवा सुद पांचमने बदले चोथे प्रवर्ताव्युं हतुं[3] निर्युक्तिकार भद्रबाहुस्वामी अने तेमना भाई वराहमिहिर आ नगरना ब्राह्मणकुमारो हता.[4]




१ बृकर्त्र, भाग ६, पृ. १६४७
२ जुओ नभोवाहन
३ जुओ कालकाचार्य.
४ 'अभिधान-राजेन्द्र,' भाग ५, पृ. १३६९

## प्रद्योत

उज्जयिनीनो राजा. ते उग्र स्वभावनो होवाथी चंडप्रद्योत तरीके ओळखातो हतो.

तेने आठ राणीओ हती, जेमांनी शिवादेवी वैशालीना राजा चेटकनी पुत्री हती अने अंगारवती सुंसुमारपुरना राजा धुंधुमारनी पुत्री हती.[1] एना मंत्रीनुं नाम खंडकर्ण हतुं (जुओ खण्डकर्ण). शकुन्त नामे एनो एक अन्य मंत्री पण हतो (जुओ शकुन्त). प्रद्योतना समयनुं

उज्जयिनी भारतनां सौथी समृद्ध नगरो पैकी एक हतुं एना समयमां उज्जयिनीमां नव कुत्रिकापण–त्रिभुवननी सर्व वस्तु जेमां मळे एवा वस्तुभंडारो हता.

प्रद्योतना जीवननो घणो भाग पोताना पडोशी राजाओ जे एना शत्रुओ थता हता एमनी साथे लडवामां गयो हतो. पडोशी राज्यो साथेना आ कलहना परंपरागत वृत्तान्तो आगमसाहित्यमां मळे छे:

एक वार प्रद्योते राजगृह नगर घेर्युं. राजगृहना राजा श्रेणिकनी नंदा राणीथी थयेलो पुत्र अभयकुमार जे एनो मंत्री पण हतो तेणे प्रद्योत आव्यो ते पहेलां एना स्कंधावारनिवेशनी जग्या जाणी लीधी हती अने त्यां घणुं धन दटाव्युं हतुं. पछी प्रद्योते आवीने पडाव नाख्यो एटले अभयकुमारे कहेवराव्युं के "तमारुं आखुं सैन्य मारा पिताए फोडी नाख्युं छे; आ वात उपर विश्वास न पडतो होय तो छावणीमां खोदावी जुओ." आ प्रमाणे खोदतां द्रव्य नीकळ्युं, एटले प्रद्योत डरीने नासी गयो. पण पाछळथी वस्तुस्थिति जाणवामां आवतां प्रद्योते अभयकुमार उपर रोष भराई तेने केद करवानो निश्चय कर्यो. तेणे एक गणिकाने राजगृह मोकली अने सहायक तरीके बीजी केटलीक गणिकाओ आपी. गणिकाए एक धर्मप्रेमी जैन विधवानो वेश धारण कर्यो. चैत्यपरिपाटीमां सौ अभयने घेर गयां त्यां तेणे धर्मप्रेमी अभयने पोताने घेर जमवानुं निमंत्रण आप्युं अने भोळवीने मद्यपान करावी, केद करीने अवंति भेगो कर्यो. त्यां अभयकुमारे चातुर्यथी प्रद्योतने प्रसन्न कर्यो, एटले प्रद्योते एने छोडी मूक्यो. पण ए समये अभयकुमारे प्रद्योतने कह्युं के "तमे मने कपटथी पकडी आण्यो हतो, पण हुं तो तमने पोकारो पाडता हशो अने अहींथी उपाडी जईश." थोडा समय पछी अभयकुमार राजगृहथी बे गणिकाओ लईने आव्यो अने वेपारीने वेशे उज्जयिनीमां रहेवा लाग्यो. तेणे

पोताना एक दासने गांडानो वेश धारण कराव्यो हतो अने तेन प्रद्योत नाम आप्यु हतु एने दररोज खाटलामा बाधीने वैद्य पासे लई जवामा आवतो त्यारे ते 'हु प्रद्योत छुं' एवी बूमो पाडतो हतो हवे, पेली बे गणिकाओ जे अभयकुमार साथे रहेती हती तेमना सौ दर्यथी आकर्षाईने एमनी कामना करतो प्रद्योत सकेत अनुसार त्या आव्यो, एटले तेने अभयकुमारनी सूचनाथी पकडी लेवामा आव्यो, अने 'हु प्रद्योत छुं' एवी बूमो ने पाडतो रह्यो अन एने उज्जयिनी वच्चेथी खाटलामा बाधीने उपाडी जवामा आव्यो नगरजनोए तेनी बूमो साभळीने मा यु के पेला प्रद्योतनामधारी गाडाने दररोजनी जेम वैद्यने त्या लई जवामा आवे छे राजगृहमा श्रेणिके प्रद्योतनो वध करवानो विचार कर्यो, पण अभयकुमारे तेने एम करता अटकाव्यो पाछळथी प्रद्योतने मुक्त करवामा आव्यो हतो [३]

सि धु–सौवीरना राजा उदायन साथे पण प्रद्योतने युद्धनो प्रसग आव्यो हतो उदायन पासे जीवनस्वामी महावीरनी एक सुन्दर काष्ठ प्रतिमा हती अने उदायननी देवदत्ता नामे एक कुब्जा दासी ए प्रतिमानु संगोपन करती हती प्रतिमाने वंदन करवा माटे गाधारथी आवेला एक श्रावके आपेली गुटिका लेवाथी ए दासीनी काया काचन वर्णी बनी गई हती अने ते सुवर्णगुलिका तरीके प्रसिद्ध थई हती. नलगिरि हाथी उपर आवीने प्रद्योते ए दासीनु हरण कर्यु हतुं अने एना आग्रहने कारणे पेली काष्ठप्रतिमा पण साथे लीधी हती आ खबर पडता उदायन दश राजाओने सहायमा लईने* उज्जयिनी उपर चडी आव्या अने प्रद्योतने पराजित कर्यो, प्रद्योत कैद पकडायो अने उदायने एना कपाळ पर 'दासीपति' शब्द अकित कर्यो प्रतिमाने लेवा माटे उदायने घणो प्रयास कर्यो, पण ए तो एना स्थानेथी चलित थई नहि एटले प्रद्योतने लईने उदायन पाछो सि धु–सौवीर तरफ चाल्यो. मार्गमा चालता पर्युषणनो समय आव्यो अने तेमा प्रद्योते उपवास करवानो

स्कन्द अने रुद्रने नमस्कार करवा लाग्या, त्यारे आ बे बहेनोए पोतानी जातने संयममां जोडी. छेवटे वहाण भांगी गयुं अने बन्ने जणीओ कालधर्म पामी मोक्षे गई. लवणसमुद्रना अधिपति सुस्थित देवे तेमनो महिमा कर्यो त्यां देवोद्योत थयो, अने त्यारथी प्रभासतीर्थ थयुं[१]

भरत चक्रवर्तीना दिग्विजयवर्णनमां पश्चिममां प्रभासतीर्थनो उल्लेख छे,[२] 'बृहत्कल्पसूत्र'नां भाष्य, चूर्णि अने वृत्तिमां प्रभासतीर्थमां यात्रामां थती संखडी–उजाणीनो निर्देश छे[३]

१ आवू, उत्तर भाग, पृ १९७.

२ आम, पृ. २३०. वळी जुओ 'वसुदेवहिंडी,' अनुवाद, पृ २४१

३ बृकभा, गा. ३१५०, बृक्षे. भाग ३, पृ. ८८३–८४

## प्रियग्रन्थसूरि

सुस्थित–सुप्रतिबुद्धना शिष्य प्रियग्रन्थसूरिए अजमेरु पासे आवेला हर्षपुरमां पोताना विद्याचमत्कारथी यज्ञमां थतो पशुवध अटकाव्यो हतो.[१]

जुओ अजमेरु

१ कप्कि, पृ. १६९ कसु, पृ ५०९–१०, कदी, पृ १४८–४९.

## फलही

सोपारकना माल्लिक मल्लने पराजित करवा माटे उज्जयिनीवासी अट्टणमल्ले भरुकच्छ पासेना एक खेडूतने तालीम आपी तैयार कर्यो हतो, जे फलही नामे प्रसिद्ध थयो हतो

जुओ अट्टण

## बन्नासा

उत्तर गुजरातनी बनास नदी

'बृहत् कल्पसूत्र'ना वृत्तिकार कहे छे के कोई स्थळे अति-

पूरथी पण धान्य पाके छे, जेम के चत्तासामां ज्यारे खूब पूर आवे त्यारे ए पूरथी भावित थयेली क्षेत्रभूमिमां बीज वेरवामां आवे छे.'

१ बृक्षे, भाग २, पृ. ३८३.

## बलभद्र

कृष्ण वासुदेवना मोटा भाई अने नवमा बलदेव. तेओ अत्यंत स्वरूपवान हता. द्वारका नगरीनुं दहन थयुं त्यारे बन्ने भाईओ जळदीथी त्यांथी नीकळीने दक्षिण तरफ जता हता त्यारे कौसुंबारण्यमां[1] कृष्णनुं मरण थयुं अने कृष्णना शरीरने अग्निसंस्कार करीने बलभद्रे दीक्षा लीधी. सुमुख, दुर्मुख, कूपदारक, निषढ, दंद वगेरे बलभद्रना पुत्रो हता.

बलभद्रनुं संपूर्ण चरित्र आगमसाहित्यमां नथी, पण निषढ आदि तेमना बार पुत्रोए नेमिनाथ पासे दीक्षा लीधी हती तेनो वृत्तान्त[2] तथा बलभद्रना जीवनना केटलाक प्रसंगो अने तेमने विशेना उल्लेखो मळे छे.[3] कृष्णनी जेम बलभद्रनुं चरित्र पण नेमिनाथचरित्र साथे संकळायेलुं छे अने 'त्रिषष्टि'-अंतर्गत तथा विविध लेखकोए रचेलां 'नेमिनाथचरित्रो'मां ते उपलब्ध थई शके.

१ जुओ कौसुंबारण्य.

२ वृद, तथा अद, वर्ग ४

३ उदाहरण तरीके-उधा, पृ. ११७; मध, गा. ४९६-९७; कसु, पृ. ३९९-४२४, कल्कि, पृ. १२७-४२; इत्यादि.

## बलमित्र-भानुमित्र

भरुकच्छना राजकर्ताओ. तेओ बे भाईओ हता. तेमना भाणेज बलभानुने कालकाचार्ये दीक्षा आपी होवाने कारणे आचार्यने भरुकच्छ छोडीने प्रतिष्ठान चाल्या जवुं पड्युं हतुं. एक परंपरा प्रमाणे बलमित्र-भानुमित्र कालकाचार्यना भाणेज हता.

एमने माटे जुओ कालकाचार्य-२

## बोधिक

एक अनार्य जाति, जे लूंटफाट करी त्रास वर्तावती हती. आगम-साहित्यमां बोधिकोने मालवोथी अभिन्न गण्या छे. जुओ मालव–१

वळी जुओ उज्जयिनी, मथुरा

## ब्रह्मद्वीप

आभीर देशमां कृष्णा अने बेणा नदीना संगम आगळ आवेलो एक द्वीप. त्यां वसता पांचसो तापसोने आर्य वज्रना मामा आर्य समितसूरिए प्रतिबोध पमाड्यो हतो. ए प्रतिबोध पामेला साधुओथी जैन साधुओनी ब्रह्मद्वीपक शाखानो प्रारंभ थयो हतो.[1] 'नंदिसूत्र'ना प्रारंभे आपेली देवर्द्धिगणिनी गुरुपरंपरामां सिंहसूरिने 'ब्रह्मद्वीपक सिंह' कह्या छे.[2]

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ५४३; आम, पृ ५१५; कवृ, पृ ११३; कसु, पृ १३४; ककि, पृ. १७१; कदी, पृ. १४९–१५०; नंमू, पृ. ५१; विनिम, पृ १४४.

२ जुओ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण.

## भट्टि आचार्य

दूष्यगणि क्षमाश्रमणना शिष्य भट्टि आचार्यनो मत 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी चूर्णिमां टांकेलो छे.[1] जैन परंपरा अनुसार, मूळ आगमोने संकलित रूपे लिपिबद्ध करावनार देवर्द्धिगणि दूष्यगणिना शिष्य छे.[2] भट्टि आचार्य ए देवर्द्धिगणिनुं बीजुं नाम हतुं के तेमने मानार्थे भट्टि (सं. भर्तृ) आचार्य एटले 'मुख्य' आचार्य कहेवामां आवता हता के पछी भट्टि आचार्य दूष्यगणिना बीजा ज कोई शिष्य जेमने विशे अत्यार सुधीमां कंई जाणवामां आव्युं नथी एमनुं नाम हतुं ए निश्चितपणे कहेवुं मुश्केल छे.

सुप्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणकाव्य 'रावणवध' जे सामान्य रीते 'भट्टिकाव्य' तरीके ओळखाय छे तेनो कर्ता 'महाब्राह्मण महावैयाकरण स्वामिपुत्र भट्टि' वलभीनो हतो, एटले, वलभीमां भट्टि नाम प्रचलित हतुं; अने देवर्द्धिगणिनो निवास पण वलभीमां हतो, एटले भट्टि ए देवर्धिगणिनुं अपर नाम होय ए कदाचित् संभवे छे.

१ अत्र दूष्यगणिक्षमाश्रमणशिष्या भट्टियाचार्या भवते...सूकृचू; पृ ४०५

२ नम, पृ. ६५. जुओ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण.

**भण्डीरवन**

मथुरानी पासे आवेलुं एक उद्यान. त्यां भंडीर यक्षनुं आयतन हतुं. लोको बळदगाडां जोडीने एनी यात्राए जता.

जुओ कम्बल–सम्बल, मथुरा

**भद्रगुप्ताचार्य**

उज्जयिनीवासी एक आचार्य.

आर्य रक्षित दशपुरमां पोताना गुरु तोसलिपुत्राचार्य पासे अगियार अंग अने जेटलो दृष्टिवाद तेमने अवगत हतो तेटलो शीख्या. पछी उज्जयिनीमां दृष्टिवादना ज्ञाता आर्य वज्र छे एम सांभळीने तेओ उज्जयिनी गया त्यां भद्रगुप्त नामे एक वृद्ध आचार्यनी संलेखना प्रसंगे आर्य रक्षित निर्यामक तरीके रह्या अने तेमनी उत्तम शुश्रूषा करी. भद्रगुप्ताचार्य कालधर्म पाम्या पछी रक्षिते वज्रस्वामी पासे साडानव पूर्वोनो अभ्यास कर्यो पोताना अंतकाळे भद्रगुप्ताचार्ये आर्य रक्षितने कह्युं हतुं के "तमारे आर्य वज्रनी साथे रहेवुं नहि, कारण के जे तेमनी साथे रहेशे ते तेमनी साथे ज मरण पामशे." आथी आर्य रक्षित वज्रस्वामीथी अलग रह्या हता.[१]

१ आचू, पूर्वभाग, पृ. ४०१–४; उने, पृ. २३; कल्कि, पृ. १७०–७१; कथी, पृ. १४५.

भरुकच्छ

भरूच, गुजरातनुं प्राचीन बंदर. आगमसाहित्यना प्राचीनतर अंशोमां मोटे भागे आ नगरनुं 'भरुकच्छ' नाम छे, 'भृगुकच्छ'नो प्रयोग मुकाबले पाछळनी संस्कृत टीकाओमां छे.[1] 'भरूच'नी व्युत्पत्ति भरुकच्छ > भरुअच्च > भरूच ए प्रमाणे साधी शकाय, जे 'भृगुकच्छ'मांथी शक्य नथी, ए वस्तु पण मूळ नाम 'भरुकच्छ' होवाना पक्षमां छे.

केटलेक स्थळे भरुकच्छने 'द्रोणमुख' कह्युं छे. जळ अने स्थल एम बन्ने मार्गोए ज्यांथी जई शकाय ते द्रोणमुख. एना उदाहरणना तरीके भरुकच्छ अने ताम्रलिप्तिनां नाम आपवामां आवे छे.[2] वळी केटलाक टीकाकारोए प्राकृत 'पट्टण' शब्दना 'पट्टन' अने 'पत्तन' एवां बे संस्कृत रूपो स्वीकारीने बन्नेना जुदा अर्थो आप्या छे:[3] ज्यां नौकाओ मारफत जवाय ते 'पट्टन', अने ज्यां गाडांमां के घोडे बेसीने तेम ज नौकाओ द्वारा जवाय ते 'पत्तन,' जेमके 'भरुकच्छ.'

'आवश्यकचूर्णि' (उत्तर भाग, पृ. १५२–५३)मां एक स्थळे 'भरुकच्छने' 'आहरणी' अर्थात् 'आहार' जेवुं वहीवटी एकम कहेल छे (जुओ खेट आहार).

भरुकच्छना ईशान खूणे कोरटक नामे उद्यान हतुं अने तेमां मुनि सुव्रतस्वामीनुं चैत्य हतुं.[4] भरुकच्छमां जैनो तेम ज बौद्धोनी मोटी वस्ती हती अने बन्ने वच्चे घणी वार परस्पर स्पर्धा चालती हती.[5] भरुकच्छमां जिनदेव नामे जैन आचार्ये भदंतमित्र अने कुणाल नामे बे बौद्ध साधुओ जेओ बे भाईओ हता तेमने वादमां पराजित कर्या हता अने ते बे जण गोविन्दाचार्यनी जेम जिनदेवना शिष्यो थया हता एवो पण उल्लेख छे.[6] भरुकच्छनी पासे कुंडलमेण्ठ नामे व्यंतरनुं

स्थानक हतुं अने एनी यात्रामां आसपासना प्रदेशना घणा लोको एकत्र थईने संखडि—उजाणी करता हता.[7]

विक्रम पूर्वे पांचमी शताब्दीमां भरुकच्छ अवंतिना राजा प्रद्योत अथवा चंडप्रद्योतना आधिपत्यमां हतुं. प्रद्योतनो दूत लोहजंघ एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो अने ते प्रद्योतना हुकमो लईने वारंवार भरुकच्छ आवतो हतो आ प्रमाणे नवा नवा हुकमो लावतो एने वध करवाने लोकोए तेने एक वार विषमिश्रित भाथुं आप्युं हतुं, पण मार्गमां मानशुकन थतां लोहजंघे ते खाधुं नहोतुं.[8]

भरुकच्छ अने उज्जयिनी वच्चे सारो संपर्क हतो. भरुकच्छमांथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने उज्जयिनी मोकल्यो हतो, पण मार्गमां एक मांदा साधुनी सारवार माटे तेने रोकाई जवुं पड्युं हतुं, अने एथी नटपिटक गाममां नागगृहमां एने चोमासुं गाळवुं पड्युं हतुं.[9]

भरुकच्छमां नभोवाहन राजा राज्य करतो हतो त्यारे प्रतिष्ठाननो राजा सालवाहन ए नगर उपर दर वर्षे आक्रमण करतो हतो.[10] कालकाचार्यना समयमां भरुकच्छमां बलमित्र अने भानुमित्र ए बे भाईओ राज्य करता हता.[11] नभोवाहनना राज्यकाळमां वज्रभूति नामे एक आचार्य भरुकच्छमां वसता हता. ए आचार्यने उत्तम कवि तरीके वर्णवेला छे.[12] अट्टण मल्लनो सहायक फलही मल्ल भरुकच्छ पासेना गामनो एक खेडूत हतो.[13]

उपर कह्युं तेम, भरुकच्छ जळमार्गे तेम ज स्थळमार्गे वेपारनुं मोटुं मथक हतुं. मुख्यत्वे आ दृष्टिए प्रद्योत जेवा माळवाना राजाने भरुकच्छ उपर आधिपत्य जाळववानी जरूर लागी हशे. भरुकच्छना वेपारीओ विशे केटलीक किंवदन्तीओ आगमसाहित्यमांथी मळे छे:

भरुकच्छना कोई वेपारीए उज्जयिनीना एक कुत्रिकापणमांथी[14]

श्रमणनो हुं घात करीश. पछी ते गयो, अने तेणे वासुदेवनो पग बाणथी वींधायेलो जोयो, एटले आवीने साधुने खमाव्या अने कह्युं, 'में आ प्रमाणे चिंतव्युं हतुं, माटे क्षमा करो.'[1]

आ कथानक उपरथी अनुमान थाय छे के कोसुंबारण्य[2] के ज्यां जैन परंपरा अनुसार, जराकुमारनुं बाण पगमां वागवाथी कृष्ण वासुदेवे देहत्याग कर्यो त्यां पगमां भल्ली–बाणना घा होय एवा प्रकारनी वासुदेवनी मूर्ति हशे. जे मन्दिरमां आवी मूर्ति हशे ते भल्लीगृह तरीके ओळखातुं हशे.

ब्राह्मण परंपरा अनुसार, श्रीकृष्णनो देहोत्सर्ग प्रभासमां थयो हतो. त्यां कृष्णने बाण वाग्युं हतुं ते जग्या त्यां भालकुं (भल्लकेश्वर) तरीके जाणीती छे तथा समुद्रकिनारे ज्यां तेमनुं अवसान थयुं हतुं त्यां देहोत्सर्गनुं तीर्थ छे.

१ निचू, ( भा. गा. २३३० नी चूर्णि ), भाग ३, पृ. ४७१

२ जुओ कोसुंबारण्य

## भिल्लमाल

जुओ श्रीमाल

## भूलेश्वर

एक व्यंतर. गुज. 'भूलेश्वर.'

आनंदपुरना एक दरिद्र ब्राह्मणे भूतेश्वर (प्रा. भूलिस्सर)नी उपासना करी हती. व्यंतरे तेने कच्छमां ज्यां आभीरो श्रावक हता त्यां मोकल्यो हतो.[1]

जैन शास्त्रोमां घणी वार शिव, ब्रह्मा आदि ब्राह्मण देवोने व्यंतर अथवा वानमंतर तरीके वर्णवेला होय छे; एटले अहीं भूलेश्वर व्यंतर वडे भूलेश्वर महादेव उद्दिष्ट छे एम अनुमान करवुं वधारे पडतुं नथी. भूलेश्वरनां मन्दिरो गुजरातमां छे तथा ईडर तरफना ब्राह्मणोमां

भूलेश्वर विशेष नाम पण होय छे. अहीं, 'आवश्यकचूर्णि'मां 'मूलिस्सर'नो उल्लेख छे, एटले ए नाम ओछामां ओछुं आठमा सैका जेटलुं जूनुं छे. वळी प्रस्तुत उल्लेख एम सूचवे छे के आनंदपुरमां 'मूलिस्सर'नुं मन्दिर होवुं जोईए

प्राकृत 'मुल्ल'–'मूल' (गुज. 'मूल') अने 'मोल' (गुज. 'मोळो') ए देश्य शब्दो लागे छे. जो के केटलाक एनो संबंध सं. भद्र>प्रा. भल्ल>गुज. भलो इत्यादि साथे जोडे छे. आ शब्दोने तेम ज 'मूलिस्सर' शब्दमांना 'मूल' अंगने महादेवना अर्थमां वपराता 'भोळानाथ,' 'भोळा शंभु' जेवा प्रयोगो साथे वाग्व्यापारगत संबंध हशे एवी स्वाभाविक कल्पना थाय छे.

१ कच्छे आगीराणि सद्दाणि, आणंदपुरतो धिज्जातिओ दरिदो मूलिस्सरे उवयाते ठितो, वर मग्गति, चाउवेज्जस्स भत्तमुल्लं देहि, वागमंतरेण भग्गति–कच्छे सावगाणि भज्जवतियाणि ताण मत्त करेहि। आवू., उत्तर भाग, पृ. २९१

भूततडाग

भरुकच्छथी बार योजन उत्तरे आवेलुं एक तळाव.

ए विशेनुं परंपराप्त कथानक आ प्रमाणे छे: भरुकच्छना एक वणिके उज्जयिनीना कुत्रिकापणमांथी एक भूत खरीद्यो हतो. ए भूत एवो हतो के एने सतत काम आपवामां न आवे तो खरीदनारने मारी नाखे. वणिके जे काम सोंप्युं ते बधुं भूते क्षण वारमां करी दीधुं. आथी छेवटे वणिके एने एक स्तंभ उपर चढवा ऊतरवानुं काम सोंप्युं. भूते पोतानो पराजय स्वीकारी लीधो अने पराजयनुं कंईक चिह्न मूकवानी इच्छा व्यक्त करीने कह्युं के 'घोडा उपर सवारी करीने चालतां ज्यां तुं पाछुं वाळीने जोईश त्यां हुं एक तळाव बांधीश.' वणिके बार योजन जईने पाछुं वाळीने जोयुं अने त्यां भूते एक तळाव बांध्युं, जे भूततडाग नामथी प्रसिद्ध थयुं.'

आ कथानकना काल्पनिक अंशो न स्वीकारीए तो पण भरूच्छनी उत्तरे बार योजन दूर आवेलुं एक तळाव लोकश्रुतिमां भूततडाग नामे जाणीतुं हतुं एटली वस्तु तो निश्चित छे.

जुओ कुत्रिकापण

१ बृकमा, गा. ४२२०-२३; बृक्क्षे, भाग ४, पृ ११४५-४६

भृगुकच्छ

जुओ भरुकच्छ

मङ्गू आर्य

एक प्राचीन आचार्य. तेओ आर्य समुद्रनी साथे विहार करता सोपारकमां गया हता. तेमनुं शरीरस्वास्थ्य सारुं हतुं, ज्यारे आर्य समुद्र दुर्बळ हता.[१] वळी आर्य मंगू आचार्य बहुश्रुत, घणा शिष्योना परिवारवाळा तथा उग्रविहारी हता. तेओ एक वार मथुरा गया हता. त्यांना श्रावको नररोज दूध, दहीं, घी अने गोळवाळो खोराक वहोरावता हता. बीजा साधुओ त्यांथी चाल्या गया, पण आर्य मंगूए जिह्वारसना लोभथी विहार न कर्यो. श्रामण्यनी विराधना करीने ते मरण पाम्या अने नगरनी निर्धमना–नीकमां व्यंतर थया. पछी कोई साधु त्यांथी पसार थाय एटले ए व्यंतर प्रतिमामां प्रवेशीने मोटी जीभ लांबी करतो, अने साधुओ पूछे त्यारे कहेता के 'हुं जिह्वा-दोषथी व्यंतर थयो छुं अने तमारा प्रतिबोध माटे आव्यो छुं. मारे मारा जेवुं वर्तन तमे करशो नहि'[२] वळी बीजो एक मत एवो छे के ज्यारे साधुओ जमवा बेसता त्यारे साधुओनी सामे ते पोतानो अलंकारखचित हाथ लंबावतो, अने ज्यारे पूछवामां आवे त्यारे उपर प्रमाणे कहेतो.[३]

'नंदिसूत्र'नी स्थविरावलीमां आर्य समुद्रनी पछी आर्य मंगूने वंदन कर्यां छे, एटले आर्य मंगू आर्य समुद्रना शिष्य संभवे छे.[४]

प्रस्तुत स्थविरावलीमां आर्य मंगूने खूब आदरपूर्वक प्रणाम करेलां छे, ज्यारे उपर्युक्त कथानकनो ध्वनि एथी ऊलटो ज छे. आथी एक ज नामवाळा बे जुदा जुदा आचार्योनो पछीना समयमां थयेला चूर्णिकारो अने टीकाकारोए संभ्रम कर्यो हशे एम अनुमान थाय छे.[४]

१ व्यभ ( उद्दे० ६ उपरनी वृत्ति ), पृ ४४. जुओ समुद्र आर्य.

२ निचू, भाग ३; पृ ६५०–५१; वळी जुओ आचू, उत्तर भाग, पृ. ८०; बृकम, पृ. ४४; श्राप्र, पृ. १९२.

३ तिसमुद्दखायकित्ति दीवसमुद्देसु गहियपेयाल ।
वंदे अज्जसमुद्द अक्खुभियसमुद्दगंभीर ॥२७॥
भणग करगं झरगं पभावग णाणदंसणगुणाण ।
वंदामि अज्जमगु सुयसागरपारग धीर ॥२८॥
नसू, पृ ४९–५०

४ 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'ना बे टीकाकारो देवेन्द्रसूरि ( वृ, पृ ९२ ) अने रत्नशेखरसूरि ( श्राप्र, पृ १९२ ) आ रसगृद्धिनी वात करता 'मथुरा-मंगू' आचार्यनो उल्लेख करे छे ते शुं सोपारकवाळा मंगूथी भिन्नता दर्शाववा माटे हशे?

## मणिप्रभ

उज्जयिनीना राजा पालकना पुत्र राष्ट्रवर्धन ( राज्यवर्धन )नो नानो पुत्र, जे पाछळथी कौशाम्बीनो राजा थयो हतो. पालकना मोटा पुत्र अवन्तिवर्धने पोताना भाईनी स्त्रीने वश करवा माटे भाईने मारी नाख्यो हतो.[१] आथी तेना भाईनी स्त्री धारिणी पोतानुं शील बचाववा माटे एक सार्थनी साथे कौशाम्बी चाली गई हती. ए वखते ए सगर्भा हती. कौशाम्बीमां राजानी यानशाळामां रहेती साध्वीओ पासे तेणे दीक्षा लीधी, पण पोताना गर्भनी वात करी नहि. पण पाछळथी ए वातनी खबर पडतां एने गुप्त राखवामां आवी अने एने पुत्रनो जन्म थतां नाममुद्राथी अंकित करीने राजाना आंगणामां मूकी देवामां आव्यो. ए पुत्र ते मणिप्रभ. कौशाम्बीनो राजा अजितसेन पण अपुत्र हतो,

तेथी तेणे मणिप्रभने पुत्र तरीके स्वीकार्यो. पुत्रप्रेमने लीधे धारिणीए अजितसेननी राणी साथे मैत्री करी. काळे करी अजितसेननी पछी मणिप्रभ गादी उपर आव्यो. ए समये तेनो सगो भाई अवन्तिसेन जे अवन्तिवर्धननो पछी उज्जयिनीनी गादीए बेठो हतो[1] ते कौशांबी उपर चडी आव्यो, अने बन्ने भाईओ वच्चे युद्ध थवानी तैयारी हती त्यां माता धारिणीए बन्ने पासे जईने तेमनो साचो वृत्तान्त कही संभळाव्यो, अने युद्ध रहेवा दईने बन्ने उत्साहपूर्वक नगरीमा प्रवेश्या.[3]

१ जुओ अवन्तिवर्धन.

२ जुओ अवन्तिवर्धन.

३ आचू., उत्तर भाग, पृ. १८९-९०; वृ, पृ ९०-९२

## मण्डन सूत्रधार

सूत्रधार मंडनकृत 'वास्तुसार'माथी केटलाक श्लोको 'जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति' उपरनी शान्तिचन्द्रनी वृत्तिमा उद्धृत थयेला छे.[1] मंडन ए नाम मध्यकाळमा गुजरात-राजस्थान अने माळवामां व्यापक विशेषनाम 'माडण'नुं संस्कृतीकरण छे.

मंडन मेवाडना राजा कुंभकर्ण-कुंभाराणा (ई. स. नो १५ मो सैको)नो आश्रित हतो. 'रूपमंडन' आदि शिल्प अने वास्तुशास्त्रना संख्याबंध ग्रन्थो तेणे रचेला छे.[2]

विक्रमना पंदरमा शतकना अंतमां अने सोळमाना प्रारभमां अर्थात् ईसुना पंदरमा शतकमां 'अलंकारमंडन', 'काव्यमंडन', 'चंपूमडन,' 'काव्यमनोहर' आदि ग्रन्थो रचनार मंत्री मंडन अथवा माडण माळवामां आवेला मंडपदुर्ग (मांडु)नो श्रीमाळी वणिक होई सूत्रधार मंडनथी भिन्न छे.[3]

१ एतत्संवादनाय सूत्रधारमण्डनकृतवास्तुसारोक्तिरपि लिख्यते यथा-" चतुष्पष्ट्या पदैर्वास्तु पुरे राजगृहेऽर्चयेत् । एकाशीत्या गृहे भाग शत प्रासादमण्डपे ॥ " इत्यादि १३ श्लोक टांक्या छे. जप्रशा, पृ २०८.

२ जुओ 'देवतामूर्ति प्रकरण अने रूपमंडन,' प्रस्तावना, पृ. १-४
३ जुओ हेमचन्द्राचार्य सभा प्रकाशित 'महत्प्रबन्धसंग्रह'

## मण्डिक

वेणतट नगरनो एक चोर, जे दिवसे तूनारानो धंधो करतो अने रात्रे चोरी करतो. ए ज नगरना राजा मूलदेवना हाथे ते पकडाई गयो हतो.

जुओ मूलदेव

## मत्स्यदेश

२५॥ आर्य देशो पैकी एक. एनुं पाटनगर वैराट नगरमां हतुं.[१] मत्स्य देशमां जयपुर राज्यनो केटलोक भाग तथा अल्वर राज्य आवी जाय छे[२]

१ सूकृशी, पृ. १२३; बृकसे, भाग ३, पृ. ९१२-१४
२ ज्योडि, पृ १२८-२९

## मथुरा

२५॥ आर्य देशो पैकी शूरसेना जनपदनी राजधानी.[१] मथुरा नगरी घणी प्राचीन छे, अने तेथी एने 'चिरकाल-प्रतिष्ठित'[२] कहेवामां आवी छे अने त्यांना स्तूपने 'देवनिर्मित' कह्यो छे.[३] मथुरानुं बीजुं नाम इन्द्रपुर हतुं.[४]

प्राचीन भारतना महत्त्वना सार्थमार्गो उपर आवेलुं होई मथुरा एक महत्त्वनुं वेपारी केन्द्र ('पत्तन') हतुं, एथी ए 'स्थलपत्तन' तरीके वर्णवायुं छे.[५]

मथुरामां भंडीर उद्यानमां सुदर्शन यक्षनुं आयतन हतुं.[६] केटलेक स्थळे यक्षनुं नाम पण भंडीर यक्ष आपेलुं छे.[७] लोको मोटे उत्साहपूर्वक भंडीर यक्षनी यात्रामां गाडां जोडीने जता.

जैन श्रुतनी बीजी वाचना मथुरामां करी[१] अने एने देवर्धिगणि क्षमाश्रमणे पोतानी छेवटनी श्रुतसंकलनामा मुख्य वाचना तरीके सर्वसंमत रीते स्वीकारी, ए वस्तु जैन इतिहासमां घणा महत्त्वनी छे, अने माथुरी वाचना माटे मुनि कल्याणविजयजीए निश्चित करेलो समय[१] (वीरनिर्वाण सं. ८२७ थी ८४०=ई. स. ३०१ थी ३१४) मान्य राखीए ता, एवुं विधान नि संदेह थई शके के चोथी शताब्दीमा मथुरा जैन धर्मनुं एवुं मोटुं केन्द्र हतुं, जेनी बराबर पश्चिम भारतनु वलभी ज करी शके एम हतुं.

भगवान महावीर मथुरामा आव्या हता एवो एक उल्लेख 'विपाकसूत्र'मा छे[१८] आर्य मंगू[१९] अने आर्य रक्षित जेवा आचार्योए मथुरामा विहार कर्यो हतो. आर्य रक्षित मथुरामा भूतगुहा नामना व्यन्तरगृह–यक्षायतनमां रह्या हता[२०] 'आवश्यक सूत्र'नी चूर्णिमा एक स्थळे मथुराने 'पाखंडिगब्भ' (सं. पाषण्डिगर्भ) कह्यु छे,[२१] ए बतावे छे के एमा बौद्धो अने अन्य संप्रदायना अनुयायीओनी वस्ती सारा प्रमाणमा हती.

मथुराने स्पर्शता केटलाक प्रकीर्ण उल्लेखो मळे छे, जेम के देवतापूजनमा उपयोगी थवानु एक बामण मथुरामा 'चंदालक' तरीके सुपरिचित छे[२२] पत्नी अने पुत्रने घेर मूकाने देशावरमां फरता मथुराना वणिकोनी स्थलीक कथाओ टीका–चूर्णिओमा छे.[२३] उत्तर मथुराना वणिक वेपार अर्थे दक्षिणमथुरा (मदुरा) पण जाय छे[२४] अपायवाळा क्षेत्रनो त्याग करवा सबंधमा, जरासंधना उपद्रवने कारण दशार्होए मथुरानो त्याग कर्यो हतो ए उदाहरण अपाय छे[२५] आ उपरात मथुराना अनेक प्रासंगिक उल्लेखो आगमसाहित्यमा छे,[२६] जे आ प्राचीन नगरीनुं ब्राह्मण अने बौद्धनी जेम जैन इतिहासमा पण जे असाधारण महत्त्व छे ए बतावे छे.

१ मुकर्जी, पृ. १२२; बृकभे, भाग ३, पृ. ६१२–१४

२ चिरकालपइट्ठियाए महुराए... उत्त, पृ. १२५

३ जुओ टि. १२.

४ जुओ इन्द्रपुर.

५ उत्त, पृ. ६०५; आशी, पृ. २५८

६ महुरा नाम नयरी, भंडीरे उज्जाणे, सुदंसणे जक्खे, विसूअ, पृ. ७०

७ जुओ भण्डीर यक्ष.

८ आम, पृ. ५५५

९ जुओ टि. ११

१० जुओ खेद आहार

११ 'अरहंत पइट्ठाए महुरानयरीए मंगलाइं तु ।

गेहेसु चच्चरेसु य छन्नउईगामअद्धेसु ॥ ( भा. गा. १७७६ )

मथुरानगर्यां गृहे कृते मङ्गलनिमित्तमुत्तरङ्गेषु प्रथममर्हत्प्रतिमाः प्रतिष्ठाप्यन्ते, अन्यथा तद् गृहं पतति । तानि मङ्गलचैत्यानि । तानि च तस्यां नगर्यां गेहेषु चत्वरेषु च भवन्ति । न केवलं तस्यामेव किन्तु तत्पुरीप्रतिबद्धा ये षण्णवतिसङ्ख्याका ग्रामार्द्धास्तेष्वपि भवन्ति । इहोत्तरापथानां ग्रामस्य ग्रामार्द्ध इति संज्ञा । आह च चूर्णिकृत्–गामद्धेसु त्ति देसभणिती, छन्नउईगामेसु त्ति भणियं होइ, उत्तरावहाणं एसा भणिइ त्ति । बृकभे, भाग २, पृ. ५२४. उत्तरापथमां गामने ग्रामार्ध कहेवानी रूढि छे, एवो आमांनो निर्देश नोंधपात्र छे.

१२ निचू, भाग ३, पृ. ५९०; बृकभे, भाग ६, १६५६; व्यभ, भाग ४, पेटा वि. १, पृ. ४३

१३ व्यभा तथा व्यस (उद्दे० ५), पृ. ८

१४ निचू, भाग ३, पृ. ५९०; बृकभे, भाग ६, पृ. १६५६; व्यभ, भाग ४, पेटा वि १, पृ. ४३. 'बोधिक' जातिनो उल्लेख 'महाभारत' अने 'रामायण' मां 'बोध' तरीके छे. जुओ बिमलाचरण लॉ–कृत 'ट्राइब्स इन एन्श्यन्ट इन्डिया', पृ ३९७. जैन आगमसाहित्यमां 'बोधिक' ने 'मालव' थी अभिन्न गणेला छे; जुओ मालव.

१५ कुसुमपुरोप्ते बीजे मथुरायां नाङ्कुरः समुद्भवति ।
यत्रैव तस्य बीजं तत्रैवोत्पद्यते प्रभवः ॥
सूकृचू, पृ. ३७९-८०, सूकृशी, पृ ३५०

१६ नचू, पृ. ८; नम, पृ ५१; स्थोकम, पृ ४१; इत्यादि. वळी जुओ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण.

१७ 'वीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना', पृ १०६

१८ जुओ जैन, 'लाइफ इन ॲन्श्यन्ट इन्डिया,' पृ. २०९

१९ जुओ म गू आर्य.

२० आचू, पूर्व भाग, पृ ४११; आम, पृ ४००

२१ आचू, पूर्व भाग, पृ १६३

२२ सूकृशी, पृ. ११८

२३ आचू, उत्तर भाग, पृ. ३८७, व्यभ, भाग ४, पेटा वि १, पृ. ४७

२४ आचू, उत्तर भाग, पृ १७०

२५ स्थाहुअ, पृ. २५५

२६ ज्ञाध, पृ. २०८; अंकृव्या, पृ ४०, निचू, भाग ४, पृ. ७४३, मस, गा ४९४-५०३; मप, गा १४५; आचू, उत्तर भाग, पृ ३५-३६; इत्यादि

## मथुरा मङ्गू आचार्य

जुओ मङ्गू आर्य

## मरुस्थल

आजनो मारवाड. एनां मरु, मरुभूमि, मरुविषय, मरुदेश एवां नामो पण मळे छे. 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां 'राज्यदेशनाम' आप्यां छे तेमां 'मरुस्थल' छे.[1]

मरु आदि रेताळ प्रदेशमां रस्तो भूली न जवाय ए माटे मार्गमां कीलिकाओ खोडवामां आवे छे एवो उल्लेख आगमसाहित्यमां छे.[2]

मरुविषयमां पाणीनी तंगी छे अने पाणी मेळववा माटे-रात्रे दूर सुधी जवुं पडे छे.[1] जलविकलताने कारणे मरुस्थलमां धान्यसंपत् जोईए एवी थती नथी.[2] निष्पुण्यपिपासित मनुष्योने जेम पीयूष प्राप्त थतुं नथी तेम मरुभूमिमां कल्पवृक्षनो प्रादुर्भाव थतो नथी.[3]

मरुमंडलनी केटलीक विशेषताओ पण नोधवामां आवी छे: 'यवनालक' (प्रा. जवणालओ) नामनो 'कन्याचोलक'—कन्याओनो पहेरवेश मरुमंडलादिमां प्रसिद्ध होवानुं कह्युं छे. एमां चणियो—चोळी भेगां सीवी लेवामां आवतां, जेथी वस्त्र खसी पडे नहि. कन्याना माथेथी ते पहेरातो, एथी ए प्रकारना पहेरवेशने ऊभो 'सरकंचुक' पण कहेवामां आवतो.[1]

आ उल्लेख विशिष्ट महत्त्वनो छे, केम के एमां कन्याओना खास पोशाकने निर्देश छे. वळी प्राचीन संस्कृत साहित्यमां स्त्रीओना पहेरवेशमां 'नीवि'नो निर्देश आवे छे ते वस्त्रनी गांठ छे, चणियानी दोरीनी गांठ नथी, ए दृष्टिए पण आ वस्तु विचारवा जेवी छे. संभव छे के साडीनी नीचे चणियो पहेरवानुं कोई परदेशी जाति के जातिओनी असरथी दाखल थयुं होय, दक्षिण भारतमां चणियानो पहेरवेश नथी ए पण आ दृष्टिए सूचक छे. उपर्युक्त उल्लेखमांना 'जवणालओ' शब्दनुं 'जवण' (सं. यवन. ए शब्द शिथिल अर्थमां गमे ते परदेशी जाति माटे प्रयोजातो हतो ए जाणीतुं छे) अंग पण घणुं करीने ए ज सूचवे छे. ए 'कन्याचोलक' मरुमंडलादिमां प्रसिद्ध होवानुं कह्युं छे, एटले मरुमंडल सिवायना बीजा केटलाक प्रदेशोमां पण एनो प्रचार होवो जोईए. हेमचन्द्रना 'द्व्याश्रय' महाकाव्यमांथी एने लगतो एक रसिक उल्लेख प्राप्त थाय छे. एमां लतागृहमां रहेली मयणल्लानो 'चोलक' जोईने एनो भावी पति कर्ण सोलंकी अनुमान करे छे के ए कन्या होवी जोईए—

यच्चोल्कमधास्तन्नाद्यापि कन्यात्वमत्यगाः ।
आर्तेवास्या यदत्र त्वं स्मरस्तच्चां शरैरदात् ॥
(सर्ग ९, श्लो. १४५)

'द्वयाश्रय'ना टीकाकार अभयतिलकगणि अहीं 'चोलक'नो अर्थ समजावतां लखे छे–'यत्वं चोलकं कन्योचितं सर्वाङ्गीणकञ्चुकविशेषमधाः परिधानेनाधारयस्तज्ज्ञायते त्वमद्यापि कन्यात्वं नात्यगाः ।' अहीं 'चोलक'ने 'कन्योचित सर्वांगीणकंचुकविशेष' कह्यो छे, ए आगमसाहित्य-अंतर्गत उल्लेखने बराबर मळतुं आवे छे.

वळी 'बृहत् कल्पसूत्र' उपरनी क्षेमकीर्तिनी टीकामां 'मरुतैल' नामना एक विशिष्ट तेलनो पण उल्लेख छे; ए तेल मरुदेशमां पर्वतमाथी नीकळतुं.[3] अर्थात् आ खनिज तेल छे. मारवाडमां पण एक काळे खनिज तेल नीकळतुं हतुं ए दृष्टिए आ उल्लेखने अनेक शक्यताओनो सूचक गणी शकाय.

मरुमां घास नींदवा माटे जे नानुं लाकडुं (गुज. 'खरपडी') हळ साथे खेतरमां फेरववामां आवे छे एने मरुमंडळमां 'कुलिक' कहे छे एवो पण एक उल्लेख छे.[6]

१ जुओ गुर्जर.

२ रेणुप्रचुरे प्रदेशे कीलिकानुसारेण गम्यते, अन्यथा पथभ्रंशः । सूकचू., पृ. २४०

कीलकमार्गो यत्र वालुकोत्कटे मरुकादिविषये कीलिकाभिज्ञानेन गम्यते । सूकटी, पृ. ११६

३ निचू., भाग ५, पृ. १०१७

४ नंव, पृ. २२३

५ बृहु, पृ. २२०; कटी, पृ. ८७

६ दवनामको नाम कन्याचोलकः, स च मरुमण्डलादिप्रसिद्धपरणकरदेन कन्याऽभिधानेन सह दीयितो भवति येन परिधानं न गच्छति,

कन्याना चैव मस्तकप्रदेशेन प्रक्षिप्यते,' अत एवायमूर्ध्व-सरकञ्चुक इति व्यपदिश्यते, तथा च तत्रादिव्याख्यान कुर्वन्नाह भाष्यकृत्–" × × जवना लउ त्ति भणिओ उब्भो सरकञ्चुओ कुमारीए × ×" इति। आम, पृ. ६८

७ मडतैल–मरुदेशे पर्वतादुत्पद्यते'। बृक्षे भाग ५, पृ १५९१ बृकभा, गा, ६०३१ मा 'मरुतैल'नो उल्लेख छे, जेनी टीकारूपे उपर्युक्त संस्कृत अवतरण छे, ए सूचवे छे के 'मरुतैल' विशेनो उल्लेख मुकाबले घणो प्राचीन छे.

८ 'कुलिक' लघुतर काष्ठ तृणादिच्छेदार्थं यत् क्षेत्रे वाह्यते तत् सप्तमण्डलादिप्रसिद्धं कुलिकमुच्यते, ततश्च यदत्र हलकुलिकादिभि क्षेत्राण्युप हन्यन्ते.', अनुहे, पृ. ४८

## मलयगिरि आचार्य

आगमसाहित्यना सौथी मोटा संस्कृत टीकाकारोमां आचार्य मलयगिरिनुं स्थान छे. एमणे पोतानी अनेक कृतिओ पैकी एकेयमां रचनासंवत आप्यो नथी तेम ज पोताने विशे कशी माहिती आपी नथी. पोते रचेलुं 'शब्दानुशासन' जे 'मुष्टिव्याकरण' (मूठीमां माय एवुं संक्षिप्त व्याकरण) पण कहेवाय छे एमां तेमणे 'अरुणत् कुमारपालोऽरातीन्' एवुं उदाहरण आप्युं छे, अने एमां क्रियापद अद्यतन भूतमां होई कर्ता थोडाक समय उपर बनेला बनावनी वात करे छे एवुं अनुमान स्वाभाविक रीते थई शके. आचार्य मलयगिरि गुजरातमां थई गया छे ए तो निश्चित छे, पण उपर्युक्त प्रमाणने आधारे तेओ ई.स.ना बारमा सैकामां थयेला राजा कुमारपाल (ई.स. ११४३–११७३) ना समकालीन हता के एनी पछी थोडाक समये थया हता एवुं अनुमान थई शके. वळी मलयगिरिए 'आवश्यक सूत्र' उपरनी पोतानी वृत्तिमां 'आह च स्तुतिषु गुरवः' एवी नोंध साथे आचार्य हेमचन्द्रकृत 'अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका'मांथी 'अन्योन्य-पक्षप्रतिपक्षभावात्०' (श्लो. ३०) ए श्लोक उद्धृत कर्यो छे, त्यां हेमचन्द्र माटे एमनुं नाम लीधा सिवाय 'गुरव.' एवो बहुमानसूचक

छतां परिचयप्रदर्शक मोघम निर्देश कर्यो छे ए उपरथी पण तेओ हेमचन्द्रना लघुवयस्क समकालीन होवानुं अनुमान थाय छे.

मलयगिरिए नीचेना आगमग्रन्थो उपर टीकाओ लखी छे : 'आवश्यक,' 'ओघनिर्युक्ति,' 'जीवाभिगम,' 'ज्योतिष्करडक,' 'नंदिसूत्र,' 'पिंडनिर्युक्ति,' 'प्रज्ञापना,' 'भगवती' द्वितीय शतक, 'राजप्रश्नीय,' 'व्यवहार सूत्र,' 'सूर्यप्रज्ञप्ति,' अने 'विशेषावश्यक.'[3] 'बृहत्कल्पसूत्र'नी पीठिका उपर मलयगिरिनी वृत्ति छे, पण त्यार पछीनी वृत्ति आचार्य क्षेमकीर्तिए पूरी करी छे,[4] ए उपरथी अनुमान थाय छे के 'बृहत्कल्पसूत्र'नी वृत्ति लखता लखतां ज मलयगिरिनुं अवसान थयुं हशे. 'जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति'नी मलयगिरिनी वृत्ति नाश पामी होवानुं विधान सत्तरमा सैकामां थयेला टीकाकारो पुण्यसागर अने शान्तिचन्द्रे कर्युं छे,[5] पण ए वृत्तिनी प्रत जेसलमेरना भंडारमांथी जाणवामां आवी छे.[6] आ टीकाकारोने एनी प्रतो अलभ्य होवी जोईए. वळी 'तत्त्वार्थ सूत्र' उपर पण मलयगिरिए एक टीका रची हती, जे आजे उपलब्ध नथी (जुओ टि. १९).

आगमग्रन्थोनी टीकाओ उपरांत मलयगिरिए केटलाक आगमेतर धर्मग्रन्थो उपर टीकाओ रची छे, अने जेमांथी एमनो समय नक्की करवामा उपयोगी थाय एवो उल्लेख प्राप्त थाय छे ते, उपर्युक्त 'मुष्टि-व्याकरण' नामे 'शब्दानुशासन' पण लख्युं छे.[7]

" मलयगिरिनी टीकाओमा उच्च कोटिनी विद्वत्ता साथे सरलतानो सुभग समन्वय थयो छे अने परिणामे विद्वानो तेम ज विद्यार्थीओने ते एकसरखी उपयोगी बनी छे. एमां एमणे प्रसंगोपात्त पोताना पूर्वकालना वृत्तिकारोनो उल्लेख कर्यो होवाने कारणे आगमसाहित्यना इतिहास माटे ए केटलीक अगत्यनी सामग्री पूरी पाडे छे. जेम के-'आवश्यक सूत्र' उपर हरिभद्रसूरिनी वृत्ति होवानुं प्रसिद्ध छे, पण

मलयगिरिए पोतानी आवश्यक वृत्तिमा पूर्वकालीन वृत्तिओनो बहुवचनमा निर्देश कर्यो छे,[८] ए सूचक छे. हरिभद्र उपरांत, बीजा एक आचार्य जिनभटनी टीका[९] ज जो तेमने उद्दिष्ट होत तो निर्देश-द्विवचनमा होत पण बहुवचननो प्रयोग बतावे छे के ए सिवाय पण बीजी एक अथवा वधारे टीकाओ 'आवश्यकसूत्र' उपर होवी जोईए. 'विवृतय' एवो स्पष्ट उल्लेख होवाथी उपर्युक्त बे विवरणोमा चूर्णिनो समावेश करीने बहुवचनना प्रयोगनुं समाधान करवुं ए दूराकृष्ट लागे छे.

'ज्योतिष्करंडक,[१०] 'पिंडनिर्युक्ति,[११] अने 'जीवाभिगम'नी[१२] वृत्तिओमा मलयगिरिए वारंवार ते ते ग्रन्थो उपरनी 'मूळ टीका'नो उल्लेख कर्यो छे. आ त्रणे सूत्रग्रन्थो उपर मलयगिरि पूर्वेनी कोई टीका आजे विद्यमान नथी. 'जीवाभिगम'नी 'मूल टीका'ना उल्लेखो 'राजप्रश्नीय'नी वृत्तिमा पण छे[१३] 'प्रज्ञापना' तथा 'नंदिसूत्र' उपरनी हरिभद्रसूरिनी टीकाओनो उल्लेख तेमणे कर्यो छे[१४]

वळी पोतानी रचनाओमा मलयगिरिए पोतानी ज अन्यान्य वृत्तिओना उल्लेख कर्या छे, जे तेमनी कृतिओनी आनुपूर्वी नक्की करवामा सहायभूत थाय छे. 'नंदिसूत्र' अने 'पिंडनिर्युक्ति'नी वृत्तिओमा पोतानी 'धर्मसंग्रहणि टीका'नो उल्लेख[१५] तेमणे कर्यो छे ए ज रीते 'ज्योतिष्करंडक'नी वृत्तिमा 'क्षेत्रसमास'नी टीकानो उल्लेख कर्यो छे[१६] 'बृहत्कल्प सूत्र'नी पीठिकावृत्तिमा 'संस्कृत' शब्दनो अर्थ समजावता तेमणे पोताना व्याकरणनो निर्देश कर्यो छे[१७] ए ज प्रमाणे 'सूर्यप्रज्ञप्ति'नी वृत्तिमा पण तेमणे स्वरचित 'शब्दानुशासन'नो उल्लेख कर्यो छे[१८]

'तत्त्वार्थसूत्र' उपरनी स्वरचित टीकानो उल्लेख एमणे 'प्रज्ञापना सूत्र' तथा 'ज्योतिष्करंडक'नी वृत्तिओमा कर्यो छे[१९]

'जीवाभिगमसूत्र' उपरनी पोतानी वृत्तिमा 'देशीनाममाला'

('पहकर-ओरोह संघाया' इति देशीनाममालावचनात्, जीम, पृ. १८८) अने 'नाममाला' ('मोहणघरगा' इति मोहणं–मैथुनसेवा "रमिय मोहणरयाइं" इति नाममालावचनात्, जीम, पृ २००) ए बे कोशग्रन्थो सूचित कर्या छे, पण एमणे आपेलां अवतरण अनुक्रमे हेमचन्द्रकृत 'देशीनाममाला'मां के धनपालकृत 'पाईअलच्छी नाममाला'-मां नथी, एटले ए सिवायना कोई पूर्वकालीन कोशोनो आधार आचार्य मलयगिरि अहीं टांके छे एम मानवुं जोईए.

पछीना समयमां थयेला आगमसाहित्यना टीकाकारोए मलयगिरिनी टीकाओना प्रसंगोपात्त आधार आप्या छे. जेमके–'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'ना टीकाकार रत्नशेखरसूरिए मलयगिरिकृत 'राजप्रश्नीय' वृत्तिनो आधार टांक्यो छे[20] अने 'जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति'ना टीकाकार शान्तिचन्द्रे 'बृहत्संग्रहणि,'[21] 'क्षेत्रसमास'[22] अने 'ज्योतिष्करंडक'[23] उपरनी तेमनी वृत्तिओनो बहुमानपूर्वक उल्लेख कर्यो छे.

१ जैसाइ, पृ. २७१

२ आम, पृ. ११

३ जैसाइ, पृ. २७१–७४

४ जुओ क्षेमकीर्ति.

५ तत्र प्रस्तुतोपाङ्गस्य वृत्तिः श्रीमलयगिरिकृतापि सम्प्रति कालदोषेण व्यवच्छिन्ना, जंप्रशा, पृ २ वळी जुओ जिरको, पृ १३०–३१.

६ जिरको, पृ. १३०

७ जैसाइ, पृ २७४, जिरको, पृ ३१२

८ नत्वा गुरुपदकमलं प्रभावतस्तस्य मन्दशक्तिरपि ।
आवश्यकनिर्युक्तिं विवृणोमि यथाऽऽगमं स्पष्टम् ॥३॥
यद्यपि विवृतयोऽस्याः सन्ति विचित्रास्तथापि विषमास्ता ।
सम्प्रति जनो हि जडधीर्भूयानिति विवृतिरारभ्य ॥४॥

आम पृ. १

९ जुओ जिनभटाचार्य

१० ज्योकम, पृ ३२१, १८६

११ पिनिम, पृ. ४२, ६२, ८१

१२ जीम, पृ. ४, १५, १८६, १९४, २००, २०४, २०५, २०९, २१०, २१३, २१४, २२१, ३२१, ३५८, ४३८, ४४४, ४५०, ४५२, ४५७, इत्यादि.

१३ राप्रम, पृ. ६२, ६४, ६८, ६९, ७०, ७१, ७५, ७९, ९३, इत्यादि.

१४ प्रम, पृ. ६११; नंम, पृ. २५०

१५ नंम, पृ. १९३; पिनिम, पृ. ३३

१६ ज्योकम, पृ. ५६–५७, १०१, १०७

१७ मलयगिरिप्रभृतिव्याकरणप्रणीतेन लक्षणेन संस्कारमापादितं वचनं संस्कृतम्, बृकम, पृ. ३.

१८ सूप्रम, २२३

१९ प्रम, पृ. २९८; ज्योकम, पृ. ८१

२० आप्र, पृ. ३५

२१ जंप्रशा, पृ. १२७, २२६

२२ जंप्रशा, पृ. २२९, ३४८, ३५७

२३ जंप्रशा, पृ. ८७

मलयपट्टण

सोपारकनी पासे आवेलुं शहेर. ए वेपारनुं मथक हतुं. एक सार्थवाह हजार वृषभ उपर माल भरीने त्यां गयो हतो.[1]

मुंबई पासेनुं मलाड आ कदाचित् होय एवो तर्क थई शके. जो के एने माटे कशो ऐतिहासिक आधार नथी.

१ वसहाणं सहस्सेहिं सत्थवाहु ग्[ओ] गओ ।
जलमग्गेण सोपाराउन्न मलयपट्टण ॥ आप्र, पृ ६६.

महाकाल

अवन्तिसुकुमालना पुत्रे उज्जयिनीमां पोताना पिताना मरणस्थान

उपर बंधावेलुं देवमन्दिर 'महाकाल' तरीके ओळखाय छे.

जुओ अवन्तिसुकुमाल

## महागिरि आर्य

स्थूलभद्रस्वामीना बे शिष्यो आर्य महागिरि अने आर्य सुहस्ती नामे हता. एमां महागिरि सुहस्तीना उपाध्याय हता. समय जतां महागिरिए साधुगण आर्य सुहस्तीने सोंप्यो, अने ए काळे जिनकल्पनो विच्छेद थयो होवाथी गच्छनिश्रामां रहीने तेओ जिनकल्पने योग्य वृत्तिथी विहार करवा लाग्या. एक वार तेओ विहार करता पाटलिपुत्र गया. ए समये आर्य सुहस्ती पण त्यां हता. पाटलिपुत्रनो वसुभूति नामे एक श्रेष्ठी आर्य सुहस्तीना उपदेशथी श्रावक थयो हतो. एनां कुटुंबीओने उपदेश आपवा माटे आर्य सुहस्ती एने घेर गया हता. ए वखते आर्य महागिरि भिक्षाने माटे त्यां आवी चढ्या. आर्य सुहस्तीए एमने वंदन कर्युं. आथी श्रेष्ठीए एमने विशे प्रश्न करतां सुहस्तीए कह्युं के 'तेओ मारा गुरु छे.' आ सांभळीने श्रेष्ठीए पोतानां माण सोने कह्युं के 'ज्यारे आ साधु आवे त्यारे-आ चर्युं त्याग करवा लायक भक्तपान छे-एम कहीने तमारे तेमने वहोरावvुं.' बीजे दिवसे आर्य महागिरि आव्या खरा, पण आम कृत्रिम रीते वहोराववामां आवतां अन्न-पाणीमांथी कशुं पण तेमने लेवा लायक लाग्युं नहि. उपाश्रयमां पाछा आवीने तेमणे आर्य सुहस्तीने कह्युं के 'तमे गई काले मारो विनय करीने मारे माटे अनेषणा करी दीधी छे, माटे फरी वार तमारे आवुं न करवुं.' सुहस्तीए महागिरिनी क्षमा मागी.

कडक आचारपालन माटेना आर्य महागिरिना आग्रहने लगतो बीजो एक वृत्तान्त पण मळे छे, जे अनुसार तेमणे आर्य सुहस्ती साथे आहारपाणी लेवानुं बंध कर्युं हतुं :

- जीवंतस्वामीनी प्रतिमाने वंदन करवा माटे आर्य सुहस्ती

उज्जयिनीमां आव्या हता. ए समये त्यां संप्रति राजा हतो. जीवंतस्वामीनी रथयात्रामां रथनी सामे आर्य सुहस्तीने जोईने राजाने जातिस्मरण थयुं अने पूर्वजन्ममां संप्रति पोतानो शिष्य होवानो वृत्तान्त आर्य सुहस्तीए तेने कह्यो. तेमना उपदेशथी संप्रतिए श्रावक धर्मनो स्वीकार कर्यो. पछी राजाए पोताना रसोयाओने आज्ञा करी के 'रसोडामां जे कंई वधे ते अकल्प अने अकाम्तिना अर्थी साधुओने तमारे आपवुं.' वळी नगरना कंदोईओ, तेलीओ, छाश वेचनाराओ, दोशीओ वगेरेने तेणे सूचना करी के 'साधुओने जे जोईए ते तमारे आपवुं; एनुं मूल्य हुं आपीश.' आ पछी साधुओने इच्छानुसार आहार अने वस्त्र मळवा मंडयां. आथी आर्य महागिरिए आर्य सुहस्तीने कह्युं के 'प्रचुर आहार वस्त्रादि साधुओने मळे छे; माटे राजानी प्रेरणाथी तो लोको आपता नथी ने? ए बाबतमा तपास करो.' आर्य सुहस्ती बधुं जाणता हता, छतां पोताना शिष्यो प्रत्येना ममत्वथी तेओ बोल्या के 'राजधर्मनुं अनुकरण करती प्रजा ज आ आहारादि आपे छे.' एटले आर्य महागिरिए कह्युं 'तमे बहुश्रुत होवा छतां पोताना शिष्यो प्रत्येना ममत्वथी आवुं बोलो छो, माटे हवेथी आपणे बन्ने जुदा आहार लईशुं.' पाछळथी आर्य सुहस्तीए पोताना अपराधनी क्षमा मागी हती अने बन्ने आचार्यो फरी वार सांभोगिक–साथे आहार लेता–थया हता.[२]

आर्य महागिरि दशार्णपुरनी पासे आवेला गजाग्रपदमां अनशन करीने काळधर्म पाम्या हता.[३]

जुओ सम्प्रति, सुहस्ती आर्य

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. १५५–५७.

२ बृकमा (गा. ३१४२) तथा बृकक्षे, भाग ३, पृ. ९१७–२१; निचू, भाग २, पृ. ४३७–३८. वळी निचू, भाग ५, पृ. १५१४–१६ (भा. गा. ५६९४–५७०८ उपरनी चूर्णि) मां ए ज वृत्तान्त संक्षेपमां छे.

जीवन्तस्वामीनी प्रतिमा सबधमा जुओ 'जर्नल ओफ धी ओरिएन्टल इन्स्टिटयुट,' ग्रन्थ १, पृ ७२–७९ मा श्री उमाकान्त शाहनो लेख 'ए युनिक इमेज ओफ जीवन्तस्वामी.'

३ आ.चू. उत्तर भाग, पृ.१५७; धाम, पृ. ४६८. जुओ गजाग्रपद

## महाराष्ट्र

पश्चिम भारतनो महाराष्ट्र प्रान्त. महाराष्ट्रनी गणना जैन आगम-साहित्यमां अनार्य देशोमां करेली छे. महाराष्ट्र, कुडुक्क आदि अनार्य देशोमां जैन साधुओनो विहार राजा संप्रतिना प्रयत्नने लीधे शक्य बन्यो हतो.[१]

'प्रश्नव्याकरण सूत्र'मा[२] 'महाराष्ट्र'[३] (प्रा. मरहट्ठ) जातिने म्लेच्छ जाति तरीके गणावेली छे.

म्लेच्छ जाति तरीके 'मरहट्ठ'नो उल्लेख जवल्ले ज मळे छे ए दृष्टिए आ नोंधपात्र छे. अहीं 'म्लेच्छ' शब्द वडे का तो परदेशी जाति के का तो अहींना मूळ वतनी–बेमांथी एक उद्दिष्ट होय. भारतना बीजा अनेक प्रान्तोनां नाम जेम ते ते जातिओ उपरथी छे तेम महाराष्ट्रनुं नाम पण आ 'मरहट्ठ' जाति उपरथी पडेलुं छे.

'अनुयोगद्वार सूत्र'मा[४] मागध, मालव, सौराष्ट्र अने कोंकणनी साथे महाराष्ट्रनो उल्लेख छे. महाराष्ट्रीओनी वाचालता प्रसिद्ध हती. 'व्यवहार सूत्र'ना भाष्यमां[५] कह्युं छे के–अक्रूर मतवाळो आंध्रवासी, अवाचाल महाराष्ट्री, अने निष्पाप कोसलवासी सोमा एक पण देखातो नथी.

महाराष्ट्रना विविध रिवाजो अने रूढिओना उल्लेख आगम-साहित्यमां छे. 'महाराष्ट्र देशमां मद्यनी दुकानोमां मद्य होय के न होय, पण तेनी उपर ध्वज फरकाववामां आवे छे, जे जोईने भिक्षाचर आदि त्यां जता नथी'[६] महाराष्ट्र देशमां ठंडा पाणीमां दोरडा मूक-

वामां आवे छे.[8] महाराष्ट्रमां प्रसिद्ध कोल्हुकचक्रपरंपरा-शेरडी पीलवाना कोलुनां चकोनो पण निर्देश छे.[9] पालंक (गुज. पालख)नुं शाक महाराष्ट्र अने गोल्ल देशमां प्रसिद्ध छे.[6] महाराष्ट्रमां नग्न साधुनुं पुंश्चिह्न बांधीने एमां कडी नाखवानो रिवाज हतो.[7] महाराष्ट्रमां कल्पपाल-कलालने बहिष्कृत गणवामां आवतो नहोतो; एनी साथे बीजाओ भोजन लई शकता.[10] नीलकंबल आदि ऊननां वस्त्रो महाराष्ट्र देशमां घणां मोंघां होय छे, छतां शियाळामां साधुओए ए धारण करवां, केम के ए सिवाय शीतनुं निवारण थतुं नथी.[11] महाराष्ट्रमां भादरवा सुद पडवाना दिवसे 'श्रमणपूजा' नामे उत्सव थतो. एमां लोको साधुओने वहोरावीने अट्ठमना उपवासनुं पारणुं करता.[11] कालकाचार्ये प्रतिष्ठानमां पर्युषण कर्युं त्यारथी आ उत्सवनो प्रारंभ थयो हतो.[12]

महाराष्ट्रनी भाषाने लगता पण केटलाक उल्लेखो छे. मालव-महाराष्ट्रादि देशप्रसिद्ध विविध भाषाओ बोलवाथी सांभळनारने हास्य उत्पन्न थाय छे.[13] महाराष्ट्रनी भाषामां स्त्रीने 'माउग्गाम,'[14] रूनी पूणीने 'पेलु,'[15] तथा पूणी बनाववा माटेनी काष्ठशलाकाने 'पेलुकरण'[16] कहे छे. 'दशवैकालिक सूत्र'नी चूर्णि अनुसार, महाराष्ट्रमां संबोधनार्थे 'अण्ण' शब्द वपराय छे;[18] ए बतावे छे के अर्वाचीन मराठी शब्द 'अण्णा'नो प्रयोग ओछामां ओछुं आठमा सैका जेटला प्राचीन काळमां जाय छे.

'चोद्दिति' अथवा 'कुणिय' जेवा शब्दो बोलनार महाराष्ट्र प्रदेशमां हास्यपात्र थाय छे,[19] एम 'निशीथचूर्णि' लखे छे. एनो अर्थ ए थयो के 'निशीथचूर्णि' ज्यां रचाई ए प्राचीन गुर्जर देशमां लगभग आठमा सैका सुधी आ शब्दो अश्लील गणता नहोता.

१. जुओ सम्प्रति.

२ प्रज्ञा (अनुयोगद्वार), पृ १४. तेमांनु अवतरण-× × × इमे य वइवे वइवे मिलक्खुजाती, कं ते? सक-जवण-सबर-बब्बर-गाव-

चितोडनी दक्षिणे आवेलुं 'नागरी' नामे स्थान माध्यमिका छे एवो विद्वानोनो मत छे.[२] हाल पण माध्यमिकामां केटलाक विरल प्राचीन अवशेषो छे.

१ विपु, २-५

२ ज्योदि, पृ. ११६

## मालव-१

एक अनार्य जाति, जेना नाम उपरथी अवन्ति जनपद मालव तरीके प्रसिद्ध थयो[१] आगमसाहित्यमां 'मालव' जातिने 'म्लेच्छ जाति'[२] तथा 'मालव' देशने 'म्लेच्छ देश'[३] कह्यो छे. आ मालव म्लेच्छो पर्वतमाळाओमां रहेता अने वस्तीमां आवीने माणसोनुं हरण करी जता.[४] 'निशीथचूर्णि' कहे छे के तेओ मालव नामना पर्वत उपर विषम प्रदेशमां रहेता.[५] केटलाक ग्रन्थोमां 'मालव' तेम ज 'बोधिक'ने अभिन्न गण्या छे तथा तेओना आक्रमणनो भय आवी पडतां शीघ्र देशान्तर करवुं एवुं सूचन करेलुं छे.[६] मालवने 'स्तेन'-चोर[७] तेम ज 'उज्जयिनीतस्कर'[८] कह्या छे. आ बीजा विशेषण उपरथी तेओ उज्जयिनी आसपासना प्रदेश उपर वारंवार आक्रमण करता ए हकीकत सूचित थाय छे. उज्जयिनीना एक श्रावकपुत्रने चोर हरी गया हता अने तेने 'मालवक'-मालवदेशमां सूपकारने त्यां वेच्यो हतो, एवुं कथानक मळे छे.[९] मालव जातिना आक्रमणकारोनी उज्जयिनीमां केटलो धाक हतो एनुं एक विशिष्ट दृष्टान्त 'ओघनिर्युक्ति'ना भाष्यमां छे, जेनुं स्पष्टीकरण द्रोणाचार्यनी टीका करे छे. ए दृष्टान्त वास्तविक न होय तो पण परिस्थितिनुं द्योतक तो अवश्य छे. द्रोणाचार्य लखे छे: उज्जयिनीमां वारंवार मालवोनुं आक्रमण थतुं अने तेओ मनुष्योने हरी जता एक वार कूवामां रहेंटनी माळा पडी गई (माला पतिता); कोई बोल्युं के 'माळा पडी.' बीजो कोई संभ्रममां एम समज्यो के

'मालवो आव्या छे' (मालवाः पतिताः); अने एम नासभाग थई रह्यो.[10] अणसमजुने भडकाववा माटे पण 'मालवस्तेन आव्या छे.' (मालवतेणा पडिया) एम कोई बोलतुं एवो निर्देश मळे छे.[11] आ उल्लेखो बतावे छे के बोलचालनी प्राकृतमां 'मालवाः' ने 'माला' पण कहेता हशे. 'ओघनिर्युक्ति' (गा. २६) मां 'सुभिए मालुज्जेणी पलायणे जो जओ तुरियं' ए प्रमाणे 'मालव' ने बदले 'माल' नो उल्लेख छे, ते पण आ अनुमाननुं समर्थन करे छे. हवे बीजी तरफ जोईए तो, संस्कृतमां (अने केटलीक अर्वाचीन भारतीय भाषाओमां) 'माल' शब्दनो अर्थ 'घरनो उपरनो भाग' थाय छे. बंगाळीमां 'मालभूमि' नो अर्थ 'पार्वत्य भूमि, उच्च प्रदेश' थाय छे, अने पश्चिम बंगाळना 'मालभूम' नामना डुंगराळ जिल्लामां रहेती एक आदिवासी जाति पण 'माल' जाति कहेवाय छे. प्राचीन गुर्जर देशना पाटनगर 'भिल्लमाल' ना उत्तर अंशमां 'माल' नो संबंध पण ए माल जाति साथे होय ए शक्य छे.

कोई वार समयसूचकतावाळा माणसो हिंमत करीने आ लूटाराने केवी रीते पराजित करता एना पण उल्लेख छे. कोई गाम उपर मालव-शबरोना सैन्ये आक्रमण कर्युं हतुं. एमाना केटलाक बोधिकोए केटलीक साध्वीओनुं तथा एक क्षुल्लक–नाना साधुनुं अपहरण कर्युं. ए चोरो पोतानामांथी एकने साध्वीओ तथा क्षुल्लकनी सोंपणी करीने बीजांनुं हरण करवा माटे गया. हवे, ए एक चोर तरस्यो थतां पाणी पीवा माटे कूवामां ऊतर्यो. क्षुल्लके विचार कर्यो के 'अमने आटलां बधांने आ एक चोर शुं करी शकवानो छे?' तेणे साध्वीओने कह्युं के 'आपणे आ चोर उपर पाषाणपुंज नाखीए.' साध्वीओए गभराईने ना पाडी, परन्तु क्षुल्लके तो एक मोटो पत्थर पेला चोर उपर नाख्यो, एटले बधी साध्वीओए पण एक साथे पथ्थरो नाख्या. एनाथी चोर मरण पाम्यो, अने क्षुल्लक साध्वीओने लईने सुरक्षित स्थळे गयो.[12]

आ मालवो ज्यारे पकडाता त्यारे तेमने हेडमां नाखवामां आवता.[13] मालवो स्वभावथी ज परुष वाणी बोलनारा हता एवो उल्लेख छे.[14]

मालवो ('माल्लोइ')ना जे गणसत्ताक राज्यनो सिकंदरनी सवारीना काळे ( ई. स. पूर्वे चोथो सैको ) निर्देश छे ते पंजाबमां मुलताननी आसपास आवेलुं हतुं एवो विद्वानोनो मत छे.[15] आगम साहित्यनो मालवदेश एनाथी अभिन्न छे के केम ए निश्चितपणे कहेवुं मुश्केल छे. परन्तु पोताना मूळ प्रदेशमांथी पर्यटन करता मालवो उज्जयिनी आसपासनां जंगलोमां आव्या हशे अने त्यांथी उज्जयिनी अने अवन्ति जनपदना प्रदेशमां चोरी, लूंट अने मनुष्यहरण करता हशे, अने काळक्रमे आ जातिनुं वर्चस वधतां अवंतिने पण 'मालव' नाम मळ्युं हशे.

जुओ अवन्ति, उज्जयिनी, बोधिक, मयुरा

१ जुओ उज्जयिनी.

२ अव्या, पृ. १४; प्रसू, पृ. ५४. वळी जुओ सूकृशी, पृ. ११३, २७७.

३ द्वितीयमङ्गे आर्यदेशे मालवनामकम्लेच्छदेशेन, व्यम, भाग ३, पृ १२२

४ 'बोहिगा' मालवादिमेच्छा, ते पव्वयमालेसु ठिया माणुसाणि हरंति, निचू, भाग ५, पृ. १११०

मालवा म्लेच्छविशेषा शरीरापहारिणः...व्यम ( उद्दे० ४ उपरनी वृत्ति ), पृ. १३

५ मालवगो पव्वतो तदुवरिं विसमंते तेणया वसंति, ते मालवतेणा। निचू, भाग २, पृ २५०

६ बोधिकाः मालवस्तेनाः, म्लेच्छा पारसीकादय तदादीनां भये समुपस्थिते शीघ्रं देशान्तरं गन्तव्यम्। बृकसे, भाग ३, पृ. ८८०

क्वचित् ग्रामे मालवशबरानीकमापतितम्। तत्र केचिद् बोधिके-

ચૌરૈરાર્યિકાણામેકસ્ય ચ ક્ષુલ્લકસ્ય હરણ કૃતમ્। વ્યભ (ઉદ્દે૦ ૭ ઉપરની વૃત્તિ), પૃ ૭૧

બોધિક અને માલવની અભિન્નતા સબધમાં વધુ જુઓ ટિ ૪.

૭ જીકસા, ગા ૬૧૨

૮ માલ્વા-ઉજ્જયિનીતસ્કરા । જીકચૂર્ણિ, પૃ ૪૨

૯ ઉજ્જેણીએ સાવગસુતો ચોરેહિં હરિઉ માલવકે સૂવગારસ્સ હત્થે વિક્કીતો, ઉચૂ, પૃ ૧૭૪

ઉજ્જેણીએ સાવગસુતો ચોરેહિં હરિઉં માલવકે સૂવગારસ્સ હત્થે વિક્કીતો, ઉશા, પૃ. ૨૬૪. આચૂ (ઉત્તર ભાગ, પૃ ૨૮૩) માં માલવ દેશનો ઉલ્લેખ નથી, પણ ઉજ્જયિનીમાંથી છોકરાઓને માલવો ઉપાડી ગયા હતા અને એમાંથી શ્રાવકના છોકરાને રસોયાએ ખરીદ્યો હતો, એમ કહ્યુ છે

૧૦ ઓનિભા ગા. ૨૬, ઓનિદ્રો, પૃ ૧૬

૧૧ નિચૂ, ભાગ ૨, પૃ ૨૬૦

૧૨ વ્યભા, ગા. ૪૧૧, વ્યભ (ઉદ્દે૦૧૭ ઉપરની વૃત્તિ), પૃ. ૭૧

૧૩ પ્રાયેણ ણિગલબધો હડિબધણાદિણા વિવરેણ કરેંતિ, જહા માલવાણ, સૂકૃચૂ, પૃ ૩૬૪

૧૪ દ્રવ્યતો નામ-ન દુષ્ટભાવતયા પદ્ય ભણન્તિ કિન્તુ તસ્વાભાવ્યાત્, યથા માલવા પરુષવાક્યા ભવન્તિ । બૃકક્ષે, ભાગ ૬, પૃ ૧૬૧૬

૧૫ જ્યોદિ, પૃ ૧૨૨. જૈન આગમસાહિત્ય સિવાયનાં સાધનોમાંથી પ્રાપ્ત થતા માલવ જાતિના વૃત્તાન્ત માટે જુઓ 'ટ્રાઇબ્સ ઇન એન્શ્યન્ટ ઇન્ડિયા,' પૃ ૬૦-૬૫

## માલવ-૨

મધ્ય ભારતનો માળવા પ્રાન્ત 'અનુયોગદ્વાર સૂત્ર'માં ક્ષેત્રસંયોગનો વાત કરતા માગધ, સૌરાષ્ટ્ર, મહારાષ્ટ્ર અને કોંકણની સાથે માલવકનો ઉલ્લેખ કર્યો છે.[૧] સ્પષ્ટ છે કે અહા 'માલવક' વડે જંગલી માલવ-જાતિના મૂળ પહાડી વતનનો નહિ, પણ સંભવત આખા માળવા પ્રાન્તનો નિર્દેશ છે (જુઓ માલવ-૧) એ રીતે 'અનુયોગદ્વાર સૂત્ર'ના

रचनाकाळे अवन्ति जनपद माटे 'मालव' नाम प्रचारमां होवुं जोईए एवुं अनुमान करी शकाय.[1] 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां आपेलां 'गम्यदेशनाम'मां मालव पण छे.[2]

मालवमां 'मंडक'—मांडा नामनो खाद्य पदार्थ प्रसिद्ध छे.[3] माल-वादिमां मसूर धान्यने 'चवलग' कहेवामां आवे छे.[4] मसूर अने तुवेर ए बे धान्यो मालवामां जाणीतां छे.[5] त्रिपुटक ए पण मालवामां प्रसिद्ध धान्यविशेष छे.[6] अळसी तथा एमांथी बनतुं वस्त्र ए बन्ने मालवामां जाणीतां छे.[7] 'मन होय तो माळवे जवाय' एम मालवानुं दूरत्व सूचवती कहेवत गुजरातीमां छे, एनी साथे सरखावी शकाय एवो एक श्लोक 'कल्पसूत्र'नी केटलीक टीकाओमां छे. इन्द्रभूति, जेओ पछीथी महावीरना प्रथम गणधर थवाना छे तेओ महावीर पासे वाद करवा माटे जतां पोतानी विद्वत्ता विशे अभिमानपूर्वक कहे छे :

९ कसु, पृ. ३९९; वधी, पृ १०४

## माहेश्वर

जुओ माहेश्वरी

## माहेश्वरी

माहेश्वरीनी स्थापना विशेनी कथा आ प्रमाणे छे:

पोतनपुरना राजा प्रजापतिने भद्रा नामे राणीथी अचल नामे पुत्र थयो हतो. अचल बलदेव हतो प्रजापतिए पोतानी मृगावती नामे पुत्री साथे गान्धर्वविवाह कर्यो हतो; आथी भद्रा पोताना पुत्र अचल साथे दक्षिणापथ चाली गई हती अने त्यां तेणे माहेश्वरी नामे नगरी वसावी हती. ए नगरी मोटा ऐश्वर्यवाळी होवाथी माहेश्वरी (प्रा. माहेस्सरी) कहेवाती हती. अचल पोतानी माताने ए नगर सोंपीने पाछो पितानी पासे गयो हतो.[१]

माहेश्वर, श्रीमाल अने उज्जयिनीमां लोको समूहमां एकत्र थईने सुरापान करे छे एवो उल्लेख मळे छे.[२] पुरिकापुरीना बौद्ध राजाए पर्युषण पर्वमां जिनपूजामां पुष्पोनो निषेध कर्यो हतो, तेथी वज्रस्वामी आकाशमार्गे माहेश्वरी जईने पोताना पिताना मित्र एक माळी पासेथी पुष्पो लाव्या हता.[३]

माहेश्वरी ए ज कार्तवीर्यनी माहिष्मती छे अने ते इन्दोरनी दक्षिणे चाळीस माईल दूर नर्मदाकिनारे आवेल महेश्वर अथवा महेश छे, एवो सामान्य मत छे.[४] पण नर्मदातटे आवेल मान्धाताने पण माहिष्मती गणवामां आवे छे,[५] ज्यारे श्री. क. मा. मुनशीना मत प्रमाणे हालनुं भरूच ते ज कार्तवीर्यनी माहिष्मती छे.[६]

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. २३२

२ आसूए, पृ. ३३३. वळी जुओ उज्जयिनी.

३ कसु, पृ. ५११–१३; कवि, पृ. १७०–७१

४ ज्योदि, पृ १२०

५ पुगु, पृ. १६०

६ 'ऐतिहासिक सशोधन,' पृ. ५६१

## मूळदेव

एक प्रसिद्ध विट अने धूर्त, जे पाछळथी वेणातट नगरनो राजा थयो हतो. 'उत्तराध्ययन सूत्र'नी चूर्णि तथा ते उपरनी शान्तिसूरि अने नेमिचन्द्रनी वृत्तिओमां मूळदेवनो वृत्तान्त प्रमाणमां विस्तारथी अने विगतथी आपेलो छे चूर्णि अने शान्तिसूरि अनुसार, मूळदेव उज्जयिनीनो विट हतो. (नेमिचन्द्रना कथन मुजब, मूळदेव पाटलिपुत्रनो राजकुमार हतो अने पोताना पिताथी रिसाईने उज्जयिनीमां आवीने रह्यो हतो.) ते एक मोटो द्यूतकार होवा उपरांत गीतकळा अने मर्दनकळामां पण निपुण हतो. उज्जयिनीनी एक सुप्रसिद्ध गणिका देवदत्ता तेनी साथे प्रेममां पडी हती, परन्तु गणिकानी माता अचल नामे बीजा एक धनिक वणिकनो पक्ष करती होवाने कारणे मूळदेवने उज्जयिनी छोडीने चाल्यां जवुं पड्युं हतुं. पछी ए दक्षिणमां आवेला वेणातट नगरमां जईने रह्यो. त्यां कोईना घरमां खातर पाडतो हतो त्यारे नगररक्षकोए एने पकडी लीधो अने वधस्थान उपर लई जवा मांड्यो. ए दिवसे नगरनो राजा अपुत्र मरण पाम्यो हतो. मंत्रीओ नवा राजानी शोधमां हता. ए माटे अधिवासित करेलो अश्व मूळदेव पासे आवी ऊभो. (नेमिचन्द्रना कथन मुजब, मूळदेवने जोईने हाथीए गर्जना करी, अश्वे हेषारव कर्यो, भृंगारे अभिषेक कर्यो, चामरे वीजन कर्युं, अने कमळ तेनी उपर आवी रह्युं; ए प्रमाणे पांच दिव्य थयां.) एटले तेनो राजा तरीके अभिषेक थयो. पछी मूळदेवे उज्जयिनीना विक्रम राजा उपर पत्र लखीने तथा अनेक प्रकारनी भेट मोकलीने देवदत्ता गणिका पोताने सोंपवानी विनंति करी, अने विक्रम राजाए देवदत्तानी इच्छा जाणी पछी, ते कबूल राखी. मूळदेव देवदत्तानी साथे सुखपूर्वक रहेवा लाग्यो. ए समये मंडिक नामे एक

चोर दिवसे लंगडा-तूनारा तरीके रहेतो ने रात्रे शहेरमां खातर पाडीने, लोकोने त्रास आपतो. एक वारना चोर मूलदेवे युक्तिप्रयुक्तिथी मंडिकने पकडयो अने तेनी पासेनुं बधुं द्रव्य लई लीधा पछी एने शूळीए चढाव्यो.'

'व्यवहारसूत्र 'नां भाष्य तथा वृत्तिमां मूलदेवना राज्याभिषेकनो वृत्तान्त संक्षेपमां अने सहेज जुदी रीते आप्यो छे. वळी त्यां नगरनु नाम पण नथी. चोरी करतां पकडायेला मूलदेवनो वध करवानी राजाए आज्ञा करी हती, पण ए पछी तुरत ज राजा एकाएक मरण पाम्यो. राजा अपुत्र हतो, तेथी एनी पछी कोनो राज्याभिषेक करवो ए प्रश्न उपस्थित थयो. वैद्य अने मंत्रीए राजाना मरणनी वात गुप्त राखीने तथा राजा बोली शकता नथी एम जणावी, पडदामांथी राजानो हाथ लांबो करावी तेओ मूलदेवना अभिषेकनी सूचना करता होवानुं जणाव्युं. पछी एक वारनो आ चोर राजा थयो होवाथी सामंतो तेनुं योग्य सन्मान करता नहोता. राजदरबारमां पोतानी उपेक्षा करता सामंतोने जोईने मूलदेव बोल्यो के ' मारी आज्ञा पाळनार कोई छे के नहि ?' ए समये तेना पुण्यप्रभावथी राज्यदेवता वडे अधिष्ठित थयेला चित्रमय प्रतीहारोए केटला ये सामंतोनां माथां कापी नाख्यां. आथी बाकीना सामंतो तावे थई गया.[2]

आचार्य हरिभद्रसूरिए (वि. सं. ७५७-८२७=ई स. ७०१-७७१) नर्म अने कटाक्षथी भरेलुं 'धूर्ताख्यान' नामे एक प्राकृत कथानक रच्युं छे, जेमा मूलदेव एक पात्र तरीके आवे छे आ धूर्ताख्याननुं वस्तु 'निशीथ सूत्र'नां भाष्य अने चूर्णिमा मळे छे. एमां मूलदेव, एलाषाढ, अने शश ए त्रण धूर्तो तथा खंडपाना नामे धूर्तानी वात छे. एमांना प्रत्येक धूर्तनी साथे बीजा पाचसो धूर्तो अने खंडपानानी साथे पांचसो धूर्ताओ हती. एक वार भरचोमासामां उज्जयिनीनी उत्तरे आवेला जीर्णोद्यानमां ए बधां टाढोथी थरथरनां भूखे मरतां बेठां हतां त्यार मूलदेवे एम कह्युं के

'आपणे दरेके पोतपोताना अनुभवो कहेवा, अने जेना अनुभवो खोटा पुरवार थाय तेणे आ धूर्तमंडळीने भोजन आपवुं ' एमां त्रणे धूर्तोनी न मानी शकाय एवी वातोने पण बीजाओए महाभारत शास्त्रपुराणोमानी ए प्रकारनी कथाओ रजू करी समर्थन आप्युं. आ पछी हरिभद्रसूरिना 'धूर्ताख्यान'मां एम आवे छे के–खंडपानानी वातने कोई साची के खोटी कही शक्युं नहि; सर्वेए हार स्वीकारी, अने पछी सौनी विनंतिथी खंडपानाए पोते भोजन पण आप्युं पण ए बधुं नहि वर्णवता 'निशीथ चूर्णि' तो 'सेस धुत्तक्खाणाणुसारेण णेयं (बाकीनुं 'धूर्ताख्यान' प्रमाणे जाणी लेवुं) एम कहीने वात पूरी करी ले छे.' 'निशीथ-चूर्णि'नो समय पण ईसवी सनना सातमा सैकाथी अर्वाचीन नथी, एटले ते जे 'धूर्ताख्यान'नो उल्लेख करे छे ते हरिभद्रसूरिकृत होवानो संभव नथी. का तो चूर्णिकार पासे बीजुं कोई प्राचीनतर प्राकृत 'धूर्ताख्यान' होय अथवा आ धूर्तोनी लोकप्रचलित कथा जे पण 'धूर्ताख्यान' कहेवाती होय, एनो उल्लेख तेमणे कर्यो होय

'आवश्यक सूत्र'नी चूर्णि अने वृत्तिमा मूलदेवना मित्र तरीके कंडरीकनुं नाम छे, जे हरिभद्रसूरिना 'धूर्ताख्यान'मां एक पात्र तरीके छे. मूलदेवना निदग्धता, धूर्तता अने बुद्धिचातुर्यनी कथाओ पण आगमसाहित्यमा अनेक स्थळे छे एक ठेकाणे बुद्धिवान पुरुषने 'मूलदेव जेवो' कह्यो छे.

प्राचीन भारतनी लोककथामा अमर बनेलो आ मूलदेव खरेखर ऐतिहासिक व्यक्ति हशे एवो डॉ. विन्टरनित्सनो मत छे; जो के मूलदेव विशेनी बधी वार्ताओ ऐतिहासिक हशे एवुं कंई एमांथी फलित थतुं नथी आगमेतर तेम ज जैनेतर संस्कृत–प्राकृत साहित्यमा मूलदेव विशेना कथानको तथा एना मित्रोने लगता उल्लेखो संख्याबंध छे. शूद्रक कविना 'पद्मप्राभृतक भाण'मा मूलदेव अने देवसेना (देव-

दत्ता )नो प्रणयकथा आवे छे तथा ए माणनो प्रवक्ता मूलदेवनो मित्र शश छे. मूलदेवनुं 'कर्णीसुत' एवुं नाम पण एमां छे. महाकवि बाणनी 'कादंबरी 'मां विन्ध्याटवीना वर्णनमां एक श्लिष्ट वाक्यखंडमां कर्णीसुत (मूलदेव ) अने तेना त्रण मित्रो–विपुल, अचल अने शशनो उल्लेख छे. काश्मीरी सोमदेव भट्टकृत 'कथासरित्सागर 'ना 'विषमशील लंबक 'नी छेल्ली वार्तामां–' स्त्रीमात्र कंई नठारी होती नथी, बधे कंई विषवल्लीओ होती नथी; अतिमुक्तलता जेवी आम्रने वळगनारी वेलीओ पण होय छे '–ए सूत्र पुरवार करवा माटे मूलदेव पोताना ज रंगीला जीवननो एक प्रसंग राजा विक्रमादित्यने कही संभळावे छे, एमां पण मूलदेवनी साथे एनो मित्र शश छे. सं १२५५=ई. स. ११९९ मां रचायेलुं पूर्णभद्र मुनिनुं 'पंचाख्यान ', जे 'पंचतंत्र 'नुं ज एक अलंकृत संस्करण छे तेमां ( तंत्र १, कथा १० ) मूलदेव विशेनो एक रसप्रद उल्लेख छे: एक राजानी पथारीमां जू रहेती हती त्यां आवीने एक माकणे पण पोताने रहेवा देवानी विनंति करी. "जूए दाक्षिण्यथी माकणनी विनंति स्वीकारी, कारण के एक वार राजाने मूलदेवनुं कथानक कहेवामां आवतुं हतुं त्यारे चादरना एक भागमां रहेली जूए ते सांभळ्युं हतुं. एमां मूलदेवे देवदत्ता गणिकाने कह्युं हतुं के 'पगमां [illegible]ने करेली विनंति पण जे मानतो नथी तेना उपर ब्रह्मा, विष्णु ने महादेव त्रणे कोपायमान थाय छे.' ए वचन संभारीने जूए [illegible]कणनी विनंति स्वीकारी."

एक प्रकारनी गुप्त सांकेतिक भाषा मूलदेवप्रणीत होवाने कारणे मूलदेवी' नामथी ओळखाती ( जुओ कौऊहल–कृत 'लीलावई-कहा 'नुं संस्कृत टिप्पण, पृ. २८ ).

वळी मूलदेवने स्तेयशास्त्र अथवा चोरशास्त्रनो प्रवर्तक मानवामां आवे छे.[14] एने मूलश्री, मूलभद्र, करटक, कलांकुर, खरपट, कर्णीसुत आदि नामोथी संस्कृत साहित्यमां ओळखवामां आवे छे. ईसवी सनना

सातमा शतकना पूर्वार्धमां थयेला महेन्द्रविक्रमवर्मीकृत 'मत्तविलास प्रहसन' (पृ. १५)मां 'खरपटने नमस्कार एम कहो, जेणे चोरशास्त्र रच्युं!' एवो उल्लेख छे. दंडीना 'दशकुमारचरित' (उच्छ्वास २)मां चोरीनो धंधो स्वीकारनार एक पात्र 'कर्णीसुते उपदेशेला मार्गमां में बुद्धि चलावी!' एम कहे छे.

आ लाक्षणिक उदाहरणोथी ए स्पष्ट थशे के जेनी आसपास लोकप्रिय वार्तावको रचायां छे एवां थोडांक विचित्र अने विलक्षण पात्रो पैकीनो एक मूलदेव छे. साहस, विदग्धता अने मुक्त प्रणयमां राचती जे सृष्टि 'दशकुमारचरित' जेवी प्राचीन कथाओना नायको रजू करे छे तेनो ज एक विशिष्ट प्रतिनिधि आ मूलदेव पण छे. एनी अने एना मित्रोनी कथाओ जेम जैन साहित्यमां छे तेम जैनेतर साहित्यमां पण छे, ए बतावे छे के वत्सराज उदयननी जीवनकथानी जेम मूलदेव विशेनी वातो पण प्राचीन भारतीय कथासाहित्यनुं एक जीवंत अंग हतुं.

१ उचू, पृ १९८-२१; उशा, पृ २१८-२२; उने, पृ ५९-६५

२ व्यभा, गा. १६८-६९; व्यम (उद्दे० ४)नी वृत्ति, पृ ३२

३ हरिभद्रसूरिकृत 'धूर्ताख्यान'मां आ त्रण उपरांत कंडरीक नामे चोथो धूर्त छे.

४ निभा, गा. २९४; निचू, भाग १, पृ. ५३-५५

५ आचू, पूर्व भाग, पृ ५४९

६ आम, पृ ५२१

७ आचू, पूर्व भाग, पृ. ५४९; आम, पृ. ५२१, दवैचू, पृ ५५-५६; दवैहा, पृ. ५७-५८, इत्यादि

८ सोय य एगो मूलदेवसरिसो मणुस्सो आगच्छइ दवैचू, पृ ५८

९ 'हिस्टरी ओफ इन्डियन लिटरेचर,' भाग २, पृ. ४८८

१० आ विशे वधु विस्तार माटे जुओ 'कुमार'ना '३०० मा

अकमा मारो लेख प्राचीन साहित्यमां पोरवाड.''

**मेदपाट**

मेवाड. मूयक नामे तृणविशेष मेवाडमां प्रसिद्ध छे.[1]

१ प्रश्याम, पृ. १३७

**मोढेरक**

उत्तर गुजरातनु मोढेरा. मोढेरक आहारनो उल्लेख 'सूत्रकृताग-सूत्र'नी वृत्तिमां छे.[1] ए ज सूत्रनी चूर्णिमां मोढेरकनो ए प्रकारनो उल्लेख छे, जेथी ए एक महत्त्वनु स्थळ होवानुं सिद्ध थाय छे.[2]

पुराणोमा आ नगरनुं 'मोढेरक' एवुं नाम मळे छे[3]

१ सूकृशी, पृ. १४३. जुओ खेट आहार.

२ जहा पुढो वेणइ-केवि तुन मोढेरगातो आगतो भवान्? सो भणइ-णाह मोढेरगातो, भवद्ग्रामायातो- । सूकृचू, पृ ३४८

३ जुओ पुरुमां मोहेरक. मोढेराना इतिहास माटे जुओ श्री. मणिलाल मू. मिस्त्रीकृत पुस्तिका 'मोढेरा.'

**यमुन**

जुओ यवन

**यवन**

मथुरानो एक राजा. प्राकृतमां एनुं नाम जउण, जवुण अथवा जउणसेण मळे छे. एना मंत्रीनुं नाम चित्तप्रिय हतुं[1] ए राजा विशे नीचे कथा छे 'जउणावंक' नामे उद्यानमा आतापना लेता दंड नामे अणगारनो ए राजाए वध कर्यो हतो दंड अणगार काळ करीने सिद्धिमां गया. तेमनो महिमा करवा आवेला इन्द्रे राजाने कह्युं के तुं दीक्षा लईश तो ज आ पापथी मुक्त थईश.' पछी राजाए स्थविरो पासे दीक्षा लीधी[2]

जउण, जवुण आदिनुं[3] संस्कृत रूप 'अभिधानराजेन्द्र' (ग्रन्थ

४ ) तथा ' पाइअ–सद्द–महण्णवो 'ए सूचव्युं छे ते प्रमाणे 'यमुन' एवुं पण जो के आपी शकाय, तथा मथुरा नगर यमुना नदीना तटे वसेलुं होई त्यांना राजाने पण 'यमुन' नाम आपवामां आवे एमां एक प्रकारनुं कथोचित सारल्य जणाय छे खरुं, परन्तु मने एनी 'यवन' एवी छाया वधारे उचित लागे छे. मथुरामां एक काळे यवन अर्थात् ग्रीक राजाओनुं राज्य हतुं ए इतिहाससिद्ध छे. एवो कोई परदेशी राजा धार्मिक असहिष्णुताथी प्रेराई जैन साधुनो वध करे ए पण संभवित छे. आगमसाहित्यमां आ राजाने ' परपक्ष ' नो कह्यो छे, एथी एनुं परदेशीपणुं सूचवाय छे एम समजवुं ?

१ विको, पृ २५४

२ आचू , उत्तर भाग, पृ. १५५. ' विविध तीर्थकल्प ' (पृ. १९) मां आ प्रसंगनो निर्देश छे, त्यां राजानुं नाम 'वक्कजउण' आप्युं छे अने राजाए साधु उपर घा करतां साधुने केवल ज्ञान थयुं एम कह्युं छे.

३ परपक्खो उ सपक्खे भद्दतो जह होइ जउणराया तु ।
त पुण अतिसयणाणी दिक्खतधिकारणं नाउं ॥

निभा, गा. ३६५२

परपक्खो सपक्खे दुट्ठो जहा मधुराए जउणराया, निचू ( उद्दे० ११ ), पृ ७४३

मधुरा नगरी जउणो राया, यउणावक उज्जाणं, आचू , उत्तर भाग, पृ. १५५

महुराए जउणसेणो राया, थितप्पिंडो य से मती, विको, पृ. २५४

## यशोदेवसूरि

चंद्रगच्छना वीरगणिना शिष्य श्रीचन्द्रसूरिना शिष्य. एमणे सं. ११८० = ई. स. ११२४ मां जयसिंहना राज्यमां अणहिलवाडमां सौवर्णिक नेमिचन्द्रनी पौषधशाळामां रहीने 'पाक्षिक सूत्र'

उपर 'सुखावबोधा' नामे वृत्ति रची हती.[1] यशोदेवसूरिए संख्याबंध आगमेतर धार्मिक ग्रन्थो उपर पण टीकाओ लखी छे.[2]

१ पाय, प्रशस्ति

२ जैसाइ, पृ. २४४

## यादव

यदुना वंशजो,[1] जेओ प्रथम शौरिपुरमां अने पछी द्वारकामां वसता हता.

१ जैन साहित्य अनुसार यदुना वंशवृक्ष माटे जुओ जैन, 'एन्श्यन्ट इन्डिया,' पृ. ३७६

## यौगन्धरायण

वत्सराज उदयननो मंत्री. अवंतिना राजा प्रद्योते उदयनने कैद पकड्यो हतो, एने छोडाववानो प्रयत्न करतो यौगंधरायण उज्जयिनी आव्यो हतो. उदयन अने वासवदत्ताने हाथणी उपर बेसाडीने नसाडवानी योजना तेणे विचारी, अने पछी ए योजना परत्वे पोताना बुद्धिवैभवनुं अभिमान नहि जीरवी शकवाथी मार्गे जतां ते एक श्लोक बोल्यो के—

यदि तां चैव तां चैव तां चैवायतलोचनाम् ।
न हरामि नृपस्यार्थे नाहं यौगन्धरायणः ॥

ए ज समये नगरमां फरवा नीकळेला प्रद्योत राजाए आ शब्दो सांभळ्या अने क्रुद्ध दृष्टिथी एनी सामे जोयुं पण यौगंधरायणे गांडपणनो देखाव कर्यो, एटले प्रद्योत पोताना कोपनो निग्रह करीने चाल्यो गयो. थोडा समय पछी वत्सराज अने वासवदत्ता उज्जयिनीथी कौशांबी चाल्यां गयां अने घणो प्रयत्न करवा छतां प्रद्योत एमने पकडी शक्यो नहि.[1]

अहीं ए नाधवु रसप्रद छे के उपर टांकेलो "यदि ता चैत०" ए श्लोक नजीवा पाठांतर साथे, भासना 'प्रतिज्ञायौगंधरायण' नाटक ( अंक ३, श्लो ८ ) मां यौगंधरायणना मुखमां मुकायेलो छे एक ज जीवत, ल कप्रिय वस्तुनो जुदी जुदी परंपराओमां केवो रीते विनियोग थयो एनु आ पण एक रसिक उदाहरण छे

जुओ उदयन, प्रद्योत

१ आचू, उत्तर भाग, पृ १६२–६३ जैन परंपरा अनुसार आ आखा य प्रसंगना रसप्रद वर्णन माटे जुओ हेमचन्द्रकृत 'त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित्र,' पर्व १०, सर्ग ११

रक्षित आर्य

आर्य रक्षित अथवा रक्षितसूरिनो स्तुति 'नंदिसूत्र'नी स्थविरावलीमां अनुयोगोना रक्षक तरीके करेली छे आर्य रक्षित दशपुरना राजाना पुरोहित सोमदेवना पुत्र हता एमनी मातानु नाम रुद्रसोमा हतुं, तोसलिपुत्र नामे आचार्य जेओ दशपुर आव्या हता तेमनी पासे श्रमण दीक्षा लीधी हती उज्जयिनीमां वज्रस्वामी पासे जईने तेमणे साडानव पूर्वनो अभ्यास कर्यो हतो, तथा ते पहेला उज्जयिनीमां एक वृद्ध आचार्य भद्रगुप्तसूरिने अनशननी आराधना करावी हती आर्य रक्षिते एमना पिता सोमदेव अने भाई फल्गुरक्षित सुद्धां आखा कुटुंबने दीक्षित कर्युं हतुं तेमना पिता सोमदेव एक याज्ञिक ब्राह्मण होई, पोताने बीजाओ वंदन करे के न करे, पण वस्त्रना त्याग करवानी विरुद्ध हता तेथी तेमणे कटिवस्त्रने बदले चोलपट्टक धारण कर्यो हतो जो के 'प्रभावकचरित' आदि ग्रंथो कहे छे के स्वर्गवास पामेला एक मुनिनो मृतदेह ज्यारे सोमदेवे उपाड्यो हतो त्यारे एमनुं अधोवस्त्र खेंची लेवामां आव्युं अने त्यार पछी एमणे वस्त्र धारण कर्युं नहि

पूर्वकाळमां साधुओने मात्र एक ज पात्र राखवानी छूट हती

आर्य रक्षितसूरिए चोमासाना चार मास माटे पात्र उपरांत एक मात्रक ( नानुं पात्र ) राखवानी छूट आपी हती.[7] आर्य रक्षितसूरिना समय पूर्वे साध्वीओ साध्वीओनी पासे आलोचना लेती, पण एमना समयथी साध्वीओए साधुओनी पासे आलोचना लेवानुं ठर्युं.[8]

आर्य रक्षिते पोतानी पछो गच्छनुं आधिपत्य दुर्बल पुष्पमित्र नामे साधुने सोंप्युं हतुं, आथी गोष्ठामाहिल[9] नामे बीजा विद्वान मुनि जेओ एमना मामा थता हता तेमने माठुं लाग्युं गोष्ठामाहिल सातमा निह्नव बन्या. एमनो मत 'अबद्धिक' तरीके जाणीतो छे.

आर्य रक्षितनो जन्म वि. सं. ५२=ई. स. पूर्वे ४ मां, दीक्षा सं. ७४=ई. स. १८ मां, युगप्रधानपद सं. ११४=ई. स. ५८ मां अने अवसान सं. १२७=ई. स. ७१ मां थयां हतां.[10]

१ 'अभिधान राजेन्द्र,' भाग १, पृ. ११२

२ जुओ **दशपुर.**

३ जुओ **तोसलिपुत्राचार्य**

४ जुओ **भद्रगुप्ताचार्य** तथा **वज्र आर्य.**

५ उशा, पृ. ९८; उने, पृ. २३–२५

६ जुओ 'परिशिष्ट पर्व' मां तेरमो सर्ग तथा 'प्रभावकचरित' मां आर्यरक्षितसूरिचरित'. आर्य रक्षितना वृत्तान्त माटे जुओ उनि. गा. ४–९७; उशा, पृ. ९६–९८; उने, पृ. २२–२५, इत्यादि. एमने ेशीना प्रासगिक उल्लेखो पण आगमसाहित्यमां अनेक स्थळे छे, जेमके— घ. गा. ४८९; जीकभा, पृ ५३; कांकि, पृ. १७२–७३; कदी, . १११, इत्यादि

७ निभा, गा. ४५१४; निचू, भाग ४, पृ. ८८७; व्यम उद्दे० ८ उपरनी वृत्ति ), पृ. ४१–४२.

८ व्यम ( उद्दे० ५ उपरनी वृत्ति ), पृ. १६

९ जुओ **गोष्ठामाहिल.**

१० प्रच ( अनुवाद ), प्रस्तावना, पृ. ३१

## रत्नशेखरगणि

तपागच्छाधिपति सोमसुन्दरसूरिना शिष्य भुवनसुन्दरसूरिना शिष्य एमणे स १४९६=ई स १४४०मा 'श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र' उपर 'अर्थदीपिका' नामे वृत्ति रची छे[1] रत्नशेखरनी वृत्तिनो उल्लेख शान्तिचन्द्रे 'जम्बुद्वीपप्रज्ञप्ति'नी वृत्तिमा कर्यो छे[2]

१ आग्रा, मगलाचरण तथा प्रशस्ति

२ जप्रसा पृ. ३२७ ३६६, ४३१

## रथनेमि

शौरिपुरना समुद्रविजय राजाना, राणी शिवादेवीथी थयेला चार पुत्रो हता—अरिष्टनेमि (नेमिनाथ), रथनेमि, सत्यनेमि अने दृढनेमि उग्रसेननी पुत्री राजीमतीने परणवा माटे नेमिनाथ जता हता त्या मार्गमा जानने भोजन आपवा माटे बाधेला पशुओना चित्कार साभळी तेमने वैराग्य उत्पन्न थयो अने तेमणे दीक्षा लीधी[1] एमना बाद्रथा राजीमती पण दीक्षित थया. पछी एक वार वर्षाऋतुमा द्वारका पासेना रैवतक उद्यानमा रहेला नेमिनाथने वदन करीने आवता राजीमतीना वस्त्रो वरसादमा भीनाया तेमणे एक गुफामा आश्रय लीधो अने तमाम वस्त्रो उतारीने ते सूकववा मडया ए समये नेमिनाथना भाई रथनेमि जेमणे पण दीक्षा लीधी हती तेओ वृष्टिना कारणथी गुफामा प्रवेश्या अने राजीमतीने जोईने विकारवश थया पण राजीमतीना उपदेशथी तेओ पोतानो मूढ समज्या, अने अते रथनेमि अने राजीमती बन्ने केवळ ज्ञान पाम्या[1]

१ रथनेमि अने राजीमतीना अद्भुत कवित्वमय सवाद माटे जुओ उ अध्याय २२ (रथनेमीय), वळी जुओ वसु, पृ. ३९९-२४, कचौ, पृ १६९-७०, कवि, पृ. १३७-४२, कशी पृ. १२८-२१, इत्यादि

## रथावर्त्तगिरि

वज्रस्वामीए बार वर्षना दुष्काळनी शरूआतमा आ पर्वत उपर

जईने अनशनपूर्वक देहत्याग कर्यो हतो. एमना देहत्याग पछी इन्द्रे त्यां आवीने पोताना रथ साथे ए स्थाननी प्रदक्षिणा करी हती, अने ए कारणथी पर्वतनुं नाम 'रथावर्त' पड्युं हतुं.[1]

रथावर्तगिरि कुंजरावर्तनी पासे आवेलो हतो.[2] बीजी एक परंपरा प्रमाणे, वज्रस्वामी पांचसो साधुओनी साथे रथावर्त पर्वत उपर आव्या हता. त्यां एक क्षुल्लक-नाना साधुने मूकीने तेओ बीजा पर्वत उपर गया हता. क्षुल्लकना कालधर्म पाम्या पछी लोकपालोए रथमां आवीने एमनी शरीरपूजा करी हती; आथी ए गिरि रथावर्तगिरि तरीके लोकमां प्रसिद्ध थयो. बीजा पर्वत उपर वज्रस्वामी मरण पाम्या. इन्द्रे हाथी उपर त्यां आवीने ए स्थाननी प्रदक्षिणा करी त्यारथी ए गिरि 'कुंजरावर्त' तरीके ओळखायो.[3]

रथावर्त ए जैनोनुं एक प्रसिद्ध तीर्थ हतुं. मुनि कल्याणविजयजीना मत प्रमाणे ते माळवामां विदिशानी पासे आवेलुं हतुं.[4]

१ आम, पृ. ३५६

२ जुओ कुञ्जरावर्त; वळी मुनि कल्याणविजयजीकृत 'वीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना,' पृ. १०.

३ मथ, गा. ४६७-४७३

४ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ. १७. बीजा उल्लेखो माटे जुओ कसु, पृ. ५११-१३; कवी, पृ. १४५

## राजधन्यपुर

राधनपुर. उपाध्याय धर्मसागरे 'राजधन्यपुर'मां सं. १६२८=ई. स. १५७२मां 'कल्पसूत्र' उपर 'किरणावली' नामे [illegible] टीका रची हती.

जुओ धर्मसागर उपाध्याय

એ કથાઓ પ્રમાણે રોહક છેવટે ઉજ્જયિનીના રાજાને પ્રસન્ન કરીને એનો મંત્રી થયો હતો. લોકવાર્તાના તુલનાત્મક અભ્યાસમાં રોહકના સંબંધમાં મળતી કથાઓ ઘણી મહત્ત્વની છે, કેમ કે એની એ કથાઓ સહેજ ફેરફાર સાથે ભોજ અને કાલિદાસ તથા અકબર અને બીરબલને વિશે પણ પ્રચલિત છે. રોહકને નામે ચડેલી કથાઓનો નિર્દેશ 'નંદિસૂત્ર'ના ભાષ્યમાં છે–જો કે એનો વિસ્તાર તો ટીકાચૂર્ણિઓમાં છે– એ ઉપરથી લોકકથા તરીકે પણ એમની પ્રાચીનતાનું સહેજે અનુમાન થઈ શકે છે.[2]

૧ આમ, પૃ ૫૧૫–૧૮; નમ, પૃ ૧૪૫–૪૬.

૨ રોહકના બુદ્ધિચાતુર્યની કથાઓ માટે જુઓ 'પ્રજાબંધુ-ગુજરાત-સમાચાર' દીપોત્સવી અંક, સં. ૧૯૯૬ માં મારો લેખ, 'નટપુત્ર રોહક અને રાજા'

## લાટ

લાટદેશ. 'કલ્પસૂત્ર'ની ટીકાઓમાં 'આર્યદેશનામ' આપ્યા છે ત્યાં લાટનો પણ ઉલ્લેખ છે.[1] લાટદેશ વડે સામાન્યતઃ આજનો દક્ષિણ ગુજરાત ઉદ્દિષ્ટ છે, જેનું પાટનગર ભરુકચ્છ હતું. પણ એક કાળે લાટ વડે ઉત્તર સિન્ધના લાડકાણા (લારખાના)થી માંડી પશ્ચિમ ભારતનો સમુદ્રકિનારાનો આખો પ્રદેશ ઉદ્દિષ્ટ હતો. એ વિષયની વિગતવાર ચર્ચા માટે તથા લાટની વ્યુત્પત્તિ માટે જુઓ 'પુગુ'માં લાટ.

જૈન આગમસાહિત્યના ઉલ્લેખોમાં 'લાટ' વડે ઘણું કરીને દક્ષિણ ગુજરાત જ ઉદ્દિષ્ટ હોય એમ જણાય છે. એમાંથી લાટ તથા ત્યાંના વતનીઓ વિશે કેટલીક પ્રકીર્ણ પણ રસિક સામગ્રી મળે છે. લાટવિષયમાં વરસાદનાં પાણીથી ધાન્ય નીપજે છે.[2] લાટના વતનીઓને 'ગુંઠ'–કપટી કહ્યા છે તથા એને લગતી એક રસિક વાર્તા આપી છે. એક લાટવાસી ગાડામાં બેસીને કોઈ નગર તરફ જતો હતો. માર્ગમાં

एक महाराष्ट्री मळ्यो. तेणे लाटवासीने पूछ्युं के 'लाटवासीओ कपटी' कहेवाय छे ते केवा!' लाटवासीए कह्युं, 'पछीथी बतावीश.' मार्गमां सवारनो समय वीती जतां पोते ओढेलुं वस्त्र महाराष्ट्रीए गाडी- उपर मूक्युं. लाटवासीए एनी दसीओ ( लटकता छेडा ) गणी लीधी. पछी नगरमां पहोंच्या पछी महाराष्ट्रीए पोतानुं वस्त्र लेवा मांड्युं, एटले लाटवासी बोल्यो के 'आ तो मारुं वस्त्र छे.' महाराष्ट्री एने राजदरबारमां लई गयो. त्यां विवाद थतां लाटवासी बोल्यो, 'महाराष्ट्रीने पूछो के वस्त्रनी दसीओ केटली छे.' महाराष्ट्री ए कही शक्यो नहि अने लाटवासीए ते कही, एटले वस्त्र लाटवासीने मळ्युं राजदरबारमांथी बहार नीकळ्या पछी लाटवासीए महाराष्ट्रीने बोलावीने वस्त्र पाछुं आप्युं अने कह्युं के 'मित्र! तें पूछ्युं हतुं एनो आ जवाब छे, लाटवासीओ आवा होय छे.'[२]

लाटवासीओ जेने 'क्षीर' कहे छे तेने कुडुक्क ( घणे भागे कूर्गी)ना वतनीओ 'पीलु' कहे छे.[३] लाटदेशमां 'दवरक-वलनक'—दोरांना गूंचळाने मांगलिक गणवामां आवे छे.[४] आ 'दवरक-वलनक' ए नाडाछडी होय ए संभवित छे.

लाटदेशमां धान्य भरवानी कोठी 'पल्लग' अथवा 'पल्लक' ( सर० गुज 'पाल्लुं'=कोठी ) कहेवाय छे ते ऊंचे अने नीचे पहोळी, पण छेक उपर कंईक सांकडी होय छे.[५] लाटदेशनी 'रूतपोणिका'—रूनी पूणी महाराष्ट्रमां 'पेलु' कहेवाय छे.[६]

लाटदेशमां समान वयनी सखीओने 'हलि' ( गुज. 'अली' ) अने नणंदने 'भट्टा' कहीने संबोधवामां आवे छे.[७] कणसलांमांथी अनाज छूटुं करवानी क्रिया 'जोवण,'[८] चोखानुं धोवण 'कांजिय' के 'कांजिक'[९] ( गुज. 'कांजी' ) कहेवाय छे. लाटवासीओ जेने 'अड्डपल्लाण' ( घोडानुं पलाण; एनुं गुजराती रूप 'आडपलाण'

एवुं थई शके ) कहे छे ते बीजा प्रदेशोमां 'चिल्लि' तरीके ओळखाय छे.[10] एक खास प्रकारनी वनस्पति लाटवासीओमां 'इक्कडा' (अर्वाचीन गुज. 'ईकड') नामे प्रसिद्ध छे.[11] लाट अने महाराष्ट्रना वतनी चोखाने 'कूर' कहे छे; एने ज पूर्वदेशना वासीओ 'ओदन,' द्राविडो 'चोर' अने आन्ध्रो 'कनायु' कहे छे.[12]

लाटनी केटलीक रूढिओनो पण निर्देश छे. 'निशीथचूर्णि' प्रमाणे, लाटमां मामानी दीकरी गम्य छे, पण माशीनी दीकरी अगम्य छे.[13] 'स्थानांगसूत्र'नी अभयदेवसूरिनी वृत्ति प्रमाणे लाटदेशमां 'मातुलभगिनी'–माशी गम्य छे, पण अन्यत्र ते अगम्य छे.[14]

आ छेल्लो उल्लेख चिन्त्य लागे छे, केम के सामान्य रीते आवुं बने नहि. जो के टीकानो पाठ आ बाबतमां स्पष्ट छे. तो शुं अर्थनी स्पष्टता होवा छतां पाठमां कोई प्रकारनी भ्रष्टता प्रवेशी हशे?[15]

'निशीथचूर्णि'मां प्राकृत शब्द 'मोयटा'नी समजूती आ प्रमाणे आपी छे: लाटवासीओ जेने 'कच्छ' कहे छे ते म्हाराष्ट्रमां 'मोयडा' कहेवाय छे. स्त्रीओ बचपणथी मांडीने लग्न थया बाद सगर्भा थतां सुधी कच्छ बांधे छे. सगर्भा थाय त्यारे भोजन करवामां आवे छे, स्वजनोने बोलावी वस्त्र पहेरवामां आवे छे, अने ए समयथी कच्छ बांधवानुं बंध थाय छे.[16]

लाटदेशमां वर्षाऋतुमां गिरियज्ञ अथवा मत्तवाल–संखडि नामे उत्सव थाय छे. भूमिदाह ए पण एनुं बीजुं नाम छे.[17] लाटवासीओ श्रावणपूर्णिमाने दिवसे आषाढी पूर्णिमा करे छे[18] एम 'आवश्यक चूर्णि' नोंधे छे. दक्षिणापथमां लोहकार अने कलाल जातिधर्म गणाय छे तेम लाटमां चर्मकार अधम गणाय छे.[19]

लाटदेशनी स्त्रीओना रूप अने निद्राधनानुं वर्णन करतो एक श्लोक आगमसाहित्यमां केटलेक स्थळे उद्धृत करवामां आव्यो छे.[20]

લાટદેશની સ્ત્રીઓના કચ્છ-બંધાદિ નેપથ્યની પ્રશંસા માટે ઔદીચ્ય દેશની સ્ત્રીઓનાં વસ્ત્ર-પરિધાનની નિન્દા કરતો શ્લોક પણ એક સ્થળે ઉદ્ધૃત થયેલો છે.[१६]

१ બૃકસે, ભાગ ૨, પૃ ૩૬૩-૬૪

૨ વ્યભા ગા. ૩૪૫; વ્યસ, ભાગ ૪, પેટા ભાગ ૧, પૃ. ૬૬-૭૦

૩ આચૂ, પૂર્વભાગ, પૃ ૨૭

૪ આમ, પૃ ૬; વિકો, પૃ. ૧૮

૫ આમ, પૃ ૬૮, ૧૧૬; નમ, પૃ. ૮૮; પ્રમ, પૃ ૫૪૨

૬ વિકો, પૃ ૬૭૨. જુઓ મહારાષ્ટ્ર.

૭ દવૈચૂ, પૃ ૨૫૦. અહીં ચૂર્ણિકાર એવો જીણો ભેદ પાડે છે કે લાટમાં સર્વેને 'દ્વલિ' કહે છે, જ્યારે વરદાતટ ( વર્ધા નદીના કિનારાના દેશ ) માં તેને 'દ્વલિ' તરીકે સંબોધાય છે.

૮ ઓનિદ્રો, પૃ. ૭૫

૯ બૃકસે, ભાગ ૩, પૃ. ૮૭૧

૧૦ ઔસૂઅ, પૃ. ૫૬; જીમ, પૃ ૨૮૬; જ્ઞાધઅ, પૃ. ૪૩

૧૧ નિચૂ, પૃ ૨૧૪

૧૨ દવૈચૂ, પૃ ૨૩૬

૧૩ નિચૂ, ભાગ ૧, પૃ ૪૬, આચૂ, ઉત્તર ભાગ, પૃ ૬૧; આમ ( ઉત્તર ભાગ, પૃ ૮૧ ) એટલું જ કહે છે કે લાટમાં મામાની દીકરી ગમ્ય છે, આચૂ વધારામાં એમ પણ નોંધે છે કે ગોલ્લ દેશમાં ભગિની ગમ્ય છે, 'વિચ્ચો'ને ( 'વિચ્ચાણ'-અર્થાત્ વચમાં રહેનારાઓને ? મધ્ય પ્રદેશમાં રહેનારાને ? ) માતાની સપત્નીઓ ગમ્ય છે.

૧૪ સ્યાસૂઅ, પૃ. ૨૩૧ छन्दो-गम्यागम्यविभागो यथा-लाटदेशे मातुलभगिनी गम्या अन्यत्रागम्येति ।

૧૫ સંભવ છે કે 'માતુલભગિનેયા'-મામાની પુત્રી હોય

૧૬ नेवत्थ मोयडादीय भवति । "मोयडा" णाम जा लाडाणं कच्छा सा मरहट्ठयाण भोयडा भण्णति । त च बालप्पभिति इत्थिया ताव बधन्ति जाव परिणीया जाव य आवण्णसत्ता जाया ततो मोयडं कज्जति,

सया मेल्लेऊण पउओ दिज्जति, तप्पभिइ पिट्ठइ भोयडा। निचू., भाग १, पृ ४६

१७ विशेषचूर्णिकार पुनराह गिरिजन्नो त्ति मसवालमखडी भन्नइ, सा लाडविसए वरिसारत्ते भवइ त्ति [ गिरिज(ज)न्नति भूमिदाहो त्ति भणित होइ] वृकसे, भाग ३, पृ ८०७

१८ आसाडी–आसाढपुण्णिमा इह, लाडाण पुण सावणपुण्णिमाए भवति, आचू., उत्तर भाग, पृ ३२१

१९ निचू भाग ५ पृ १११७

२० स्यासूअ, पृ २१०, ४४५, प्रश्याअ, पृ १३९, पाय पृ ४८ तुओ–तया अन्ध्रीप्रभृतीनामन्यतमाया यत्प्रशसादि सा स्त्रकथा

चन्द्रवक्त्रा सरोजाक्षी सद्गी पीनघनस्तनी।
किं लाटी नो मता साऽस्य देवानामपि दुर्लभा॥

स्यासूअ पृ २१०

२१ तासामेवान्यतमाया कच्छबन्धादिनेपथ्यस्य यत्प्रशसादि सा नेपथ्यकथा यथा—

धिग् नारीरौदीच्या बहुवसनाच्छादिताङ्गलतिकत्वात्।
यद्यौवन न यूना चक्षुर्मोदाय भवति सदैति॥ पाय, पृ ४८

## लाटाचार्य

एक आचार्य एमना नाम उपरथी तेओ लाटना हशे एवु अनुमान थाय छे

जैन शास्त्रनु'सामा य विधान एवु छे के शय्यातर–वसति आपनारना गृहेथी मागुए पिंड न लेवा हुवे, एक ज गुरुना शिष्यो जग्यानी सकडाशन कारणे बे जुदी वसतिमा रहेता होय तो शय्यातर कोने गणवो ? बजे स्थळे रहेला साधुओ सवारे सूत्रपौरुषी कर्या पछी मूल उपाश्रयमा आवे तो बन्ने स्थानना मालिको शय्यातर गणाय अने जो मूल उपाश्रयमा आवीने सूत्रपौरुषी करे तो एक ज शय्यातर गणाय आ बाबतमा लाटाचार्यनो मत एवो छे के ज्या आचार्य वसता होय ते वसतिनो मालिक शय्यातर गणाय, बीजो वसतिनो मालिक शय्यातर गणाय नहि ¹

१ बृकभा, गा. २५३१; बृक्षे, भाग ४, पृ. ९८३; निभा, गा. ११२९; निचू, भाग २, पृ. २५५

## लोहजङ्घ

उज्जयिनीना राजा प्रद्योतनो दूत. ते एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो.

जुओ भरुकच्छ.

## वज्र आर्य

एमने विषेनी कथा आ प्रमाणे छे :

आर्य वज्र अथवा वज्रस्वामी अवंति जनपदमां तुंबवन ग्राममां वसतां धनगिरि अने सुनन्दा ए दंपतीना पुत्र हता. वज्रस्वामी माताना गर्भमां ज हता, अने धनगिरिए सिंहगिरि गुरु पासे दीक्षा लीधी हती. जन्म पछी वज्रस्वामी पोताना जुंभक देव तरीकेना पूर्वजन्मनुं स्मरण करीने रोया करता हता; अने एना आ सतत रुदनथी माता खूब कंटाळी गई हती. आ बाळक एना दीक्षित पिता धनगिरिने सोंपवामां आव्यो त्यारे ज छानो रह्यो. वज्र जेवो शक्तिशाळी होवाथी आ बाळक वज्र नामथी ओळखायो केटलाक समय पछी सुनंदाए आ बाळकने साधुओ पासेथी पाछो मेळववा प्रयत्न कर्यो, पण ज्यारे ते न आव्यो त्यारे माताए पोते ज जैन साध्वी तरीके दीक्षा लीधी.

बाळक वज्रस्वामीने शय्यातर स्त्रीओए उछेर्या तथा साध्वीओना उपाश्रयमां रहीने तेओ अगियार अंग भण्या. बाल्यावस्थामां जे एमनी असाधारण बुद्धिथी प्रसन्न थईने गुरुए एमने वाचनाचार्य बनाव्या हता. एक वार गुरु सहित वज्रस्वामीनी दशपुरमां स्थिति हती त्यांथी उज्जयिनीमां दश पूर्वधर भद्रगुप्ताचार्य पासे जइने तेमणे दश पूर्वोनो अभ्यास कर्यो. ए पछी वज्रस्वामीने गच्छ सोंपीने सिंहगिरि आचार्य अनशनपूर्वक कालधर्म पाम्या.

वारने अभावे, हाथमां आसन लईने बहार नीकळ्या. पद्मावतीए पूछ्युं, 'वज्रभूति आचार्य क्यां छे?' वज्रभूतिए उत्तर आप्यो, 'बहार गया छे.' पण दासीए राणीने निशानीथी समजाव्युं के 'आ ज वज्रभूति छे.' आथी पद्मावती विराग पामीने, विचार करीने बोली के–'हे कसेरुमती नदी! तने जोई अने तारुं पाणी पीधुं! तारुं नाम सारुं छे, पण दर्शन सारुं नथी'[2] पछी पोते आणेलुं भेटणुं राणीए वज्रभूतिने सोंप्युं, अने पोते एमने ओळखती ज नथी एवो देखाव चालु राखी, 'आ आचार्यने आपजो,' एम कहीने पाछी गई.[3]

अगाउ सूचव्युं छे तेम, नभोवाहननो समय ईसवी सनना बीजा सैकाना पूर्वार्धमां मानीए[4] तो वज्रभूतिनो समय पण ए ज गणवो जोईए.

१ जुओ **नभोवाहन.**

२ जुओ **कसेरुमती**

३ व्यभा, गा, ५८–५९; व्यम, विभाग ४, पेटा वि. ३, पृ. १४–१५

४ जुओ **नभोवाहन.**

**वज्रसेन**

वज्रस्वामीना शिष्य.

एक मोटा दुर्भिक्षने कारणे साधुओने भिक्षा मळवानुं मुश्केल बन्युं त्यारे वज्रस्वामी अनशन करवा माटे रथावर्तगिरि तरफ गया.[1] त्यार पहेलां एमणे पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं हतुं के 'जे दिवसे तने शतसहस्र मूल्यनी भिक्षा मळे तेने बीजे दिवसे सुभिक्ष थशे.' आ पछी केटलेक समये वज्रसेन विहार करता सोपारकमां आव्या. त्यां जिनदत्त नामे श्रावक[2] अने तेनी ईश्वरी नामे पत्नी हती. तेमनुं आखुं कुटुंब धान्यना अभावे दुःखातुर बनी गयुं हतुं. आथी छेवटनो लक्ष-मूल्य पाक रांधी, तेमां विष नाखीने मरणने भेटवानो निश्चय तेओए

कर्यो. आ प्रमाणे लक्षमूल्य पाक रांधीने ईश्वरी एमां विष नाखवा जती हती एटलामां वज्रसेन मुनि त्यां आवी पहोंच्या. ईश्वरीए हर्षित थईने मुनिने ए पाक भिक्षा तरीके आप्यो अने बधी वात करी. पोताना गुरुए भाखेला भविष्य उपरथी वज्रसेने तेओने कह्युं के 'हवे तमारे चिन्ता करवानी जरूर नथी, केम के आवती काले सुभिक्ष थशे.' बीजे दिवसे अनाजथी भरेलां वहाणो सोपारक बंदरे आव्यां अने लोकसमुदाय निश्चिन्त थयो. जिनदत्त अने तेना कुटुंबीजनोए वज्रसेन पासे दीक्षा लीधी.[3]

१ जुओ **रथावर्त्त.**

२ जुओ **जिनदत्त.**

३ आम, पृ. ३९५–९६; वली वसु, पृ. ५१२; कवि, पृ. १७०–७१, इत्यादि

वरसका

एक नदी.

आ नदी उज्जयिनी अने कौशांबीनी वचमां आवेली छे. ए नदीने किनारे पर्वतकंदरामां धर्मयशमुनिए तपश्चर्या करी हती.[1]

१ वितिओ धम्मजसो विभूय नेच्छतो कोसंबीए उज्जेणीए अतरा वच्छकातीरे पव्वतकंदराए एकग्ग भत्तं पच्चक्खाति। आचू, उत्तर भाग, पृ. १९०. वळी जुओ वर, पृ ९०–९२.

वलभी

सौराष्ट्रनुं वळा अथवा वलभीपुर, जे वलभी वंशना राजाओनी राजधानी हतुं. जैन आगमनी नागार्जुनी वाचना जे 'वालभी' वाचना नामथी ओळखाय छे ते तथा जैन श्रुतनुं लिखित स्वरूपे संकलन वलभीमां थयां हतां.

जुओ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, स्कन्दिल आर्य.

## वसुदेवचरित

'वसुदेव-हिंडी 'नुं खरुं नाम, जे एना कर्ताने उद्दिष्ट हतुं.

जुओ मङ्घदासगणि वाचक

## वासुदेव

जुओ कृष्ण वासुदेव

## विजयसिंहसूरि

'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र' उपर विजयसिंहसूरिए सं. ११८३=ई. स. ११२७ मां रचेली चूर्णिनो उल्लेख रत्नशेखरसूरिए 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र 'नी वृत्तिमां कर्यो छे. एनी साथोसाथ रत्नशेखरे ए ज ग्रन्थ उपरना जिनदेवसूरिकृत भाष्यनो निर्देश कर्यो छे,[1] पण एवुं कोई भाष्य हजी सुधी जाणवामां आव्युं नथी[2]

१ श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रस्य च विक्रम ११८३ वर्षे श्रीविजयसिंहसूरि-श्रीजिनदेवसूरिकृते चूर्णिभाष्ये अपि स्तः, वृत्त्यन्ते वहव, श्रावर, पृ. २०१.

२ जुओ जिरको, पृ. ३९०.

## विदिशा

माळवामां भोपालथी आशरे २४ माइल ईशान खूणे वेटवा अथवा वेत्रवतीने किनारे आवेलुं भिलसा.

'अनुयोगद्वार सूत्र 'मां 'समीप नाम 'नां उदाहरण आपतां कह्युं छे के गिरि पासेनुं नगर ते गिरिनगर, विदिशानी पासेनुं नगर ते वैदिशनगर (विदिशा), वेणा पासेनुं नगर ते वेणातट अने तगरा पासेनुं नगर ते तगरातट.[1] आ उल्लेखमांनी 'विदिशा' ते वेस अथवा बेसली नदी छे, जे भिलसा पासे वेटवाने मळे छे.[2] भिलसानुं बेसनगर एवुं नाम ए नदी साथे संबंध धरावे छे, जेनुं मूळ 'वैदिशनगर' (प्रा. वेदिसणयर)मां छे

आर्य महागिरि विदिशामां जिनप्रतिमाने वंदन करीने गजाग्रपद तीर्थनी यात्रा माटे एलकच्छपुर गया हता, एवो उल्लेख 'आवश्यक-सूत्र'नी चूर्णिमां छे[3]

जुओ एलकच्छपुर, गजाग्रपद, वेत्रवती

१ से किं त समीवनामे ? २ गिरिसमीवे णयर गिरिणयर विदिसा समीवे णयर वेदिस णयर वेन्नाए समीवे णयर वेन्नायड तगराए समीवे णयरं तगरायड, स त समीवनामे । अनु पृ १४९

२ ज्याहि पृ ३०

३ दो वि जणा वइदिसं गता, तत्थ जिणपडिम वदिऊण अज्जमहागिरि एलकच्छ गता गयग्गपद वदका। आचू, उत्तर भाग, पृ १५६-५७

## विनयविजय उपाध्याय

हीरविजयसूरिना शिष्य कीर्तिविजयना शिष्य एमणे रामविजय पंडितना शिष्य विजयगणिनी अभ्यर्थनाथी स १६९६=ई. स. १६४० मा 'कल्पसूत्र' उपर 'सुबोधिका' नामे प्रमाणभूत टीका रची हती, अने ते विमलहर्ष वाचकना शिष्य भावविजये शोधी हती[1]

विनयविजये स १७०८=ई. स १६५२ मा जूनागढमां जैन विश्वविद्याविषयक महान ग्रन्थ 'लोकप्रकाश' रच्यो हतो न्याय, व्याकरण, काव्य, स्तोत्र आदि विविध विषयो उपर तेमणे रचनाओ करेली छे[2]

१ कसु प्रशस्ति

२ जुओ जैसाइ पृ ६४७-४९

## विराटनगर

साडीपचीश आर्यदेशो पैकी मत्स्यदेशनु पाटनगर[1]

जयपुर राज्यमां आवेलु वैराट ए ज विराट के वैराट नगर होय ए संभव छे

जुओ मत्स्य

१ सुदर्शी, पृ. १२३; बृकसे, भाग ३, पृ. ९१२-१४

## वीतिभयनगर

महावीरना समयमां सिन्धु-सौवीर देशनुं पाटनगर.[1] एनी पूर्व-दिशामां मृगवन नामे उद्यान आवेलुं हतुं.[2] वीतिभयमां उदायन राजा राज्य करतो हतो.[3] वीतिभयनुं बीजुं नाम कुंभकारप्रक्षेप हतुं.[4]

पंजाबनुं भेरा गाम ए प्राचीन वीतिभयनगर होवानुं मानवामां आवे छे.[5]

१ भसू, शतक १३, उद्दे ६; बृकसे, भाग २, पृ. ३१४; आचू, उत्तर भाग, पृ. ३६-३७; आम, पृ ३९२; कवि, पृ. १९९; वसो, पृ. ११४, इत्यादि

२ भसू, शतक १३, उ. ६

३ जुओ उदायन.

४ जुओ कुम्भकारप्रक्षेप.

५ मुनि कल्याणविजय, 'श्रमण भगवान महावीर', पृ. ३८८

## वेत्रवती

एक नदी. चारुदत्त वेत्रलताने वळगीने ए नदी ओळंगी गयानो उल्लेख छे.[1] चारुदत्तनी आ कथा 'वसुदेव-हिंडी'ना 'गन्धर्वदत्ता लंभक'मां विस्तारथी वर्णवेली छे. एमां एवुं वर्णन छे के[2]-वैताढ्य-पर्वतमांथी नीकळती इषुवेगा नदी अताग छे. एनां पाणीनो वेग एटलो बधो छे के तीरछा मार्गे पण सामे पार जई शकाय एम नथी. मात्र वेत्रलताओनो आधार लईने, उत्तर तरफथी पवन वाय त्यारे, एना उत्तर किनारेथी दक्षिण किनारे जवातुं, अने दक्षिण तरफथी पवन वाय त्यारे ए ज रीते उत्तर किनारे जई शकातुं. प्रवासे नीकळेलो चारुदत्त ए रीते वेत्रवती नदी ओळंगी गयो हतो. इषुवेगा अने वेत्रवती ए बन्ने नाम एक ज नदीनां होय एवुं अनुमान आ वर्णन उपरथी थई शके.

कवि कालिदासना 'मेघदूत' (पूर्वमेघ, २४)मां माळवाना वर्णनमां वेत्रवतीनां कळकळतां पूरनो निर्देश छे. एना तटे विदिशा आवेलुं हतुं एवुं सूचन पण त्यां छे.

गुजरातनी वात्रक नदीनो पण पुराणोमां वेत्रवती तरीके उल्लेख छे ए अहीं नोंधवुं जोईए.[3]

माळवामां वहेती वेटवा नदी ए आगमोक्त वेत्रवती होवानुं मानवामां आवे छे.[4]

जुओ विदिशा

१ वेत्रमार्गो यत्र वेत्रलतोपष्टम्भेन जलादौ गम्यते इति, तद्यथा-चारुदत्तो वेत्रलतोपष्टम्भेन वेत्रवतीं नदीमुत्तीर्य परकूलं गतः। सूत्रकृती, पृ. १९६ वळी जुओ सूकृचू, पृ. २३९.

२ 'वसुदेव-हिंडी' (भाषान्तर), पृ. १९२

३ पुराणोमां वेत्रवती.

४ ए ज; तथा ज्योडि, पृ. ३५; जैन, 'लाइफ इन एन्श्यन्ट इन्डिया,' पृ. ३५४

वेणातट

आभीरदेशमां[1] वेणानदीना किनारे आवेलुं नगर[2]. एनां प्राकृत रूपो वेणातड, वेण्णायड, वेन्नायड, एवां थाय छे. राजगृहना राजा प्रसेनजितनो पुत्र श्रेणिक ज्यारे कुमारावस्थामां हतो त्यारे वेणातटमां गयो हतो. त्यां एक वणिकनी नंदा नामे पुत्रीथी तेने अभयकुमार नामे पुत्र थयो हतो, जे मोटो थतां राजगृह आवीने पोतानी चतुराईथी श्रेणिकने प्रसन्न करीने तेनो मंत्री थयो हतो[3] एक वारनो चोर मूलदेव भाग्ययोगे वेणातट नगरनो राजा बन्यो हतो एवी कथा छे.[4]

वेणातटमां बौद्धो तेम ज जैनोनी वस्ती हती तथा आ बन्ने संप्रदायो वच्चे स्पर्धा चालती हती, एम केवळ लोककथाना प्रकारनो

एक टुचको 'नंदिसूत्र'नी वृत्तिमां आप्यो छे ते उपरथी अनुमान थाय छे : "वेणातट नगरमां कोई बौद्ध भिक्षुए श्वेतांबर क्षुल्लक–नाना साधुने पूछ्युं, 'अरे क्षुल्लक! तमारा अर्हतो सर्वज्ञ छे अने तमे एमना दीकराओ छो, माटे कहो के आ नगरमां केटला कागडा छे?'" क्षुल्लके चातुर्यथी उत्तर आप्यो—

'सट्ठि कागसहस्सा इह( यं ) विन्नायडे परिवसंति ।
जइ ऊणगा पवसिया अब्भहिया पाहुणा आया ॥

( आ वेणातट नगरमां साठ हजार कागडा वसे छे. ए करतां जो ओछा होय तो ते प्रवासे गया छे अने वधारे होय तो परोणा तरीके आव्या छे. )'

आ सांभळीने बौद्ध भिक्षु माथुं खणतो चूप थई गयो.'[5]

हरिषेणाचार्यना 'बृहत्कथाकोश'मां कह्युं छे, के विन्ध्यातटपुर वराट विषयमां विन्ध्या ( वेणा ) नदीना किनारे आवेलुं छे.

१ जुओ आभीर.

२.. से किं तं समीवनामे? २ गिरिसमीवे णयरं गिरिणयरं विदिसासमीवे णयरं वेदिसं णयरं बेन्नाए समीवे णयरं बेन्नायडं तगराए समीवे णयरं तगरायडं, से तं समीवनामे।

३ आचू, पूर्वभाग, पृ. ५४७; आम, पृ ५११.

४ जुओ मूलदेव.

५ नम, पृ. १५२. वळी आ कथा माटे जुओ आचू, पूर्व पृ. ५४७; आम, पृ ५१०.

६ वराटविषये रम्ये दिशाभागे च पश्चिमे।
वैराकरस्य सारस्य जनानन्दविधायिनः ॥
विन्ध्यानदीसमीपस्थे कान्तारापगराजितम् ।
विहरन् स मुनिः कदापि प्राप विन्ध्यातटं पुरम् ॥
'बृहत्कथाकोश,' पृ १११.

**वैतरणि**

कृष्ण वासुदेवनो एक वैद्य.

जुओ धन्वन्तरि

**शकुन्त**

अवन्तिपति प्रद्योतनो अंध मंत्री

वासवदत्ताए उदयननी साथे उज्जयिनीथी कौशांबी चाल्यां जवा माटे हाथणी सज्ज करवानी आज्ञा करी. हाथणीने ज्यारे तंग बांधवा मांड्यो त्यारे हाथणीए गर्जना करी. ए सांभळीने शकुन्त नामे अंध मंत्रीए कह्युं के 'तंग बांधती वखते आ हाथणी गर्जना करे छे, माटे सो योजन जईने ते मरण पामशे.'[1] मार्गना श्रमथी थाकेली हाथणी सो योजन जेटलो प्रवास करीने कौशांबीमां प्रवेशतां मरण पामी हती.

जुओ उदयन, प्रद्योत

१ कक्षायां बध्यमानायां यथा रसति हस्तिनी ।
योजनानां शतं गत्वा प्राणत्यागं करिष्यति ॥
आचू, पृ १६२

**शङ्खपुर**

'उत्तराध्ययन सूत्र'नी नेमिचन्द्रनी टीका प्रमाणे, अगडदत्त शंखपुरना राजानो पुत्र हतो.[1]

'विविधतीर्थकल्प' अनुसार, राजगृहनो राजा प्रतिवासुदेव जरासंध, वासुदेव कृष्ण साथे युद्ध करवा माटे पश्चिम दिशा तरफ नीकळ्यो. कृष्ण पण बधी सामग्री साथे द्वारवतीथी नीकळीने पोताना प्रदेशनी सीमा सुधी आव्या. ए स्थळे अरिष्टनेमि कुमारे शंखनाद कर्यो अने त्यां जरासंध उपर विजय प्राप्त थया पछी शंखपुर अथवा शंखेश्वर नामे नगर वसाववामां आव्युं, तथा त्यां पार्श्वनाथनी प्रतिमा स्थापित करवामां आवी.[2]

उत्तर गुजरातमां वढियारमां आवेलुं जैन तीर्थ शंखेश्वर ए आ शंखपुर होवा संभव छे.

१ जुओ अगडदत्त

२ 'विविधतीर्थकल्प' मां 'शंखपुरपार्श्वकल्प;' वळी जुओ मुनि जयन्तविजयकृत 'महातीर्थ शंखेश्वर,' पृ. १६–२५.

## शत्रुञ्जय

सौराष्ट्रनो एक पर्वत, ज्यां अर्वाचीन काळमां जैनोनुं सौथी वधु प्रसिद्ध तीर्थधाम छे.

गौतमकुमार अरिष्टनेमि पासे दीक्षा लईने शत्रुंजय उपर निर्वाण पाम्या हता.[1] बीजा केटलाक साधुओनी पण ए निर्वाणभूमि छे.[2] थावच्चापुत्रनुं निर्वाण पण शत्रुंजय उपर थयुं हतुं.

पांच पांडवो कृष्णना मरणथी संवेग पामीने, सुस्थित स्थविरनी पासे दीक्षा लईने शत्रुंजयना शिखर उपर पादपोपगमन (वृक्षनी जेम स्थिर रहीने अनशन करे ते) करीने कालधर्म पाम्या हता[3]

'विविधतीर्थकल्प' मां शत्रुंजयनां नीचे प्रमाणे एकवीस नाम आपेलां छे; सिद्धिक्षेत्र, तीर्थराज, मरुदेव, भगीरथ, विमलाद्रि, बाहुबली, सहस्रकमल, तालध्वज, कदंब, शतपत्र, नगाधिराज, अष्टोत्तरशतकूट, सहस्रपत्र, ढंक, लौहित्य, कपर्दिनिवास, सिद्धिशेखर, शत्रुंजय, मुक्तिनिलय, सिद्धिपर्वत, पुंडरीक[4]।

१ अंद १

२ अंद २ तथा ४

३ मस, गा. ४५७–४६४; आचू, उत्तर भाग, पृ. १०७. प्रमाणमां अर्वाचीन कही शकाय एवा आगमिक टीकाग्रन्थोमां शत्रुंजयना केटलाक प्रासंगिक उल्लेखो माटे जुओ कसु, पृ. ११–१४; ककि, पृ. ८; कदी, पृ. ८; कको, पृ. ८, इत्यादि.

### शान्तिचन्द्र वाचक

तपागच्छना सकलचन्द्र वाचकना शिष्य. एमणे 'जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति' उपर 'प्रमेयरत्नमंजुषा' नामे टीका रची छे. ए टीकाने अंते आपेली ५१ श्लोकनी विस्तृत प्रशस्ति[1] प्रमाणे, एनी रचना सं. १६५१= ई. स. १५९५ मां थई हती (श्लो १९). सं. १६६०= ई. स. १६०४मां राजधन्यपुर–राधनपुरमां केटलाक समकालीन जैन विद्वानोने हस्ते विजयसेनसूरिनी समक्ष एनुं संशोधन थयुं हतुं (श्लो. ३४–४०). एना लेखन अने शोधनमां कर्तांना शिष्य तेजचन्द्रे सहाय करी हती (श्लो. ४२). तेजचंद्रे गुरुभक्तिथी एना अनेक आदर्शो तैयार कर्या हता (श्लो. ४९) अने लिपिकलामां चतुर धनचन्द्रे एनो प्रथमादर्श लख्यो हतो (श्लो. ५१).

१ जप्रसं, पृ. ५४३–४६. शान्तिचन्द्र अने तेमना अन्य ग्रन्थो माटे जुओ जैसाइ, पृ. ५४८-५५.

### शान्तिसागर उपाध्याय

तपागच्छना उपाध्याय धर्मसागरना शिष्य श्रुतसागरना शिष्य. एमणे सं. १७०७=ई. स. १६५१मां पाटणमां 'कल्पसूत्र' उपर 'कौमुदी' नामे वृत्ति रची छे.[1]

१ ककौ, प्रशस्ति

### शान्तिसूरि

शान्तिसूरि थारापद्रीय गच्छना आचार्य हता. एमणे 'उत्तराध्ययन सूत्र' उपर 'पाइअ टीका' नामे प्रसिद्ध प्रमाणभूत टीकानी रचना करी हती.[1]

'प्रभावकचरित 'ना १६ मा 'वादिवेताल शान्तिसूरिचरित 'मां आ आचार्यनुं चरित विस्तारथी आपेलुं छे. तेओ पाटण पासेना उन्नतायु–ऊण गामना वतनी हता (श्लो. ९–१८). एमना गुरुनुं नाम विजयसिंह हतुं (श्लो ७). भोज राजाना आश्रित कवि

धनपालकृत 'तिलकमंजरी' कथानुं संशोधन तेमणे कर्युं हतुं तथा भोजे तेमने 'वादिवेताल'नुं बिरुद आप्युं हतुं (श्लो. २४-५९). शान्तिसूरिनुं अवसान सं. १०९६=ई. स. १०४०मां थयुं हतुं (श्लो. १३०).

आगमसाहित्यमां केटलेक स्थळे शान्तिसूरिनो 'वादिवेताल' तरीके उल्लेख छे.[2]

शान्तिसूरि नामना अनेक आचार्यो थई गया छे. एमने माटे जुओ 'न्यायावतारवार्त्तिक वृत्ति,' प्रस्तावना, पृ. १४६-१४९.

१ उद्या, प्रशस्ति.

२ कर्म, पृ. ११९-२०; कदो, पृ ११५, इत्यादि

## शालवाहन

जुओ सालवाहन

## शीलाचार्य

'आचारांग सूत्र' अने 'सूत्रकृतांग सूत्र'ना टीकाकार. 'आचारांगसूत्र'नी टीका गंभुता (गांभू) गाममां रचाई हती.[1] आ बन्ने टीकाओनी रचनामां शीलाचार्यने वाहरिगणिए सहाय करी हती.[2]

'आचारांग सूत्र'नी टीकानी जुदी जुदी प्रतोनी पुष्पिकाओमां तेनो रचनासंवत जुदा जुदो आप्यो छे. कोईमां शक सं. ७८८ कोईमां शक सं. ७९८, कोईमां गुप्त सं. ७७२, तो कोईमां शक सं ७७२ छे. आ चारमांनी कई साल साची ए नक्की करवानो कोई चोक्कस पुरावो नथी. उद्योतनसूरिनो 'कुवलयमाला'नी प्रशस्तिमां जेमनो उल्लेख छे ते तत्त्वाचार्य ए ज शीलांक अथवा शीलाचार्य एवो एक मत छे, अने आ शीलांक अणहिलवाडना स्थापक वनराजना गुरु हता एवी पण एक परंपरा छे. आ सर्व उपरथी, शीलाचार्य हरिभद्-

सूरिना समकालीन होई ईसवी सनना आठमा सैकामां थया हशे एवो अजमायशी निर्णय आचार्य श्रीजिनविजयजीए कर्यो छे.[३]

'प्रभावकचरित 'ना कर्ता प्रभाचन्द्रसूरिए शीलांक अने कोट्याचार्यने अभिन्न गण्या छे.[४] 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी वृत्तिना कर्ता कोट्याचार्य ज 'प्रभावकचरित'ने उद्दिष्ट हशे एवुं अनुमान सहेजे थई शके छे.

शीलाचार्यनी पूर्वे 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपर टीका अथवा टीकाओ होवी जोईए, एम एमना ज विधान उपरथी जणाय छे.[५] वळी एक स्थळे तो तेओ लखे छे के–जुदा जुदा सूत्रादर्शोमां नानाविध सूत्रो देखाय छे, अने टीकासंवादी एक पण आदर्श मळी शक्यो नथी, आथी अमुक एक ज आदर्शने अनुसरीने विवरण कर्युं छे, ए वस्तु वचारीने कोई स्थळे सूत्रथी विसंवाद जणाय तो चित्तव्यामोह न करवो.[६]

१ जुओ गम्भूता

२.. निर्वृतिकुलीनश्रीशीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना वाहरिसाधुसहायेन कृता टीका परिसमाप्तेति । आचा, पृ. २८८

समाप्ता चेयं सूत्रकृतद्वितीयाङ्गस्य टीका । कृता चेयं शीलाचार्येण वाहरिगणिसहायेन । यदवाप्तमत्र पुण्यं टीकाकरणे मया समाधिभृता, तेनापेततमस्को भव्यः कल्याणभाग् भवतु ॥ सूकृता, पृ. ४२७

३ 'जीतकल्पसूत्र,' प्रस्तावना, पृ. ११–१५; वळी जुओ 'वस्तुपालनु साहित्यमंडळ अने संस्कृत साहित्यमा तेनो फाळो,' पेरा १९.

४ जुओ अभयदेवसूरि, कोट्याचार्य.

५ व्याख्यातमङ्गमिह यद्यपि सूरिमुख्यैः–
भक्त्या तथापि विवरीतुमहं यतिष्ये ।
किं पक्षिराजगतमित्यवगम्य सम्यक्
तेनैव वाञ्छति पथा शलभो न गन्तुम् ॥ सूकृता, पृ. १

६ इह च प्रायः सूत्रादर्शेषु नानाविधानि सूत्राणि दृश्यन्ते, न च

श्रीमालनुं बीजुं नाम भिल्लमाल के भिन्नमाल छे. भिल्लमालमां द्रम्म नामनुं रूपानाणुं चालतुं हतुं.[1] वळी 'निशीथचूर्णि' अनुसार, भिल्लमालमां चालतो रुपानो एक सिक्को 'चम्मलात'–(सं 'चर्मलात') कहेवातो. महेश्वर, उज्जयिनी, श्रीमाल वगेरे नगरोमां लोको उत्सव-प्रसंगोए एकत्र थईने सुरापान करता हता.

भिल्लमालमां चालता एक सिक्काने 'चम्मलात'–'चर्मलात' कह्यो छे ए वस्तु जरा विचारवा जेवी छे. सिक्कानुं ए नाम ज विलक्षण अने अर्थरहित लागे छे. 'निशीथचूर्णि'नी टाईप करेली आवृत्तिना संपादनमां अनेक अशुद्धिओ छे, अने अहीं पण मूळ प्रतना 'व' ने बदले भूलथी 'च' वंचायो होय अथवा मूळ प्रतोना लहियाओए 'व' नो 'च' करी नाख्यो होय एम बनवुं असंभवित नथी. आ रीते 'चम्मलात'ने स्थाने 'वम्मलात' (=सं.'वर्मलात') वांचवामां आवे तो ए नामनुं श्रीमालना इतिहास साथे अनुसंधान थई शके तेम छे. श्रीमालना राजा वर्मलातनो उल्लेख 'प्रभावकचरित'मां छे. गुजरातना सुप्रसिद्ध संस्कृत कवि माघे पोताना 'शिशुपालवध'नी प्रशस्तिमां जे वर्मलातनो निर्देश कर्यो छे ते ज आ होय एम बने. माघनो दादो सुप्रभदेव आ वर्मलातनो मंत्री हतो. वर्मलात राजाना नामथी बहार पडेला सिक्का 'वर्मलात' नामथी ओळखाता होय ए तद्दन शक्य छे—जेम मध्यकालना केटलाक राजाओना सिक्काओनो निर्देश 'भीमप्रिय,' 'वीसल प्रिय' आदि वडे करेलो छे तेम. कदाच 'वर्मलात' ए वर्मलात-प्रिय'नुं संक्षिप्त रूप पण होय.

[1] श्रीमालना पौराणिक वृत्तान्त माटे जुओ 'पुगु'मां श्रीमाल. एना इतिहास माटे जुओ 'बोम्बे गेझेटियर,' पु. १, भाग १मां 'भिन्नमाल' विशेनुं परिशिष्ट, तथा 'काव्यानुशासन,' प्रस्तावना, पृ. ८३-१०२.

१ जुओ गुर्जर.

२ रूपमय या नाणकं भवति, यथा–भिल्लमाले द्रम्मः। बृकभे, भाग २, पृ. ५७४. श्रीमालना द्रम्मने 'पारीथय द्रम्म' कहेता. 'भीमालनी टंकशाळमां पाडेला, त्रण वार परखेला, बजारना व्यवहारमां आवता, चालु, भेळसेळ विनाना, रोकडा' पारीथय द्रम्मनुं चलण गुजरातमां ओछामां ओछुं, विक्रमना तेरमा शतकना अंत सुधी हतुं एम 'लेखपद्धति' (पृ. १०, ३३, ३५, ३७, ३९ ४२, ५५ इत्यादि) उपरथी जणाय छे.

३ चवट्टगा ते दिज्जंति, ताम्रमय वा ज णाणग ववहरति तं दिज्जति। जहा दक्खिणावहे कागणी, रुप्पमय जहा भिल्लमाले चम्मलातो, निचू, भाग ३, पृ. ६१६–१७

४ आसूचू, पृ. ३३३

५ हेमचन्द्रकृत 'काव्यानुशासन,' प्रस्तावना (प्रो. र. छो. परीख), . ९५

## श्रीस्थलक

श्रीस्थलक नगरमां भानु राजा हतो. एना सुरूप नामे पुत्रने मोदक भावता होवाथी ते 'मोदकप्रिय' नामे प्रसिद्ध थयो हतो. सुरूपने एक वार वैराग्य पेदा थतां सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य सांपड्यां हतां अने छेवटे ते केवलज्ञान पाम्यो हतो, एवी कथा छे.[१]

गुजरातनुं सिद्धपुर प्राचीन काळथी 'श्रीस्थल' तरीके जाणीतुं छे. तो आ श्रीस्थलक हशे?

१ पिनिम, पृ. ३३.

## श्रीहर्ष

ईसवी सनना बारमा सैकाना उत्तरार्धमां थई गयेलो 'नैषधीय-चरित'नो कर्ता. 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'नी रत्नशेखरसूरिनी वृत्तिमां 'नैषध'[१] अने श्रीहर्षनो[२] नामोल्लेख करीने ए काव्यना श्लोको टांकेला छे. मंत्री वस्तुपालना समयमां 'नैषध'नी नकल गुजरातमां आवी त्यार पछी ए काव्यनुं अध्ययन–अध्यापन अहीं चालतुं रह्युं हतुं एनो आ एक विशेष पुरावो छे.[३]

१ यदुक्तं नैषधेऽपि–पूर्वपुण्यविभवव्ययलब्धा० आदि पृ. १०२

२ श्रीहर्षमहाकविनापि यज्ञे हिंसा दोषहेतुर्दर्शिता, यन्नैषधे द्वाविंशे सर्गे पट्पञ्चाशत्तम वृत्त–इत्येव जैनजयश्रीमल्लसिद्धिः० । ए, ज, पृ ४१

३ आ मथथमां 'भारतीय विद्या,' सिंघी स्मृतिग्रन्थमां मारो लेख 'गुजरातमां नैषधीयचरितनो प्रचार तथा तथा ते उपर लखायेली टीकाओ'. आ लेख 'वस्तुपालनुं विद्यामंडळ अने बीजा लेखो' ए पुस्तकमां पण संगृहीत थयो छे.

## सङ्घदासगणि क्षमाश्रमण

'व्यवहारभाष्य,' 'बृहत्कल्पभाष्य,' 'पंचकल्पभाष्य' आदि भाष्यग्रन्थोना कर्ता. तेओ 'वसुदेव–हिंडी'ना कर्ता संघदासगणि वाचकथी भिन्न छे तथा तेमनाथी कंईक अर्वाचीन काळमां थयेला छे एवुं मुनिश्री पुण्यविजयजीनुं मंतव्य छे.[1]

जुओ सङ्घदासगणि वाचक

१ जुओ 'बृहत्कल्प सूत्र,' ग्रन्थ ६, प्रस्तावना, पृ. २०–२२.

## सङ्घदासगणि वाचक

पैशाची प्राकृतमां रचायेला, गुणाढ्य कविकृत लुप्त कथाग्रन्थ 'बृहत्कथा'ना प्राकृत गद्यमां थयेला जैन रूपान्तर 'वसुदेव–हिंडी'ना कर्ता. एनी रचना ईसवी सननी पांचमी शताब्दीनी आसपास थयेली छे.[1]

'वसुदेव–हिंडी'नुं जे नाम एना कर्ताने इष्ट हतुं ते 'वसुदेव–चरित' छे; पण वसुदेवना 'हिंडण'–परिभ्रमणनो वृत्तान्त एमां होवाथी ए ग्रन्थ समय जतां 'वसुदेव–हिंडी' तरीके वधु प्रख्यात थयो.[2] आगमसाहित्यमां आ ग्रन्थ विशेना सौथी प्राचीन उल्लेखो 'आवश्यक सूत्र'नी चूर्णिमां छे, त्यां एनुं नाम 'वसुदेव–हिंडी' आप्युं छे.[3] जो के 'वसुदेव–चरित' नाम पण क्वचित् मळे छे खरुं.[4] 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'नी रत्नशेखरसूरिनी वृत्तिमां 'वसुदेव–

उल्लेख कर्यो छे,[4] ते उपरथी कथानुयोगना ग्रन्थ तरीके एनुं केटलुं महत्त्व गणातुं एनी कल्पना थई शके छे. जैन साहित्यना सर्व उपलब्ध आगमेतर कथाग्रन्थोमां 'वसुदेव-हिंडी' प्राचीनतम छे.[6]

जुओ सङ्घदासगणि क्षमाश्रमण

१ 'वसुदेव-हिंडी' ( अनुवाद ), उपोद्घात, पृ. १-२

२ एज, पृ. ३-५

३ आचू., पूर्वभाग, पृ. १६४, ३२४, ४६०. आगमसाहित्यमां 'वसुदेव-हिंडी'ना अन्य आधारो तथा उल्लेखो माटे जुओ आम, पृ. २१८; व्यम ( उद्दे. ५ उपरनी वृत्ति ), पृ ६; भाप्र, पृ. १६५; वद्र, पृ. १६५; कक्रि, पृ ३५.

४ नंम, पृ. ११७; बृक्षे, भाग ३, पृ. ७२२

५ न च तेषामिष्टसिद्धिभवन सन्दिग्धमिति वाच्य, ज्ञाताधर्मकथाङ्ग-वसुदेवहिण्डिप्रभृत्यागमे साक्षादुक्तत्वात्। भाप्र, पृ. १६५.

६ संघदासगणिनो समय, 'वसुदेव-हिंडी' अने 'बृहत्कथा'नो संबंध, 'वसुदेव-हिंडी'नी भाषा, एमांथी प्राप्त थती सांस्कृतिक-सामाजिक माहिती अने बीजा आनुषंगिक मुद्दाओनी चर्चा माटे जुओ 'वसुदेव-हिंडी' ( अनुवाद ), उपोद्घात.

सपादलक्ष

राजपूतानामां आवेल शाकंभरी-सांभरनी आसपासनो प्रदेश. सांभर ए प्रदेशनुं मुख्य नगर हतुं.[1]

सपादलक्ष आदिमां 'वरट्टी'–वंटी नामनुं धान्य प्रसिद्ध छे.[2]

जुओ साम्भरि

१ ज्योडि, पृ. १५४ तथा १७८

२ 'वरग'त्ति वट्टी धान्यविशेष सपादलक्षादिषु प्रसिद्धः। जंप्रशा, पृ. १२४

समयसुन्दर

खरतरगच्छना जिनचन्द्रसूरिना शिष्य सकलचन्द्रना शिष्य.

तेमणे स्तंभतीर्थमां सं. १६९१=१६३५ मां 'दशवैकालिक सूत्र' उपर 'दीपिका' नामे टीका रची हती.[1] आ उपरांत 'कल्पसूत्र' उपर पण 'कल्पलता' नामे एमनी टीका जाणीती छे. समयसुन्दर संस्कृतना एक उत्तम विद्वान हता, अने तेमणे अनेक ग्रन्थो रचेला छे. जैन गुर्जर साहित्यना पण तेओ एक सुप्रसिद्ध कवि छे. तेमनी साहित्य-प्रवृत्ति सं. १६४२=ई. स. १५८५ ('भावशतक' रचायुं)थी मांडी सं. १६९८=ई स. १६४२ ('जीवविचार,' 'नवतत्त्व' अने 'दंडक' उपरनी टीकाओ) सुधीना अर्धी शताब्दी करतां ये लांबा समयपट उपर विस्तरेलो छे.[2]

१ दवैस, पृ. ११७ (प्रशस्ति)

२ समयसुन्दरना जीवन अने तेमना ग्रन्थो माटे जुओ जैसाइ, पृ. ५७६ तथा ५८८–८९. तेमना गुजराती काव्यो माटे जुओ पांचमी गुजराती साहित्य परिषदमां स्व. श्री. मोहनलाल द. देसाईनो निबंध 'कविवर समयसुन्दर'.

## समिताचार्य

समिताचार्य अथवा आर्य समित वज्रस्वामीना मामा हता. जैन साधुओनी ब्रह्मद्वीपक शाखा तेमना कर्तृत्वथी केवी रीते प्रवर्तमान थई ए विशे नीचेनो वृत्तान्त मळे छेः आभीरदेशमां कृष्णा अने वेणा नदीओना संगमस्थाने ब्रह्मद्वीपमां पांचसो तापसो रहेता हता. एमांनो एक तापस पोताना पग उपर अमुक प्रकारनो लेप करीने पाणी उपर फरतो हतो. आ चमत्कारथी लोको आश्चर्य पामता हता अने श्रावकोनी हेलना थती हती. वज्रस्वामीना मामा आर्य समित एक वार विहार करता त्यां आव्या. श्रावकोए तेमने बधी वात करी. 'आ तापस कोई प्रयोगथी श्रावकोने छेतरतो हशे' एवुं अनुमान करीने आर्य समिते तेमने कह्युं के 'तापसने तमारे घेर आमंत्रणथी बोलावीने चरणप्रक्षालन-

आमंत्रण आपीने तेना पग धोई नाख्या, एटले पेलो लेप पण धोवाई गयो. तापस नदीकिनारे आवी पाणीमां ऊतर्यो, एटले डूबी गयो. पछी आचार्य त्यांथी नीकळ्या. तेमणे नदीकिनारे आवी वासक्षेप नाखी कह्युं, 'आव, पुत्रि ! मारे सामे किनारे जवुं छे.' एटले नदीना बन्ने तट मळी गया, अने आचार्य सामे किनारे चाल्या गया. आथी बधा तापसोए चमत्कृत थईने आर्य समित पासे जैन दीक्षा लीधी. तेओ सर्वे ब्रह्मद्वीपमां रहेता हता, तेथी 'ब्रह्मदीपक' तरीके प्रसिद्ध थया.[1]

वसन्तपुरना निलय श्रेष्ठीना पुत्र क्षेमंकरे समितिसूरि पासे दीक्षा लीधी हती.[2] हरन्त नामे संनिवेशमां समितिसूरि आव्या त्यारे त्यांनो जिनदत्त नामे श्रावक साधुओ प्रत्येनी भक्तिथी खास तेमने निमित्ते आहार तैयार करावतो हतो, तेथी आचार्ये पोताना साधुओने ए वहोरवानो निषेध कर्यो हतो, एवो वृत्तान्त पण मळे छे.[3]

जुओ अचलपुर, ब्रह्मद्वीप, वज्र आर्य

१ आनू, पूर्वभाग, पृ ५१४–१५; निभा, गा. ४४४८–५०; निचू, भाग ४, पृ ८७४–७५. वळी जुओ जीकमा, गा १४६३; कस, पृ. १३२; कसु, पृ ५१३–१४; कंकि, पृ. १७१; कदी, पृ. १४९–५०, इत्यादि.

२ पिनिम, पृ १००.

३ पिनिम, पृ ३१.

## समुद्र आर्य

आर्य समुद्र ए आर्य मंगूना गुरु होय एम जणाय छे.[1] एमनुं शरीर घणुं दुर्बळ हतुं. आथी एमने माटे आहारनी वानीओ जुदां जुदां मात्रक आदिमां जुदी जुदी लेवामां आवती हती, ज्यारे आर्य मंगू तो बधी चीजो एक ज पात्रमां लेता हता; जुदां जुदां पात्रमां लावेली चीजो तेओ खाता नहोता. एक वार ए बन्ने आचार्यो विहार करता सोपारकमां गया. त्यांना बे श्रावकोमांनो एक गाडां चलावतो हतो,

केटलेक अंशो मळती आवे छे. केटलीक उदाहरणरूप कथाओनो संक्षेप अहीं आप्यो छे :

द्वारवतीमां बलदेवना पुत्र निसढनो पुत्र सागरचन्द्र खूब रूपाळो हतो अने सांब वगेरे सर्वने ते प्रिय हतो. द्वारवतीमां वसता बीजा एक राजाने कमलमेला नामनी एवी ज रूपवान पुत्री हती. उग्रसेनना भाणेज धनदेव साथे एनुं सगपण करेलुं हतुं. एक वार नारद मुनि सागरचन्द्र पासे आव्या अने तेनी आगळ कमलमेलानी प्रशंसा करी. आथी सागरचन्द्र कमलमेलामां आसक्त थयो, अने ते कन्यानी आकृति चीतरतो तथा एनुं नाम रटतो रहेवा लाग्यो. पछी नारद कमलमेला पासे गया, अने एनी आगळ तेमणे सागरचन्द्रनी प्रशंसा करी अने धनदेवनी निन्दा करी. आथी कमलमेला पण सागरचन्द्रमां आसक्त थई. नारदे आ वात जईने सागरचन्द्रने करी. पछी सागरचन्द्रे सांबने कमलमेला साथे पोताना मेळाप करी आपवानो विनंति करी. बीजा कुमारोए सांबने मद्य पिवरावीने तेनी पासे आ विनंती स्वीकारावी, पण मद्यनुं घेन ऊतरी गया पछी सांबने आ कामनी मुश्केलीनुं भान थयुं. विचार करीने तेणे प्रद्युम्न पासे प्रज्ञप्तिविद्यानी मागणी करी. प्रज्ञप्तिनो सहायथी तेणे कमलमेलानुं प्रतिरूप विकुर्व्युं तथा कमलमेलानी जगाए गोठवी दीधुं अने जे दिवसे कमलमेलानुं धनदेव साथे लग्न थवानुं हतुं ते दिवसे एनुं हरण करीने रैवतक उद्यानमां एने सागरचंद्र साथे परणावी दीधी पछी धनदेव साथेना लग्न समये विद्याप्रतिरूप तो अट्टहास करीने आकाशमां ऊडी गयुं. कमलमेला विशे नारदने पूछवामां आवतां तेमणे कह्युं के 'कमलमेलाने में रैवतक उद्यानमा जोई हती; कोई विद्याधर एने हरी गयो छे.' आ सांभळी कृष्ण सैन्य सहित नगरनी बहार नीकळ्या. सांब पण विद्याधरनुं रूप धारण करीने लडवा माटे सामे आव्यो. सर्व राजाओनो सांबे पराजय कर्यो, पण ज्यारे एणे जोयुं के पिता क्रोधायमान थया छे त्यारे ए कृष्णने पगे पड्यो, अने कह्युं, 'आ कमलमेला आपघात

करवा माटे गोखमांथी पडतुं मूकती हती, तेने बचावीने अने अहीं लाव्या छीए.'[1] पछी कृष्णे उग्रसेननुं सान्त्वन कर्युं अने बधा सुखपूर्वक रहेवा लाग्या.

एक वार भगवान अरिष्टनेमि द्वारवतीमां समोसर्या. एमनो उपदेश सांभळीने सागरचन्द्रे एमनी पासे दीक्षा लीधी. ए पछी एक वार सागरचन्द्र शून्यगृहमां एकरात्रिकी प्रतिमामां रहेला हता त्यारे धनदेवे एमना बीसे नखमां त्रांबानी सोयो ठोकी दीधी. आथी सागरचन्द्र मरण पाम्या. बीजे दिवसे तपास करतां त्रांबाना कारीगर पासेथी माळूम पड्युं के आ सोयो धनदेवे घडावी हती. क्रोधायमान थयेला सांब आदि कुमारोए धनदेव पोताने सोंपी देवामां आवे एवी मागणी करी. परिणामे यादवोना बे पक्षो वच्चे युद्ध थयुं, परन्तु देव थयेला सागरचन्द्रे बन्नेने शान्त कर्या. पछी कमलमेलाए पण भगवान अरिष्टनेमि पासे दीक्षा लीधी.

एक वार जांबवतीए कृष्णने कह्युं के 'मारा पुत्रनुं कोई तोफान हजी जोवामां आव्युं नथी,' त्यारे कृष्णे कह्युं के 'कोई वार बतावीश.' पछी कृष्ण पोते आभीर थया अने जांबवतीए आभीरीनुं रूप लीधुं, अने तेओ द्वारवतीमां दहीं वेचवा फरवा लाग्यां. सांबे जांबवतीने जोईने दहीं लेवा बोलावी; अने पछी तेने एकलीने पराणे एक देवळमां खेंची जवा लाग्यो. पाछळथी आभीरना रूपमां कृष्ण आव्या, अने बन्ने वच्चे युद्ध थयुं. आभीर कृष्ण वासुदेव थया अने आभीरी जांबवतीरूपे प्रकट थई, एटले मावापथी शरमायेलो सांब अवगुंठन करीने नासी गयो. बीजे दिवसे यादवोनी सभामां एने पराणे बोलाववामां आव्यो त्यारे ते लाकडानो एक खीलो घडतो घडतो आव्यो. कृष्णे एनुं कारण पूछतां ते बोल्यो, 'जे भाई कालनी वात कहेशे एना मुखमां आ ठोकवानो छे.'

1 आम, पृ. १३६-३७; आवू, पूर्व भाग, पृ. ११२-११४.

'कदाच चंडप्रद्योत अमारा धनुं रक्षण कर्युं होय तो अमे तपास करीए' एटली अमात्यने खातरामां आव्यो, अने राजा प्रसन्न थयो.[6]

सातवाहननी अग्रमहिषीनुं नाम पृथ्वी हतुं. एक वार राजा क्याक बहार गयो हतो त्यारे तेनो वेश धारण करीने, बधी राणीओथी वींटळाईने ते राजाना आसन उपर बेठी. केटलीक वार पछी राजा त्या आव्या, तो पण ते ऊठी नहि. पृथ्वीनुं आ वर्तन राजाने गम्युं नहि त्यारे पृथ्वी बोली के 'राजा ज्यारे दरबार भरीने बेठो होय त्यारे गुरुजनो सिवाय बीजो गमे तेवो मोटो माणस आवे तो पण ते ऊभो थतो नथी. हुं तमारी लीला करती हती; तेथी ऊभी न थई. जो एम न होत तो जरूर ऊभी थईने तमारुं अभिवादन करत.' एम कहीने तेणे राजाने प्रसन्न कर्यो.[7]

१ जुओ प्रतिष्ठान

२ जुओ नभोवाहन. नभोवाहन ते ईसवी सनना बीजा शतकना पूर्वार्धमां थयेलो क्षहरातवंशीय शक-क्षत्रप नहपान, तथा सालवाहन अथवा सातवाहन ते एनो समकालीन सातवाहन वंशनो गौतमीपुत्र शातकर्णि होई शके. आ संबंधमां पण जुओ नभोवाहन

३ बृकभा, भाग ६, पृ १६४७

४ जुओ कालकाचार्य-२

५ आ 'दीप्तचित्त' शब्द मूळनो छे त्यां एनो अर्थ 'हरखघेलो, हर्षोन्मत्त' (Excited) एवो छे. लागणी अर्थच्छायाओ व्यक्त करवा माटे आपणने अनेक शब्दोनी जरूर छे त्यारे आ जूनो शब्द प्रचलित करवा जेवो छे. आवो एक बीजो शब्द 'क्षिप्तचित्त' छे. राग, भय अपमानादिथी जेनी संज्ञा नष्ट थई गई होय ए 'क्षिप्तचित्त' कहेवाय छे (जुओ 'अभिधानराजेन्द्र' ग्रन्थ ३ मां 'खित्तचित्त')

६ बृकभा गा ६२४४-४९; बृकक्षे भाग ६ पृ १६४७-४९

७ व्यभा (उद्दे ६, गा १९९-२०१) व्यम (उद्दे ६), पृ ३६-३७

## सिद्धराज जयसिंह

सं. ११४९ थी ११९९=ई. स. १०९३ थी ११४३ सुधी अणहिलवाडनी गादी भोगवनार गुजरातनो चौलुक्यवंशीय राजा.

अभिलषित धन होय छतां एनी रक्षा, प्रतिष्ठाप्राप्ति अने अभीष्ट स्त्रीनी कामना करतां मनुष्य दुःखी थाय, अने तेनी प्राप्ति थाय छतां मनुष्य पुत्रादिनी आशाथी दुःखी थाय–ए संबंधमां राजा सिद्धराज जयसिंहनुं उदाहरण 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'नी रत्नशेखरनी वृत्ति (ई. स. १४४०) मां आपेलुं छे.[1]

सिद्धराज विशेनी आ प्रकारनी किंवदंती लोकप्रसिद्ध हशे, ते उपरथी आ उदाहरण लेवायुं लागे छे.

१ एवमभिलषितधनत्वेऽपि तद्रक्षास्वप्रतिष्ठाप्राप्त्यभीष्ट–स्त्रीसंयोगकामितकामभोगाद्याशया तत्प्राप्तावपि सिद्धराज–जयसिंहनृपादिवत् पुत्राद्यपत्याशया .....सर्वदापि दुःखिन एव,...श्राप्र, पृ. १०१

## सिद्धसाधु

तेओ हरिभद्रसूरिना शिष्य हता. बुद्धधर्मनो मर्म जाणवा माटे तेओ बौद्धो पासे गया हता; त्यां बौद्ध मतथी तेओ भावित थया, पण गुरुने वचन आप्युं हतुं, एटले तेमनी विदाय लेवा माटे आव्या. गुरुए तेमने प्रतिबोध कर्यो, पण बौद्धोने पण वचन आप्युं हतुं एटले पाछा तेमनी विदाय लेवा माटे गया. आम एकवीस वार थयुं. छेवटे हरिभद्रसूरिए तेमना प्रतिबोध माटे 'ललितविस्तरा' वृत्ति रची, त्यार-पछी तेओ गुरु पासे स्थिर थईने रह्या.

'प्रभावकचरित' अनुसार आ सिद्ध साधु ते 'उपमितिभवप्रपंच-कथा'ना कर्ता सिद्धर्षि छे. पण ऐतिहासिक प्रमाणो आपणने निश्चित-पणे एम मानवा प्रेरे छे के सिद्धर्षि ए हरिभद्रसूरिना प्रत्यक्ष शिष्य नहोता, केम के सिद्धर्षिना पोताना ज कथन मुजब, तेमनी उपर्युक्त कथा

सं. ९६२=ई स. ९०६मां रचाई छे, ज्यारे हरिभद्रसूरि ए विक्रमना आठमा सैकाना उत्तरार्धमां अने नवमा सैकाना पूर्वार्धमां थई गया.[२] सिद्धर्षिए पोताना 'धर्मबोधकर गुरु' तरीके हरिभद्रनो उल्लेख कर्यो छे अने तेमणे 'ललितविस्तरा' वृत्ति अनागतनो विचार करीने पोताने माटे ज निर्मी होवानुं बहुमानपूर्वक नोंध्युं छे. 'ललितविस्तरा' वृत्ति जाणे के अनागत–भविष्यनो विचार करीने पोताने माटे हरिभद्रे रची ए सिद्धर्षिना शब्दोनो वास्तविक अर्थ तो ए थई शके के बन्ने प्रत्यक्ष समकालीनो नथी. एमां तो एक पूर्वकालीन विद्वाने पोतानी आध्यात्मिक दृष्टिने बराबर रुचे एवी कृति लखी ए माटेना सिद्धर्षिना प्रशंसाना उद्‌गारो छे. सिद्धर्षिने बौद्धमतनुं आकर्षण हशे, पण 'ललितविस्तरा'नुं अध्ययन करीने तेओ जैन मतमां स्थिर थया एवो अर्थ पण उपर टांकेली अनुश्रुतिनो करी शकाय

१ आप्रर, पृ ३१

२ प्रच, 'सिद्धर्षिचरित,' श्लो ९९–१४७

३ पहेली ओरियेन्टल कॉन्फरन्समां आचार्य जिनविजयजीनो निबंध 'हरिभद्राचार्यस्य समयनिर्णय'

## सिद्धसेनगणि

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत 'जीतकल्पसूत्र' उपरनी चूर्णिना कर्ता[१] आ सिद्धसेनगणि जिनभद्रगणिनी पछी अर्थात् ई स. ६०९थी अर्वाचीन काळमां थया एटलुं तो नक्की छे, पण तेमना समय विशे तथा तेओ कोण हता ए विशे निश्चयपूर्वक कही शकाय एम नथी.[२]

१ जीतकल्पचूर्णि समाप्ता। सिद्धसेनकृतिरेषा। जीकसू, पृ ३०

२ जीकसू, प्रस्तावना पृ १७

## सिद्धसेन दिवाकर

आदि जैन तार्किक, कवि अने स्तुतिकार, जेमने परंपराथी राजा

विक्रमादित्यना समकालीन गणवामां आवे छे, तथा विक्रमने जेमणे जैनधर्मी कर्यो होवानुं मनाय छे.

एमने विशेना केटलाक प्रकीर्ण उल्लेखो आगमसाहित्यमां छे एमां सौथी महत्त्वनो उल्लेख केवलीने केवलज्ञान अने केवलदर्शन युगपत् थतुं होवा विशेनो तेमनो मत छे. आगमिक मत एवो छे के केवलीने केवलज्ञान अने केवलदर्शन युगपत्–एक साथे थतुं नथी, पण एक समये केवलज्ञान अने बीजे समये केवलदर्शन एम वारंवार थयां करे छे. सिद्धसेन आ मतने तर्कथी असिद्ध गणे छे जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण जेवा पछीना आचार्योए सिद्धसेनना आ मतनुं खंडन कर्युं छे. आगमसाहित्यमां सिद्धसेन अने जिनभद्रनां आ मतांतरोनी वारंवार नोंध लेवामां आवी छे.[1]

सिद्धसेनकृत 'द्वात्रिंशिकाओ' मांथी क्वचित् अवतरण आपवामां आवेलुं छे.[2] 'निशीथसूत्र' उपर सिद्धसेने एक टीका रची हती, एम 'निशीथचूर्णि' मांना उल्लेखो उपरथी जणाय छे.[3] पण आजे ए टीका विद्यमान नथी. 'योनिप्राभृत' शास्त्रथी सिद्धसेनाचार्यें घोडा बनाव्या होवानो उल्लेख पण छे.[4] एमना सुप्रसिद्ध न्यायग्रन्थ 'सन्मतितर्क-' नो उल्लेख प्राचीन चूर्णिओमां 'दर्शनप्रभावक शास्त्र' तरीके करेलो छे.[5]

'न्यायावतार सूत्र' अने 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र.' ए सिद्धसेननी अन्य कृतिओ छे.

सिद्धसेनना समय विशे विद्वानोमां जबरो मतभेद छे अने ईसवी सननी पहेली शताब्दीथी मांडी सातमी शताब्दी सुधी जुदा जुदा विद्वानोए एमनो समय गण्यो छे.[6] 'सन्मतितर्क'नी प्रस्तावना (पृ. ३५–४३)मां तेमनो समय विक्रमनो पांचमो सैको गणेलो छे. मिस शार्लोट क्रौझेए सिद्धसेनने समुद्रगुप्तना समकालीन गण्या छे[7]

सिद्धसेन विशेना परंपरागत वृत्तान्त माटे जुओ ' प्रभावकचरित-' मां ' वृद्धवादिचरित ' तथा ' प्रबन्धकोश 'मां ' वृद्धवादि–सिद्धसेन-सूरिप्रबन्ध, ' तथा एमना जीवन विशे ऐतिहासिक चर्चा माटे जुओ ' सन्मतिप्रकरण, ' प्रस्तावना, पृ. ३५-८२. सिद्धसेननी विशिष्टताओना संक्षिप्त, पण समर्थ निरूपण माटे जुओ 'भारतीय विद्या, ' पु. ३, सिंघी स्मृतिग्रन्थमां पं. सुखलालजीनो लेख ' प्रतिभामूर्ति सिद्धसेन दिवाकर.'

जुओ गन्धहस्ती

१ भसूत्र ( शतक १, उ. ३ ), नहा, पृ ५२; नम, पृ ११४, ११५, ११८, १७५; कर्स, पृ ११५; कर्कि, पृ. १२७; इत्यादि.

२ बृकसे, भाग २ पृ. ३५५

३ एतस्य चिरातनगाहापायस्य सिद्धसेनाचार्यः स्पष्टेनाभिधानेनार्थम-भिधत्ते । निचू , भाग १, पृ ७८

अस्यैवार्थस्य स्पष्टतर व्याख्यान सिद्धसेनाचार्य. करोति–भुजङ्ग पञ्च-कखात ( भा. गा. ३०२ ), एज, पृ. ९६

भा. गा ५०४ (एक्केक त दुविह० ) सिद्धसेनकृत छे, केम के एनी पूर्वे लख्युं छे: इदमेवार्थं सिद्धसेनाचार्यो वक्तुकाम इदमाह, एज, पृ १५२

४ यत्र योनिप्राभृतादिना यदेवेन्द्रियादिशरीराणि निर्वर्त्तयति, यथा सिद्धसेनाचार्येणाश्वा उत्पादिताः ।

बृकसे, भाग ३, पृ ७५२

' निशीथचूर्णि 'मां पण आ प्रकारनो उल्लेख छे ( 'सन्मतिप्रकरण', प्रस्तावना, पृ ३७ ).

५ प्रच, (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ ४९

६ विन्टरनित्स, ' हिस्टरी ओफ इन्डियन लिटरेचर, ' ग्रन्थ २, पृ. ४७७, टिप्पण

७ ' विक्रम वोल्युम ' (पृ २१३-२८० )मां वेमनो लेख 'सिद्धसेन दिवाकर ॲन्ड विक्रमादित्य.'

## सिनवल्ली

सिनवल्ली रण जेवी जगा हती.[1] कुंभकारप्रक्षेप नगर त्यां आवेलुं हतुं.

'सिनवल्ली'नुं 'सिन' अंग 'सिन्धु' शब्दनुं अपभ्रष्ट रूप हशे?

जुओ कुम्भकारप्रक्षेप, वीतभयनगर

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. ३४-३७

## सिन्धु

[१] सिन्धु नदी. गंगा, सिन्धु वगेरेने महानदीओ कही छे अने तेमना जळने 'महासलिलाजल' कह्युं छे.[1]

[२] सिन्ध देश. सिन्ध आदि देशो 'असंयम विषय' (ज्यां संयम पाळवो कठण पडे एवा प्रदेश) होवाथी त्यां वारंवार विहार करवानो निषेध करेलो छे.[2] सिन्धु, ताम्रलिप्त (खंभात) आदि प्रदेशोमां मच्छर पुष्कळ होय छे.[3] सिन्धना ऋक्षनुं चर्म पण मृदु होय छे.[4] सिन्धमां गोरसनो खोराक व्यापक प्रचारमा होवाथी जे सिन्धवासीए दीक्षा लीधी होय ते गोरस विना रही शकतो नथी.[5] सिन्ध देशमां अग्निने मंगल गणेलो छे,[6] तथा त्यां धोबीओने अपवित्र गणवामां आवता नथी.[7] सिन्धु विषयमां वगर फाडेलां, आखां वस्त्रो पहेरवानो रिवाज छे.[8] दुर्भिक्षना समयमां मांसभक्षण सामान्य छे, पण सिन्धमां सुभिक्षना समयमां पण लोको मांस खाय छे[9] त्यां नदीनां पाणीथी धान्य नीपजे छे.[10] सिन्धमां दारू राखवाना पात्रमां पण भोजन गर्हित गणातुं नथी, एवो देशाचार छे[11]

१ बृक्षे, भाग ४, पृ. ९५७

२ ए ज, भाग ३, पृ. ८१६

३ सूत्रचू, पृ. १०१. जुओ ताम्रलिप्ति.

४ आसूचू, पृ. ३६४

सुन्दरीनंदे तेने भोजन वहोरायुं. पछी साधुए तेनी पासे पात्र उपडाव्युं अने पोतानी साथे चलाव्यो. सुन्दरीनन्दना मनमां हतुं के 'हमणां भाई मने रजा आपशे ' पण साधु तो तेने पोतानो निवास ज्यां हतो ते उद्यान सुधी लई गया. लोकोए हाथमां पात्र सहित नंदने जोयो, अने कहेवा लाग्या के 'सुन्दरीनंदे दीक्षा लीधी छे!' एटलामां तो उद्यानमां साधुए नंदने देशना आपी, पण उत्कट रागवाळो होवाने कारणे तेने प्रतिबोध पमाडी शकायो नहि. साधु वैक्रिय लब्धिवाळा-इच्छा मुजबनां रूपो उत्पन्न करवानी शक्तिवाळा हता. तेमणे वानरयुगल विकुर्व्युं, अने नंदने पूछ्युं के, 'सुन्दरी अने वानरी वच्चे केटलुं अंतर?' नंदे उत्तर आप्यो, 'भगवन्! सरसव अने मेरु जेटलुं ' पछी साधुए विद्याधरमिथुन विकुर्व्युं अने नंदने पूछ्युं, एटले तेणे उत्तर आप्यो के 'विद्याधरी अने सुन्दरी तुल्य रूपवाळा छे.' पछी साधुए देवमिथुन विकुर्व्युं, एटले ए देवांगनाने जोईने नंद बोल्यो के 'भगवन्! आनी आगळ सुन्दरी वानरी जेवी छे.' साधुए कह्युं के 'आ तो थोडा धर्मथी पामी शकाय छे.' आ पछी साचा धर्मनुं फळ विचारीने सुन्दरीनन्दे दीक्षा लीधी.'

बुद्धनो ओरमान भाई नंद पोतानी पत्नी सुन्दरीमां अत्यासक्त हतो, एने पराणे दीक्षा आपवामां आवी हती अने दृष्टान्तोथी वैराग्यमां स्थिर करवामां आव्यो हतो-एनी कथा वर्णवता अश्वघोषना 'सौन्दरानन्द काव्य'ना वस्तुनुं कोई स्वरूपान्तर उपर्युक्त कथामां रजू थयुं छे एम जणाय छे.

एक भाई दीक्षित होय अने ते गृहस्थ भाईने त्यां भिक्षा माटे आवी पात्र उपडावी एने पोतानी साथे लई जाय अने पछी दीक्षा आपे ए प्रसग उपर्युक्त कथानी जेम जंबुस्वामीनी पूर्वभवकथामां भवदत्त अने भवदेवना संबंधमा मळे छे, जे एना प्राचीनतम रूपे 'वसुदेव-हिंडी' (भाषान्तर, पृ. २५-२७)मां प्राप्त थाय छे.

जुओ नास्तिक्य

१ आव्, पूर्व भाग, पृ ५६६; आव, पृ. ५३३

## सुरप्रिय

एक यक्ष. एनुं आयतन द्वारवती पासेना नंदनवन उद्यानमां हतुं.

जुओ द्वारवती, रैवतक

## सुराम्बर

एक यक्ष. एनुं आयतन शौरिपुरमां हतुं.[१]

१ पाय, पृ ६७

## सुराष्ट्र

साडीपचीस आर्य देशो पैकी एक, जेनी राजधानी द्वारवती–द्वारकामा हती.[१]

'अनुयोगद्वार सूत्र'मा क्षेत्रनी वात करता, मगध, मालव, महाराष्ट्र अने कोङ्कणनी साथे सुराष्ट्रनो उल्लेख कर्यो छे.[२] 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां आपेला 'राज्यदेशनाम'मां 'सौराष्ट्र' पण छे.[३] 'सुरट्ठा' अथवा सुराष्ट्र अन्तु मंडलमा वहेंचायेलो हतो.[४]

एक माणस 'सौराष्ट्र' एटले के 'सुराष्ट्रनो' केवी रीते कहेवाय ए नीचे प्रमाणे समजाव्युं छे. गिरिनगरमा निवास करवानी इच्छाथी कोई माणस मगधमांथी सुराष्ट्र तरफ जवा नीकळे अने सुराष्ट्रना सीमाडे आवेला गाममा पहोंची जाय, पछी एनो निर्देश करवानो प्रसंग उपस्थित थतां एने माटे 'सौराष्ट्र'–अर्थात् 'सुराष्ट्रनो'–एवा शब्दनो व्यवहार थाय छे.[५] वळी 'सूत्रकृतांगचूर्णि'मा मगधना श्रावक साथे सुराष्ट्रना श्रावकनो उल्लेख छे ('खेत्ते जो जथ खत्ते पुरिसो, जहा सोरट्ठो सावगो मागधो वा एवमादि,' पृ. १२७), ए वस्तु सूचवे छे के चूर्णिकारना समयमां जैनधर्मना केन्द्रोमा मगध अने सुराष्ट्र पण हता.

एक संनिवेशमां बे दरिद्र भाईओ हता; तेओए सुराष्ट्रमां जईने एक हजार रूपक उपार्जित कर्या हता एवुं एक प्राचीन कथानक छे.[1] ते उपरथी समुद्रथी वींटायेला सुराष्ट्रमां वहोळो वेपार चालतो हतो एवुं अनुमान स्वाभाविक रीते ज थाय छे.

'वसुदेव–हिंडी' (ई. स. ना पांचमा सैका आसपास) ना 'गन्धर्वदत्ता लम्भक'मांथी सुराष्ट्रनी वेपारी जाहोजलालीनुं समर्थन करतो पुरावो प्राप्त थाय छे. एमां चारुदत्त नामे वणिकपुत्र चीनस्थान, सुवर्णभूमि, कमलपुर, यवद्वीप, सिंहल तथा पश्चिमे बर्बर अने यवन देशनो जलप्रवास खेडीने पाछा फरतां सुराष्ट्रना किनारे. प्रवास करतो हतो अने किनारो दृष्टिमर्यादामां हतो त्यारे एनुं वहाण भांगी गयुं अने सात रात्रिओ एक पाटियाने आधारे समुद्रमां गाळ्या पछी 'उंबरावतीवेला' ए नामथी ओळखता तीरप्रदेश उपर ते फेंकाई गयो हतो ('वसुदेव–हिंडी,' मूळ पृ १४६; भाषान्तर, पृ १८९).

कुणालना पुत्र संप्रतिए उज्जयिनीमां रहीने सुराष्ट्र विषय स्वाधीन कर्यो हतो[*] सुराष्ट्र ए नेमिनाथनी जन्मभूमि अने विहारभूमि होई त्यां जैन धर्मनुं जोर होय अने जैन साधुओ ए प्रदेशमां विचरता होय ए स्वाभाविक छे, पण संप्रतिनुं आधिपत्य त्यां स्थपाया पछी जैन धर्मनी प्रवृत्तिने वेग मळ्यो हशे.[*] आ अनुमानने समर्थन आपतां प्रमाणरूप कथानको आगमसाहित्यमां मळे छे. सुराष्ट्र विषयमां बे आचार्यो हता. एक आचार्य कायम त्यां ज रहेता हता, तेओ आगंतुक आचार्यने सुगमदुर्गम मार्गो तथा सुखविहार करी शकाय एवां क्षेत्रो वगेरे बधुं समजावता हता[*] जुदा जुदा प्रदेशोना वतनी साधुओना देशराग विशे आम कह्युं छेः एक साधु सुराष्ट्रनी प्रशंसा करे छे के 'सुराष्ट्र विषय रमणीय छे.' बीजो साधु बोल्यो के 'तुं कूपमंडूक छे. तने शी खबर छे ? सारो देश तो दक्षिणापथ छे.' आम देशरागथी चालता उत्तर–प्रत्युत्तरोमांथी कलह उत्पन्न थाय छे.[**]

सुराष्ट्रमां जैन साधुओनो विहार घणा प्राचीन काळथी व्यापक हतो एम सूचवतुं एक लोकप्रचलित पद्य, ई. स. ना पांचमा सैका आसपास रचायेल प्राकृत गद्यकथाग्रन्थ 'वसुदेव–हिंडी'ना 'गंधर्व-दत्ता लंभक'मां मळे छे. जुओ—

अट्ठ णियंठा सुरट्ठं पविट्ठा, कविट्ठस्स हेट्ठा अह सन्निविट्ठा।
पडियं कविट्ठं फुट्टं च सीसं, अव्वो ! अव्वो ! वाहरंति हसंति सीसा ॥

( मूळ, पृ. १२७ )

अर्थात् आठ निर्ग्रन्थो सुराष्ट्रमां प्रवेश्या, अने त्यां एक कोठना झाडनी नीचे बेठा; कोठ पड्युं अने (निर्ग्रन्थनुं) माथुं फूटी गयुं; 'अव्वो !' 'अव्वो !' एम बोलता शिष्यो हसवा लाग्या (भाषान्तर, पृ. १६२).

सुराष्ट्रनो एक श्रावक उज्जयिनी जतो हतो. दुष्काळनो समय हतो. एने बौद्ध साधुओनो संगाथ थयो. मार्गमां चालतां एनुं भाथुं खूटी गयुं. बौद्धोए कह्युं के 'अमारो धर्म स्वीकार तो तने खावानुं आपीए.' पछी श्रावकने पेटमां दर्द थयुं; बौद्धोए अनुकंपाथी तेना उपर चीवर ओढाड्युं, पण ते तो नमस्कारमंत्रनो जाप करतो काल-धर्म पाम्यो."

सुराष्ट्र अने उज्जयिनी वच्चेनो व्यवहार, सुराष्ट्र तथा आसपासना प्रदेशोमां बौद्धोनी वस्ती वगेरे बाबतो उपर आ कथानक केटलोक प्रकाश पाडे छे.

तेल भरवा माटेनुं विशिष्ट प्रकारनुं माटीनुं पात्र सौराष्ट्रमां 'तैलकेला' नामथी प्रसिद्ध हतुं. ए तूटी न जाय तेम ज चोराई न जाय ए माटे एनुं सारी रीते संगोपन करवामां आवतुं हतुं."

'कंगु'–कांग नामे धान्य सुराष्ट्रमां सारा प्रमाणमां थतुं हतुं."

आगमसाहित्यना प्राचीनतर अंशोमां 'सौराष्ट्र' करतां 'सुराष्ट्र

–सुराष्ट्र' (प्रा. सुरट्ठा, सुरट्ठ) शब्दना प्रयोग प्रत्ये स्पष्ट पक्षपात जोवामां आवे छे. अन्य साहित्यमां पण एम ज छे ए वस्तु नोंधपात्र छे."

१ सूकृशी, पृ. १२३; बृक्षे, भाग ३, पृ. ९१२–१४

२ अनु, पृ. १४३

३ जुओ गुर्जर.

४ छनउई मडलाइ सुरट्ठा, निचू, भाग ५, पृ. ९४०

मण्डलमिति देशखण्डम्, यथा–षण्णवतिमण्डलानि सुराष्ट्रादेश', बृक्षे, भाग १, पृ. ११८

५ जीम, पृ. ५६

६ दवैचू, पृ ४०; दवैहा, पृ ३५

७ निचू, भाग २, पृ. ४३८

८ जुओ सम्प्रति.

९ निचू, भाग १, पृ. ४३४

१० बृक्षे, भाग १, पृ. ७६०

११ आचू, उत्तर भाग, पृ. १७८

१२ तैलकेला–सौराष्ट्रप्रसिद्धो मृन्मयस्तैलस्य भाजनविशेष स च भङ्गभयाल्लोच(ठ)नभयाच्च सुट्ठु सगोप्यते...इापत्र, पृ. १४

१३ निचू, भाग २, पृ. २६५

१४ जुओ पुष्ट ना सुराष्ट्र.

## सुहस्ती आर्य

आर्य महागिरि अने आर्य सुहस्ती ए बे स्थूलभद्र स्वामीना शिष्यो हता. एमां महागिरि ए सुहस्तीना उपाध्याय हता. आगमप्रोक्त आचारपालन माटे आर्य महागिरि खूब आग्रही हता. आर्य सुहस्तीना साधुओ राजा संप्रतिनो राजपिंड स्वीकारता हता अने सुहस्ती ए वस्तु चालवा देता हता ए मुद्दा उपर तेमनी अने सुहस्ती

वच्चे मतभेद थयो हतो, जेमां छेवटे सुहस्तीए पोतानी भूलनो स्वीकार कर्यो हतो.[1]

आर्य महागिरिए गजाग्रपदमां[2] अनशन कर्युं त्यारपछी आर्य सुहस्ती पोताना शिष्यो साथे उज्जयिनी गया अने त्यां भद्रा नामे शेठाणीनी यानशाला–वाहनशालामां निवास कर्यो. त्यां भद्रानो अवंतिसुकुमाल नामे पुत्र एमनो शिष्य थयो हतो.[3]

आर्य सुहस्तीना नीचे प्रमाणे बार शिष्यो हताः आर्य रोहण, भद्रयश, मेघ, कालर्षि, सुस्थित, सुप्रतिबुद्ध, रक्षित, रोहगुप्त, ऋषिगुप्त, श्रीगुप्त, ब्रह्म अने सोम.[4]

१ जुओ महागिरि आर्य, सम्प्रति.

२ जुओ गजाग्रपद.

३ जुओ अवन्तिसुकुमाल.

४ कल्प, पृ. १६८

## सोपारक

मुंबईनी उत्तरे थाणा जिल्लामां दरियाकिनारे आवेलुं सोपारा.

आगमसाहित्यना उल्लेखो पण सोपारक समुद्र किनारे आवेलुं होवानुं कहे छे.[1] त्यांनो सिंहगिरि राजा मल्लविद्यानो शोखीन हतो.[2]

सोपारक जैन धर्मनुं एक केन्द्र हतुं. आर्य समुद्र,[3] आर्य मंगू[4] अने वज्रस्वामीना शिष्य वज्रसेन[5] जेवा आचार्योनी ए विहारभूमि हतुं, तथा नागेन्द्र, चन्द्र, निर्वृति अने विद्याधर–ए साधुओनी चार शाखाओ सोपारकथी प्रवर्ती हती.[6]

प्रसिद्ध शिल्पी कोक्कास सोपारकनो वतनी हतो अने त्यांथी पोतानुं नसीब अजमाववा माटे उज्जयिनी आव्यो हतो.[7]

सोपारकमां कलालो बहिष्कृत गणाता नहि होय, केम के आर्य समुद्रना श्रावकोमां एक वैकटिक–दारू गाळनार पण हतो एवो

पं. हरगोविन्ददासना 'पाइअ-सद्द-महण्णवो'मां 'सोरट्ठिया'नो एक अर्थ 'फटकडी' आप्यो छे.

१ गेरुअवन्निअसेढिअ-सोरट्ठिअपिट्ठकुक्कुसए, दश. ५-१-३४

२ सौराष्ट्रिका तुवरिका, दशैह, पृ. ३०

३ ...मट्टिया-ओस-हरियाल-हिंगुलुय-मणोसिला-अंजण-लोण-गेरुय-वन्निय-सेढिय-सोरट्ठिय-धक्किसए करमत्ते सव्वत्थ पुरिमड्ढं। एय पुढविमयिस्सयं। जीतचू, पृ १५-१६

४ ...एवमेत्यादिना पृथ्वीकायो मृत्तिकालवणोषतूवरिकावर्णिकादिरूप। जीतचूर्ण्या, पृ. ४७

५ ...तथा हरितालहिंगुलकमनःशिला. प्रतीता', अञ्जन सौवीरांजनादि, लवणं सामुद्रादि, एते सचित्तपृथिवीकायभेदाः, उपलक्षणमेतत्, तेन शुद्धपृथिव्यूपगेरुकवर्णिका सेटिका सौराष्ट्रिकयादयोऽपि सचित्तपृथ्वीकाय भेदा' प्रतिपत्तव्याः। व्यम (प्रथम भाग), पृ ४३-४४

## सौवीर

'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां आपेलां 'राज्यदेशनाम'मां सौवीर पण छे.[१]

जुओ सिन्धु-सौवीर

१ जुओ गुर्जर.

## स्कन्दिल आर्य

आर्य स्कन्दिल अथवा स्कन्दिलाचार्यना अध्यक्षपणा नीचे ईसवी चोथा सैकामां मथुरामां जैन श्रुतनी वाचना थई हती, जे 'माथुरी वाचना' तरीके प्रसिद्ध छे. देवर्धिगणि क्षमाश्रमणे वलभीमां आगमो लिपिबद्ध कर्या तेमां आ 'माथुरी वाचना'ने मुख्य वाचना तरीके स्वीकारी हती

जुओ देवर्धिगणि क्षमाश्रमण, मथुरा, वलभी

स्थानक

मुंबईनी उत्तरे आवेलुं थाणा.

कोंकण देशना स्थानकपुरनो उल्लेख 'द्रोणमुख'—अर्थात् जळ अने स्थळ एम बन्ने मार्गे जई शकाय एवा स्थान–तरीके करेलो छे.[1]

'स्थान' पदान्तवाळां स्थळनामो–पंजाबनुं मूलस्थान (मुलतान), सौराष्ट्रनुं थान तथा आ थाणानो संबंध भाषाशास्त्र तेम ज सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए विचारवा जेवो छे. मूलस्थान अने थान तो सूर्यपूजानां प्राचीन केन्द्रो छे; थाणा विशे वधु संशोधन अपेक्षित छे.

१ तस्य वा द्रोणमुखं जल[स्थल]निर्गमप्रवेशम्। यथा कोङ्कणदेशे स्थानकं नामकं पुरम्। व्यम, भाग ३, पृ. ११७

अहीं कौंसमां मूकेलो 'स्थल' शब्द मुद्रित प्रतमां नथी. व्यमनुं ए संपादन हजारो अशुद्धिओथी भरेलुं छे. बीजी तरफ 'द्रोणमुख'नो उपर्युक्त अर्थ निश्चित छे (जुओ भरुकच्छमां टि. २, तथा 'अभिधानराजेन्द्र' मां दोणमुह), एटले आटलो सुधारो आवश्यक छे.

स्नपन

उज्जयिनीनुं एक उद्यान. त्यां साधुओ ऊतरता हता.[1]

स्नपन शब्दनुं प्राकृत रूप 'ण्हवण' छे; ए उपरथी त्यां कोई जाहेर स्नानागार अथवा नाहवाधोवानी जाया हशे एवुं अनुमान करी शकाय ?

१ अवंतीजणवए उज्जेणीणयरीए ण्हवणुज्जाणे साहुणो समोसरिया, उत्त, पृ. ४९–५०

हरन्त संनिवेश

समिताचार्य विहार करता एक वार हरंत संनिवेशमां गया हता.[1]

हरंत संनिवेशनुं स्थान निश्चित थई शक्युं नथी, पण समिताचार्यनी विहारभूमि मुख्यत्वे माळवा अने कृष्णा तथा वेणा आसपासनो

प्रदेश जे ए समये आभीर देश तरीके ओळखातो हतो त्यां हती, एटले हरंत संनिवेश पण एटला प्रदेशमां क्यांक होवा संभव छे.

- - जुओ आभीर, ब्रह्मद्वीप, समिताचार्य

१ पिनिम, पृ. ३१

## हरिभद्रसूरि

याकिनी महत्तरासूनु (याकिनी नामे साध्वीना धर्मपुत्र) हरिभद्रसुरि आगमोना पहेला संस्कृत टीकाकार छे. एमनो समय आचार्य जिनविजयजीए सं. ७५७ थी ८२७=ई. स. ७०१ थी ७७१ सुधीनो निश्चित कर्यो छे[१] हरिभद्रसूरि पूर्वाश्रममां चित्रकूटना समर्थ विद्वान ब्राह्मण हता. एमना परंपरागत वृत्तान्त माटे जुओ 'प्रभावकचरित'मां 'हरिभद्रसूरिचरित.'

आगमो उपरनी हरिभद्रसूरिनी संस्कृत टीकाओमां 'आवश्यक,'[२] 'दशवैकालिक,'[३] 'अनुयोगद्वार,'[४] तथा 'नंदिसूत्र'[५] उपरनी टीकाओ मुख्य छे. एमनी टीकाओना उल्लेख अने आधार पछीना समयनी आगमटीकाओमां अनेक स्थळे आपवामां आव्या छे; जेम के— 'तत्त्वार्थ सूत्र' उपरनी हरिभद्रसूरिनी वृत्तिनुं उद्धरण मलयगिरिए 'जीवाभिगम सूत्र' उपरनी वृत्तिमां आप्युं छे.[६] हरिभद्रनी 'अनुयोगद्वार' टीकानो आधार पण मलयगिरिए 'ज्योतिष्करंडक' वृत्तिमां आप्यो छे.[७] वळी 'बृहत्कल्पसूत्र'ना टीकाकार क्षेमकीर्तिए हरिभद्रसूरिकृत 'पंचवस्तुक'मांथी,[८] 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'ना वृत्तिकार रत्नशेखरसूरिए 'दशवैकालिक'नी हरिभद्रकृत वृत्तिमांथी,[९] तथा 'धर्मसूत्र'ना टीकाकार धर्मसागरे हरिभद्रकृत 'पंचाशक'मांथी,[१०] अवतरण आप्यां छे, अने 'कल्पसूत्र'ना बीजा टीकाकार विनयविजये 'पंचाशक' उपरना नवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरिनी टीकानो पण आधार आप्यो छे.[११] हरिभद्रकृत कथानक 'धूर्ताख्यान'नुं वस्तु पण प्राचीनतर आगमसाहित्यमां प्राप्त थाय छे.[१२] हरिभद्रनी पछी थयेला

' बृहत्कल्पसूत्र 'ना टीकाकारे कर्तानुं नाम लीधा सिवाय ' धूर्ताख्यान 'नो उल्लेख कर्यो छे. संभव छे के तेमने हरिभद्रनी कृति उद्दिष्ट होय.

जैन साहित्यना इतिहासमां हरिभद्रसूरि एक असामान्य व्यक्ति छे. आगमोनी टीकाओ ए तो तेमनी साहित्यप्रवृत्तिनो एक अंशमात्र छे. न्याय, योग, धर्मकथा, औपदेशिक साहित्य आदि अनेक विषयोनी एमनी रचनाओ छे, अने ' षड्दर्शनसमुच्चय ' जेवी कृतिमां-जे भारतीय साहित्यमां ए प्रकारनो पहेलो ज संग्रहग्रंथ छे-तमाम भारतीय दर्शनोनो सार समर्थ रीते तेमणे आप्यो छे. परंपरा तो एमना उपर १४०० ग्रन्थोना कर्तृत्वनुं आरोपण करे छे. एमनी रचनाओनी समालोचना माटे जुओ ' समराइच्चकहा 'नी डॉ. याकोबीकृत प्रस्तावना तथा 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास,' पृ. १५३—१७०.

१ पहेली ओरियेन्टल कॉन्फरन्समां आचार्य जिनविजयजीना लेख ' हरिभद्राचार्यस्य समयनिर्णय. '

२ जुओ जिनभद्राचार्य.

३ महत्तराया याकिन्या धर्मपुत्रेण चिन्तिता ।
आचार्यहरिभद्रेण टीकेयं शिष्यबोधिनी ॥
दवैहा, पृ. २८६ ( अंते )

४ समाप्तेयं शिष्यहिता नामानुयोगद्वारटीका, कृतिः सिताम्बराऽऽचार्यहरिभद्रस्य ।

कृत्वा विवरणमेतत्प्राप्तं यत्किञ्चिदिह मया कुशलम् ।
अनुयोगपुरस्सरस्तेन लभतां भव्यो जनस्तेन ॥ अनुहा, पृ. १२८

५ आ टीकानो उल्लेख मलयगिरिए ' नंदिसूत्र ' उपरनी वृत्तिमां कर्यो छे. जुओ जिरको, पृ. २०१.

६ आह च तत्त्वार्थटीकाकारो हरिभद्रसूरिः—"नात्यन्तं शीताश्चन्द्रमसः नात्यन्तोष्णाः सूर्याः किन्तु साधारणा द्वयोरपी"ति, जीम, पृ. ३४१. आ टीकानो उल्लेख ' प्रवचनसारोद्धार 'ना टीकाकार सिद्धसेने ( पृ, ३३७ ) पण कर्यो छे. प. सुखलालजीना मत प्रमाणे ( ' तत्त्वार्थसूत्र ', बीजी आवृत्ति, प्रस्तावना, पृ. ५५-६५ ) तत्त्वार्थटीकाकार हरिभद्रसूरि ए याकिनी महत्तरासूनु ज छे, बीजा कोई हरिभद्र होवा संभव नथी.

७ ज्योकम, पृ ४६
८ बृकसे, भाग २, पृ. ३९६, १८५
९ श्राप्र, पृ. २
१० ककि, पृ. ६, १२
११ कच्छ, पृ. २०–२१. जुओ अभयदेवसूरि.
१२ जुओ मूलदेव.

## हर्षपुर

अजमेरु पासेनुं एक नगर, ज्यां सुभटपाल राजा राज्य करतो हतो. हर्षपुरमां ब्राह्मणो यज्ञमां बकरानो वध करता हता त्यारे प्रियग्रन्थसूरिए पोतानी मंत्रशक्तिथी बकराने वाचा अर्पी, ब्राह्मणोने बोध आप्यो हतो, एवी कथा छे.[1]

विक्रमना अगियारमा सैकामां थयेला मेवाडना राजा अल्लू अथवा अल्लटनी राणी हरियदेवीए हर्षपुर वसाव्युं हतुं.[2] जैनोनो हर्षपुरीय गच्छ जे पाछळथी मलधार गच्छ तरीके ओळखायो ते आ हर्षपुर उपरथी थयो छे.[3] ए गच्छना जयसिंहसूरिना शिष्य अभयदेवसूरि वस्त्रमां मात्र एक ज चोलपट्टो अने पछेडी राखता हता. तेमने मलिन वस्त्र अने देहवाळा जोईने सिद्धराजे (मतांतर कर्णदेवे) 'मलधारी' बिरुद आप्युं अने त्यारथी एमनो गच्छ 'मलधार गच्छ' कहेवायो.

१ कसु, पृ. ५०६–१०; ककि, पृ. ११९; कवी, पृ. १४८–४९
२ 'राजपूताने का इतिहास,' भाग १, पृ. ४२६–२८
३ जैसाइ, पृ. १९३, २१७

## हस्तकल्प

जुओ हस्तिकल्प

## हस्तिकल्प

द्वारवतीनुं दहन थया पछी बलराम अने कृष्ण त्यांथी पूर्व तरफ नीकळीने हस्तिकल्प (प्रा. हत्थिकप्प, हत्थकप्प) नगरमां आव्या

हता. त्यांना राजा अच्छदंतने हरावी पछी दक्षिण तरफ जतां तेओ कोसुंबारण्य नामे अरण्यमां आवी पहोंच्या हता.[1] दक्षिण मथुरामां वसता पांच पांडवो अरिष्टनेमि अरिहंत सुराष्ट्र जनपदमां विहार करे छे एम सांभळीने सुराष्ट्र आव्या. त्यां हस्तकल्प नगर पासे एमणे सांभळ्युं के अरिष्टनेमि गिरनार उपर निर्वाण पाम्या छे.[2]

आ उल्लेखो उपरथी स्पष्ट छे के हस्तकल्प के हस्तिकल्प नगर सुराष्ट्रथी दक्षिण तरफ जवाना मार्गमां, पण सुराष्ट्रनी भूमि उपर ज आवेलुं हतुं.

'पिंडनिर्युक्ति' उपरनी मलयगिरिनी वृत्तिमां क्रोधपिंडना उदाहरणमां हस्तकल्प नगरमां एक ब्राह्मणना घरमां भिक्षार्थे गयेला जैन साधुनुं कथानक छे.[3] 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपरनी शीलाचार्यनी वृत्तिमां उदाहृत करवामां आवेला एक हालरडामां बीजां नगरोनी साथे हस्तकल्पनो पण उल्लेख छे.[4] 'जीतकल्प भाष्य'मां हस्तकल्प (प्रा. हत्थप्प, हत्थकप्प)नो निर्देश छे.[5]

भावनगर पासेनुं कोळियाक तालुकानुं 'हाथब' गाम ए ज आ हस्तकल्प होई शके. 'जीतकल्पभाष्य'मांनुं एवुं 'हत्थप्प' नाम एना अर्वाचीन उच्चारणने मळतुं ज छे. वलभीनां दानपत्रोमां तेनुं 'हस्तवप्र' एवुं नाम मळे छे.[6]

१ उने, पृ. ४०. जुओ कोसुंबारण्य.

२ ज्ञाध, पृ २२६, आचू, उत्तर भाग, पृ. १९७

३ पिनिम, पृ. १३४

४ सूकृशी, पृ. ११९; अवतरण माटे जुओ कान्यकुब्ज.

५ जीकभा, गा १३९४–९५.

६ 'गुजरातना ऐतिहासिक लेखो,' नं. २५, ६१; अहीं तक हस्तवप्रनो उल्लेख छे. वलभीना अन्य लेखोमां हस्तवप्रनो उल्लेख ए नामना आहार अथवा आहरणीना मुख्य शहेर तरीके छे ('गुजरातना ऐतिहासिक लेखो,' नं. १६, १७, १९, २०, २१, २२, २३, ४१, ४५, २६ अ तथा ६१, ७०, ७९, ८० ).

## हिन्दुक देश

हिन्दुओनो देश–हिन्दुस्तान.

जेनो रचनाकाळ लगभग ई. स. ना सातमा सैका जेटलो जूनो छे ए 'निशीथचूर्णि'मां 'हिन्दुक देश'नो प्रयोग छे. उज्जयिनीना राजा गर्दभिल्ले एमनी बहेन सरस्वतीनुं हरण कर्युं होवाथी कालकाचार्य 'पारस कूल'मां जईने छन्नु 'शाहि' राजाओ–शक राजाओ जेओ एमना अधिराजा 'साहानुसाहि' (फा० शाहेनशाह)थी त्रासेला हता एमने 'हिन्दुक देश'मां आवता प्रेरे छे; अने सर्वने लईने सुराष्ट्रमां आवी पहोंचे छे.[1]

जुओ कालकाचार्य–२

१ साहिणा भणिय–परमसामिणा रुट्ठेण एयं अच्छिउं ण तरइ। कालगज्जेण भणिय–एहं हिन्दुगदेश वच्चामो। रण्णा पडिस्सुयं। ततो छण्णउइ सगरायाणो पंचासउतीए साहिणा सह केण कहारियाओ उरुंडे देसियाओ। तेण पुव्विल्लेण इया पेसिया–मा अप्पाणं मारेह। एह वच्चामो हिंदुगदेसं। ते छण्णउई पि सुरट्ठमागया। कालो य णवपाउसो वट्टइ। वरिसाकाले ण तीरति गंतुं। छण्णउइ मंडलाइं कयाति णिं विभत्तिऊण। जं कालगज्जो समल्लीणो सो तत्थ अधिराया ठवितो। ताहे सगवंसो उप्पण्णो।

— निचू, भाग ३, पृ. ५७१–७२

## हेमचन्द्र/कलिकालसर्वज्ञ

गुजरातमां बारमा सैकामां थयेला प्रतापी राजाओ सिद्धराज तथा कुमारपाळना समकालीन आ महान आचार्यनां जीवन अने कार्य प्रसिद्ध छे. ए माटे जुओ डॉ. ब्युह्लरकृत 'लाईफ ओफ हेमचन्द्राचार्य,' अध्यापक रसिकलाल छो. परीखनी हेमचन्द्रकृत 'काव्यानुशासन'नी अंग्रेजी प्रस्तावना, तथा श्री. मधुसूदन मोदीकृत 'हैमसमीक्षा,' इत्यादि.

आचार्य हेमचन्द्रनो पछी थयेला आगमसाहित्यना टीकाकारो एमना विविध ग्रन्थोना आधारो घणी वार टांके छे. उदाहरणरूपे एमांना केटलाकनो निर्देश अहीं कर्यो छे.

१ हेमचन्द्रकृत 'प्राकृत व्याकरण' अप्रश्ना, पृ १३, २४, २६, ४१, १७७,

'देशीनाममाला' • अप्रश्ना, पृ १२४

'अनेकार्थकोश' आप्रर, पृ. १७१

'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' अतर्गत 'ऋषभदेवचरित' अप्रश्ना, पृ १२७, १३४, १३६, 'शान्तिनाथचरित' अप्रश्ना, पृ १९७, 'महावीरचरित' कवि, पृ १२५, 'परिशिष्टपर्व' अप्रश्ना, पृ ९८८

'द्वात्रिंशिका' कवि पृ १२५. 'अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका'- माथी मलयगिरिए पण अवतरण आप्यु छे, जे मलयगिरिनो समय नक्की करवामां उपयोगी थाय छे ( जुओ मलयगिरि )

'योगशास्त्र' आप्रर, पृ. २०२

ग्रन्थनो नामोल्लेख कर्या विना हेमचन्द्रमाथी अवतरण आमर, पृ ७, ६२, १८९, इत्यादि

## हेमचन्द्र मलधारी

हर्षपुरीय ( मलधार )[१] गच्छना मुनिचन्द्रसूरिना शिष्य अभयदेवसूरिना शिष्य मलधारी राजशेखरसूरि स १३८७=ई. स १३३१मा रचायेली पोतानी प्राकृत 'द्व्याश्रय'वृत्तिमा जणावे छे तेम, हेमचन्द्र पूर्वाश्रममा प्रद्युम्न नामे राजसचिव हता अने तेमणे चार स्त्रीओ त्यजीने अभयदेवसूरिना उपदेशथी तेमनी पासे दीक्षा लीधी हती मलधारी 'हेमचन्द्रकृत 'जीवसमास' विवरण स ११६४=ई स ११०८ मां, 'भवभावनासूत्र' स ११७०=ई स १११४ मां अने 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी बृहद्वृत्ति स ११७५=ई स १११९ मा रचायेल होई[२] तेओ ईसवी बारमा शतकना पूर्वार्धमा विद्यमान हता ए निश्चित छे हेमचन्द्रना शिष्य श्रीचंद्रसूरि पोताना 'मुनिसुव्रतचरित'नी प्रशस्तिमा जणावे छे ते प्रमाण, राजा सिद्धराज जयसिंह आ आचार्य प्रत्ये खूब भक्तिमान रहतो हतो अने घणी वार तेमना दर्शन करवा माटे पोते ज तेमना उपाश्रयमा आवतो हतो.